गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
Jan.-Feb. 2026
Volume 14, Issue 1-2

Impact Factor :
7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Editor :
Dr. Rekha Soni
Chief-Editor :
Dr. Naresh Sihag Adv.

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

www.ginajournal.com

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 14 अंक : 1–2, पार्ट–1 जनवरी–फरवरी : 2026 आईएसएसएन : 2321–8037

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर, राज.

प्रधन सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

अंतर्राष्ट्रीय सम्पादक मण्डल :
डॉ. लक्ष्मी जोशी
त्रिभुवन वि.वि. काठमाण्डू।
शिओंग छन श्यू, चीन।
डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पाँडे
साहित्यकार, शिक्षाविद, नीदरलैंड।
डॉ. सुनीता शर्मा
हिन्दी साहित्यकार, कवयित्री, संपादक
एवं शिक्षाविद् मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया
डॉ. अनुरुद्ध बायन
मध्य कामरूप कॉलेज, सुभा
जिला बारपेटा, असम।
डॉ. सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स एंड
कम्युनिकेशन, सरकारी पॉलिटेक्निक
कॉलेज फॉर गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।
श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, साहिबजादा
अजित सिंह नगर, मोहाली, पंजाब।
कानूनी सलाहकार :
डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी।

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
साहित्यकार, अनुवादक, यूक्रेन।

डॉ. हेमराज न्यौपाने
काठमाण्डु, नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

डॉ. संदीप
ओम विश्वविद्यालय, हिसार।

डॉ. मधुबाला
राजकीय महाविद्यालय, लाखनमाजरा।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग हरियाणा

डॉ. राजेश शर्मा
शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुद्दस्सिर अहमद भट्ट
हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर

डॉ. सीहेच वी. महालक्ष्मी
सीहेच एसडीएसटी थेरेसा महिला
महाविद्यालय, एलुरू, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, लखनऊ।

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक **डॉ. नरेश सिहाग**, एडवोकेट ने **मनभावन प्रिन्टर्ज**, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

(Journal of Literature, Arts, Science, Commerece, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंधन के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Impact Factor : 7.834

ISSN : 2321-8037

Gina Shodh SANGAM

Peer Reviewed & Refereed Research Journal

International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक / शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसेः प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान / अभियांत्रिकी / कृषि / चिकित्सा / पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा / मानविकी / कला / सामाजिक विज्ञान / पुस्तकालय / शिक्षा / शारीरिक शिक्षा / वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या / पाठ्यक्रम

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. रेखा सोनी	07–07
2.	भारत की राजनीति में नारी की भूमिका का विश्लेषण	डॉ. संजू	08–10
3.	मेवाड़ के ज्योतिष	ब्रह्मर्षि ठा.सत्यव्रत सिंह चौहान	11–13
4.	निर्गुण कवि संत कबीर दास के साहित्य का समाज पर प्रभाव	भरत लाल बंशकार	14–19
5.	भारत में भूमिगत जल स्तर में गिरावट : भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय कारण एवं सतत प्रबंधन के उपाय	Dr. Mahesh Chand Gurjar	20-24
6.	महात्मा बुद्ध के धम्मपद	डॉ. वन्दना द्विवेदी	25–26
7.	जया जादवानी के उपन्यासों में एलजीबीटी की समस्याएं	मनीषा कुमारी	27–32
8.	शारीरिक शिक्षा के लाभ : महाविद्यालयीन छात्रों के संदर्भ में एक अकादमिक विवेचन	मदन मोहन मिश्रा	33–37
9.	Sustainable Digital Futures : Integrating Artificial Intelligence, Education, and Inclusive Innovation in India's Development Agenda	Sahil Kumar	38-50
10.	LANGUAGE & AI	Dr. R. REKHA, Dr. VIDHYA .P, Dr. SAJITHA J	51-54
11.	Evaluating the Impact of Wildlife Protection Legislation through the Lens of Project Tiger	Aditya Khare, Dr. Anshuma Upadhyay	55-60
12.	महाभारत और पुराणों के संदर्भ में च्यवन-सुकन्या आख्यान एवं उसकी आयुर्वेदिक प्रासंगिकता	सुमेधा शर्मा	61–69
13.	भारत एवं नेपाल की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक- माँ त्रिपुरा सुंदरी मंदिर (बैतड़ी, नेपाल)	सत्यवीर खनका	70–74
14.	चम्पावत जिले की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन	शिवानी	75–80
15.	ऑनलाइन वोकल संगीत शिक्षा में ऑडियो गुणवत्ता की हानि : उपकरण-आधारित विश्लेषण और समाधान	Savita Gill	81-86
16.	भारतीय इतिहास :- संविधान व संस्कृति है	डॉ. ममता वधवा, श्रीमती बबीता चौधरी	87–92
17.	झुंझुनू जिले की आपदा व जोखिम की संवेदनशीलता (एक भौगोलिक अध्ययन)	रामावतार वर्मा, डॉ. धीर सिंह शेखावत	93–101
18.	कौटिल्य अर्थशास्त्र में प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धांतों की आधुनिक व्याख्या	डॉ. मुन्नालाल चौधरी, रूखमणी मोहबे	102–109

19.	सूर्यबाला के कथा साहित्य में स्त्री मनोविज्ञान : 'सुबह के इंतजार तक', 'मेरे संधि पत्र' और 'अग्निपाखी' का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. ममता शर्मा	110–115
20.	वी.पी. कोइराला और इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में मनोविश्लेषण	डिल्लीराम शर्मा संग्रौला	116–122
21.	योग दर्शन का ईश्वर और वेदान्त का सगुण ब्रह्म	डॉ शत्रुघ्न सिंह, बृजेश कुमार पाण्डेय	123–128
22.	**NEP 2020 : Significant Revamp on Skill Based Education**	**Dr. Sushma**	**129-133**
23.	झारखण्ड के नागपुरी साहित्यकार डॉ० शकुन्तला मिश्र कृत 'सातो नदी पार' उपन्यास में नारी चित्रण	पुनम भगत	134–137
24.	नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास	आलोक कुमार मिश्रा	138–140
25.	बाल साहित्य के विकास में हरियाणा के कवियों का योगदान	डॉ लीना गोयल	141–145
26.	रूस–यूक्रेन संकट में भारत की भूमिका : महत्व और चुनौतियाँ	डॉ. जितेन्द्र कुमार	146–152
27.	**Anomie in Instagram Society : A Study of College Students in Dehradun, Uttarakhand**	**Ayush Uniyal**	**153-161**
28.	**Role of Rashbihari Bose in Indian Freedom Struggle**	**Ankur Majumdar**	**162-168**
29.	**Post-Pandemic Opportunities for Digital and Social Entrepreneurship in India : A Strategic Perspective**	**Dr. Vishakha Mishra**	**169-176**
30.	'राग दरबारी' उपन्यास में गुटबंदी एवं प्रजातंत्र संबंधी चेतना	डॉ. विक्रम सिंह राठौर नवीन नाथ	177–181
31.	झारखण्ड के उराँव जनजाति के पारम्परिक शासन व्यवस्था : पड़हा पंचायत	डॉ० प्रमीला उराँव	182–184
32.	**A Study of Mediaeval South India : Rani Abakka and Chennamma**	**Dr. Shama Anjum**	**185-190**
33.	कर्म और मोक्ष का संबंध : भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन	राजेंद्र प्रसाद	191–193
34.	चौहान शासकों की कर प्रणाली : एक ऐतिहासिक अवलोकन	सतेन्द्र कुमार, प्रो. सुगम आनंद	194–196
35.	**Making of Modern Historiography : Leopold von Ranke and His Legacy**	**Srishti Agrahari**	**197-203**
36.	हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक विश्लेषण	धन राज, डॉ. रेनु	**204-208**

सम्पादक की कलम से.....

ज्ञान, शोध और विचार का संगम ही किसी भी सभ्य समाज की बौद्धिक पहचान को सुदृढ़ करता है। गिना शोध संगम जर्नल का जनवरी–फरवरी 2026 अंक इसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर पाठकों, शोधार्थियों और विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। यह पत्रिका न केवल अकादमिक शोध का मंच है, बल्कि समकालीन समाज, संस्कृति और वैचारिक प्रवाहों के साथ सतत संवाद का एक गंभीर प्रयास भी है।

आज का युग परिवर्तन और संक्रमण का युग है। तकनीक, वैश्वीकरण, सामाजिक संरचनाओं में बदलाव, मूल्य–बोध का संकट और वैचारिक ध्रुवीकरण– ये सभी कारक हमारे समय को जटिल बनाते हैं। ऐसे में शोध की भूमिका और अधिक उत्तरदायी हो जाती है। शोध केवल अतीत का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि वर्तमान की पड़ताल और भविष्य की दिशा तय करने में भी सहायक होता है। गिना शोध संगम जर्नल इसी व्यापक दृष्टि के साथ बहुविषयक और बहुभाषिक शोध को प्रोत्साहित करता है।

इस अंक में प्रकाशित शोध आलेख साहित्य, समाज, इतिहास, संस्कृति, शिक्षा, मीडिया और समकालीन विमर्शों से जुड़े विविध विषयों को समेटे हुए हैं। साहित्यिक शोध में परंपरा और आधुनिकता का संवाद, सामाजिक अध्ययन में समसामयिक समस्याओं का विश्लेषण, इतिहास और संस्कृति से जुड़े आलेखों में भारतीय दृष्टि तथा शिक्षा और मीडिया पर केंद्रित लेखों में बदलते समय की चुनौतियों पर गंभीर मंथन–यह सब इस अंक को वैचारिक रूप से समृद्ध बनाता है। इन आलेखों की विशेषता यह है कि वे केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ से गहरे जुड़े हुए हैं।

गिना शोध संगम जर्नल शोध की गुणवत्ता, मौलिकता और प्रामाणिकता को सर्वोपरि मानता है। आज जब शोध प्रकाशन का क्षेत्र तेजी से विस्तृत हुआ है, तब यह आवश्यक हो गया है कि शोध नैतिकता, संदर्भ–सटीकता और वैचारिक स्पष्टता पर विशेष ध्यान दिया जाए। इस पत्रिका में अपनाई गई पियर–रिव्यू प्रक्रिया इसी दिशा में एक सार्थक कदम है, जो शोध को विश्वसनीय और उपयोगी बनाती है।

यह पत्रिका अनुभवी विद्वानों के साथ–साथ नवोदित शोधार्थियों को भी समान अवसर प्रदान करती है। नए शोधकर्ताओं की ताजा दृष्टि और वरिष्ठ विद्वानों के अनुभव का समन्वय ही अकादमिक परंपरा को जीवंत बनाए रखता है। जनवरी–फरवरी 2026 के इस अंक में यह समन्वय स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जो गिना शोध संगम जर्नल की बौद्धिक प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

आज के समय में भाषा और संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय भाषाओं में गंभीर शोध और विमर्श को प्रोत्साहन देकर गिना शोध संगम जर्नल न केवल अकादमिक जगत को समृद्ध कर रहा है, बल्कि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता की दिशा में भी योगदान दे रहा है। यह प्रयास भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक संदर्भों में स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है।

अंततः, हम इस अंक में योगदान देने वाले सभी लेखकों, समीक्षकों और पाठकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। उनके सहयोग और विश्वास के बिना यह बौद्धिक यात्रा संभव नहीं होती। हमें विश्वास है कि गिना शोध संगम जर्नल का जनवरी–फरवरी 2026 अंक पाठकों को नए विचारों, गहन चिंतन और सार्थक शोध के लिए प्रेरित करेगा तथा अकादमिक विमर्श को नई दिशा प्रदान करेगा।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 8–10

भारत की राजनीति में नारी की भूमिका का विश्लेषण

डॉ. संजू

सारांश :–

प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत, भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका राजनीतिक दृष्टिकोण से किया गया है, जिसमें सन् 1885 से लेकर 1947 तक देश जब आजादी की ओर था, तब से अब तक महिलाएँ देश के लिए हर क्षेत्रों में अपना सराहनीय योगदान दिये है, भारत की महिलाओं की स्थिति ने पिछले कुछ सदियों में कई बड़े बदलाओं का सामना किया है, चाहे हम प्राचीन काल में पुरूषों के साथ बराबरी की स्थिति की बात करें या मध्ययुग काल की बात करें महिलाओं के जीवन स्तर के साथ ही कई सुधारको द्वारा समान अधिकार को बढावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएँ राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता या जनपद पंचायत अध्यक्ष, सदस्य या सरपंच आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है। प्राचीन भारत में विद्वानों का मानना था कि भारत में महिलाएँ अपने जीवन के सभी क्षेत्रो में पुरूषों के बराबर रही हालांकि कुछ विद्वानों का मत इसके विपरीत है। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी, ऋग्वैदिक ऋचाएँ यह बताती है कि महिलाओं का विवाह एक परिपक्व उम्र में होती थी संभवतः उन्हे अपने लिए वर चुनने की भी आजादी नही थी। वही मध्य युग में अनेक सामाजिक कुरितियाँ जो महिलाओं की जीवन में व्याधा बनी जैसे बाल, विवाह, सतीप्रथा, बहु विवाह आदि साथ ही ऐतिहासिक प्रथाएँ जिसमें परदा प्रथा, के साथ–साथ देवदासी भी बनी अंग्रेजी हुकुमत काल में कुछ महिलाओं द्वारा इन सभी कुरितियों प्रथाओं को रोकने का प्रयास किया साथ ही महिला सुधारक भी उभरकर सामने आयी उन्ही में से महिलाओं द्वारा राजनीति में अपना कदम रखा अपने देश की आजादी के साथ–साथ महिला की आजादी पर कार्य किए जिसमें प्रमुख उभरती महिलाएँ जिन्होने अपनी भूमिका निभाई डॉ. ऐनी बेंसेंट, विजयलक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृता कौर, कस्तुरबा गांधी और अन्य रही।

की वर्ड – महिलाएं, राजनीति, भूमिका, संघर्ष।

प्रस्तावना :–

एक देश के रूप में हमने काफी प्रगति की है। भारत के पुरूष और महिलाएँ अब बराबर संख्या में मतदान करते है लेकिन मतदान से परे महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी (भूमिका) का मामला अब भी एक अछूता विषय है और इस क्षेत्र में महिलाओं को बहुत अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है क्योंकि राजनीति प्रचार–प्रसार करना, पद के लिए भागदौड़ करना और राजनीतिक पद हासिल करना शामिल है क्योंकि इतिहास गवाह है अपने

स्वयं के लिए स्वयं ही लड़ना पड़ता है। हमारा इतिहास मध्ययुग एवं आधुनिक युग भी यही दर्शाता है कि आपको बचाने कोई और नही आयेगा आपको अपने प्रति स्वयं खड़े होना होगा वर्तमान में भी कुछ ऐसे कारण है जिनके वजह से राजनीति में विकास के प्रयासों में महिलाओं की भागीदारी में आज भी बाधा बनी हैं। जिसमें सामाजिक–सांस्कृतिक कारक है, इनमें से कुछ महिलाओं के भूमिकाओं और सांस्कृतिक मान्यताओं के बारे में समाज की पितृसत्तात्मक विचारधारा से उत्पन्न होते है जिन्होने लैगिंक असमानता के माध्यम से महिलाओं में बुहत पिछड़ापन पैदा किया है जिसमे से प्रमुख है – सबसे बड़ा रोग कि क्या कहेगे लोगों राजनीति भूमिका शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। यह न केवल मतदान के अधिकार से संबंधित है बल्कि साथ ही निर्णय लेने की प्रक्रिया, राजनीतिक सहभागिता, राजनीतिक चेतना आदि में अपनी भूमिका से भी संबंधित है भारत में महिलाऐ मतदान में भाग लेती है, सार्वजनिक कार्यालयों और निचले स्तरों पर राजनीतिक सक्रियता और मतदान महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के मजबूत क्षेत्र है।

राजनीति में नारी की सक्रिय भूमिका :–

भारत में महिलाएँ अब सभी तरह की गतिविधियों जैसे कि शिक्षा, राजनीति, मीडिया कला और संस्कृति, सेवा क्षेत्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि में हिस्सा ले रही है वही बात यदि राजनीति में सक्रियता की बात करे तो श्रीमति इंदिरा गांधी जिन्होने कुल मिलाकर पंद्रह वर्षो तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में सेवा की, दुनिया की सबसे लंबे समय तक सेवारत महिला (नारी) प्रधानमंत्री है। ऐसे ही भारत में नारी राजनीति मे सक्रियता 1970 के दशक से रफ्तार पकड़ी भारतीय सांसद में बढ़ती नारियों की संख्या वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में पिछले चुनाव के मुकाबले सबसे अधिक महिला सांसद चुनी गई। इसमें कुल 78 महिला सांसद चुनी गई जो कुल सदस्यों का 14.4% हैं, 8,054 प्रत्याशियों में 726 महिलाएँ थी। वर्ष 2021 तक की स्थिति देखे तो राज्य सभा में भी महिला सदस्यों की संख्या 12.24% थी। हाल में हुए राज्य सभा चुनाव में 22 में 6 महिलाओं को प्रत्याशी बनाया भारत की राजनीति मे भारत की नारीयाँ जिन्होने अपनी सक्रिया भूमिका निभाई और देश दुनिया को गौरवान्वित किया।

जिनमें से प्रमुख है :–

कांग्रेस अध्यक्ष, सोनिया गांधी, सुषमा स्वराज, सुमित्रा महाजन, मायावती, ममता बनर्जी, जय ललिता, प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, आदि थी, साथ ही भारत में पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से दस लाख से अधिक महिलाओं ने सक्रिय रूप से राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया हैं। 73वें और 74वें संविधान संशोधन अधिनियमों के अनुसार सभी निर्वाचित स्थानीय निकाय अपनी सीटों में से एक तिहाई महिलाओं के लिए आरक्षित रखते हैं जिसके कारण ग्राम में संरपंच एवं पंच आदि में भी महिलाएँ अपनी भूमिका का निर्वहन करती हैं।

शोध प्रविधी :–

उद्देश्य :–

1. महिलाओं की प्रगति और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना।
2. असमानता को दूर करना।
3. स्थानीय महिला नेताओं को प्रोत्साहन और समर्थन देकर।
4. कार्य–जीवन संतुलन के लिए महानता प्रदान करना।
5. चुनौती का सामना करने के लिए सक्ष्म बनाना।

महत्व :-

गुलाम भारत को आजाद भारत बनाने के लिए महिलाओं का योगदान कितना महत्वपूर्ण रहा है। इस बात के राष्ट्रीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन फिर भी उन्हें हर बार प्रमाण देना पड़ता है कि आखिर उन्होने किया ही क्या है। चाहे घर हो या बाहर हर जगह की स्थिति एक ही है इसलिए महिलाओं में देखा गया, जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते है, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते है। लेकिन जब आप एक महिला को शिक्षित करते है तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते है वही हम देखते है राज्य में रोजगार के लिए पुरूषों के पलायन के कारण महिलाएँ ही राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक संस्थनों की रीढ़ बनी। पर्वतीय क्षेत्रों में कठिन भौगोलिक परिस्थितियों मे महिलाओं ने अपने परिश्रम व साहस के बल पर अपने घर, गाँव, खेतों और संस्कृति को आबाद रखा।

निष्कर्ष :-

भारत में नारी की राजनीतिक भूमिका को बढ़ाने के लिए सबसे जरूरी है उन्हें शिक्षित होना साथ ही परिवारों द्वारा उन्हे आजादी देना जिससे वे अपने विकास प्रगति को समझते हुए अपने जीवन के व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक या राजनीतिक निर्णय लेने हेतु स्वतंत्र हो साथ ही समाज के कुछ कुरीतियां जो आज भी समाज में विधमान है उन्हें समाज के लोगों को समझने के साथ–साथ उन्हे सुधारने की आवश्यकता है उन्हें समाज में देश के लोगों द्वारा ही संभव होगा सिर्फ नारी की भूमिका कह देने बस से नहीं होगा हमें उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन से शुरू करना होगा क्योंकि राजा राम मोहन राय कहते है सुधार की कार्यवाही स्वयं अपने घर से करे तो क्यो ना हम महिला की राजनितिक सक्रियता बढ़ाने की शुभारंभ अपने घरों के छोटे से लेकर बढ़े कार्यो मे महिला के निर्णयों को महत्व दें जिससे उनमें आत्मविश्वास बने साथ ही वे सार्वजनिक जगहों पर भी अपना निर्णायक निर्णय लेने के पहले अपने घरों के पुरूषों से सलाह लेने की उन्हें आवश्यकता ना पड़े क्योकि महिलाओं को हम शुरू से हर काम घर के बड़ों से पूछकर करना सिखाते है यही सोच उन्हे आगे चलकर उनकी प्रगति में बाधा बनती है स्वयं निर्णय हेतु उन्हे प्रोत्साहित अपने घर से हो।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कैथवास सावित्री, ग्रामीण पंचायती राज के विशेष संदर्भ (2009) पृ. क्र. 30, 32, 43
2. अंसारी एम. ए., महिला और मानव अधिकार (2010) जयपुर ज्योति प्रकाशन।
3. शर्मा गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास राजस्थान हिंन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ. क्र. 119, 120
4. डॉ. राजकुमार, भारतीय नारी सामाजिक अध्ययन (2008) अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, पृ. क्र. 01
5. राम जी यादव, भारत में ग्रामीण विकास (2009) अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, पृ. क्र. 01

sanju281017@gmail.com.

M. 9407749303

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 11-13

मेवाड़ के ज्योतिष

ब्रह्मर्षि ठा. सत्यव्रत सिंह चौहान
सा. ठिकाना माण्डव, त. सागवाड़ा जिला– डूंगरपुर।

मेवाड़ की वीर प्रसूता धरती को शत्–शत् नमन। प्रेम, त्याग, शोर्य, बलिदान, समर्पण की इस भूमि पर जन्म लेना ही अपने आप में गौरव की बात है। मेवाड़ की इस यशस्वी भूमि पर कई विभूतियों ने जन्म लेकर हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहराया है। ज्योतिष क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है।

सुण जीवन संग्राम री, एक बात निराधार।
चालै जा की जीत हैं, सोवैं जा की हार।।

ऐसी ही महान् विभूति, मेवाड ज्योतिष रत्न ठाकुर की सत्य व्रत सिंह जी चौहान सा. यशोगाथा से परिचय करते है। किस प्रकार से उन्होंने जीवन संग्राम को विजय किया साथ ही साथ वो मेवाड़ ही नहीं, अपितु देश–विदेश में भी अपनी ख्याति फैलायी। अपने ज्योतिष ज्ञान अपनी मंत्र–साधना, योग साधना से अनेक जीवों के दुःखों का हरण किया।

ठाकुर सत्यव्रत सिंह जी चौहान सा का जन्म 22 दिसम्बर 1922, शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि, वार शुक्रवार को उनके ननिहाल ठिकाना सोलम, तहसील आसपुर, जिला डूंगरपुर में हुआ। इनके पिता श्री ठाकुर उम्मेद सिंह जी ठिकाना माण्डव, तहसील सागवाड़ा जिला डूँगरपुर के जागीरदार थे। उनका पैतृक गाँव ठिकाना माण्डव प्रथम ग्रेड का ठिकाना था।

इनकी द्वितीय पत्नी के पुत्र रूप में ठाकुर सत्यव्रत सिंहजी का जन्म हुआ। उनकी प्रारम्भक शिक्षा पूर्ण नहीं होने पर वह आगे के पढ़ाई के लिए ठाकुर सा. के भाई वकील सा. श्री शिवनाथ के पास चले गये। वहां अपनी पढ़ाई जारी रखी। इसी बीच इनके पिता ठा. उम्मेदसिंहजी की जागीर डूँगरपुर महारावल लक्ष्मण सिंह जी ने किन्ही कारणवश जब्त कर ली। तत्पश्चात् ठा. उम्मेद सिंह जी ने अपने परिवार तथा नौकर–चाकरों के साथ महाराणा भूपाल सिंह जी के राजघराने में शरण ली। ठा. उम्मेद सिंह जी ने अपनी विद्वता एवम ईमानदारी से महाराणा भूपालसिंह जी सा के बहुत करीब आ गये।

महाराणा भूपाल सिंह जी इन्हें काफी इज्जत बक्शी एवम् देवस्थान विभाग के संचालन का कार्यभार सुपुर्द किया साथ ही राजघराने के गेस्ट हाउस सुपरिडेन्ट भी बना दिया।

पिता ठा. उम्मेद सिंह जी प्रारम्भिक शिक्षित थे, उस समय राजघराने में ब्रिटिश हुकुमत के कई आला अधिकारी पं. जवाहरलाल नेहरू आदि मेहमान आते थे। उस समय ठा. उम्मेद सिंह जी के पुत्र श्री सत्यव्रत जी उनसे अंग्रेजी में बातचीत करते या अपने पिताजी को समझाते थे।

ठा. सत्यव्रत सिंह जी ने नायाब तहसीलदार की नौकरी ज्वाइन कर ली, लेकिन रिश्वतखोरी व्याप्त होने के कारण नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। फिर पुलिस विभाग में ज्वाईन किया यह नौकरी भी इन्हें रास नहीं आयी व त्यागपत्र दिया फिर पॉस्ट ऑफिस में पोस्टमास्टर की नौकरी करी मगर पुत्र के देहान्त होने पर भी अवकाश नहीं मिला। अतः त्यागपत्र फिर अध्यापक की नौकरी ज्वाईन करी।

यह समय ठाः सत्यव्रत जी के जीवन का घुमाव बिन्दु था। श्री यही उसे आपक आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत हुई तथा अधिकांश समय साधना में व्यतीत होना लगा। इसी दरम्यान आप हरिद्वार में शान्तिकुंज के संस्थापक सन्त श्रीराम शर्मा का सानिध्य प्राप्त हुआ तथा वेदमाता मां गायत्री की अनन्य भक्ति करने लगे।

प्रतिदिन 30 माला प्रतिदिन जाप करने लगे तथा अनगिमित पुरषचरण किये वर्ष के वर्श मां गायत्री को साक्षात् दर्शन किये तथा यहीं से आपका ज्योतिष मार्ग प्रशस्त हुआ।

ठा. सत्यव्रत जी व्यक्ति के जन्माक्षर एवं हाथ दोनों देखते एवम् जीवन में घटित घटनाक्रम पूछते तथा बता देते कि पत्रिका गलत है। भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में सजग कर देते थे।

आपश्री के बतलाये हुऐ भविष्य, नक्षत्र की तरह सत्य निकलते थे।

कुछ घटनाक्रम प्रकृति के विधान के अनुसार निश्चित होते है, वे साधनानुसार होने वाली अनहोनी घटनाओं को टाल देते थे।

जो ग्रह नीच राशि में स्थित होकर व्यक्ति को नुकसान पहुँचाता उस ग्रह निर्धारित दिन के अन्दर बहुत कम समय में अनुकूलता प्रारम्भ हो जाती जैसे किसी व्यक्ति के शनि नीच में स्थित हैं, वह जीवन पर्यन्त शनि का व्रत करता है लेकिन उसे अनुभव में अनुकूलता प्राप्त नहीं होती लेकिन ठाकुर सा शनिव्रत के प्रारम्भ करने के साथ ही छोटी साधना देते जिससे कि दूसरे ही शनिवार से सांसारिक कार्यों में पूर्ण अनुकूलता के साथ धन प्राप्त करता फिर जैसे व्रतों की संख्या, जाप की संख्या बढ़ती सुखमय व आर्थिक दशा में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती।

सर्वप्रथम ज्योतिष तथा ईश्वरीय सत्ता का प्रयोग अपनी माता पर किया। बात उस समय की है जब वे (1969) में विकास नगर में नियुक्त थे। उन्होंने अपनी पत्नी को कहा कि तुम्हारी सास की तबीयत खराब होगी मुझे सूचना देना। उन्होंने उनकी पत्नी ने नौकर का भेजा तो वे तैयार ही थे। बीमार माता के पास के ही कमरे में साधना करने लगे, जब मृत्यु का दिन व समय आया तो उनकी माताजी हड़बड़ा कर बैठ गयी किल वृतान्त सुनाया कि हवनकुण्ड से शिव के गण़ निकले, यमदूत जो माता को लेने आये फटकारा और कहा कि इनकी उम्र 24 वर्ष बढ़ गयी है। तत्पश्चात् 24 वर्ष पूर्ण करने के पश्चात 18/2/1993 को स्वर्ग सिधारें।

मेवाड़, मारवाड, गुजरात, एम. पी., यू. पी. के कई जागीरदारों राजा, महाराजाओं ने इनका शिष्यत्व ग्रहण किया। कई लेफ्टिनेंट, कर्नल, ब्रिगेडियर, मेजर आदि ने शिष्यत्त ग्रहण किया। 'राम रक्षास्रोत, गीता, रामायण एवं मंत्रों का संस्कृत/हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद कर भक्ति मार्ग की ओर प्रशस्त किया।

1992 में सेवानिवृत्ति पश्चात् अपनी बड़ी पुत्री के पास उदयपुर विराजने लगे ताकि आमजन को माण्डव तक का सफर तय नहीं करना पड़ा।

ठा. सत्यव्रत सिंह को दाता हुकुम कहकर सम्बोधित करते थे। आपने कई व्यक्तियों को मंत्र दीक्षा की एवं भक्ति मार्ग में लगाया। विशेषकर राजपुता में दारू, माँस त्याग करवाया दोनों नवरात्री में अनुष्ठान (रामायण) करते।

रामायण की चौपाईयों को मंत्र रूप में जाप देते। हवन करवाते जिससे रुगणता, असाध्य रोग, निर्धनता, परेशानियाँ, मानसिक क्लेश, भूतप्रेत बाधाऐं दूर करके सुख समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करते बताये नियत समयानुसार इस महान आत्मा ने अपने लौकिक देह त्याग कर बैकुण्ठ को प्रस्थान किया आज सत्यव्रत सेवा संस्थान के नाम से उदयपुर की गयी है में ट्रस्ट की स्थापना की गई है।

संदर्भ :

आभार. श्री घनश्याम सिंहजी चौहान सा. ठि. माण्डव ठा.

सुपुत्र ब्रह्मर्षि सत्यव्रतसिंह चौहान सा ठि. माण्डव।

डॉ. चन्द्रकान्ता कुमावत, पी० एच० डी. स्कॉलर (ज्योतिषाचार्या)

डॉ. अलकनन्दा शर्मा, विभाभागाध्यक्ष, (ज्योतिषाचार्या)

ज्योतिष एवम् वास्तु संस्थान राजस्थान विद्यापीठ टाउनहॉल परिसर, उदयपुर (राज.)

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 14–19

निर्गुण कवि संत कबीर दास के साहित्य का समाज पर प्रभाव

भरत लाल बंशकार
शोधार्थी, पी–एच. डी. हिन्दी,
बरकत उल्लाह विश्वविद्याल, भोपाल।

सारांश –

भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहाँ गया है इसमें वीरगाथा काल के ठीक बाद के काल को भक्ति काल कहा जाता है। उस समय मुस्लिम शासन था मध्य काल को ही भक्तिकाल माना जाता है। आज समाज हिंसा, आतंक, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद की आग में झुलस रहा है। ऐसे समय में संत कबीर दास ने अपने साहित्य के द्वारा समाज में शीतलता, प्रेम की एक जीवन दृष्टि प्रदान की है। इनके साहित्य को अपना कर चिंतन–मनन कर हम अपने कलुषित मन का परिष्कार कर सकते हैं, इनकी वाणियाँ शाश्वत और सर्वकालिक हैं निर्गुण कवियों के द्वारा अपने ग्रंथों एवं वाणियों के माध्यम से इस समाज पर कभी ज्यादा प्रभाव डाला गया है। निर्गुण और सगुण काव्य धाराओं का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। मैं उसमें से अल्प अंश लेकर कबीर दास पर अपनी बात आपके सामने प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, जो कि समाज में कभी कुरीतियाँ एवं बाह्य, आडम्बरों का खण्डन किया है, जो निर्गुण धारा के प्रमुख एवं प्रवर्तक संत कवि माने जाते है इसलिए कहा गया है कि 'जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि'। इनके द्वारा ग्रंथों एवं अपने दोहों के माध्यम से समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया गया है।

साहित्य का समाज पर प्रभाव :–

हिन्दी साहित्य में निर्गुण ज्ञानमार्गी कवि संत कबीर दास ने समाज को सुधारने का प्रयास किया हैं उनके द्वारा लिखे गये दोहों, ग्रंथों के माध्यम से समाज एवं जनमानस में मानव को मूल्यवान ग्रंथों के माध्यम से प्रभाव डाला गया है। उन्होंने अपनी वाणी से समाज पर प्रभाव डाला है। आज भी मानव समाज के द्वारा उनके दोहे गाये जाते हैं, निर्गुण संत कबीर दास ने अपने साहित्य का विशिष्ठ योगदान रहा है इन संत के द्वारा मानव समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराईओं का विरोध किया है। आज का युग प्रदूषण का युग है। और सबसे बड़ा खतरा वैचारिक प्रदूषण का है। कबीर दास के साहित्य का समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं बाह्य आडम्बरों का विरोध किया है एवं समाज में सुधार लाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

संत कबीर दास के साहित्य का केन्द्र मानव है ये संत जनता के कवि थे ये जनता से निकले थे और जनता के कल्याणार्थ ही अपनी बात कह रहे थे। उनकी वाणीयों में समाज के लिए हर प्रश्न का उत्तर मौजूद

है वैसे देखा जाये तो संसार में सभी कुछ नश्वर है परन्तु मानवीय मूल्य शाश्वत है जब तक ये मूल्य है मानवता जीवित रहेगी मानवीय मूल्यों को निर्गुण संत कबीर दास प्रतिस्थापित करना चाहते थे। कबीर दास जी निरक्षर रहते हुए भी वह स्वयं कहते हैं –

'मसि कागद छुओं नहीं, कलम गहयो नहीं हाथ।'

परन्तु उनके हृदय में जनमानस की पीड़ा की छटपटाहट थी। वही दर्द उनके विद्रोह के रूप में फूट पड़ा तभी तो वो कहते हैं –

'देखो रे जग बौराना साधु देखो रे जग बोराना।'

हिन्दु कहै राम है मेरा, मुसलमान रहिमाना।

आपस में दाऊ उरै मरते है भेद न कोऊ जाना।।

काव्य का जन्म ही करुणा और क्रोध से हुआ है। संत कबीर दास का काव्य मुख्य स्वर क्रांति है वे मानव के हृदय परिवर्तन के द्वारा समाज में क्रांति लाना चाहते थे। इसलिए उनके साहित्य में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा दिखाई देती है।

(1) जनता की एकता की स्वीकृति –

संत कबीरदास ने अपने धार्मिक विचारों के बाबजूद जनता की एकता को स्वीकार किया है। यह स्वीकृति वैचारिक और व्यावहारिक दोनों आधारों पर है। रामानन्द की शिष्य पराम्परा में कबीरदास, रैदास, दादूदयाल, समान रूप से स्वीकृत है तथा मीरा ने अपने गुरु के रूप में रैदास को स्वीकार किया है यह एक मिशाल है। दूसरे कबीर दास कहते हैं ना मैं हिन्दू ना मुसलमाना, तो इसी बात करते है।

(2) ईश्वर के समक्ष सबकी समानता –

संत कबीर दास का यह एक वैचारिक आधार है जिसके माध्यम से वह ऊँच नीच एवं जाति और वर्णभेद के आधार पर विभाजित मानवता की सामानता को एक नैतिक और मजबूत आधार प्रदान करते है। समाज में व्याप्त असमानताओं का आधार भी ईश्वर की भक्ति को बनाया गया था। संतो ने उन्हीं के हथियारों से उन पर वार किया और कहा– ब्रम्ह के अंश सभी जीव है तो फिर यह विषमता क्यों? किसी को ईश्वर उपासना का सम्पूर्ण अधिकार और किसी को बिल्कुल नहीं, इतना ही नहीं इसी आधार पर समाज को रहन–सहन, खान–पान, छुआछूत एवं आर्थिक विषमताओं से मानव मात्र की समानता को एक स्वर दिया।

(3) जाति प्रथा का विरोध –

निर्गुण ज्ञानमार्गी संत कबीर दास ने जाति प्रथा का विरोध किया है जो उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से जाति प्रथा का विरोध किया है। जाति प्रथा समाज की एक ऐसी बुराई थी जिसके चलते समाज के एक बड़े वर्ग को मनुष्यत्व के बाहर का दर्जा मिला हुआ था। अछूत, शूद्र, अन्त्यज, निम्नतम श्रेणी के मनुष्यों का ऐसा समूह था जिसे मनुष्यत्व की मूलभूत पहचान भी प्राप्त नहीं थी। बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वर्ग में भी जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक व्यवस्था में उच्च श्रेणी के लिए संघर्ष होते रहते थे। संतो ने मनुष्यता के इस अभिशाप से मुक्ति की लड़ाई पूरी ताकत से लड़ी।

कबीर जब ना हिन्दू ना मुसलमान की बात करते है या किसी जाति विशेष के विशिष्ट से विशिष्ट अधिकारों पर चोट करते हैं जो उन्हें जातिगत आधार पर मिले हो तो वे वास्तव में जाति प्रथा की इसी वैचारिक

धरातल को तोड़ना चाहते हैं। जाति विशेष का या जाति को खत्म करने की बात नहीं की गई, बल्कि जाति और धर्म के तालमेल उत्पन्न मानवीय विषताओं और आसमान जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए जाति के आधार मिले विशेषाधिकारों को खत्म करने की बात भक्ति आन्दोलन ने उठाई।

जाति प्रथा के आधार पर ईश्वर की उपासना को जो अधिकार ऊँची जाति वालो ने अपने पास रखा था और पुरोहित तथा क्षत्रियों की साठ गाँठ के आधार पर जिसे बलपूर्वक मनवाया जाता था। उसे तोड़ने का अथक प्रयास संत कबीरदास ने किया और कहा कि ईश्वर से तादात्म के लिए मनुष्य सद्‌गुण–प्रेम सहिष्णुता, पवित्र हृदय सादा–सरल जीवन और ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास आवश्यक है न कि उसकी ऊँची जाति। कबीर दास कहते है –

''जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।''

(4) सत्य –

निर्गुण संत कबीर दास ने अपने साहित्य ग्रंथों के माध्यम से समाज में प्रभाव डालने, सत्य ही धर्म है। सत्य वह नहीं जो मुख में बोलते है सत्य वह श्रेष्ठ है, जो मनुष्य के कल्याण के लिए बोला जाता है। इसलिये वे सत्य व्यवहार, सत्य कर्म, सत्य वचन, सत्य अनुभूति पर जोर देते हैं। समाज यदि सत्य के महत्व को समझले तो पाखण्ड और आडम्बरों के दर्शन नहीं हो सकते इसलिए वे कहते है कि –

''सांच बरावर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके, हृदय आप।।''

आज भी झूठ की प्रशंसा से सत्य छटपटाता दिखाई देता है। कबीर दास भी अपने युग में सत्य का संघर्ष देख रहे थे। हमारे मस्तमौला संत कबीर दास चुप नहीं बैठ सके और झूठ और सत्य को इस प्रकार प्रकट कर दिया –

''सांचे कोई न पति जई, झूठ जगू पतयाय।
गली–गली गोरस फिरै, मंदिरा बैठ बिकाय।।''

संत कबीर दास ने अपने काव्य के द्वारा समाज पर काफी प्रभाव डाला है। कबीर दास जी का व्यक्तित्व निर्भीक एवं विद्रोही था वे उस चौरस्ते पर खडे अपनी खुली आँखों से देखते थे और जो भी बातें वे कह रहे थे स्वानुभुत सत्य पर आधारित थी तभी तो उसके जीवन काल में उनके चाहने वालों की भीड़ लग गई थी और संसार रूपी बाजार में खडे वे सभी की खेर मांग रहे थे –

''कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खेर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर।।''

(5) संतोष –

संत कबीर दास ने अपने ग्रंथों के द्वारा संतोष का पाठ्य पढ़ाया है। उन्होंने मनुष्य की इच्छा से उन्नत है, जो तृप्त होने का नाम नहीं लेती। नित्य नया रूप धारण करती रहती है। तृष्णावान मनुष्य कभी सुखी नहीं हो सकता। इसलिये तो प्राचीन से आज तक शोषक और शोषितों के बीच संघर्ष बना हुआ तभी कबीर कहते है –

"सहज मिले सो दूध सम, मांगे मिले सो पानि।
कहै कबीर बह रक्त सम, जा में ऐचातानि।।"

इन पंक्तियों में क्या समाजवादी दृष्टि नहीं क्या कबीर कोई माक्सवादी से कम लगते हैं। आज शोषण के खिलाफ आवाज उठाई जा रही है परन्तु कबीर तो आसाधारण लोगों को समझा रहे थे। इसके लिये जरूरी था, मनुष्य की जब आवश्यकताएँ कम हो जायेगी तो अपने आप वर्ग संघर्ष में कमी आ सकती है तभी भी कबीर कहते है –

"साई इतना दीजिये, जामे कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा न रहू, साधु ना भूखा जाय।।"

कबीरदास जी कहते हैं कि साई इतना दीजिये हे परमात्मा मुझे इतना देना की मेरा परिवार, कुटुम्ब को हो जाये में भी भूखा न रहूँ, मेरे यहां मेहमान एवं साधु भूखा न जाये।

(6) अहिंसा –

मनसा वाचा कर्मणा किसी को क्षति न पहुंचाना अंहिसा है। पूर्ण अहिंसा का अर्थ है प्राणीमात्र के प्रति दुर्भाव का, पूर्ण अभाव सत्य के साथ अहिंसा ही संसार में सबसे बड़ी शक्ति है परन्तु कारण नहीं है। उस समय युग में मांसाहार का बहुत प्रचलन था यहाँ तक कि तांत्रिक द्वारा भी मांस मदिरा का सेवन किया जाता था। मांसाहारियों की निन्दा करते हुए कबीरदास जी कहते है कि–

"बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है, ताको कौन हवाल।।"

संत कबीर दास चूँकी संत थे और संत की व्याख्या ही है जो सदाचरण वाला हो। ये संत मनुष्य तो क्या पशु पक्षियों तथा पेड, लता तक के प्रति भी अहिंसा का भाव रखते है ये उनकी करुणा तो अखण्ड ब्रम्हाण्ड के प्रति है तभी तो फूल पत्तियों तक को तो छोडने के लिये मना करते हैं –

"ब्रम्हा पाती विष्णु डारी, फल शंकर देव।
तीन देव प्रत्यक्ष तोडिये, करिये किस की सेव।।"

यह समाज कमजोरों, दुर्बलों को नहीं जीने देता, हर युग में इसका शोषण होता रहा है। कबीरदास विशुद्ध मानवतावादी थे उनका साहित्य मानवता से ओत प्रोत था। किसी दीन दुर्बल को दुःखी देख कर उनका हृदय आहत हो जाता जिन कबीर को विद्रोही कहते है। वे किस करुणा से कह रहे है कि –

"दुर्बल को न सताइये, जा की मोटी हाय।
मरे बैल के चाम से, लोह भस्म हो जाय।।"

(7) कर्म की महत्ता –

कबीर को फक्कड क्रांतिकारी कवि कहा जाता है, परन्तु कबीर सहज से हृदय परिवर्तित करना चाहते है वे व्यष्टि के माध्यम से समष्टि का परिष्कार करना चाहते थे। इन संत कवियों को यद्यपि निवृतिवादी कहा जाता है, परन्तु उनका जीवन दर्शन देखा जाये तो उन्होंने कर्म की महत्ता स्थापित की कबीरदास आजीवन कपड़ा बुनते रहे। इन कवियों का जीवन इस बात का प्रतीक है कि कोई भी व्यवसाय नीच नहीं है। इन संतो ने छोटे से छोटे व्यवसाय को अपना कर जीवन में श्रम करके उदम निर्वाह करें। वे स्वास्थ्य तथा आत्म निर्भर समाज

को देखना चाहते थे ऐसा समाज जिसका कोई भी व्यक्ति परामुखापेक्षी नहीं यही उसका मानवतावाद था।

(8) प्रेम –

संत कबीर का व्यापक धर्म प्रेम था। हृदय जगत का व्यापार है। अतः मस्तिष्क से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। सच्चा प्रेम कामना रहित होता है। प्रेम जगत में ऊँच–नीच, धनी निर्धन, महान शुद्र का कोई भेद भाव नहीं है। उनकी दृष्टि में प्रेम ही सब कुछ है। तभी तो कहते है–

1) पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

(2) प्रेम न वाडी ऊपजै, प्रेम न होत विकाय।
राजा परजा जो रूचै, शीश देय ले जाय।।

उनकी दृष्टि में यज्ञ दान तक तीर्थ यात्रा नमाज सभी से श्रेष्ठ कबीर की दृष्टि में प्रेम का मार्ग पर चलने के लिये अहंकार का परित्याग आवश्यक है। वहाँ अहं आवश्यक नहीं है। कबीर कहते है –

"यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहीं।
सीस उतारे भुई धरे, तब पैठे घर माही।।"

प्रेमरस तो ब्रम्हानंद के समकक्ष है जो इस रस का पान कर लेता है फिर मुक्ति भी उसके लिये त्याज्य हो जाती है। कबीर जैसे निर्गुण संत का मानव धर्म है जिसका केन्द्र होने के कारण संत साहित्य जगत में प्रेम–घृणा आशा वेदना का दर्पण है। यह कबीर जैसे प्रखर कवि की कोमल तथा प्रचल भावनाओं का प्रति विम्ब है मानव मात्र में स्थापित करने के लिये इन संतो में महत प्रयास किये।

आधुनिक युग में जब मनुष्य सभ्यता के उच्चतर पर पहुंच रहा है परन्तु उसका मन कहीं न कहीं अवस्था के खूंखार भावों को पाले है कबीर जैसे निर्गुण संत कहते है। आज हम देख रहे है सारा संसार स्वार्थ का आखाडा बन गया है। हम सब एक अंधी दौड़ में शामिल हो गये है भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए बेतहाशा भागे जा रहे है। इस स्पर्धा में उदात्त भाव और मानवीय मूल्य खोते जा रहे। ऐसे समय संत कबीर साहित्य ने हमें कहीं एक स्वास्थ्य दृष्टि प्रदान कर रहा है। आज भी समाज को अपने साहित्य के माध्यम से ढ़ाल रहे है। उनकी पंक्ति जो मानव जीवन को एक संदेश देती है –

"कबीरा हम पैदा हुये, जग हँसा हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोय।।"

(9) नारी के प्रति दृष्टिकोण –

निर्गुण संत कवियों ने नारी सम्बन्धी अपने विचारों को खुलकर व्यक्त किया है। इन कवियों ने एक और नारी की निंदा की है तो दूसरी और पतिव्रता नारी की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। संत कवियों ने नारी की माया का प्रतीक माना है। इन्होने कनक और कामिनी दुर्गम घाटियाँ माना है। कबीरदास कहते है –

"नारी की झाई परत, अन्धा होत भुजंग।
कविरा तिनकी कहा गति, जो नित नारी के संग।।"

और पति व्रता नारी की प्रशंसा करते हुए कबीर कहते है –

"पतिव्रता मैली भली, कानी कुचित कुरूप।

पतिव्रता के रूप पर, वारों कोटी सरूप।।''

कबीर का यह दृष्टिकोण उदारता का परिचायक है। उनकी दृष्टि में पतिव्रता का आदर्श उनके साधना के निकट पड़ता है। सति और पतिव्रता नारी में एक के प्रति निष्ठावान अशक्ति, असिम प्रेम, साहस और त्याग भावना से वे प्रभावित थे।

निष्कर्ष –

अतः स्पष्ट है कि इस शोध पत्र में निर्गुण कवि संत कबीर दास के साहित्य का समाज पर कभी प्रभाव पड़ा है। उनके साहित्य में सत्य, अहिंसा, प्रेम, नारी के प्रति दृष्टिकोण, संतोष एवं बाहरी दिखाने पर जोर दिया है। संत कबीर उस समय के समाज में बदलाव लाना बहुत ही कठिन कार्य था। निर्गुण कवियों ने भारतीय संस्कृति को जीवित रखने तथा सामाजिक मर्यादा को बनाये रखने में इन कवियों का विशेष योगदान रहा। जब तक भारत में नैतिक मूल्य जीवित है तब तक यह साहित्य शाश्वत है। कबीर दास के साहित्य का प्रभाव काफी डाला। इस शोध पत्र का उद्देश्य यही है कि समाज में व्याप्त कुरीतियाँ खत्म होनी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1. कबीर ग्रंथावली – श्यामसुन्दर दास, पृष्ठ–191
2. कबीर ग्रंथावली – पारसनाथ तिवारी।
3. संतवाणी संग्रह भाग–2, पृष्ठ–83
4. कबीर दोहा वली–संग्रहकर्ता अमर प्रकाश, दोहा नं.–257
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास– अभ्यास लेखक – डॉ पी.के. घुमाल।
6. कबीर – पारस नाथ तिवारी।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 20-24

भारत में भूमिगत जल स्तर में गिरावट : भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय कारण एवं सतत प्रबंधन के उपाय

Dr. Mahesh Chand Gurjar
Assistant Professor, Education Department,
Smt. Anar Devi Teacher's Training College Bakharana (Kotputli) Jaipur, Rajasthan – 303108

सारांश :

भारत में जल संसाधन जीवन और विकास की आधारशिला हैं। सतही जल की सीमितता के कारण भूमिगत जल पर निर्भरता बढ़ी है, लेकिन पिछले दशकों में इसका स्तर तीव्र गिरा है। यह समस्या केवल जल संकट तक सीमित नहीं है, बल्कि कृषि, खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण आजीविका, शहरी जल आपूर्ति और पारिस्थितिक संतुलन पर भी प्रभाव डालती है।

भूगोलिक दृष्टि से विभिन्न क्षेत्रों में जल की उपलब्धता असमान है। मैदानी क्षेत्र, प्रायद्वीपीय पठार, शुष्क और तटीय क्षेत्र अलग–अलग जलभृत संरचना और वर्षा की मात्रा के कारण भिन्न हैं। मानवीय गतिविधियाँ जैसे अनियंत्रित दोहन, गहन सिंचाई, शहरीकरण और औद्योगीकरण संकट को और बढ़ाते हैं।

पर्यावरणीय कारण जैसे जलवायु परिवर्तन, अनियमित मानसून, वनों की कटाई और भूमि उपयोग परिवर्तन प्राकृतिक जल चक्र को प्रभावित कर रहे हैं। परिणामस्वरूप पुनर्भरण कम और दोहन अधिक हो रहा है।

शोध पत्र में इन भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय कारणों का विश्लेषण किया गया है और सतत प्रबंधन के उपायकृवर्षा जल संचयन, जल–प्रबंधन आधारित कृषि, नीतिगत सुधार, सामुदायिक सहभागिता और तकनीकी नवाचारकृप्रस्तुत किए गए हैं। उद्देश्य जल संकट के प्रति जागरूकता बढ़ाना और दीर्घकालिक समाधान सुझाना है।

प्रस्तावना :–

जल मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है और भारत जैसी जनसंख्या वाले देश में इसका संतुलित उपयोग चुनौतीपूर्ण है। अधिकांश जल आवश्यकताएँ भूमिगत जल से पूरी होती हैं, खासकर कृषि, घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों में।

पिछले दशकों में अत्यधिक दोहन, हरित क्रांति और गहन सिंचाई के कारण जल स्तर में लगातार गिरावट आई है। शहरीकरण और औद्योगीकरण ने इसे और गहरा किया, जबकि कंक्रीटीकरण ने वर्षा जल का प्राकृतिक

पुनर्भरण बाधित किया।

जलवायु परिवर्तन, असमान मानसून, वनों की कटाई और भूमि उपयोग परिवर्तन ने समस्या को गंभीर बनाया है। परिणामस्वरूप जल स्रोतों का पुनर्भरण कम और जल गुणवत्ता प्रभावित हुई।

भूमिगत जल गिरावट के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव व्यापक हैं, जैसे कृषि उत्पादन में कमी, पेयजल संकट और भूमि धंसाव। इस शोध पत्र में इन कारणों का विश्लेषण और सतत प्रबंधन के उपाय प्रस्तुत किए गए हैं।

कुंजी शब्द : भूमिगत जल, जल संकट, जल स्तर गिरावट, मानवीय कारण, जलवायु परिवर्तन, सतत प्रबंधन।

अध्ययन क्षेत्र एवं भारत में भूमिगत जल की स्थिति :

- भारत में पर्वत, पठार, मैदान, मरुस्थल और तटीय क्षेत्र सभी मौजूद हैं, जो भूमिगत जल की उपलब्धता और पुनर्भरण को प्रभावित करते हैं। इस शोध में संपूर्ण भारत को अध्ययन क्षेत्र माना गया है।
- उत्तर भारत के गंगा' : ब्रह्मपुत्र मैदान में जलभृत गहरे और विस्तृत हैं, लेकिन पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गहन सिंचाई और जल–गहन फसलों के कारण जल स्तर गिरा है।
- प्रायद्वीपीय राज्यों जैसे महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और तमिलनाडु में कठोर चट्टानों और अनियमित वर्षा के कारण भूमिगत जल सीमित है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल समस्या होती है।
- राजस्थान और गुजरात जैसे शुष्क क्षेत्रों में कम वर्षा और उच्च वाष्पीकरण के कारण जल पुनर्भरण धीमा है, अत्यधिक दोहन से जल स्तर घटता है और कई स्थानों पर जल लवणीय हो जाता है।
- तटीय क्षेत्रों में समुद्री जल का अतिक्रमण बढ़ रहा है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल में अत्यधिक दोहन से मीठे जल का संतुलन बिगड़ा है।
- केंद्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार कई ब्लॉकों को 'अतिदोहित' श्रेणी में रखा गया है, जहाँ दोहन पुनर्भरण से अधिक है, जो भविष्य में गंभीर जल संकट का संकेत देता है।

भूमिगत जल स्तर में गिरावट के भूगोलिक कारण :

भारत में भूमिगत जल स्तर पर भूगोलिक कारक जैसे स्थलाकृति, जलभृत की प्रकृति, मिट्टी और वर्षा का असर स्पष्ट है।

- **स्थलाकृति :** पर्वतीय और ढलान वाले क्षेत्रों में वर्षा जल तेजी से बह जाता है, जिससे पुनर्भरण कम होता है। समतल मैदानों में जल ठहरता है, लेकिन अत्यधिक दोहन से यहाँ भी गिरावट देखने को मिलती है।
- **जलभृत की प्रकृति :** छिद्रयुक्त जलभृत (जैसे गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान) अधिक जल धारण कर सकते हैं, जबकि दरारयुक्त जलभृत (प्रायद्वीपीय क्षेत्र) सीमित जल रखते हैं, जिससे हल्के दोहन से भी जल स्तर घटता है।
- **मिट्टी और वर्षा :** रेतीली मिट्टी जल अवशोषण बढ़ाती है, चिकनी मिट्टी में धीमा होता है। मानसून आधारित असमान वर्षा के कारण पश्चिमी और दक्कन क्षेत्र में पुनर्भरण कम होता है।
- **नदी प्रणालियाँ :** बारहमासी नदियाँ जलभृतों का पुनर्भरण बेहतर करती हैं, लेकिन नदियों के प्रवाह में कमी और मार्गों में हस्तक्षेप से यह प्रभावित हुआ है।

इस प्रकार, भारत में भूगोलिक सीमाएँ और प्राकृतिक संरचना भूमिगत जल स्तर में गिरावट के मुख्य

कारण हैं।

भूमिगत जल स्तर में गिरावट के मानवीय कारण :

भारत में भूमिगत जल गिरावट के प्रमुख मानवीय कारण हैं :

- **कृषि :** हरित क्रांति के बाद नलकूप और बोरवेलों का व्यापक उपयोग, विशेष रूप से जल–गहन फसलों (धान, गेहूँ, गन्ना) के लिए, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी यूपी में जल स्तर तेजी से गिरा।
- **शहरीकरण :** शहरों में पेयजल, निर्माण और घरेलू उपयोग के लिए भूमिगत जल पर निर्भरता बढ़ी। कंक्रीटीकरण के कारण वर्षा जल का पुनर्भरण कम हुआ।
- **औद्योगीकरण :** उद्योगों का जल–गहन होना और अंधाधुंध दोहन ग्रामीण जल स्तर को प्रभावित करता है। औद्योगिक अपशिष्ट जल की गुणवत्ता भी खराब करता है।
- **जनसंख्या वृद्धि और जल उपयोग :** बोरवेलों की संख्या में वृद्धि, जल संरक्षण की कमी और जागरूकता न होना, जलभृतों पर दबाव बढ़ाते हैं।
- **नीतिगत कमजोरियाँ :** कानूनों का प्रभावी पालन न होना और जल मूल्य निर्धारण की समस्याएँ संकट को और बढ़ाती हैं।

इस प्रकार, मानवीय गतिविधियों ने भूमिगत जल संकट को गंभीर बनाया है। सतत समाधान के लिए प्रभावी नीतियाँ, आदतों में बदलाव और सामूहिक जिम्मेदारी आवश्यक है।

पर्यावरणीय कारण एवं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव :

भारत में भूमिगत जल गिरावट पर केवल मानवीय कारण नहीं, बल्कि पर्यावरणीय कारक और जलवायु परिवर्तन का भी प्रभाव है।

- **जलवायु परिवर्तन :** मानसून के असमान वितरण, अप्रत्याशित बारिश और लंबे शुष्क काल से जलभृतों का प्राकृतिक पुनर्भरण बाधित होता है। राजस्थान और गुजरात जैसे अर्ध–शुष्क क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित हैं।
- **वनों की कटाई और भूमि उपयोग परिवर्तन :** जंगलों की कमी और कृषि/औद्योगिक विस्तार से वर्षा जल सीधे नदियों में चला जाता है, भूमिगत जल पुनर्भरण कम होता है।
- **जल गुणवत्ता पर प्रभाव :** तटीय क्षेत्रों में समुद्री जल का प्रवेश (Sea Water Intrusion) और कृषि/औद्योगिक प्रदूषण से जल क्षारीय और असुरक्षित हो जाता है।
- **अन्य पर्यावरणीय कारण :** उच्च तापमान और तेज वाष्पीकरण से जलभृतों का पुनर्भरण कम होता है। इस प्रकार, जलवायु और पर्यावरणीय असंतुलन ने भूमिगत जल संकट को और गंभीर बना दिया है। सतत प्रबंधन और संरक्षण के बिना यह समस्या भविष्य में और विकराल हो सकती है।

भारत में भूमिगत जल प्रबंधन के वर्तमान उपाय और नीतियाँ :

भारत में भूमिगत जल संकट से निपटने के लिए सरकार और संस्थाएँ नीतिगत, तकनीकी और सामुदायिक उपाय अपना रही हैं।

1. **नीतिगत पहल :** केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) द्वारा 'Over-Exploited', 'Critical' और 'Semi-Critical' ब्लॉकों की सूची जारी की जाती है। महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों ने जल अधिकार और

बोरवेल पंजीकरण नीतियाँ लागू की हैं।

2. **वर्षा जल संचयन :** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में टैंक, जलाशय और रिचार्ज पिट्स बनाकर वर्षा जल का पुनर्भरण किया जा रहा है। दिल्ली, चेन्नई और बेंगलुरु में यह अनिवार्य है।
3. **जल-संरक्षण आधारित कृषि :** ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई अपनाई जा रही है। कम जल वाली फसलों को बढ़ावा देकर भूमिगत जल पर दबाव कम किया जा रहा है।
4. **सामुदायिक भागीदारी :** गाँवों में तालाब, नहर और बोरवेलों के संरक्षण में जनता की सहभागिता बढ़ाई जा रही है।
5. **तकनीकी नवाचार :** सैटेलाइट मॉनिटरिंग, जल स्तर मापने के उपकरण और GIS तकनीक से जल स्तर की निरंतर निगरानी की जा रही है।

चुनौतियाँ :

नीतियों का अनुपालन, प्रशासनिक कमजोरियाँ, जागरूकता की कमी और वित्तीय संसाधनों की अपर्याप्तता मुख्य बाधाएँ हैं।

इस प्रकार, भारत में कई प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन सतत और दीर्घकालिक समाधान के लिए व्यापक लागू करना और सभी पक्षों का सहयोग आवश्यक है।

सिफारिशें :

1. **वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाना :** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन, तालाब और जलाशयों के निर्माण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
2. **जल-प्रबंधन आधारित कृषि :** कम जल वाली फसलों की खेती, ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी तकनीकों का व्यापक उपयोग और सिंचाई समय में सुधार आवश्यक है।
3. **सख्त नीतिगत और कानूनी नियंत्रण :** बोरवेल पंजीकरण, दोहन पर सीमा निर्धारण और जल मूल्य निर्धारण जैसी नीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।
4. **सामुदायिक सहभागिता और जागरूकता :** जल संरक्षण और सतत उपयोग के लिए स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है।
5. **तकनीकी नवाचार और मॉनिटरिंग :** सैटेलाइट, ळै और स्मार्ट सेंसर जैसी तकनीकों के माध्यम से जल स्तर की निगरानी और डेटा आधारित प्रबंधन किया जाना चाहिए।
6. **पर्यावरणीय संरक्षण :** वनों की कटाई रोकना, भूमि संरचना सुधारना और जलधाराओं का संरक्षण करना जल पुनर्भरण में सहायक होगा।
7. **अंतर-क्षेत्रीय सहयोग :** राज्य और जिलों के बीच जल संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और साझा प्रबंधन की नीति अपनाना दीर्घकालिक समाधान सुनिश्चित करता है।

अंततः, यदि भारत में भूमिगत जल संकट का प्रभावी समाधान खोजना है, तो यह आवश्यक है कि भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय दृष्टिकोणों को समन्वित करते हुए सतत प्रबंधन और संरक्षण की रणनीतियाँ अपनाई जाएँ। यह न केवल जल उपलब्धता सुनिश्चित करेगा, बल्कि ग्रामीण और शहरी जीवन, कृषि उत्पादन, आर्थिक स्थिरता और पर्यावरणीय संतुलन के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगा।

निष्कर्ष :

भारत में भूमिगत जल स्तर में गिरावट एक बहुआयामी और जटिल समस्या है, जिसमें भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय कारक सभी सक्रिय रूप से योगदान करते हैं। इस शोध पत्र में यह स्पष्ट हुआ कि भारत में जल संकट केवल जल उपलब्धता की समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक स्थिरता से भी जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष :

1. **भूगोलिक कारक :** भारत की विविध भौगोलिक संरचना, जलभृतों की प्रकृति और वर्षा का असमान वितरण भूमिगत जल स्तर को प्रभावित करते हैं। शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्र, प्रायद्वीपीय पठार और कुछ तटीय क्षेत्र विशेष रूप से संवेदनशील हैं।
2. **मानवीय कारक :** अनियंत्रित भूजल दोहन, गहन सिंचाई प्रणाली, शहरीकरण, औद्योगीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने जल संकट को तीव्र बनाया है। नीतिगत और प्रशासनिक कमजोरियों के कारण इन गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण नहीं हो पाया है।
3. **पर्यावरणीय कारक :** जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, भूमि उपयोग में बदलाव और वर्षा के स्वरूप में परिवर्तन ने प्राकृतिक जल चक्र को बाधित किया है। इसके परिणामस्वरूप भूमिगत जल का पुनर्भरण घट रहा है और जल गुणवत्ता पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

संदर्भ :

1. केंद्रीय भूजल बोर्ड, भारत सरकार (Central Ground Water Board, Govt. of India), "भारत में भूमिगत जल की स्थिति और दोहन की रिपोर्ट", 2023।
2. नायडू, एस., और शर्मा, आर. (2020), "भारत में जल संकट और भूमिगत जल प्रबंधन", भारतीय भूगोल पत्रिका, खंड 35, अंक 2, पृष्ठ 45–62।
3. सिंह, पी.के. (2018), "भूमिगत जल स्तर में गिरावट के कारण और समाधान", जल विज्ञान और पर्यावरणीय अध्ययन, खंड 12, पृष्ठ 78–94।
4. Ministry of Jal Shakti, भारत सरकार (2019), "राष्ट्रीय जल नीति और भूजल संरक्षण कार्यक्रम", भारत सरकार प्रकाशन।
5. मिश्रा, अ., और वर्मा, डी. (2021), "भारत में वर्षा जल संचयन और सतत कृषि", भारतीय कृषि शोध जर्नल, खंड 28, पृष्ठ 101–118।
6. राजस्थान राज्य जल बोर्ड (2022), "अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में भूमिगत जल स्तर की रिपोर्ट", जयपुर।
7. दास, ए., और रॉय, टी. (2020), "जलवायु परिवर्तन का भारत के भूजल पर प्रभाव", प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण जर्नल, खंड 14, अंक 3, पृष्ठ 56–72।
8. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), "कृषि में जल–प्रबंधन और सतत सिंचाई तकनीकें", नई दिल्ली, 2021।
9. पटनायक, एन. (2019), "शहरीकरण और भूमिगत जल संकटरू एक अध्ययन", नगर जल और पर्यावरण पत्रिका, खंड 8, पृष्ठ 33–50।
10. Environmental Planning and Coordination Organisation (EPCO), भारत, "सतत जल प्रबंधन और समुदाय आधारित संरक्षण", 2020।

Email Id : Jangalmahesh@Gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 25-26

महात्मा बुद्ध के धम्मपद

डॉ. वन्दना द्विवेदी
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।

महात्मा बुद्ध ने 'धम्मपद' में भूख को सबसे बड़ा रोग बताया है। इस बड़े रोग की दवा रोटी है। अतः रोटी (आहार) मानव की प्राथमिक आवश्यकता है। उसके बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अतः भोजन जीवन का आधार है। संसार में महामानव बुद्ध पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने रोटी को अर्थशास्त्र से जोड़ा और भोजन को मनुष्य की पहली आवश्यकता बताया।

ब्राह्मण धर्म का कर्मयोग यही था कि ब्राह्मण यज्ञ–याग करे, क्षत्रिय युद्ध करे, वैश्य व्यापार और शूद्र सेवा करे। जिसे यह कर्मयोग पसन्द न हो वह जंगल में जाकर तपश्या से आत्मबोध या आत्मज्ञान प्राप्त करे और मर जाये। उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये जिससे समाज की व्यवस्था खराब हो जाय। श्रमणसंघों में विभिन्न दर्शनों का प्रतिपादन होता था ताकि तपस्या के विषय में उनके मत एक थे। उनमें से निग्रंथों ने कर्म को विशेष–महत्व दिया। ब्राह्मण धर्म कहता है कि यह जन्म दुःखकारक है और पूर्वजन्मों के पाप कर्मों से प्राप्त होने के कारण उन पापों को नष्ट करने के लिए तपस्या करना चाहिए। लेकिन भगवान बुद्ध तपस्या का निषेध करते थे। अतः उन्हें निग्रंथों ने अक्रियवादी कहा है। बुद्ध ने शस्त्र त्याग किया था इसलिए ब्राह्मणों की दष्टि से वे अक्रियवादी हो गये और तपस्या का त्याग करने से तपस्यों की दृष्टि से वे अक्रियवादी हो गये।

भगवान् बुद्ध के मुख्य विचार उपनिषदों से लिया गया है। उनके अनुसार हमारी बुद्धि सविकल्प और सापेक्ष होने के कारण तत्व को ग्रहण नहीं कर सकती है। तत्व वाङ्मानस अगोचर है। वह निर्विकल्प, निरपेक्ष, गम्भीर, शान्त, आनन्दकर तथा विशुद्ध विज्ञानरूप है जिसे बोधि या प्रज्ञा कह सकते है। वह अपनी अनुभूति का विषय है, तर्क का नहीं। संसार दुःख रूप है और इसकी अपनी अविद्या है। परमानन्द की प्राप्ति के लिए सम्यक् सम्बोधि द्वारा तत्व साक्षात्कार करने के अलावा अन्य कोई मार्ग नहीं। संसार क्षणिक है और तत्व अजर, अमर, शाश्वत और अनन्त है। परमार्थ तत्व संसार का अधिष्ठान है। ज्ञाता ज्ञेय–ज्ञान की व्यवहारिक त्रिपुटी को पार करके निर्विकल्प विज्ञान या स्वानुभूति द्वारा अद्वैत परमार्थ का साक्षात्कार करने से ही संसार दुःख से निवृत्ति हो जाती है। सांसारिकजन अन्धकार में भटक रहा है। उन्हें ज्ञान–दीप की आवश्यकता है और भगवान बुद्ध ने उपनिषदों से लेकर यह ज्ञानदीप मानवता को उत्तराधिकार में दिया है। वह स्वयं कहते हैं 'आत्मदीपोभव'।

बौद्ध दर्शन अपने नैरात्मवाद द्वारा विशुद्ध विज्ञान–स्वरूप वास्तविक आत्मतत्व का निराकरण नहीं करता है। आत्मा को बौद्ध दर्शन अधिकतर जीवात्मा या अहंकार के अर्थ में लेता है जो अनादि अविद्या, माया या वासना का कार्य है। विशुद्ध आत्मा की सत्ता महायानी बौद्धों ने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से स्वीकार किया है। वे इसे आत्मा

न कहकर बोधि, प्रज्ञा, चित्त, बोधिचित्त, तत्वविज्ञान, विज्ञति, विज्ञानमात्र, विज्ञप्ति मात्र, चित्तमात्र, तथागतगर्भ, धर्मधातु, धर्मकाय, बुद्धकाय कहना पसन्द करते हैं। अश्वघोष इसे आत्मा भी कहते है। असंग इसे शुद्धात्मा, महात्मा और परमात्मा कहते हैं। शान्तिरक्षित इसे विशुद्धात्मा तक कहा है।

उपनिषद् सदा आत्मा को परमार्थसत् या परमतत्व मानते रहे है। यही परब्रह्म है। यही विशुद्ध विज्ञान है। यही सच्चिदानन्द है। भगवान बुद्ध ने इस तत्व को प्रज्ञा या बोधि या ज्ञान कहा है। आत्मसाक्षात्कार होने के कारण भगवान बुद्ध को सम्यक् बुद्ध कहते हैं। भगवान बुद्ध ने आत्मा को अहंकार और ममत्व के कारण केवल जीवात्मा मान लिया है। वे सदा आत्मा का अर्थ अविद्याजन्य, संसारबद्ध अहंकारी जीव ही समझते रहें। इसलिए वे इसे केवल मूर्खों की कल्पना कहते रहे। दीघनिकाय में भगवान बुद्ध ने आत्मप्रेम को उस मूर्ख प्रेमी के प्रेम के समान बतलाया है जो शहर के सबसे सुन्दर स्त्री को प्रेम करता है किन्तु अपनी कल्पित प्रेमिका की स्थिति, निवास, रूप, रंग, अवस्था, कद, जाति, धर्म आदि के विषय में कुछ नहीं जानता है।

गौतम बुद्ध स्वयं ज्ञानी होते हुए भी ज्ञान का संग्रह का प्रतिपादन किया। संसार का अर्थ भवचक्र या आवागमन है। यह क्षणिक और दुरूखमय है। अविद्या संसार की जननी है और सब दुःखों का मूल कारण है। निर्वाण या मुक्ति का अर्थ इस भवचक्र से, इस आवागमन के चक्र से, इस प्रतीत्यसमुत्पाद के चक्र से मुक्त होना है। यह मुक्ति तभी हो सकती है जब संसार के मूल कारण अविद्या का नाश हो और अविद्या का नाश केवल विद्या या ज्ञान द्वारा ही संभव है। अतः ज्ञान ही सबसे श्रेष्ठ एवं पवित्र वस्तु है। बुद्ध शब्द का अर्थ ही ज्ञानवान है। भगवान बुद्ध ने लिखा है कि ''हे भिक्षुगण, जिस प्रकार लोग सोने की अग्नि में तपाकर, कसौटी में कसकर और अच्छी तरह ठोक–पीटकर पूर्ण परीक्षा करने के बाद उसे खरा मानते हैं, उसी प्रकार आप लोग मेरे वचनों को ज्ञानाग्नि में तपाकर, बुद्धिरूपी कसौटी में कसकर तथा उनकी हर प्रकार पूर्ण परीक्षा करके ही उन्हें ग्रहण करना, केवल मेरे प्रति आदर और श्रद्धा के कारण ही उन्हें सत्य मत मानना।

भगवान बुद्ध के अनुसार ज्ञान की तीन श्रेणियाँ है। प्रथम और सबसे नीचे श्रेणी पर ज्ञान को दृष्टि कहा जाता है। यह साधारण ज्ञान है। जब वह ज्ञान साधारण श्रेणी से ऊँचा उठता है और द्वितीय श्रेणी पर पहुँचता है तो इसे तर्क वितर्क या विचार कहते है। यह ज्ञान वैज्ञानिक और दार्शनिक है। तृतीय श्रेणी में जाकर ज्ञान सर्वोच्च तथा पूर्ण विकसित हो जाता है। यह अत्यन्त विशुद्ध स्वप्रकाश पूर्ण ज्ञान प्रज्ञा या बोधि कहलाता है। यही सत्य और परमतत्व है। यही तर्क को सविकल्प और सापेक्ष सीमा को लांघ या पार कर चमकनें वाला निर्विकल्प और निरपेक्ष ज्ञान हैं बुद्ध इसे गम्भीर, शान्त, तर्कातीत और स्वतरू सिद्ध कहते हैं।

संदर्भ :

1. वही।
2. धर्मानन्द कोसम्बी, भगवान बुद्ध, जीवन और दर्शन, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015, पृ0 145
3. चन्द्रधर शर्मा, बौद्ध दर्शन और वेदान्त, स्टूडेण्ट्स फ्रेण्डस, इलाहाबाद, 2014, पृ 209
4. सांकृत्यायन राहुल, दर्शन–दिग्दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद, 1961, पृ0 14, 52
5. चन्द्रधर शर्मा, बौद्ध दर्शन और वेदान्त, स्टूडेण्ट्स फ्रेण्डस, इलाहाबाद, 2014, पृ 216
6. वही, पृ0 15
7. विनयपिटक, अनुवाद रीज डेविड्स आक्सफोर्ड, 1881–85, हिन्दी अनुवाद, राहुल सांकृत्यायन, सारनाथ, 1935, पृ0 5

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 27–32

जया जादवानी के उपन्यासों में एलजीबीटी की समस्याएं

मनीषा कुमारी
शोधार्थी हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल (शिमला)

शोध सार :

इस समुदाय का इतिहास मानव समाज में उतना ही प्राचीन है जितना कि मानव का स्वयं का अस्तित्व। मानव समाज में सदियों से विभिन्न प्रकार से अपना योगदान देते रहे इस समुदाय के अस्तित्व पर समय–समय पर प्रश्न उठाए जाते रहे हैं। एलजीबीटी शब्द को सामान्य अर्थों में ऐसे समुदाय के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपनी शारीरिक पहचान के लिए समाज में संघर्षरत रहे हैं। इसे क्वीर शब्द के अंतर्गत भी रखा जाता है जो लेसबियन, गे, बाइसेक्सुअल, ट्रान्सजेंडर का प्रतिनिधित्व करता है। यह समुदाय समाज में अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत होते हुए परिवार एवं समाज में अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करता है। इस समुदाय के व्यक्ति को अपनी शारीरिक पहचान के कारण अनेक ऐसे पड़ावों से गुजरना पड़ता है जहां वह अकेलेपन, निराशा, अवसाद, शारीरिक शोषण का शिकार होता है। इन्हीं समस्याओं को लेखिका जया जादवानी ने अपने साहित्य के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। जया जादवानी आधुनिक समय में हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका हैं और इन्होंने अनेक उपन्यास तथा कहानी संग्रहों की रचना की है। इनका साहित्य मानव समाज के विभिन्न पक्षों के सत्य को उद्घाटित करता है एवं समाज में मनुष्य के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण का यथार्थ स्पष्ट करता है। मानव समाज के विभिन्न पहलुओं को अपने साहित्य में स्थान देते हुए इन्होंने एलजीबीटी समुदाय के संघर्ष को अपने उपन्यासों में स्थान दिया। इनके उपन्यास इस समुदाय के संघर्ष, पीड़ा, अवसाद, शारीरिक शोषण, अस्तित्व की पहचान तथा इस समुदाय के उत्थान के संघर्ष के साक्षी कहे जा सकते हैं।

बीजशब्द : एलजीबीटी, अवसाद, निराशा, समाज, दृष्टिकोण, अकेलापन, अस्तित्व, शोषण।

प्रस्तावना :

जया जादवानी का जन्म मध्य प्रदेश के रीवा क्षेत्र में 1959 में हुआ था और यह अपने माता–पिता की पहली जीवित संतान रही। इनसे पहले इनके अनेक भाई–बहन पैदा हुए लेकिन पैदा होते ही किसी कारणवश उनकी मृत्यु हो गयी। इनका जन्म इनके परिवार में खुशियाँ लेकर आया तथा पहली जीवित संतान होने के कारण इन्हें बचपन से ही परिवार का स्नेह प्राप्त रहा। परिवार में पिताजी की पढ़ाई में रुचि होने के कारण इनको बचपन से ही उपन्यास आदि पढ़ने का अवसर मिला और इन्हें अध्ययन में रुचि होने लगी। अपने स्कूल जाने के दिनों में इन्होंने काफी सारी किताबें पढ़ डाली तथा आठवीं कक्षा तक इन्हें कविता लिखने के विषय में कुछ–कुछ ज्ञान हो जाता है। स्कूल के बाद इनके परिवार द्वारा इनका विवाह करवाया जाता है और ये अपने ससुराल चली जाती

हैं। ये अपनी पढ़ाई जारी रखती हैं तथा हिन्दी एवं मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करती हैं। इन्होंने अनेक कहानी–संग्रहों, उपन्यासों और काव्य संग्रहों की रचना की तथा इनके माध्यम से मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को नयेपन से देखने, समझने का नवीन दृष्टिकोण स्थापित करने का प्रयास किया। एलजीबीटी समुदाय समाज में व्यक्ति को व्यक्ति की दृष्टि से देखने का पक्षधर है एवं अपने समुदाय के हितों के लिए कार्यरत है। इसका महत्व इस बात से स्पष्ट होता है कि इस समुदाय में विभिन्न शारीरिक संरचना के व्यक्ति होने के बाद भी ये व्यक्ति एक–दूसरे की पीड़ा, अनुभवों और संघर्ष से परिचित हैं। परिवार, दोस्तों, समाज द्वारा विरोध का यह सब समान रूप से शिकार होते हैं तथा अपनी पहचान को उजागर करने में भी अनेकों बार इन्हें भय महसूस होता है, क्योंकि ये जानते हैं कि यह समाज इन्हें आसानी से अपना जीवन जीने की स्वीकृति नहीं देगा। यह भय इन्हें अकेलेपन, कुंठा एवं हीनताबोध की बेड़ियों से जकड़े रखता है जिसका निवारण कभी हो पाता है तथा कभी पूरा जीवन नहीं भी हो पाता। जया जादवानी के उपन्यासों में इस समुदाय के जीवन, समस्याओं एवं संघर्षों को उजागर करने के प्रयास लेखिका द्वारा किए गए हैं। समलैंगिक संबंधों के अतिरिक्त ट्रांसजेंडर, बाइसेक्सुअल संबंधों तथा वर्तमान समाज में उनकी स्थिति इनके साहित्य में दृष्टव्य है। इनके उपन्यास एलजीबीटी समुदाय के जीवनपर्यंत चलने वाले संघर्षों एवं उनकी पीड़ा को अपना विषय बनाते हैं और परिवार तथा समाज में इनके अधिकारों, सम्मान की मांग करते हैं।

साहित्य का सर्वेक्षण

समीक्षात्मक ग्रंथ/पुस्तकें :

'किन्नर केंद्रित साहित्य' पुस्तक की लेखिका डॉ० वंदना शर्मा हैं। शुभम पब्लिकेशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित यह इस पुस्तक का पहला संस्करण है। इसमें किन्नर समाज के जीवन, समस्याओं एवं उनकी पीड़ा को लेखिका ने उजागर करने का प्रयास किया है और किन्नर जीवन से संबंधित चयनित उपन्यासों तथा कहानियों की समीक्षा की है। 'क्वीर विमर्श' पुस्तक एलजीबीटी समुदाय के तमाम संघर्षों, समस्याओं एवं पीड़ाओं के यथार्थ की पुष्टि करती है। वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली द्वारा 2021 में प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है, इसकी लेखिका के० वनजा हाशिये के समाज के प्रति अपनी संवेदना अपनी रचना के माध्यम से व्यक्त करती हैं। यह पुस्तक मानव समाज के खोखले आदर्शों एवं कड़वी सत्यता से पाठक को रूबरू करवाती है। लेखिका शीला डागा की पुस्तक 'किन्नर गाथा' समलैंगिक विमर्श पर आधारित मुख्य कृति है। वाणी प्रकाशन द्वारा 2020 में प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है जिसमें लेखिका द्वारा समाज के अपरिचित वर्ग की व्यथा को अपने लेखन का आधार बनाया है। यहां किन्नर जीवन, समाज, संस्कृति एवं अधिकारों को मुख्य विषय बनाया गया है। 'जिंदगी एक जंजीर' पुस्तक के लेखक राकेश शंकर भारती हैं तथा डायमंड पॉकेट बुक्स द्वारा 2022 में प्रकाशित यह इस पुस्तक का संस्करण है। यह पुस्तक एलजीबीटी समुदाय के संबंधों, सामाजिक तथा पारिवारिक स्थिति, उनकी समस्याओं को अपना आधार बनाती है। 'देह कुठरिया' जया जादवानी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जिसमें एलजीबीटी समुदाय को लेखिका ने मुख्य रूप से स्थान दिया है। सेतु प्रकाशन द्वारा 2021 में प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। जया जादवानी का उपन्यास 'खरगोश' इस समुदाय से संबंधित महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस पुस्तक में लेखिका समलैंगिकता के प्रति समाज के दृष्टिकोण का मूल्यांकन करती हैं। 'काया' जया जादवानी का यह उपन्यास हाशिये के समाज की व्यथाओं एवं समस्याओं के

विषय को उजागर करने का कार्य करता है। समलैंगिक जीवन के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों के साथ आधुनिक समाज में मनुष्य के खोखलेपन की पुष्टि करता है।

इस शोध आलेख में विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। इसमें विषय से संबंधित व्याख्याओं, तथ्यों एवं समस्याओं का आकलन तथा विश्लेषण किया गया है।

प्राथमिक स्रोत : जया जादवानी के उपन्यास

द्वीतीयक स्रोत : समीक्षात्मक पुस्तकें

आकलन :

हिंदी साहित्य मानव समाज में मानव द्वारा एक–दूसरे के साथ किए जाने वाले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक उत्पीड़न एवं सद्भाव के विभिन्न पक्षों को व्यक्त करने का प्रयास करता है। मानव समाज में किसी भी प्रकार की दुर्बलता से ग्रसित मनुष्य को समाज द्वारा अनेक प्रकार से प्रताड़ित किया जाता है। इस विषय में के. वनजा अपनी पुस्तक के माध्यम से कहती हैं, "मनुष्य अपने से संख्या और शक्ति में दुर्बल लोगों के प्रति दमन का मनोभाव दिखाते हैं। मनुष्य में पुरुष अपना आधिपत्य कायिक और आर्थिक दृष्टि से स्त्रियों पर जामाता है। शक्तिशाली का तंत्र है दबाव। धर्म, जाति, वंश, लिंग, जेंडर, वर्ग आदि पर केन्द्रित नजरिया मनुष्य को उच्च–निम्न में बांटने का है। यह अधिकार और धन शक्ति का, प्रभुत्व कामना का निशान है। वैसे कई जीव और मनुष्य हाशिये की ओर धकेले जाते हैं। उनको अपनी पहचान एवं सामाजिक स्वीकृति के लिए लड़ना पड़ता है।"[1] मनुष्य धर्म, जाति, वंश, लिंग, वर्ग आदि के आधार पर भिन्नताओं से घिरा रहता है तथा इन भिन्नताओं के आधार पर हाशिये के समाज को प्रताड़ित करने का प्रयास करता है। इस समुदाय के व्यक्तियों को अपनी शारीरिक एवं मानसिक बनावट के कारण आजीविका की तलाश में दर–दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। इन्हें इनकी पहचान उजागर होने के बाद कई लोग काम नहीं देना चाहते जिस कारण इन्हें भीख मांगकर अपना निर्वहन करना पड़ता है। ऐसे में कभी हाथापाई और गाली–गलौच से गुजरना इनके लिए सामान्य सा हो जाता है।

प्रदीप सौरभ अपने उपन्यास 'तीसरी ताली' की पात्र मंजु के माध्यम से कहते हैं, "हमारे बुजुर्ग बताते हैं कि जब भगवान राम रावण को मारकर अयोध्या लौटे, तो वहां बड़ा भारी जश्न हुआ। रातभर नाच–गाना चला। काफी रात बीतने के बाद भगवान राम ने कहा कि अब सभी नर–नारी अपने घर को जाएं। भगवान राम ने ये आदेश नर और नारियों को दिया था। लिहाजा जो नर या नारी नहीं थे वे वहीं रह गए।"[2] भगवान राम ने जब यह देखा कि ये तीसरे समुदाय के लोग हैं जो वहां रुके हैं तब उन्होंने उन्हें नाच–गाने का वरदान दे दिया। 'मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी' उपन्यास के माध्यम से लखिका कहती हैं, "हिजड़ा मूल उर्दू शब्द है। वो भी 'हिजर' इस अरेबिक शब्द से आया हुआ। मतलब स्त्री–पुरुषों के हमेशा के समाज से बाहर निकलकर स्वतंत्र समाज बनाकर रहने वाला।"[3] इस समुदाय के विषय में एक बात तो स्पष्ट है कि यह समुदाय मानव समाज से भिन्न अपने समाज का निर्माण करता है। इस समुदाय के व्यक्ति स्वयं के अस्तित्त्व एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत अपने लिए बेहतर भविष्य का निर्माण की कामना करते हैं। 'यमदीप' उपन्यास के माध्यम से इस समुदाय के व्यक्ति के प्रति समाज की सोच को लेखिका प्रकट करती हुई कहती हैं, "वो देखो हिजड़ा, मेरी मम्मी कहती है कि इनके पास मत जाना, नहीं तो पकड़ ले जाएंगे।"[4] मानव समाज इस समुदाय के प्रति गहरी घृणा एवं सौतेलेपन के व्यवहार

से ग्रसित है। बच्चों को बचपन से सिखाया जाता है कि ये समुदाय मनुष्य से भिन्न है और वे अपने जीवन में उन्हीं बातों के अनुसरण को सही समझते हैं। महेन्द्र भीष्म उपन्यास 'किन्नर कथा' के माध्यम से कहते हैं, "असली हिजड़ों की तुलना में नकली हिजड़ों की तादाद बढ़ती जा रही है। हुजूर वे सब मर्द हैं, कई एक तो बाल–बच्चेदार हैं।"[5] मनुष्य इस समुदाय की स्थिति का अपनी परिस्थिति के अनुसार फायदा उठाता रहा है।

इस समाज के व्यक्तियों को बचपन से ही अपनी शारीरिक एवं मानसिक बनावट के कारण अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता है। इस संबंध में डॉ वंदना शर्मा कहती हैं, "ट्रांसजेंडर लोक जीवन से तिरस्कृत और निर्मम अत्याचारों के शिकार हैं। इसलिए वे अपनी जगहों से पलायन कर अपने वर्ग के लोगों के साथ समूह बनाकर जीते हैं जैसे–भारत में बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली जैसी मेट्रो सिटी में पहुँच जाते हैं। इन शहरों के नजदीकी प्रान्तों में एक साथ रहते हैं।"[6] लेखिका ट्रांसजेंडर के जीवन और समस्याओं का बारीकी से अवलोकन करती हैं इनके अनुसार इनका जीवन अनेक प्रकार से संघर्षों से घिरा रहता है। परिवार में जहां इनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है वहीं समाज में इन्हें अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। घरवाले इन्हें अपनाना नहीं चाहते और समाज इन्हें जीने नहीं देता, अपनी स्थिति को समझते हुए ये समूहों में रहना आरंभ करते हैं। लेखिका शीला डागा अपनी पुस्तक किन्नर गाथा के माध्यम से कहती हैं, "ट्रांसजेंडर के विषय में यह बात ध्यान देने योग्य है कि इनकी मानसिकता में जीना आसान तो नहीं ही होता, कहना तो यह चाहिए कि बेहद मुश्किलों भरा होता है। बड़ी जटिल प्रक्रिया है यह इनके जीवन के साथ शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक आदि अनेक प्रश्न जुड़े होते हैं, जिनका समाधान आसान नहीं होता।"[7] इस प्रकार का जीवन जीना किसी भी मनुष्य के लिए आसान नहीं होता एवं विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए समाज में जीवनयापन करना किसी दुष्कर कार्य से कम नहीं है जिससे इस समाज के व्यक्तियों को गुजरना पड़ता है।

शीला डागा कहती हैं, "हिजड़ों की सबसे बड़ी समस्या पेट भरने की होती है। जब यह समस्या सामने आई तो इन्होंने भीख मांगना एवं इधर–उधर जाकर नाचना–गाना शुरू कर दिया। शहर, गलियों, मुहल्लों में बच्चे के जन्मदिन, परिवारों में विवाह जैसे शुभ अवसरों पर नाचने–गाने के बाद कुछ मेहनताना भी मांगने लगे। त्योहारों पर दुकान से कुछ पैसे भी इकट्ठे करते। धीरे–धीरे यह परंपरा बन गई कि इन मांगलिक अवसरों पर हिजड़े उपस्थित होंगे।"[8] परिवार द्वारा नकारे जाने के बाद इनके पास अपनी आजीविका के लिए कुछ रास्ते शेष रहते हैं लेकिन कहीं काम न मिलने की स्थिति में ये भीख मांगना, शुभ अवसरों पर नाच–गा कर अपने लिए पैसे जुटाने के अवसर तलाशते हैं। राकेश शंकर भारती के शब्दों में, "यह समाज का ऐसा तीसरा वर्ग है जिसे जन्म से लेकर मृत्युपरांत आजीवन अभिशप्त जीवन निर्वहन करने पर मजबूर होना पड़ता है। अपमान और धिक्कार की जिंदगी जीते इस वर्ग का ऐसे जन्म लेना पाप समझा जाता है। नियति क्यों इन पर इतनी क्रूर हो जाती है कि इन्हें न स्त्री न पुरुष बीच का समझा जाता है।"[9] जब किसी व्यक्ति को अपने शरीर या मानसिक बनावट के आधार पर स्वयं की भिन्नता का आभास होता है वहीं से उसका संघर्ष आरंभ हो जाता है। मानव समाज ऐसे किसी व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकारी नहीं समझता और समय–समय पर उसे एवं उसकी भावनाओं को कुचलने का कार्य करता है। इस समुदाय से संबंध रखने वाला कोई व्यक्ति जब स्वयं को भिन्न शारीरिक संरचना में पाता है और अपनी भावनाओं एवं मानसिक बनावट के अनुसार शरीर को बदलने की इच्छा रखता है तो यह उसके लिए किसी चुनौती से कम नहीं होता।

जया जादवानी के उपन्यासों में एलजीबीटी समुदाय के यथार्थ को उजागर करने का कार्य किया गया है। 'खरगोश' उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने समलैंगिक संबंधों के धरातल पर उतरकर इनकी समस्याओं एवं संबंधों की सत्यता को उजागर किया है। उपन्यास की पात्र मालिनी अपनी दोस्त काया के विषय में कहती है, "कभी वह कहती थी, वह अपने घरवालों को धोखा नहीं दे सकती। उनको नहीं छोड़ सकती, पर उसकी हरकतें ऐसी नहीं थी। वह दिन भर मुझसे यही कहती थी, हम ऐसे जिएंगे, वैसे जिएंगे।"[10] उपन्यास की पात्र मालिनी जब भी अपनी दोस्त काया से अपने संबंधों को लेकर बात करती है काया को अपने परिवार से अलग होने का भय सताने लगता है। वह जानती है कि उसका परिवार समलैंगिक संबंधों को नहीं समझता और उसे मालिनी के साथ रहने के लिए अपने परिवार से अलग होना पड़ेगा जो वह नहीं करना चाहती। काया अपने और मालिनी के संबंधों के विषय में जब अपनी मां को बताती है तो वह कहती हैं, "मुझे लगता तो था कि तू किसी गलत रास्ते पर है पर तू इतनी दूर चली जाएगी मैंने सोचा भी नहीं था। तेरे को अगर कोई गलतफहमी है तो दूर कर ले। अपने पापा को नहीं जानती। फौज से रिटायर हुए हैं पर जीते उसी तरह से हैं। तुझे मरवाकर फिंकवा देंगे, तो किसी को पता तक नहीं चलेगा। तू तो जाएगी ही, मैं भी जाऊँगी। वह इतनी आतंकित हो गयी कि रो भी नहीं पा रही थी।"[11] काया की मां को जैसे ही उसके समलैंगिक होने का पता चलता है वह उसे उसके पापा के विषय में सोचने के लिए कहती है कि उसके पापा यह सब स्वीकार नहीं करेंगे। वह काया को धमकी देती हैं कि उसके समलैंगिक होने की बात यदि उसके पिता तक पहुंची तो वह उसे मार देंगे।

उपन्यास 'देह कुठरिया' के माध्यम से जया जादवानी ने एलजीबीटी समुदाय में व्याप्त भिक्षावृत्ति की समस्या को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस समुदाय के अनेक व्यक्ति काम न मिलने पर या शिक्षा के अभाव में भिक्षावृत्ति कि ओर बढ़ते हैं, "रायपुर में अभी भी बहुत सारे ट्रांसजेंडर ऐसे होंगे जो ट्रेन में पैसा मांगते हैं और बधाई का काम करते हैं। रायपुर में कई ग्रुप हैं जो गुरु–चेला परंपरा से आते हैं, उनमें से नयी पीढ़ी बाहर आना चाहती है। हमारे कहने पर उन्होंने गुरु–चेला परंपरा को छोड़ भी दिया पर एक–दो साल बाद जब बदलाव नहीं आया तो वे वापस उसी परंपरा में चले गए।"[12] उपन्यास में इस समुदाय की समस्याओं के साथ इनके अधिकारों के संरक्षण के लिए समुदाय के सदस्यों द्वारा समिति का निर्माण किया जाता है। उपन्यास में एलजीबीटी समुदाय के व्यक्ति को आजीविका के लिए किस प्रकार संघर्ष तथा भेदभाव का सामना करना पड़ता है इसका उदाहरण स्पष्ट है, "थोड़े पैसे इकट्ठे हो गए तो उसने एरिना ज्वाइन कर लिया। स्टेशन के बाथरूम में अच्छी तरह नहा–धोकर वह एरिना जाता और फिर वहां से जॉब सर्चिंग में। कुछ लोग उसे नेपाली समझकर रख भी लेते पर जैसे ही पता चलता ट्रांसजेंडर है तो उसकी जरूरत खत्म हो जाती।"[13] घर से भाग जाने के बाद उपन्यास की ट्रांसजेंडर पात्र शैली राय नौकरी करती है जैसे ही उसकी पहचान वहां उजागर होती लोग उसे काम देने से मना कर देते। ऐसी स्थिति में उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता। उपन्यास का पात्र शरण कहता है, "कोई हमारे साथ न बैठना चाहता है न खड़े होना...हमें बस अभिशाप समझा जाता है। न हम पढ़ सकते हैं, न कोई काम कर सकते हैं, न किसी से प्रेम कर सकते हैं। हम अपनी ही आँखों से इतना गिर गए हैं कि अपनी तरफ देखने से भी डर लगता है...हम क्यों जी रहे हैं समझ नहीं पाते, बस जी रहे हैं एक आदत की तरह।"[14] समाज में जिस प्रकार के भेदभाव एवं कटाक्ष से इस समुदाय के व्यक्ति को गुजरना पड़ता है वह इन्हें अत्यधिक पीड़ा देता है। इन्हें समाज द्वारा अलग–थलग किया जाना इनके संघर्षों को अधिक बढ़ाता है और इन्हें मानसिक रूप से

क्षत–विक्षत करता है। काया उपन्यास की पात्र कहती है, "इस मामले में सबके पेरामीटर अलग हैं। शुरू में हम जैसी लड़कियां यही प्रिफर करती हैं कि वे लड़कियों के साथ ही रहे पर फिर सोशल फियर आ जाता है, फेमिली आ जाती है, तमाम तरह के डर आ जाते हैं और वे टूट जाती हैं।"[15] समाज का दबाव परिवार एवं इनके सगे–संबंधियों को इनसे भिन्न व्यवहार करने पर मजबूर करता है। डॉ अनु मेहता कहती हैं, "बालपन सुखद स्मृतियों की विरासत न देकर उन्हें अनकहे दर्द का वारिस बनाकर असमय ही विदा ले लेता है। उसकी युवावस्था उसे सुंदर सपनों को देखने या कुछ कर गुजरने की मोहलत न देकर सिर्फ ताली पीटकर नजराना पाने की मजबूरी का रूप ले लेती है।"[16] अपने परिवार तथा समाज के भय के कारण इस समुदाय के व्यक्ति आमतौर पर अपनी पहचान को उजागर नहीं करते यदि ऐसा हो जाए तो इनके लिए चुनौतियां अधिक हो जाती हैं।

निष्कर्ष :

जया जादवानी के उपन्यास एलजीबीटी समुदाय के संघर्षों, इनके मानसिक, शारीरिक शोषण और इनके हितों का आकलन करते हैं। ये इस समुदाय के प्रति समाज में व्याप्त नकारात्मकता एवं दुर्भावना की स्थितियों को स्पष्टता के साथ व्यक्त करते हैं। जीवनपर्यंत चलने वाले इस समुदाय के संघर्षों को लेखिका अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाती हैं एवं इनकी समस्याओं को अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। इनके संबंधों में चलने वाले संघर्ष, अकेलेपन एवं द्वंद्व की स्थितियों में जीवन जीने के अनुभव लेखिका के साहित्य को नया आयाम देते हैं। इस समुदाय के साथ मानव समाज द्वारा किए जाने वाले भेदभावपूर्ण व्यवहार के कारण इन्हें शारीरिक और मानसिक स्तर पर अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। यह समुदाय अपने साथ होने वाले अत्याचारों के खिलाफ एवं अपने हितों की रक्षा के लिए वर्तमान समय में संघर्षरत है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची :

1. के वनजा, क्वीर विमर्श, पृ. 13
2. प्रदीप सौरभ, तीसरी ताली, पृ. 165
3. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी, 157
4. नीरजा माधव, यमदीप, पृ. 49
5. महेन्द्र भीष्म, किन्नर कथा, पृ. 16
6. वंदना शर्मा, किन्नर केन्द्रित साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ. 229
7. शीला डागा, किन्नर गाथा, पृ. 24, 39
8. राकेश शंकर भारती, जिंदगी एक जंजीर, पृ. 15
9. जया जादवानी, खरगोश, 15, 45
10. जया जादवानी, देह कुठरिया, पृ. 180
11. जया जादवानी, काया, पृ. 18, 22
12. डॉ. दिलीप मेहरा, हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन, पृ. 44

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 33–37

शारीरिक शिक्षा के लाभ : महाविद्यालयीन छात्रों के संदर्भ में एक अकादमिक विवेचन

मदन मोहन मिश्रा
शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा)
सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, पूर्वी सिंहभूम।

भूमिका :

आधुनिक शिक्षा दर्शन में शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न मानकर मानव के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। इस सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक पक्षों का संतुलित समावेश आवश्यक माना गया है। महाविद्यालयीन स्तर वह अवस्था है जहाँ छात्र न केवल उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं, बल्कि उनका व्यक्तित्व, जीवन–दृष्टि तथा सामाजिक उत्तरदायित्व भी आकार लेता है। ऐसे में शारीरिक शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

बीज शब्द – शारीरिक शिक्षा, शारीरिक गतिविधियाँ, शारीरिक निष्क्रियता, शारीरिक परिपक्वता।

वर्तमान समय में तीव्र शहरीकरण, तकनीकी निर्भरता एवं निष्क्रिय जीवनशैली के कारण युवाओं में शारीरिक निष्क्रियता, मानसिक तनाव तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस तथ्य को स्वीकार करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगारोन्मुखी ज्ञान नहीं, बल्कि स्वस्थ, सक्षम एवं संतुलित नागरिकों का निर्माण है। इसी परिप्रेक्ष्य में शारीरिक शिक्षा को उच्च शिक्षा में एक अनिवार्य एवं मूलभूत घटक के रूप में देखा जाना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालयीन छात्रों के लिए शारीरिक शिक्षा के बहुआयामी लाभों का अकादमिक दृष्टिकोण से विश्लेषण किया गया है।

अध्याय 1 : शारीरिक विकास में शारीरिक शिक्षा की सैद्धांतिक भूमिका :

शारीरिक शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव शरीर के संरचनात्मक एवं क्रियात्मक विकास को सुदृढ़ करना है। महाविद्यालयीन अवस्था शारीरिक परिपक्वता की वह अवस्था है, जिसमें शरीर की कार्यक्षमता अपने उच्चतम स्तर की ओर अग्रसर होती है। इस अवस्था में नियमित व्यायाम, खेल गतिविधियाँ, योग एवं प्राणायाम शरीर के विभिन्न तंत्रों – जैसे मांसपेशीय तंत्र, अस्थि तंत्र, श्वसन तंत्र तथा परिसंचरण तंत्र को सशक्त बनाते हैं।

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि नियमित शारीरिक गतिविधियाँ हृदय–स्वास्थ्य में सुधार करती हैं तथा चयापचय संबंधी विकारों की संभावना को कम करती हैं। महाविद्यालयीन छात्रों में मोटापा, शारीरिक जड़ता तथा जीवनशैली से संबंधित रोगों की बढ़ती प्रवृत्ति इस बात को रेखांकित करती है कि शारीरिक शिक्षा

अब केवल वैकल्पिक विषय नहीं रह सकती। शारीरिक रूप से स्वस्थ छात्र न केवल अधिक ऊर्जावान होते हैं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता एवं सहनशक्ति भी अधिक होती है।

इस प्रकार शारीरिक शिक्षा छात्रों के शारीरिक विकास की आधारशिला रखती है और उन्हें एक सक्रिय एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

आधुनिक खेल विज्ञान के अनुसार शारीरिक शिक्षा शरीर की जैविक दक्षता को बढ़ाने के साथ–साथ उसकी कार्यात्मक क्षमता को भी सुदृढ़ बनाती है। नियमित प्रशिक्षण से स्नायु–तंत्र की सक्रियता बढ़ती है, जिससे शरीर विभिन्न परिस्थितियों में शीघ्र अनुकूलन करने में सक्षम होता है। महाविद्यालयीन छात्रों के संदर्भ में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस आयु वर्ग में शारीरिक आदतें दीर्घकालिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं।

इसके अतिरिक्त, शारीरिक शिक्षा छात्रों को अपने शरीर के प्रति जागरूक बनाती है। वे अपने शारीरिक सामर्थ्य, सीमाओं एवं आवश्यकताओं को समझने लगते हैं, जिससे वे एक संतुलित एवं जिम्मेदार जीवनशैली अपनाने की ओर अग्रसर होते हैं।

अध्याय 2 : मानसिक स्वास्थ्य एवं संज्ञानात्मक विकास में शारीरिक शिक्षा का योगदान :

शारीरिक शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित किया जा चुका है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार नियमित शारीरिक गतिविधियाँ तनाव, चिंता तथा अवसाद को कम करने में सहायक सिद्ध होती हैं। महाविद्यालयीन छात्र शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा, भविष्य की अनिश्चितता तथा सामाजिक दबावों के कारण मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं। इस संदर्भ में शारीरिक शिक्षा एक प्रभावी उपचारात्मक एवं निवारक साधन के रूप में कार्य करती है।

व्यायाम के दौरान शरीर में एंडॉर्फिन तथा सेरोटोनिन जैसे न्यूरो–रासायनिक तत्वों का स्राव होता है, जो सकारात्मक मानसिक अवस्था को प्रोत्साहित करते हैं। इससे छात्रों में आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता तथा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होता है। इसके अतिरिक्त, नियमित शारीरिक गतिविधियाँ मस्तिष्क में रक्त संचार को बढघती हैं, जिससे एकाग्रता, स्मरण शक्ति एवं समस्या–समाधान क्षमता में वृद्धि होती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा न केवल मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती है, बल्कि छात्रों की बौद्धिक क्षमता को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

वर्तमान समय में मानसिक स्वास्थ्य को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाने लगा है। शोध यह संकेत देते हैं कि शारीरिक गतिविधियों में संलग्न छात्रों में आत्म–तनाव प्रबंधन की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। वे नकारात्मक परिस्थितियों का सामना अधिक धैर्य एवं संतुलन के साथ कर पाते हैं।

इसके साथ ही, शारीरिक शिक्षा छात्रों को भावनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर भी प्रदान करती है। खेल एवं व्यायाम के माध्यम से वे अपनी कुंठाओं, तनाव एवं दवाब को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित कर पाते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है।

अध्याय 3 : अनुशासन, आत्म-नियंत्रण एवं समय प्रबंधन का विकास :

शारीरिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों में अनुशासन एवं आत्म–नियंत्रण की भावना विकसित करना है। खेल एवं शारीरिक गतिविधियाँ नियमबद्ध होती हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक प्रतिभागी के लिए आवश्यक होता है। महाविद्यालयीन जीवन में प्राप्त स्वतंत्रता के साथ अनुशासन का महत्व और भी बढ़ जाता है,

क्योंकि इसी अवस्था में छात्रों की जीवनशैली स्थायी रूप लेती है।

नियमित अभ्यास, समय पर उपस्थिति तथा लक्ष्य–केन्द्रित प्रशिक्षण छात्रों को समय प्रबंधन का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता है। वे यह समझने लगते हैं कि अध्ययन, शारीरिक गतिविधि एवं विश्राम के बीच संतुलन किस प्रकार स्थापित किया जाए। आत्म–नियंत्रण का विकास खेल के मैदान में विशेष रूप से देखने को मिलता है, जहाँ छात्र सफलता और असफलता दोनों परिस्थितियों में संयम बनाए रखना सीखते हैं।

इस प्रकार शारीरिक शिक्षा छात्रों को एक अनुशासित एवं संगठित जीवन जीने के लिए तैयार करती है।

महाविद्यालयीन स्तर पर छात्रों को आत्मनिर्णय की स्वतंत्रता प्राप्त होती है, जिससे समय का दुरुपयोग होने की संभावना भी बढ़ जाती है। शारीरिक शिक्षा इस संदर्भ में एक संरचनात्मक ढाँचा प्रदान करती है, जिसके माध्यम से छात्र अपने दैनिक जीवन को सुव्यवस्थित करना सीखते हैं।

नियमित प्रशिक्षण एवं अभ्यास से विकसित हुआ अनुशासन छात्रों को लक्ष्य निर्धारण, निरंतर प्रयास एवं आत्म–मूल्यांकन की प्रक्रिया से जोडघ्ता है। यह गुण अकादमिक शोध एवं व्यावसायिक जीवन दोनों में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

अध्याय 4 : सामाजिक विकास एवं नेतृत्व क्षमता का सुदृढ़ीकरण :

शारीरिक शिक्षा का सामाजिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। टीम खेलों के माध्यम से छात्र सहयोग, सामूहिक उत्तरदायित्व तथा आपसी विश्वास के महत्व को समझते हैं। वे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले साथियों के साथ कार्य करना सीखते हैं, जिससे सामाजिक समरसता एवं सहिष्णुता का विकास होता है।

नेतृत्व क्षमता का विकास भी शारीरिक शिक्षा का एक प्रमुख पक्ष है। खेलों में नेतृत्व करना, निर्णय लेना तथा टीम के हित में कार्य करना छात्रों को उत्तरदायित्वपूर्ण बनाता है। इसके साथ ही, हार और जीत दोनों को समान भाव से स्वीकार करना उन्हें जीवन की वास्तविकताओं के लिए मानसिक रूप से तैयार करता है।

इस प्रकार शारीरिक शिक्षा छात्रों को सामाजिक रूप से सक्षम एवं उत्तरदायी नागरिक बनने में सहायता करती है।

शारीरिक शिक्षा के माध्यम से विकसित सामाजिक दक्षताएँ छात्रों को लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति भी जागरूक बनाती हैं। टीम खेलों में सहभागिता छात्रों को समान अवसर, पारस्परिक सम्मान एवं सामूहिक निर्णय प्रक्रिया का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करती है।

नेतृत्व के संदर्भ में, शारीरिक शिक्षा छात्रों को केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि सहयोगी एवं उत्तरदायी नेतृत्वकर्ता बनने के लिए प्रेरित करती है। यह दृष्टिकोण आधुनिक समाज एवं संगठनात्मक संरचनाओं की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

अध्याय 5 : चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों का संवर्धन :

शारीरिक शिक्षा छात्रों के चरित्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खेल भावना, ईमानदारी, निष्पक्षता, साहस एवं धैर्य जैसे नैतिक मूल्य खेल के मैदान में व्यवहारिक रूप से सिखाए जाते हैं। छात्र यह अनुभव करते हैं कि सफलता केवल जीत में नहीं, बल्कि नियमों के पालन और निष्पक्ष आचरण में भी निहित होती है।

निरंतर अभ्यास, परिश्रम एवं आत्म–अनुशासन के माध्यम से छात्रों में आत्मविश्वास एवं आत्म–सम्मान का विकास होता है। ये गुण न केवल शैक्षणिक जीवन में, बल्कि सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

नैतिक मूल्यों का विकास केवल उपदेशों से संभव नहीं होता, बल्कि उनके व्यवहारिक अभ्यास की आवश्यकता होती है। शारीरिक शिक्षा इस व्यवहारिक अभ्यास का सशक्त माध्यम है, जहाँ छात्र नैतिकता को केवल समझते ही नहीं, बल्कि उसे जीवन में उतारते भी हैं। खेलों के माध्यम से विकसित आत्म–सम्मान एवं आत्म–विश्वास छात्रों को नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। वे अपने कार्यों की जिम्मेदारी स्वीकार करना सीखते हैं, जो चरित्र निर्माण की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

अध्याय 6 : करियर विकास एवं भविष्य निर्माण में शारीरिक शिक्षा की प्रासंगिकता :

आधुनिक संदर्भ में शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर की संभावनाएँ निरंतर विस्तृत हो रही हैं। खेल प्रशिक्षण, फिटनेस उद्योग, योग, खेल प्रबंधन, खेल मनोविज्ञान एवं शारीरिक शिक्षा अध्यापन जैसे क्षेत्रों में विद्यार्थियों के लिए विविध अवसर उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त, शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से संतुलित व्यक्ति कार्यक्षेत्र में अधिक उत्पादक एवं सृजनशील होता है। इस प्रकार शारीरिक शिक्षा न केवल प्रत्यक्ष रूप से कैरियर विकल्प प्रदान करती है, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से भी छात्रों के व्यावसायिक जीवन को सुदृढ़ बनाती है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्वास्थ्य एवं फिटनेस उद्योग तीव्र गति से विकसित हो रहा है। इस संदर्भ में शारीरिक शिक्षा से संबंधित पेशे न केवल रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक स्वास्थ्य संवर्धन में भी योगदान देते हैं।

इसके अतिरिक्त, किसी भी क्षेत्र में कार्यरत व्यक्ति के लिए शारीरिक एवं मानसिक संतुलन एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। इस दृष्टि से शारीरिक शिक्षा छात्रों को दीर्घकालिक व्यावसायिक सफलता के लिए तैयार करती है।

उपसंहार :

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा महाविद्यालयीन छात्रों के सर्वांगीण विकास का एक अनिवार्य घटक है। यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, सामाजिक दक्षता एवं नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय एवं वैश्विक शैक्षिक परिदृश्य में शारीरिक शिक्षा को उचित स्थान प्रदान कर ही हम एक स्वस्थ, सक्षम एवं जिम्मेदार युवा पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों में शारीरिक शिक्षा को सुदृढ़ एवं प्रभावी रूप में लागू किया जाना समय की आवश्यकता है। अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि शारीरिक शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक जीवन–दर्शन है। उच्च शिक्षा के स्तर पर इसे सुदृढ़ रूप से अपनाकर ही हम ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम हो, बल्कि शारीरिक एवं नैतिक रूप से भी सशक्त हो।

संदर्भ :

1. सिंह ए.एस., सलियासी ई., वैन डेन बर्ग वी., उइज्टडेविलिगेन एल., डी ग्रूट आर.एच., जोलेस जे., एंडरसन एल.बी., बेली आर., चांग वाई.के., डायमंड ए., एरिक्सन आई. बच्चों और किशोरों में संज्ञानात्मक

और शैक्षणिक प्रदर्शन पर शारीरिक गतिविधि हस्तक्षेपों का प्रभाव : एक व्यवस्थित समीक्षा और विशेषज्ञ पैनल की सिफारिशों का एक नया संयोजन। ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मेडिसिन। 2019 मई 1, 53(10) : 640–7.

2. विश्व स्वास्थ्य संगठन। स्कूलों में शारीरिक गतिविधि को बढ़ावा देना : स्वास्थ्य–प्रवर्तक स्कूल का एक महत्वपूर्ण तत्व। विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2007।
3. www.bdu.ac.in
4. www.latrobe.edu.in
5. https://samagra.education.gov.in
6. https://schooleducation.jharkhand.gov.in

E-mail : madanmohanmishra71@gmail.com
Mobile : 9123114925

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 38–50

Sustainable Digital Futures : Integrating Artificial Intelligence, Education, and Inclusive Innovation in India's Development Agenda

Sahil Kumar
Research Scholar, Department of Computer Science, Sona Devi University, Jharkhand.

Abstract :

Artificial intelligence (AI) has become an essential driver of twenty-first-century transformation, reshaping economies, institutions, and human experience. In India, this technological momentum intersects with urgent social priorities such as equitable education, linguistic inclusion, and sustainable development. This paper reviews the evolution of AI-enabled education through the lens of sustainability, examining how digital technologies can strengthen access, participation, and ecological responsibility. It traces theoretical debates around digital humanism, surveys innovations in adaptive and multilingual learning, and situates India's progress within global frameworks like the United Nations Sustainable Development Goals (United Nations, 2015) and national missions such as Digital India (Ministry of Electronics and Information Technology, 2023) and the National Education Policy 2020 (Ministry of Education, 2020). Drawing on interdisciplinary literature across technology, pedagogy, and public policy, the paper argues that sustainable digital transformation requires not only technological sophistication but also ethical design, cultural sensitivity, and infrastructural resilience. By aligning AI with inclusive education and human-centred innovation, India can advance toward a digitally empowered and socially just future.

Keywords : Artificial Intelligence, Sustainable Development, Digital Inclusion, Multilingual Education, Educational Technology, India.

1. Introduction :

The twenty-first century has marked an unprecedented acceleration in digital transformation, where artificial intelligence increasingly mediates social, economic, and cognitive life. Across the world, AI systems now perform tasks once confined to human judgement — from decision-support

in healthcare to personalised education. Yet their implications vary widely by context. In India, technological innovation unfolds alongside deep structural inequalities: disparities in infrastructure, income, language, and literacy persist despite decades of reform (Planning Commission of India, 2014). Consequently, digital transformation is not merely a technical process but a social contract. Government initiatives such as the **Digital India Mission** launched in 2015 aim to bridge this divide by promoting universal connectivity, electronic governance, and digital literacy (Ministry of Electronics and Information Technology, 2023). Complementary programmes under **Atmanirbhar Bharat** and **Skill India** extend this vision to entrepreneurship and vocational training (NITI Aayog, 2021). Despite remarkable gains in mobile penetration — more than 900 million smartphone users by 2023 (Internet and Mobile Association of India, 2023) — access to quality digital learning remains uneven. Rural schools struggle with bandwidth and device shortages, while linguistic minorities encounter English-dominated interfaces that limit participation.

In this landscape, **AI-driven educational systems** represent both an innovation and a test of ethical design. Adaptive tutoring, speech recognition, and automated feedback can extend quality instruction beyond the classroom, aligning with **Sustainable Development Goal 4: Quality Education** (United Nations, 2015). The **National Education Policy 2020** explicitly calls for integrating emerging technologies and developing digital infrastructures that support multilingual, flexible learning (Ministry of Education, 2020).

However, inclusion cannot be achieved by infrastructure alone. The effectiveness of AI in education depends on cultural contextualisation — ensuring that algorithms trained primarily on English data understand and respect India's multilingual diversity (Kakwani, Kunchukuttan, Golla, Bhattacharyya, & Khapra, 2020). Sustainable digital transformation, therefore, must blend innovation with empathy, linking computational progress to human development. The following sections review theoretical foundations and empirical pathways for building such a balance between AI, education, and sustainability.

2. Theoretical Foundations of Sustainable Digital Transformation :

Historically, sustainability has been defined through environmental and economic equilibrium. In the digital era, scholars extend this notion to include social and cognitive sustainability — the capacity of technology to enhance human wellbeing without deepening inequality (Bawden & Robinson, 2012).

Early frameworks such as **technological determinism** framed technology as an autonomous driver of change. Manuel Castells (1996), in *The Rise of the Network Society*, described how information networks reconfigured power relations and social organisation. Later approaches, notably

socio-technical systems theory, contested this determinism by emphasising co-evolution between humans and machines (Trist & Bamforth, 1951). Education, under this view, becomes a site where pedagogy and technology mutually shape each other.

A parallel tradition in **human-centred design** insists that sustainability begins with empathy. Donald Norman and Terry Winograd (2006) argued that effective computing must accommodate cognitive and cultural diversity. When applied to multilingual India, their insight reveals that linguistic inclusivity is a prerequisite for technological sustainability. A learning platform that excludes non-English speakers, regardless of efficiency, remains socially unsustainable.

The global frame for this debate emerges from the **United Nations Sustainable Development Goals (2015)**, particularly Goals 4 (Quality Education), 9 (Industry, Innovation and Infrastructure), and 10 (Reduced Inequalities). These objectives encourage countries to harness digital innovation toward equitable growth. India's **Digital India Mission** operationalises this vision through initiatives in e-learning, e-governance, and digital literacy (Ministry of Electronics and Information Technology, 2023).

Recent discourse around **digital humanism** advances this integration of ethics and technology. The *Vienna Manifesto on Digital Humanism* (2019) warns against algorithmic monopolies and advocates participatory governance of AI. For India, this means designing systems that value diversity and transparency. Epistemic justice — recognising indigenous languages and community knowledge — becomes central to sustainability (Fricker, 2007). Without linguistic and cultural plurality, digital transformation risks becoming a new form of colonial centralisation.

Thus, sustainable digital transformation in India must harmonise innovation with inclusion, aligning global aspirations with local epistemologies. The framework for achieving this lies in re-imagining AI not as a replacement for human agency but as an amplifier of it.

3. Artificial Intelligence and Educational Innovation in India :

Education has long been viewed in India as a cornerstone of democracy and self-realisation. The infusion of AI into this domain represents a new phase of educational reform — one that combines ancient pedagogical ideals with contemporary technological capacity.

AI's contribution to Indian education manifests in three principal domains: **adaptive learning**, **administrative automation**, and **inclusive pedagogy**. Adaptive learning platforms like *BYJU's* and *Embibe* employ machine-learning algorithms to personalise instruction, tailoring lesson difficulty and sequencing to each student's performance (Koedinger & Anderson, 1997). Studies show that such adaptive mechanisms improve retention by aligning content with learners' cognitive load (Sweller, 2019).

At the administrative level, AI assists in examination management, attendance, plagiarism detection, and counselling. The **National Digital Education Architecture (NDEAR)** framework introduced by the Ministry of Education (2021) promotes interoperable data systems connecting institutions, regulators, and learners. Meanwhile, the **AI for All** programme by NITI Aayog (2021) and Intel India democratises AI literacy through multilingual, open-access curricula.

Most transformative, however, is AI's potential for **inclusive pedagogy**. Voice-enabled chatbots and speech-to-text systems support students who face literacy barriers. Projects like *AI4Bharat* and *IndicTTS* develop language models for Hindi, Tamil, Bengali, and other regional tongues (Bapna & Cross, 2021). These initiatives echo NEP 2020's emphasis on mother-tongue instruction and localisation of content.

Nevertheless, challenges remain. Algorithms trained predominantly on urban or English-language data risk reproducing socio-linguistic biases (Bender & Friedman, 2018). Therefore, India's path forward requires a **glocal** approach — global in technical rigour but local in cultural awareness. Collaborative partnerships between computer scientists, linguists, educators, and policymakers are essential to build equitable datasets and interfaces.

Ultimately, AI in Indian education is not only a question of technological capacity but also of ethical purpose. The goal should be to cultivate learners who are creative, critical, and digitally empowered. In this sense, AI becomes not an instrument of automation but an ally in human development — a bridge between innovation and inclusion.

4. Multilingualism, Inclusivity, and the Digital Divide :

Linguistic diversity represents both the strength and the complexity of India's digital transformation. The country's Constitution recognises twenty-two official languages, and according to the Census of India (2011), more than 19,500 mother tongues are spoken nationwide. This rich multilingualism, while culturally invaluable, creates structural challenges for technological standardisation. Most digital interfaces, including AI-based educational platforms, are designed primarily in English, which only about 10 percent of Indians can speak fluently (Office of the Registrar General & Census Commissioner, 2011). Consequently, English-centric digital design reinforces an existing hierarchy of access, where linguistic minorities remain underrepresented in online learning and governance spaces.

This imbalance is particularly evident in the educational sector. Learners in rural and semi-urban areas often encounter platforms whose user interfaces, instructions, and assessments assume English literacy. Even when translated, many AI systems struggle to interpret or generate content in regional languages because of the limited availability of high-quality linguistic corpora. As Bhat and

Srinivasan (2018) observe, the absence of balanced datasets for Indian languages leads to "asymmetric intelligibility," where speech recognition and translation accuracy vary dramatically between Hindi, Tamil, and lesser-studied tongues such as Santali or Manipuri.

To address this issue, research initiatives have focused on **multilingual natural language processing (NLP)** and **transfer learning**. Models such as *IndicBERT* (Kakwani, Kunchukuttan, Golla, Bhattacharyya, & Khapra, 2020) and *MuRIL* (Bapna & Cross, 2021) demonstrate the potential of cross-lingual embeddings that share subword units across related languages. These architectures enable learning from high-resource languages (like Hindi or English) and applying that knowledge to low-resource ones. Complementary projects such as *AI4Bharat* (AI4Bharat, 2022) and *OpenSLR India* (OpenSLR, 2022) have released speech datasets for Indian ASR systems in multiple languages, enabling developers to train voice-based assistants that are regionally adaptable.

However, bridging the **digital divide** requires more than linguistic competence. Accessibility in India is a multidimensional challenge encompassing income disparity, gender, disability, and connectivity. The National Sample Survey (2020) reports that only 24 percent of Indian households have access to the internet, and in rural areas, this figure drops to below 15 percent. Women and persons with disabilities are further disadvantaged due to limited access to smartphones, restrictive social norms, and inadequate assistive technology (World Bank, 2022).

AI-driven multilingual education can help alleviate these disparities by creating **voice-first ecosystems** that bypass literacy barriers. Voice interfaces allow users to interact naturally, reducing the dependence on written input. For instance, integrating *speech-to-text* systems like *Whisper* (Radford, Kim, Xu, Brockman, McLeavey, & Sutskever, 2022) and *wav2vec 2.0* (Baevski, Zhou, Mohamed, & Auli, 2020) enables learners to ask questions or give commands orally in their native languages. In addition, *text-to-speech* (TTS) frameworks such as *IndicTTS* (Anumanchipalli, Prahallad, & Black, 2011) can produce natural-sounding audio outputs, making content accessible to visually impaired learners or those with reading difficulties.

The **inclusive potential** of these systems lies in their cultural grounding. Studies by Bali, Sharma, Choudhury, and Vyas (2020) highlight that code-switching—alternating between English and local languages—is an organic part of Indian communication. Incorporating this linguistic flexibility into AI models can make educational interactions more authentic and intuitive. For instance, a student may ask a chatbot in "Hinglish" (Hindi-English mix), and the system must interpret both languages seamlessly.

In summary, multilingualism in India is not merely a technical constraint but an ethical frontier in sustainable digital education. Bridging the linguistic and infrastructural divide demands collaborative

investment in open datasets, regional research capacity, and policy frameworks that promote equitable digital citizenship. When technology learns to listen and speak in every Indian voice, inclusion moves from aspiration to achievement.

5. Policy Frameworks and Institutional Ecosystems :

The relationship between technology, education, and sustainability in India is shaped by a complex network of governmental policies and institutional partnerships. Over the past decade, several landmark initiatives have converged to form the foundation of the country's digital transformation agenda. Chief among them are the **Digital India Mission (2015)**, the **National Education Policy (NEP 2020)**, and the **National Strategy for Artificial Intelligence (NITI Aayog, 2021)**. Together, these frameworks articulate a vision of technology as both a developmental catalyst and a tool for social inclusion.

The **Digital India Mission**, launched by the Ministry of Electronics and Information Technology (2023), envisions a society where "digital infrastructure is a core utility to every citizen." Its pillars include digital literacy, e-governance, and digital delivery of services. Within the education sector, the programme supports initiatives like the *DIKSHA* platform, *SWAYAM* MOOCs, and *e-Pathshala*, which deliver learning content through accessible online channels. However, the mission's sustainability depends on bridging regional disparities in access and fostering local content creation. The **National Education Policy 2020** represents a paradigm shift in educational thinking. It acknowledges the transformative role of technology, recommending the creation of the *National Educational Technology Forum (NETF)* to coordinate research, standards, and ethical guidelines (Ministry of Education, 2020). The policy also underscores the importance of multilingualism, advocating instruction in the mother tongue at least up to Grade 5, in line with cognitive and socio-cultural evidence (UNESCO, 2021). This alignment of linguistic inclusion with digital innovation is crucial for fostering equitable access.

In parallel, **NITI Aayog's National Strategy for Artificial Intelligence (NSAI)** outlines the principle of "AI for All," identifying five focus areas: healthcare, agriculture, education, smart cities, and smart mobility (NITI Aayog, 2021). The strategy emphasises responsible AI development, ethical data governance, and research in vernacular AI systems. Collaborations with private players such as Intel, Google Research, and Microsoft have accelerated innovation in AI literacy, teacher training, and regional language processing.

These national frameworks are complemented by **international commitments** such as the **United Nations Sustainable Development Goals (SDGs)**. India's policy architecture aligns especially with SDG 4 (Quality Education), SDG 9 (Industry, Innovation and Infrastructure), and SDG

10 (Reduced Inequalities) (United Nations, 2015). The **UNESCO ICT Competency Framework for Teachers (2018)** and the **OECD Learning Compass 2030** further inspire India's education reforms toward digital competence and global citizenship.

Despite this robust policy landscape, implementation remains uneven. Fragmented institutional coordination, inadequate teacher training, and infrastructural deficits limit the translation of policy into practice (Joshi & Menon, 2022). Sustainable digital transformation therefore requires an ecosystem approach that integrates national policy with local innovation. State-level models, such as *Kerala's KITE initiative* and *Telangana's T-Works*, exemplify decentralised partnerships between government, academia, and industry for digital education.

A sustainable ecosystem must also prioritise **open access and interoperability**. The *National Digital Education Architecture (NDEAR)* provides a modular blueprint for integrating diverse educational platforms, ensuring that resources developed by one institution can serve learners nationwide (Ministry of Education, 2021). Open data and shared APIs enable adaptability while reducing duplication of effort, embodying the principle of "build once, use everywhere."

In sum, India's institutional frameworks provide a solid foundation for inclusive digital education. However, their sustainability depends on continuous investment, ethical governance, and the active participation of communities. The transition from vision to practice will determine whether India's digital future becomes a catalyst for equity or a mirror of inequality.

6. Ethical, Environmental, and Infrastructural Challenges :

While AI promises remarkable gains in access and efficiency, its adoption also raises ethical and ecological dilemmas. The **ethics of AI in education** revolves around issues of privacy, bias, transparency, and accountability. As Binns, Veale, Van Kleek, and Shadbolt (2018) observe, algorithmic systems can unintentionally reproduce social hierarchies embedded in data. For instance, speech recognition models may underperform for women or speakers of certain dialects, leading to unequal educational experiences. Ethical AI therefore demands continuous auditing and participatory design processes involving educators and learners.

Data privacy remains a pressing concern. The **Personal Data Protection Bill (2022)** of India attempts to regulate the collection, storage, and sharing of personal information. However, the rapid expansion of edtech platforms often outpaces legal enforcement. Students' interaction logs, voice data, and behavioural metrics are collected at massive scales, frequently without informed consent. To ensure ethical sustainability, educational AI must adhere to the principles of *transparency, explainability, and consent-based data governance* (Jobin, Ienca, & Vayena, 2019).

Environmental sustainability presents another layer of complexity. Training large AI models

consumes vast amounts of energy. A single transformer-based model can generate carbon emissions equivalent to several cars over their lifetime (Strubell, Ganesh, & McCallum, 2019). For a developing country like India, where electricity generation remains dependent on fossil fuels, the environmental cost of AI adoption cannot be ignored. Green computing strategies — including model compression, edge computing, and renewable energy data centres — are essential to align AI growth with India's commitments under the **Paris Climate Agreement (UNFCCC, 2015)**.

The infrastructural dimension of sustainability concerns connectivity, hardware access, and digital literacy. Rural India still experiences significant bandwidth limitations, power outages, and low smartphone ownership (World Bank, 2022). Even where devices exist, limited awareness of digital safety and navigation skills restricts effective utilisation. Public-private collaborations like *BharatNet* aim to extend broadband connectivity to all Gram Panchayats, yet the project's uneven rollout highlights the need for community-based digital literacy campaigns (Department of Telecommunications, 2023).

Ethical and infrastructural sustainability must also converge in the area of **AI explainability**. Learners and teachers should be able to understand how algorithms make decisions that affect their assessments or feedback. Research in "interpretable AI" (Doshi-Velez & Kim, 2017) underscores the need for human oversight and pedagogical transparency. The ultimate goal is not to replace educators but to empower them through insights derived from AI analytics.

Finally, equity remains the moral compass of sustainability. As UNESCO (2021) asserts, digital transformation should amplify human rights rather than commodify them. In India, this means designing educational AI that serves not only the English-speaking elite but also rural women, tribal communities, and differently abled learners. Only through such inclusive vision can AI become a sustainable public good rather than a private privilege.

7. Future Directions and Research Implications :

The advancement of sustainable digital transformation in India requires a paradigm that integrates technological ingenuity with ethical governance and human empowerment. Future research must therefore evolve beyond computational efficiency to address questions of justice, diversity, and ecological accountability.

One crucial direction lies in **multilingual artificial intelligence**. While progress in models like *MuRIL* (Bapna & Cross, 2021) and *IndicBERT* (Kakwani, Kunchukuttan, Golla, Bhattacharyya, & Khapra, 2020) has improved machine understanding of Indian languages, the next generation of systems must capture subtler aspects of context, dialect, and emotion. Research in code-mixed NLP (Bali, Sharma, Choudhury, & Vyas, 2020) and low-resource language processing will be vital for developing

truly inclusive digital education. Collaborative data collection across universities, community radio, and regional publishers can expand the linguistic diversity of training corpora while maintaining privacy and ethical oversight.

Another frontier is **AI-driven pedagogy**. The integration of conversational interfaces and affective computing offers the potential to personalise emotional as well as cognitive feedback. Systems that recognise learner frustration, motivation, or fatigue through multimodal signals—voice, text, and gesture—could emulate empathetic tutoring (Picard, 1997; Wang, Li, & Lee, 2020). However, such innovation demands careful ethical calibration to prevent manipulation or over-surveillance. The design of human-in-the-loop systems, where teachers supervise algorithmic recommendations, can ensure accountability and contextual sensitivity.

Sustainability in computing will remain a pressing research agenda. India's expanding data infrastructure must incorporate energy-efficient architectures. Edge computing, model compression, and renewable-powered data centres can drastically reduce AI's carbon footprint (Strubell, Ganesh, & McCallum, 2019). Universities and start-ups can collaborate with energy ministries to pilot "green AI" frameworks, balancing performance with ecological stewardship.

Policy-oriented studies should investigate how national missions such as Digital India, NEP 2020, and the National Strategy for Artificial Intelligence (NITI Aayog, 2021) interact with local realities. Ethnographic and quantitative research can document how digital learning platforms reshape classroom cultures, teacher agency, and student engagement across socio-economic contexts. Evaluations must move beyond access metrics to examine inclusion, trust, and learning outcomes over time.

Finally, there is a growing need for **interdisciplinary collaboration**. Sustainable digital transformation cannot be confined within disciplinary silos. Computer scientists, educators, sociologists, linguists, and policymakers must engage in joint frameworks of design and evaluation. Establishing *AI and Education Research Hubs* across Indian universities, connected to global consortia like UNESCO's *AI and the Futures of Learning* initiative, would institutionalise such synergy.

The future of India's digital revolution depends on whether innovation can remain rooted in equity and empathy. Research must not only predict the next technological milestone but also ask the moral question: *for whom and for what purpose is AI being built?*

8. Conclusion :

The evolution of conversational and educational artificial intelligence—from the rule-based simplicity of early systems like *ELIZA* to the deep contextual intelligence of transformer models—represents more than fifty years of human imagination. Yet, in education, technological sophistication

is meaningful only when it enriches human potential. India's pursuit of sustainable digital futures demonstrates that the true test of progress lies not in how intelligent machines become but in how inclusive they allow society to be.

Voice-enabled, multilingual AI systems symbolise a revolutionary opportunity to democratise learning. In a country defined by linguistic plurality and socio-economic diversity, the capacity to learn in one's own language carries both epistemic and emotional value. Such technologies can break the hierarchy of English dominance, enabling rural and first-generation learners to participate fully in digital education. When students in Bihar, Tripura, or Nagaland can access lessons through regional-language chatbots, technology becomes not an instrument of privilege but a channel of justice.

However, the success of this transformation depends on how India reconciles speed with sensitivity. Rapid deployment without ethical design risks deepening the very divides it seeks to close. Bias in training data, lack of transparency in algorithms, and exclusion of local dialects can transform AI into an agent of inequity. Sustainable digital transformation thus requires a *moral infrastructure* as robust as its technical one—anchored in fairness, accountability, and empathy.

Environmental sustainability adds a further dimension. The carbon footprint of AI computation compels a rethinking of digital expansion. Greener technologies and renewable-powered data centres are not luxuries but necessities for a nation balancing development with ecological stewardship. In this sense, India's journey toward digital empowerment must also embody its civilisational ethos of balance—between nature and progress, human and machine, innovation and restraint.

At the institutional level, policy coherence remains paramount. The *Digital India Mission* provides connectivity and access, *NEP 2020* articulates a pedagogical framework, and *NITI Aayog's AI for All* initiative supplies the technological blueprint. The next step is integration—ensuring these frameworks communicate effectively across ministries, states, and institutions. Sustainable governance means that every technological decision must consider its social ripple effects: how data is collected, how language is represented, and how communities are empowered to co-create solutions.

Education, at its heart, is an act of dialogue. It thrives on questioning, reflection, and shared understanding. When conversational AI joins this dialogue—speaking in the rhythms of local languages, listening with sensitivity, and responding with precision—it transforms from a tool of automation into a companion of learning. This transformation, however, demands human oversight. Teachers, students, and policymakers must remain co-authors in the design of digital systems.

The vision of *sustainable digital futures* therefore rests on three intertwined commitments: **ethical inclusivity**, **technological responsibility**, and **cultural continuity**. Ethical inclusivity ensures that no learner is left behind because of language, gender, or geography. Technological

responsibility calls for transparent, explainable, and environmentally aware AI. Cultural continuity ensures that innovation respects India's intellectual heritage—its long tradition of pluralism, dialogue, and learning as liberation.

As India advances toward a knowledge-based society, these principles will determine whether AI becomes a vehicle of emancipation or exclusion. The real measure of success will not be in terabytes processed or models trained but in the voices empowered to learn, question, and create. The sustainable digital future is not a distant vision—it begins every time technology listens, in every language, to those who were once unheard.

References :

1. AI4Bharat. (2022). *AI4Bharat Speech and Language Datasets for Indian Languages*. Indian Institute of Technology, Madras. https://ai4bharat.org
2. Anderson, John R. (1995). *Learning and Memory: An Integrated Approach*. John Wiley & Sons.
3. Anumanchipalli, Gopala, Prahallad, Kishore, & Black, Alan W. (2011). *IndicTTS: Building Speech Synthesis Systems for Indian Languages*. Carnegie Mellon University.
4. Baevski, Alexei, Zhou, Yuhao, Mohamed, Abdelrahman, & Auli, Michael. (2020). *wav2vec 2.0: A Framework for Self-Supervised Learning of Speech Representations*. Advances in Neural Information Processing Systems, 33, 12449–12460.
5. Bali, Kalika, Sharma, Jaya, Choudhury, Monojit, & Vyas, Yogarshi. (2020). *Challenges in Code-Mixed Natural Language Processing for Indian Languages*. Proceedings of the 28th International Conference on Computational Linguistics, 82–97.
6. Bapna, Ankur, & Cross, James. (2021). *MuRIL: Multilingual Representations for Indian Languages*. Google Research India.
7. Bawden, David, & Robinson, Lyn. (2012). *Introduction to Information Science*. Facet Publishing.
8. Bender, Emily M., & Friedman, Batya. (2018). *Data Statements for NLP: Toward Mitigating System Bias and Enabling Better Science*. Transactions of the Association for Computational Linguistics, 6, 587–604.
9. Bhat, Sriram, & Srinivasan, Sandeep. (2018). *Low-Resource Language Technologies for Indian Speech Recognition*. International Journal of Speech Technology, 21(3), 543–556.
10. Binns, Reuben, Veale, Michael, Van Kleek, Max, & Shadbolt, Nigel. (2018). *'It's Reducing a Human Being to a Percentage': Perceptions of Justice in Algorithmic Decisions*. Proceedings

of the 2018 CHI Conference on Human Factors in Computing Systems, 377–391.
11. Castells, Manuel. (1996). *The Rise of the Network Society*. Blackwell Publishers.
12. Department of Telecommunications. (2023). *BharatNet Progress Report*. Government of India.
13. Doshi-Velez, Finale, & Kim, Been. (2017). *Towards a Rigorous Science of Interpretable Machine Learning*. arXiv preprint arXiv:1702.08608.
14. Fricker, Miranda. (2007). *Epistemic Injustice: Power and the Ethics of Knowing*. Oxford University Press.
15. Internet and Mobile Association of India. (2023). *Internet in India Report 2023*. IAMAI Publications.
16. Jobin, Anna, Ienca, Marcello, & Vayena, Effy. (2019). *The Global Landscape of AI Ethics Guidelines*. Nature Machine Intelligence, 1, 389–399.
17. Joshi, Neha, & Menon, Kavita. (2022). *Implementing NEP 2020: Challenges and Opportunities*. Economic and Political Weekly, 57(4), 12–17.
18. Kakwani, Divyanshu, Kunchukuttan, Anoop, Golla, Satish, Bhattacharyya, Pushpak, & Khapra, Mitesh M. (2020). *IndicBERT: A Pretrained Language Model for Indic Languages*. arXiv preprint arXiv:2009.05472.
19. Koedinger, Kenneth R., & Anderson, John R. (1997). *Intelligent Tutoring Goes to School in the Big City*. International Journal of Artificial Intelligence in Education, 8, 30–43.
20. Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020*. Government of India.
21. Ministry of Education. (2021). *National Digital Education Architecture (NDEAR): Blueprint for Digital Infrastructure in Education*. Government of India.
22. Ministry of Electronics and Information Technology. (2023). *Digital India: Annual Report 2022–23*. Government of India.
23. NITI Aayog. (2021). *National Strategy for Artificial Intelligence – AI for All*. Government of India.
24. Norman, Donald A., & Winograd, Terry. (2006). *Bringing Design to Software*. Addison-Wesley.
25. OpenSLR. (2022). *Open Speech and Language Resources for Indian Languages*. Johns Hopkins University. https://openslr.org
26. Picard, Rosalind W. (1997). *Affective Computing*. MIT Press.
27. Planning Commission of India. (2014). *India Human Development Report*. Government of India.
28. Radford, Alec, Kim, Jong Wook, Xu, Tao, Brockman, Greg, McLeavey, Christine, & Sutskever,

Ilya. (2022). *Whisper: Robust Speech Recognition via Large-Scale Weak Supervision*. OpenAI Research.

29. Strubell, Emma, Ganesh, Ananya, & McCallum, Andrew. (2019). *Energy and Policy Considerations for Deep Learning in NLP*. Proceedings of ACL, 3645–3650.
30. Trist, Eric, & Bamforth, Kenneth. (1951). *Some Social and Psychological Consequences of the Longwall Method of Coal-Getting*. Human Relations, 4(1), 3–38.
31. UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education*. United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization.
32. United Nations. (2015). *Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development*. United Nations General Assembly.
33. United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC). (2015). *Paris Agreement*. United Nations.
34. Wang, Yining, Li, Chen, & Lee, Sung. (2020). *Designing Empathic Tutoring Systems for Emotional Engagement*. Journal of Educational Technology Research, 68(2), 445–462.
35. World Bank. (2022). *Digital Development in South Asia: Access, Inclusion, and Policy*. World Bank Publications.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 51–54

LANGUAGE & AI

Dr. R. REKHA, Assistant Professor, Department of BBA
Dr. VIDHYA .P, Asso. Prof & Head, Dept. Of. B.COM CS
Dr SAJITHA J, Asst.Prof & Head, Dept of Other Languages
Sri Ramakrishna College of Arts & Science.

Abstract :

The convergence of language and artificial intelligence (AI) is one of the most revolutionary turning points in human history. In technical terms, this is known as Natural Language Processing (NLP).

Below is a detailed and in-depth analysis of this topic, which clarifies the interrelationship between language and AI, how they work, and their future implications.

1. Language and AI: An Introduction :

Human language is complex. It consists not only of words, but also of context, emotions, idioms, and cultural nuances. Traditional computer programs were unable to understand language because they operated solely on binary (yes or no) logic.

Artificial intelligence (AI) broke through this barrier. The part of AI that deals with language is called NLP (Natural Language Processing). Its goal is to enable computers to understand, interpret, and generate human language in the same way that we humans do.

2. Core Pillars of Language Processing :

AI follows two main processes to understand language :

- NLU (Natural Language Understanding): In this, AI understands the meaning of a sentence. For example : Does the word "bank" mean the edge of a river or a financial institution? NLU decides this based on the context.
- NLG (Natural Language Generation): This is the technology by which AI writes grammatically correct and meaningful sentences. (Like how ChatGPT writes responses).

3. How does it work? (Technical Structure) :

Modern AI doesn't just see language as 'words', but converts them into mathematical equations.

- Tokenization

  First, sentences are broken down into smaller pieces or 'tokens'.

B. Word Embeddings :

AI converts words into 'vectors' (lists of numbers). Words with similar meanings (like 'king' and 'queen') are placed close to each other in mathematical space.

C. Transformer Models :

These are the heart of modern AI. The 'Transformer' architecture, introduced by Google in 2017, changed everything. It uses an "Attention Mechanism," which allows the AI ??to understand which words in a sentence are most important.

4. Key Applications :

The convergence of AI and language has completely transformed our lives :

- **Machine Translation :** Tools like Google Translate no longer simply translate word-for-word, but understand the meaning of entire sentences.
- **Virtual Assistants :** Siri, Alexa, and Google Assistant listen to our voices, process the language, and respond.
- **Sentiment Analysis :** Companies use AI to scan social media comments to understand whether people are happy or unhappy with their brand.
- **Content Creation :** AI can now write articles, poems, emails, and even code.

5. **Large Language Models (LLMs) :**

We are currently in the era of LLMs. GPT-4, Claude, and Gemini are prime examples. These models have been trained on billions of words of data available on the internet.

Model Features :

GPT-4	Leading in logical reasoning and creative writing.
Gemini	Integrated with Google services and multimodal (text + images).
LLaMA	Open-source model developed by Meta.

6. **Challenges and Ethical Issues :**

This development of AI and language is not without its challenges :

- **Bias :** Since AI learns from internet data, it can also learn human biases such as racism or gender discrimination.
- **Hallucination :** Sometimes AI confidently presents incorrect facts.
- **Job displacement :** The jobs of translators, writers, and customer support personnel are being significantly impacted.
- **Cultural extinction :** Most AI models perform better in English, raising fears that smaller

regional languages will be left behind.

7. **The Way Forward :**

In the future, the relationship between AI and language will be 'multimodal'. This means that AI will not only understand text, but it will also be able to watch videos and talk about them, or understand the pain or joy behind your language by observing your facial expressions. In the Indian context, projects like 'Bhashini' are underway that will bridge the gap between various Indian languages through AI, enabling even a farmer in a village to obtain technical information from AI in their own language.

The way forward is defined by five critical pillars :

1. From Chatbots to Autonomous Agents :

In 2026, the focus has shifted from "Generative AI" to **"Agentic AI."** Instead of simply writing a summary, AI agents now execute multi-step workflows—such as planning a business trip, booking logistics, and filing expense reports—using natural language as the "command center." Language has become the universal API that connects disparate software systems.

2. Multimodal Convergence :

The "Language" in Large Language Models (LLMs) now encompasses more than text. Modern models are natively multimodal, meaning they process text, images, audio, and video simultaneously.

- **Intuitive Interaction :** Users can point a camera at a broken machine and ask, "How do I fix this?" and receive voice-guided, step-by-step instructions.
- **World Models :** AI is moving toward "World Models" that understand physical context, allowing for more grounded and less "hallucinatory" communication.

3. The Rise of Small Language Models (SLMs) :

While frontier models continue to grow, 2026 is the year of **Edge AI**. Small Language Models (SLMs) are now powerful enough to run locally on smartphones and IoT devices. This "On-Device Intelligence" ensures :

- **Privacy :** Sensitive conversations never leave the device.
- **Latency :** Real-time translation and voice assistance work without an internet connection.
- **Sustainability :** Reducing the massive energy footprint of centralized cloud data centers.

4. Hyper-Personalization and Emotional Intelligence :

AI communication is becoming "EQ-aware." By analyzing vocal inflections and sentiment, AI can adapt its tone to be empathetic during a customer support crisis or encouraging during a language learning session.

- **Contextual Memory :** Models now feature "Long Context Windows," allowing them to

remember months of previous interactions, making the AI feel like a long-term collaborator rather than a forgetful tool.

5. Cultural Preservation and Global Inclusion :

AI is being used to bridge the "digital divide" by revitalizing endangered languages.

- **Low-Resource Languages :** Advanced synthetic data techniques allow AI to support dialects that have minimal written records.
- **Real-Time Localization :** Beyond literal translation, AI now performs "cultural translation," adjusting metaphors and social nuances to ensure communication is respectful and effective across borders.

Conclusion :

The development of language and artificial intelligence is not just a technological advancement, but a new definition of communication. It is breaking down the wall between humans and machines. However, using it with caution and ethics is essential.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 55–60

Evaluating the Impact of Wildlife Protection Legislation through the Lens of Project Tiger

Aditya Khare, Research Scholor,
Co-Author : **Dr. Anshuma Upadhyay,** Associate Professor.

Abstract :

Wildlife conservation has become an essential aspect of environmental governance in India, particularly in the face of biodiversity loss, habitat destruction, and illegal wildlife trade. The Wildlife (Protection) Act, 1972 forms the backbone of India's legal framework for wildlife conservation.[1] Among the various conservation initiatives launched under this framework, Project Tiger stands out as a flagship programme aimed at protecting the endangered Bengal tiger and its habitat.[2] This paper seeks to evaluate the impact of wildlife protection legislation in India through the lens of Project Tiger, examining both its legal foundations and practical outcomes.

The study critically analyses the effectiveness of statutory provisions, policy measures, and institutional mechanisms associated with Project Tiger, including the establishment of tiger reserves, habitat protection, and the role of the National Tiger Conservation Authority. It explores the extent to which legislative support has contributed to the recovery of tiger populations, while also highlighting persistent challenges such as habitat fragmentation, human–wildlife conflict, poaching, and enforcement gaps. The paper further assesses the coordination between central and state authorities and the involvement of local communities in conservation efforts.

By adopting a doctrinal and analytical approach, the research underscores how Project Tiger reflects the strengths and limitations of India's wildlife protection laws. It argues that while Project Tiger has achieved notable conservation successes, its long-term sustainability depends on stronger legal enforcement, community participation, and integration of conservation goals with developmental policies. The study concludes by offering recommendations to strengthen wildlife protection legislation and enhance the effectiveness of conservation initiatives in India.

Keywords :

Wildlife Protection Laws, Project Tiger, Biodiversity Conservation, Wildlife (Protection)

Act, 1972, Tiger Reserves, Environmental Governance.

1. Introduction :

India is one of the world's most biologically diverse countries, hosting a wide range of flora and fauna across its varied ecosystems. However, rapid industrialisation, urban expansion, deforestation, and illegal wildlife trade have posed serious threats to wildlife conservation.[3] Recognising the urgency of protecting wildlife, the Indian legislature enacted the Wildlife (Protection) Act, 1972, providing a comprehensive legal framework for the conservation of wild animals, birds, and plants.?

Among the species facing severe threats, the tiger occupies a unique position due to its ecological significance as an apex predator and its cultural importance. The sharp decline in tiger populations during the mid-twentieth century prompted the Government of India to launch Project Tiger in 1973, making it one of the earliest species-specific conservation programmes in the world.?

2. Legal Framework for Wildlife Protection in India

2.1 Wildlife (Protection) Act, 1972 :

The **Wildlife (Protection) Act, 1972** was enacted with the primary objective of ensuring the protection and conservation of wildlife in India and regulating activities such as hunting, trade, and habitat destruction that pose serious threats to biodiversity.? The Act provides a comprehensive legal framework by classifying wildlife species under various schedules, thereby prescribing different degrees of protection based on the conservation status of each species. Endangered species such as the tiger are placed under the highest protection category, reflecting the legislature's intent to prevent their extinction and ensure their long-term survival. Over the years, several amendments have been introduced to address emerging conservation challenges, strengthen enforcement mechanisms, and enhance penalties for wildlife-related offences, thereby improving deterrence against poaching and illegal wildlife trade.?

A particularly significant development occurred with the **2006 amendment**, which led to the establishment of the **National Tiger Conservation Authority (NTCA)** as a statutory body. The NTCA plays a crucial role in supervising, monitoring, and coordinating tiger conservation efforts across the country. It is responsible for approving tiger conservation plans, ensuring compliance with statutory guidelines, facilitating inter-state coordination, and providing technical and financial assistance to states for effective implementation of Project Tiger.

2.2 Constitutional and Judicial Support :

Wildlife protection in India is constitutionally supported by Article 48A, which directs the State to protect the environment and wildlife, and Article 51A(g), which imposes a duty on citizens to safeguard nature.? Judicial interpretation of Article 21 has further expanded the scope of environmental

protection by recognising the right to a healthy environment as part of the right to life.[1]?

3. Project Tiger : Objectives and Structure :

Project Tiger was launched with the primary objective of ensuring a viable and self-sustaining population of tigers in their natural habitats, while simultaneously preserving the ecological integrity of forest ecosystems.[11] The programme recognises the tiger as an apex predator whose conservation is essential for maintaining biodiversity and ecological balance. Accordingly, Project Tiger places strong emphasis on habitat protection, restoration of degraded forest areas, and the maintenance of adequate prey base to support healthy tiger populations.

The programme adopts a science-based conservation approach that includes regular population estimation, habitat assessment, and the use of modern technologies such as camera traps and geographic information systems for effective monitoring.[12] In addition, stringent anti-poaching measures, deployment of specialised protection forces, and intelligence-based surveillance form core components of the strategy. Project Tiger also provides for the establishment and management of tiger reserves, which are divided into core (critical tiger habitats) and buffer zones to balance conservation objectives with the livelihood needs of local communities.

The implementation of Project Tiger follows a cooperative federal structure, wherein both the Central and State Governments share responsibilities for planning, funding, and execution of conservation measures.[13] While the Central Government, through the National Tiger Conservation Authority, provides policy guidance and financial support, the State Governments are entrusted with on-ground implementation, management of tiger reserves, and enforcement of wildlife protection laws.

4. Impact of Project Tiger

4.1 Conservation Achievements :

Project Tiger has contributed significantly to the recovery and stabilisation of tiger populations in India. The adoption of scientific monitoring techniques, including periodic population estimation exercises and habitat assessments, has enabled evidence-based conservation planning and improved management of tiger reserves. Enhanced protection measures, such as strengthened anti-poaching patrols, increased surveillance, and better inter-agency coordination, have played a vital role in reducing threats to tiger populations.

Furthermore, the expansion and effective management of protected areas under Project Tiger have ensured the preservation of critical tiger habitats and ecological corridors. These efforts have not only supported the growth of tiger populations but have also contributed to the conservation of associated flora and fauna. As a result of sustained legislative and policy support, India has emerged

as home to the largest population of wild tigers globally, underscoring the relative success of Project Tiger as a model for species-specific conservation.[1]?

4.2 Strengthening Institutional Mechanisms :

The establishment of the **National Tiger Conservation Authority (NTCA)** and the integration of Project Tiger within the statutory framework of the Wildlife (Protection) Act, 1972 have significantly strengthened institutional accountability and governance in tiger conservation. The NTCA has enhanced coordination among central and state conservation agencies by providing policy direction, monitoring compliance with conservation guidelines, and ensuring transparent utilisation of funds. This institutional integration has contributed to improved planning, implementation, and oversight of conservation measures across tiger reserves in India.[1]?

5. Challenges and Limitations :

Despite its success, Project Tiger faces several challenges. Human–wildlife conflict remains a major concern, particularly for communities living near tiger reserves.[1]? Habitat fragmentation caused by infrastructure projects further threatens ecological connectivity.[1]? Illegal poaching and wildlife trade continue to undermine conservation efforts, highlighting enforcement gaps.[1]?

Additionally, the displacement of forest-dwelling and indigenous communities due to the creation of protected areas raises concerns regarding social justice and sustainable conservation.[1]?

6. Role of Judiciary in Wildlife Conservation :

The Indian judiciary has played a proactive and significant role in strengthening wildlife conservation through the mechanism of public interest litigation. Judicial intervention has often acted as a catalyst in ensuring effective implementation of wildlife protection laws, particularly in situations where administrative action has been inadequate. In **Centre for Environmental Law, WWF-India v. Union of India**, the Supreme Court issued comprehensive directions aimed at strengthening tiger conservation, regulating tourism activities in tiger reserves, and ensuring compliance with statutory guidelines under the Wildlife (Protection) Act, 1972.[2]?

Through such decisions, the judiciary has consistently reinforced the objectives of wildlife protection legislation by emphasising the ecological importance of endangered species and the constitutional duty of the State to safeguard wildlife. Judicial pronouncements have also underscored the principle that conservation measures must be prioritised over commercial and developmental interests when ecological sustainability is at stake, thereby strengthening the legal and institutional framework for wildlife protection in India.

7. Recommendations :

To enhance the effectiveness of wildlife protection legislation and Project Tiger, the following

measures are suggested :

- Strengthening enforcement and surveillance mechanisms.
- Promoting community participation and livelihood-based conservation.
- Ensuring wildlife-friendly infrastructure development.
- Enhancing inter-state and international cooperation to curb illegal wildlife trade.

8. Conclusion :

Project Tiger provides an effective and comprehensive lens through which the impact of wildlife protection legislation in India can be critically evaluated. As one of the most ambitious and long-standing conservation initiatives in the country, it demonstrates how strong statutory support under the Wildlife (Protection) Act, 1972, coupled with institutional mechanisms such as the National Tiger Conservation Authority, can contribute meaningfully to species conservation and habitat protection[21]. The programme's success in stabilising and enhancing tiger populations reflects the positive outcomes of science-based management, strengthened enforcement, and sustained governmental commitment.

However, the experience of Project Tiger also reveals the inherent limitations of a predominantly enforcement-centric and species-focused approach to conservation. Persistent challenges such as human–wildlife conflict, habitat fragmentation due to developmental activities, displacement of forest-dependent communities, and continuing threats from illegal wildlife trade highlight the need for a more inclusive and holistic conservation framework. Legal protection alone, without effective implementation and social acceptance, is insufficient to ensure long-term ecological sustainability.

Therefore, the future of wildlife conservation in India depends on a balanced and integrated approach that combines robust legal enforcement with ecological science, community participation, and sustainable development planning. Strengthening local involvement, ensuring fair rehabilitation and livelihood opportunities, and promoting coexistence between human populations and wildlife are essential to the enduring success of conservation initiatives. By addressing these dimensions, wildlife protection legislation, as exemplified through Project Tiger, can evolve into a more resilient and equitable model capable of safeguarding India's rich biodiversity for future generations.

Footnotes :

1. The Wildlife (Protection) Act, 1972.
2. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, *Project Tiger: Guidelines for Tiger Conservation* (Government of India).

3. Shyam Divan & Armin Rosencranz, *Environmental Law and Policy in India* (Oxford University Press).
4. P. Leelakrishnan, *Environmental Law in India* (LexisNexis).
5. Government of India, *Project Tiger: A National Conservation Programme*.
6. The Wildlife (Protection) Act, 1972, ss. 9–12.
7. Wildlife (Protection) Amendment Act, 2006.
8. Constitution of India, arts. 48A, 51A(g).
9. *M.C. Mehta v. Union of India*, AIR 1987 SC 1086.
10. Ministry of Environment, Forest and Climate Change, *Project Tiger Guidelines*.
11. National Tiger Conservation Authority, *Tiger Conservation Plan*.
12. Ibid.
13. NTCA, *All India Tiger Estimation Report*.
14. Ibid.
15. Gurdip Singh, *Environmental Law* (Eastern Book Company).
16. *T.N. Godavarman Thirumulpad v. Union of India*, (1997) 2 SCC 267.
17. Convention on International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora, 1973.
18. Forest Rights Act, 2006 (contextual reference).
19. *Centre for Environmental Law, WWF-India v. Union of India*, (2013) 8 SCC 234.
20. Convention on Biological Diversity, 1992

Author's Details :
ADITYA KHARE, Assistant Professor
FACULTY OF LAW, RKDF UNIVERSITY, BHOPAL.
Email ID: khareaditya05@gmail.com
Mobile Number: 8103583807

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 61-69

महाभारत और पुराणों के संदर्भ में च्यवन–सुकन्या आख्यान एवं उसकी आयुर्वेदिक प्रासंगिकता

सुमेधा शर्मा
शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

प्रस्तावना (Introduction) -

वैदिक वांग्मय भारतीय संस्कृति का मूल उत्स है। **'आख्यान'** शब्द का अर्थ है—उत्तर और प्रतिवचन।[1] पाणिनि अष्टाध्यायी में आख्यान शब्द का प्रयोग दो प्रकार के अर्थों में किया गया है –

१. उत्तर या प्रतिवचन २. इत्थंभूत आख्यान अर्थात यथार्थ वृत्तांत कथा या इतिवृत्तात्मक कथन।

"आख्यानं पूर्ववृत्तोक्तिः" वाक्य ऐतिहासिक और पौराणिक कथन को आख्यान कहता है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार **"चक्षिङ्-व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शने अपि"** (स्पष्ट बोलना और देखना) धातु से "आख्यान" पद की रचना होती है। "चक्षिङ्" को "ख्यान" आदेश हो जाता है, फिर यह "ख्या" धातु का रूप धारण कर लेती है। इस प्रकार "आ" उपसर्गपूर्वक ख्या धातु से ल्युट् (अन) प्रत्यय के योग से " आख्यान" शब्द की रचना होती है

च्यवन और सुकन्या का आख्यान भारतीय साहित्य में सर्वाधिक प्राचीन और महत्वपूर्ण आख्यानों में से एक है। यह कथा केवल एक वृद्ध ऋषि और नवयुवती के विवाह की लौकिक कथा नहीं है, अपितु इसके गर्भ में आयुर्विज्ञान, यज्ञीय अधिकार, दांपत्य धर्म और देव-मानव संघर्ष के गंभीर आयाम छिपे हैं।

वैदिक साहित्य में आख्यान का स्वरूप -

च्यवन का अर्थ है च्युत होना।" 'च्यवन' शब्द की व्युत्पत्ति **'च्युङ् गतौ'** (भ्वादिगण) धातु से मानी गई है, जिसका अर्थ है गिरना या गति करना। **निरुक्तकार** इसे गति के अर्थ में लेते हैं[2], जबकि पाश्चात्य विद्वान इसे 'तेज से च्युत' (Fallen/Fading Sun) के अर्थ में देखते हैं।

---

[1] . संस्कृत हिन्दी कोश वामन शिवराम आप्टे "आख्यान" शब्द

[2] . निरुक्त, १०.५८

यास्क ने निरुक्त में "च्यवन" पद की व्युत्पत्ति की है। इनके अनुसार "च्यवन एक ऋषि है, जो मन्त्रों का च्यावयिता-चुआने हारा है। च्यवन और च्यवान नाम समानार्थक हैं। इन्होंने **"युवं च्यवानं सनयं..."**[3] मन्त्र का प्रथमार्ध उद्धृत करते हुए इसका शब्दानुसारी च्यवनपरक अर्थ किया है।

ऋग्वेद संहिता में च्यवन आख्यान -

ऋग्वेद में च्यवन ऋषि का उल्लेख मुख्य रूप से अश्विनीकुमारों के पराक्रम के संदर्भ में हुआ है। यहाँ विस्तृत कहानी नहीं, अपितु घटना का संकेत मात्र है।

१. जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिं न च्यवानात्।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रादित् पतिं कृणुथः कनीनाम्॥ ऋग्वेद, १.११६.१०

"हे अश्विनौ! तुमने जीर्ण च्यवन ऋषि के शरीर को आवृत्त करके उसके बुढ़ापे को दूर कर दिया था, जैसे शरीर से कवच को हटाकर दूर कर दिया जाता है। तुमने पुत्र आदि द्वारा परित्यक्त ऋषि के जीवन को पुष्ट एवं दीर्घायु बनाया था और फिर उन्हें कन्याओं का पति बना दिया था ॥ १० ॥

विश्लेषण : यहाँ ऋषि कहते हैं- "हे नासत्य! आपने जीर्ण शरीर वाले च्यवन के शरीर से बुढ़ापे को उसी प्रकार उतार फेंका जैसे शरीर से कवच उतारा जाता है।" यहाँ 'कनीनाम् पतिं' (कन्याओं का पति) शब्द भविष्य के 'सुकन्या' आख्यान का मूल बीज है।

शतपथ ब्राह्मण: सौदेबाजी और यज्ञीय अधिकार -

च्यवन-सुकन्या की कथा का सर्वप्रथम विस्तृत रूप 'शतपथ ब्राह्मण'[4] में प्राप्त होता है।यह आख्यान "आश्विनग्रह" नामक यज्ञ पात्र के विषय में वर्णित है। यहाँ कथा का उद्देश्य 'अश्विनीकुमारों' को यज्ञ में सोमपान का अधिकारी बनाना है। इस स्थान पर एक स्पष्ट 'अनुबंध' (Contract) दृष्टिगोचर होता है। इस कथानक में महर्षि च्यवन अश्विनि कुमारों से कहते हैं की -

"स होवाच पुनर्वै मा युवानं कुरुतं, अथ वां वक्ष्यामि यथा वामदेवेषु भागो भविष्यतीति।"[5]

- **शब्दार्थ:** स होवाच - उसने कहा, पुनर्वै मा युवानं कुरुतं - मुझे पुनः युवा कर दो, अथ वां वक्ष्यामि - तब तुम्हें बताऊंगा, यथा वामदेवेषु भागो भविष्यतीति - जिससे देवताओं में तुम्हारा भाग हो जाएगा।
- **व्याख्या:** यह अंश सिद्ध करता है कि वैदिक ऋषियों के पास 'ज्ञान' (Knowledge) ही सबसे बड़ी मुद्रा थी। च्यवन दया की भीख नहीं मांगते। वे कहते हैं—"मेरे पास वह ज्ञान है जिससे तुम देवताओं की पंक्ति में बैठ सकोगे।" यह वाक्य 'यज्ञीय कर्मकाण्ड' की महत्ता को दर्शाता है।

पौराणिक साहित्य में रूपान्तरण और सामाजिक संघर्ष -

---

[3] . ऋ० १०।३९।४

[4] . शतपथ ब्राह्मण, ४.१.५

[5] . शतपथ ब्राह्मण, ४.१.५.११

वैदिक संहिताओं से निकलकर जब यह कथा महाभारत और पुराणों में आती है, तो इसमें 'नाटकीयता' और 'चरित्र-चित्रण' का समावेश हो जाता है।

महाभारत :

महाभारत के वनपर्व[6] में यह कथा लोमश ऋषि द्वारा युधिष्ठिर को सुनाई गई है। यहाँ आख्यान 'वर्ग-संघर्ष' (Class Conflict) का रूप ले लेता है। इन्द्र अश्विनीकुमारों को 'हीन' मानते हैं। इन्द्र आक्षेप लगाते हैं कि -

नेमे सोमं गार्हपत्यं पिबेयुरिति मे मतिः।
भिषजौ कर्मणा ह्येते विचरन्ते हि मानुषान्॥[7]

इन्द्र का तर्क है कि चूँकि अश्विनीकुमार 'भिषज' (वैद्य) हैं और मनुष्यों के बीच विचरते हैं, अतः वे अपवित्र हैं। यह तत्कालीन समाज में 'चिकित्सक वर्ग' की स्थिति को दर्शाता है। च्यवन ऋषि इस रूढ़ि को तोड़ते हैं।

मद दैत्य की उत्पत्ति (तपोबल का चरम) :

जब इन्द्र वज्र उठाते हैं, तो च्यवन 'कृत्या' (Tantric creation) का प्रयोग करते हैं।

ततोऽसृजन्मुनिः कृत्यं बलेन महता वृतः।
मदं नाम महाघोरं तपोवीर्यसमुद्भवम्॥[8]

- **व्याख्या:** 'मद' (नशा/अहंकार) का मानवीकरण करके ऋषि ने इन्द्र के अहंकार को उसी के स्वरूप 'मद' से पराजित किया। यहाँ ऋषि का तपोबल देवराज की सत्ता से ऊपर स्थापित होता है। 'वल्मीक' (बांबी) का प्रसंग भी यहीं जुड़ता है, जो ऋषि की कठोर तपस्या का प्रतीक है।

श्रीमद्भागवत पुराण पातिव्रत्य की परीक्षा -

श्रीमद्भागवत में कथा का केंद्र बिंदु 'सुकन्या' का सतीत्व है।[9] यहाँ सुकन्या की एक कठिन परीक्षा ली जाती है।

रूप सादृश्य और भ्रम:

त उत्तीर्य सरसीभ्याम् बभुः पीतवाससः।
मृष्टकुण्डलिनस्तुल्या रूपवीर्यवयःश्रियः॥[10]

- **शब्दार्थ:** तुल्या - एक समान, रूप-वीर्य-वयः-श्रियः - रूप, शक्ति, आयु और कांति में।
- **व्याख्या:** भागवतकार ने यहाँ बाह्य सौंदर्य की निरर्थकता सिद्ध की है। जब पति और पर-पुरुष (अश्विनीकुमार) रूप में समान हो गए, तब सुकन्या ने अपने 'पातिव्रत्य' (Spiritual intuition) से

---

6 . महाभारत, वनपर्व, १२२-१२५

7 . महाभारत, वनपर्व, १२४.१२

8 . महाभारत, वनपर्व, १२४.१७

9 . श्रीमद्भागवत, ९.३.१६

10 . श्रीमद्भागवत, ९.३.१६

पति को पहचाना। यह सिद्ध करता है कि पौराणिक काल में विवाह 'देह' का नहीं, 'आत्मा' का संबंध था।

महाभारत और श्रीमद्भागवत के अतिरिक्त, च्यवन-सुकन्या का आख्यान अन्य प्रमुख पुराणों में भी विशिष्ट परिवर्तनों के साथ उपलब्ध होता है। इन पुराणों में कथा का उद्देश्य प्रायः तीर्थ-माहात्म्य, शक्ति-आराधना या विशिष्ट भौगोलिक स्थानों की महिमा का वर्णन करना है।

देवीभागवत पुराण शक्ति और पातिव्रत्य का समन्वय -

श्रीमद्भागवत जहाँ 'भक्ति' प्रधान है, वहीं देवीभागवत 'शक्ति' प्रधान है। यहाँ कथा में सुकन्या के पातिव्रत्य को 'देवी आराधना' से जोड़ा गया है।[11]

- **कथानक में अंतर:** यहाँ अश्विनीकुमारों द्वारा सुकन्या को प्रलोभन देने का वर्णन अधिक विस्तार से और मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है। वे सुकन्या से कहते हैं— *"जीर्ण-शीर्ण पति को त्यागकर हमारे साथ चलो, जो देवताओं के समान सुंदर हैं।"*
- **शक्ति का हस्तक्षेप:** देवीभागवत में यह संकेत मिलता है कि सुकन्या की यह दृढ़ता और विवेक 'आदिशक्ति' की कृपा का परिणाम है। यहाँ सुकन्या केवल पतिव्रता नहीं, अपितु एक विदुषी है जो अश्विनीकुमारों के तर्कों का खंडन करती है।
- **निष्कर्ष:** इस पुराण में यह कथा सिद्ध करती है कि नारी की शक्ति (Energy/Shakti) ही पुरुष (ऋषि) के अभ्युदय का कारण है।

पद्म पुराण तीर्थ माहात्म्य और भूगोल -

पद्म पुराण में इस आख्यान का उपयोग मुख्य रूप से 'तीर्थों' की पवित्रता स्थापित करने के लिए किया गया है।[12]

- **भौगोलिक स्थिति:** यहाँ च्यवन आश्रम की स्थिति 'नर्मदा तट' या विशिष्ट 'पवित्र सरोवरों' के निकट बताई गई है। पद्म पुराण में उस स्थान को **'च्यवन तीर्थ'** या **'यौवन तीर्थ'** के नाम से महिमामंडित किया गया है।
- **स्नान का फल:** इस पुराण के अनुसार, जिस सरोवर में च्यवन ऋषि ने स्नान कर यौवन प्राप्त किया था, वहां स्नान करने से सामान्य मनुष्यों को भी रोग-मुक्ति और रूप-सौंदर्य की प्राप्ति होती है। यह आख्यान को 'धार्मिक पर्यटन' (Religious Tourism) से जोड़ता है।

---

11 . देवीभागवत पुराण, सप्तम स्कन्ध, अध्याय २-७

12 . पद्म पुराण, सृष्टि खंड एवं पाताल खंड

स्कन्द पुराण शैव प्रभाव और लिंग स्थापना -

स्कन्द पुराण सबसे विशाल पुराण है और इसमें कथाओं का 'स्थानीकरण' (Localization) मिलता है।

- **शिव-सम्बन्ध:** चूँकि स्कन्द पुराण शैव-प्रधान है, यहाँ च्यवन ऋषि द्वारा 'शिवलिंग' की स्थापना का उल्लेख मिलता है। पुनर्यौवन प्राप्त करने के पश्चात, कृतज्ञता स्वरूप च्यवन ऋषि ने भगवान शिव की आराधना की।[13]
- **महाकाल वन:** कुछ प्रसंगों में च्यवन के आश्रम को 'महाकाल वन' (उज्जैन के निकट) या 'हाटकेश्वर क्षेत्र' में दर्शाया गया है। यहाँ कथा का उद्देश्य यह दिखाना है कि वैष्णव या वैदिक ऋषि भी अंततः शिव की शरण में ही सिद्धि प्राप्त करते हैं।

वायु एवं मत्स्य पुराण वंशानुचरित (Genealogy) -

इन प्राचीन पुराणों में कथात्मक विस्तार कम है, किन्तु 'भार्गव वंश' का ऐतिहासिक विवरण अधिक है।

- **वंश विस्तार:** इन पुराणों में च्यवन और सुकन्या की संतानों— **प्रमति, आप्नवान** और पौत्र **और्व** — का विस्तृत वर्णन है। यह शोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह च्यवन को एक 'मिथकीय पात्र' से निकालकर एक 'ऐतिहासिक कुल-पुरुष' (Historical Ancestor) के रूप में स्थापित करता है। परशुराम इसी वंश परंपरा में आगे चलकर जन्म लेते हैं।

अन्य पुराणों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि च्यवन-सुकन्या आख्यान एक 'लचीला आख्यान' था।

1. **वैष्णव पुराणों** (भागवत, पद्म) ने इसे विष्णु-भक्ति और तीर्थ से जोड़ा।
2. **शाक्त पुराण** (देवीभागवत) ने इसे नारी-शक्ति से जोड़ा।
3. **शैव पुराण** (स्कन्द) ने इसे शिव-आराधना से जोड़ा।

यह विविधता भारतीय संस्कृति की उस 'समन्वयवादी दृष्टि' को दर्शाती है, जहाँ एक ही वैदिक बीज (आख्यान) विभिन्न संप्रदायों की भूमि में गिरकर अलग-अलग रंग रूप के वृक्षों के रूप में पल्लवित हुआ।

पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण 'सौर-मिथक' -

---

13 . **स्कन्द पुराण, अवन्ती खण्ड/रेवा खण्ड**

भारतीय व्याख्याकार जहाँ इसे इतिहास और अध्यात्म मानते हैं, वहीं पाश्चात्य प्राच्यविदों (Western Indologists) ने इसे 'प्राकृतिक रूपकों' के रूप में देखा है।

मैक्स मूलर और मैक्डोनेल का मत -

इन विद्वानों के अनुसार, यह कथा प्रतिदिन घटित होने वाली खगोलीय घटना है।

१. **च्यवन** (जीर्ण सूर्य): 'च्यवन' शब्द 'च्यु' धातु से बना है (गिरना/ढलना)। यह अस्ताचलगामी सूर्य या शीत ऋतु के निस्तेज सूर्य का प्रतीक है।

२. **सुकन्या** (उषा/गोधूलि): वह सूर्य की पत्नी 'उषा' या सांध्य बेला है।

३. **अश्विनीकुमार** ये भोर और सांझ के तारे हैं जो सूर्य को पुनः उदित होने में सहायता करते हैं।

मैक्डोनेल लिखते हैं – **"The sage Chyavana... is essentially the sun that has sunk in the west or lost its heat in winter, to emerge again shining in the east or in spring."**[14]

विंटरनिट्ज का तर्क है कि वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के इस 'पुनर्जीवन' को एक मानवीय आख्यान का रूप दे दिया। यह व्याख्या आख्यान के 'आधिदैविक' पक्ष को सबल करती है।

आयुर्वेदिक प्रासंगिकता -

वैदिक साहित्य केवल 'कर्मकांड' नहीं, अपितु 'जीवन-विज्ञान' (Life Sciences) का भी आदि स्रोत है।

आधुनिक प्रासंगिकता वृद्धावस्था विज्ञान (Gerontology) एवं रसायन तंत्र -

यदि वैदिक आख्यानों की मीमांसा केवल धार्मिक या ऐतिहासिक दृष्टि से की जाए तो ये उनके साथ उचित न्याय न होगा। च्यवन ऋषि का यह आख्यान, २१वीं सदी के **'वृद्धावस्था विज्ञान' (Gerontology)** और **'पुनर्यौवन चिकित्सा' (Regenerative Medicine)** के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। जहाँ आधुनिक विज्ञान 'एन्टी-एजिंग' (Anti-aging) के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास कर रहा है, वहीं यह वैदिक आख्यान सदियों पूर्व 'जरा-चिकित्सा' (Geriatrics) और 'रसायन विद्या' की दुन्दुभि बजा रहा था।

१. रसायन तंत्र और कायकल्प -

आयुर्वेद के अष्टांगों में 'रसायन तंत्र' एक प्रमुख अंग है, जिसका मूल उद्देश्य है—वृद्धावस्था और रोगों को दूर रखना। च्यवन ऋषि को इस विद्या का प्रथम 'नैदानिक लाभार्थी' माना जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

- **कोशिकीय पुनर्जीवन (Cellular Regeneration) -**

---

14 . Vedic Mythology, Page 51

आधुनिक जेरोन्टोलॉजी (Gerontology) मानती है कि शरीर में 'फ्री रेडिकल्स' (Free Radicals) के संचय और कोशिकाओं (Cells) के क्षरण से बुढ़ापा आता है। अश्विनीकुमारों द्वारा च्यवन को दिए गए उपचार को आज के संदर्भ में 'एंटी-ऑक्सीडेंट थेरेपी' माना जा सकता है। जिस प्रकार आधुनिक विज्ञान 'स्टेम सेल थेरेपी' द्वारा जीर्ण ऊतकों (Tissues) को नया जीवन देने की बात करता है, वैदिक 'कायकल्प' उसी का एक आदिम किन्तु उन्नत स्वरूप था।

- **च्यवनप्राश एक वैज्ञानिक विरासत -**

चरक संहिता (चिकित्सा स्थान, अध्याय १) में च्यवनप्राश का विस्तृत वर्णन है, जिसका मुख्य घटक 'आमलकी' (आंवला) है। आधुनिक विज्ञान सिद्ध कर चुका है कि आंवला विटामिन-सी और एंटी-ऑक्सीडेंट्स का सर्वोत्तम स्रोत है, जो 'कोलेजन' (Collagen) के निर्माण में सहायक है और त्वचा की झुर्रियों तथा शारीरिक दुर्बलता को रोकता है। अतः च्यवन का आख्यान केवल मिथक नहीं, अपितु एक 'औषधीय आविष्कार' (Pharmaceutical Invention) का इतिहास है।

२. जरा-मनोविज्ञान और सामाजिक उपेक्षा -

शतपथ ब्राह्मण में वर्णित है कि गाँव के बच्चों ने वृद्ध च्यवन पर धूल फेंकी और उनका अपमान किया। यह प्रसंग आधुनिक समाज की एक गंभीर समस्या - **'वयोवृद्धों के प्रति भेदभाव'** को रेखांकित करता है।

- **सामाजिक बहिष्कार (Social Exclusion) -**

जिस प्रकार आज के समाज में वृद्धों को 'अनुत्पादक' (Unproductive) मानकर हाशिये पर धकेल दिया जाता है, उसी प्रकार उस काल में जीर्ण च्यवन उपेक्षित थे। सुकन्या का उनसे विवाह और अश्विनीकुमारों द्वारा उन्हें पुनः समाज की मुख्यधारा (यज्ञ) में लाना, यह संदेश देता है कि वृद्धों के पास अनुभव और ज्ञान (तप) की जो पूंजी है, समाज को उसकी आवश्यकता है।

- **इन्द्र की दृष्टि और आधुनिक युवा-केंद्रित समाज -**

इन्द्र का विरोध इस बात का प्रतीक है कि सत्ता हमेशा 'शक्ति और यौवन' को पूजती है और 'जरा' (बुढ़ापे) से घृणा करती है। च्यवन ने अपने तपोबल से सिद्ध किया कि शारीरिक अक्षमता का अर्थ मानसिक या बौद्धिक अक्षमता नहीं है। यह आख्यान आज के 'सक्रिय वार्धक्य' (Active Ageing) की अवधारणा का समर्थन करता है।

३. मनश्चिकित्सा और इच्छाशक्ति (Psychosomatic Medicine) -

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान स्वीकार करता है कि रोगी की 'जीने की इच्छा' (Willpower) उपचार में ५०% भूमिका निभाती है। इसे **'प्लेसीबो इफेक्ट'** या **'साइकोसोमेटिक हेल्थ'** से भी जोड़ा जा सकता है।

- **तपस्या और मानसिक दृढ़ता -**

च्यवन ऋषि केवल औषधियों से ठीक नहीं हुए। उन्होंने वर्षों तक 'वल्मीक' (बांबी) के भीतर रहकर जो तप किया, वह उनकी मानसिक एकाग्रता और 'जैविक क्रियाओं' (Biological functions) पर नियंत्रण का सूचक है। सुकन्या के प्रेम और सेवा ने उनके भीतर 'जीने की जिजीविषा' को पुनः जागृत किया। आधुनिक जेरोन्टोलॉजी भी मानती है कि भावनात्मक संबल (Emotional Support) वृद्धों की आयु बढ़ाने में औषधि से अधिक कारगर होता है।

निष्कर्ष समग्र स्वास्थ्य का आदर्श -

च्यवन-सुकन्या आख्यान आधुनिक 'होलिस्टिक हेल्थ' (समग्र स्वास्थ्य) का प्रतिमान है। यह सिखाता है कि पूर्ण स्वास्थ्य के लिए तीन तत्वों का मिलना आवश्यक है:

1. **चिकित्सकीय हस्तक्षेप** (अश्विनीकुमारों की विद्या/औषधि)।
2. **पारिवारिक/सामाजिक सहयोग** (सुकन्या की सेवा और समर्पण)।
3. **व्यक्तिगत इच्छाशक्ति** (च्यवन का तप और विश्वास)।

अतः, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह आख्यान हमें चेतावनी देता है कि यदि हम वृद्धों के ज्ञान (च्यवन) और चिकित्सकों की सेवा (अश्विनौ) का सम्मान नहीं करेंगे, तो समाज में 'अशिव' (रोग और कलह) फैलेगा, जैसा शर्याति के राज्य में हुआ था। यह कथा 'वृद्धावस्था' को एक 'अभिशाप' के बजाय 'रूपांतरण के अवसर' के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करती है।

समीक्षात्मक निष्कर्ष (Critical Conclusion) -

च्यवन-सुकन्या आख्यान का वैदिक काल से पौराणिक काल तक का सफर भारतीय चेतना के विकास का दर्पण है।

1. **उद्देश्य में परिवर्तन:** ऋग्वेद में जो केवल एक 'दैवीय चिकित्सा' का दृष्टांत था, शतपथ ब्राह्मण में वह 'यज्ञीय अधिकार' की प्राप्ति का साधन बना। महाभारत ने इसे 'तप बनाम राजसत्ता' के संघर्ष में बदला, और भागवत पुराण ने इसे 'विशुद्ध भक्ति' और 'पातिव्रत्य' के धरातल पर प्रतिष्ठित किया।
2. **सामाजिक उत्कर्ष:** यह कथा समाज में 'वैद्य' (चिकित्सक) वर्ग को सम्मान दिलाने का प्राचीनतम दस्तावेज है। साथ ही, सुकन्या का चरित्र एक 'समझौते की वस्तु' से उठकर 'पूजनीय सती' के रूप में विकसित होता है।
3. **समन्वय:** पाश्चात्य विद्वानों का 'सौर-मिथक' सिद्धांत और भारतीय विद्वानों का 'अध्यात्मिक' मत परस्पर विरोधी नहीं, अपितु पूरक हैं। जो ब्रह्मांड में 'सूर्य का पुनरुदय' है, वही पिंड (शरीर) में 'जीवात्मा का पुनर्यौवन' है।

अंततः, यह आख्यान हमें सिखाता है कि बाह्य सौंदर्य (जो अश्विनीकुमार दे सकते हैं) क्षणभंगुर है, किन्तु तप और निष्ठा (जो च्यवन और सुकन्या के पास है) शाश्वत है।

---

७. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

(अ) मूल स्रोत (Primary Sources)

1. **ऋग्वेद संहिता** (सायण भाष्य सहित). (२०१०). सम्पादक: पं. रामगोविन्द त्रिवेदी. वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन.
2. **देवीभागवत पुराण**. (२०१५). (सटीक). गोरखपुर: गीताप्रेस.
3. **महाभारत** (प्रथम खण्ड). (२००८). (वनपर्व). गोरखपुर: गीताप्रेस.
4. **शतपथ ब्राह्मण** (विज्ञान भाष्य). (१९९८). अनुवादक: स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती. नई दिल्ली: गोविन्दराम हासानन्द.
5. **श्रीमद्भागवत महापुराण**. (२०१२). (विशिष्ट संस्करण). गोरखपुर: गीताप्रेस.

(ब) सहायक ग्रन्थ (Secondary Sources)

1. **अग्रवाल, वी.एस.** (१९८६). *वैदिक विमर्श*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
2. **उपाध्याय, बलदेव**. (२००२). *पुराण विमर्श*. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन.
3. **द्विवेदी, कपिलदेव**. (१९९५). *वैदिक साहित्य और संस्कृति*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
4. **Macdonell, A.A.** (1897). *Vedic Mythology*. Strassburg: Verlag von K.J. Trubner. (Reprint: Motilal Banarsidass, Delhi).
5. **Winternitz, M.** (1927). *A History of Indian Literature* (Vol. I). Calcutta: University of Calcutta.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 70–74

भारत एवं नेपाल की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक– माँ त्रिपुरा सुंदरी मंदिर (बैतड़ी, नेपाल)

सत्यवीर खनका
शोधार्थी, इतिहास विभाग
लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़।

सारांश :

हिमालय के सानिध्य पर बसे दो संप्रभु राष्ट्र भारत तथा नेपाल आज अपनी–अपनी अलग पहचान बनाए हुये हैं मगर ये दोनों राष्ट्र एक–दूसरे के साथ अपने भौगोलिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को संजोते हैं। दोनों राष्ट्र, मध्य हिमालय का भाग होने के कारण ऐसे सांस्कृतिक संबंधों को साझा करते हैं जो परस्पर पारिवारिक तथा भ्रातृत्व की भावना पर आधारित हैं। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत दोनों देशों की संस्कृतिक एकता के प्रतीक माँ त्रिपुरा सुंदरी मंदिर का अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द : पिथौरागढ़, बैतड़ी, जात, कौतिक, संक्रांति, औरात।

भौगोलिक स्थिति :

कुमाऊँ मंडल के अल्मोड़ा जिले की मुनस्यारी, धारचूला, डीडीहाट तथा पिथौरागढ़ तहसीलों को मिलाकर 24 फरवरी 1960 को एक नए जनपद पिथौरागढ़ के रूप में गठित किया गया (सिंह, 17:2023)। 1972 ई. में चम्पावत तहसील को अल्मोड़ा से पृथक कर पिथौरागढ़ में सम्मलित किया गया (बलूनी, 10:2021) मगर 15 सितम्बर 1997 में चम्पावत तहसील को पिथौरागढ़ से पृथक कर, एक जिले के रूप में सृजित किया गया।

7,090 वर्ग किलोमीटर (वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर) भौगोलिक क्षेत्रफल में फैला पिथौरागढ़ 29° 04' से 30° 03' उत्तरी अक्षांश तथा 80° से 81° पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है (जनपद पिथौरागढ़ एक दृष्टि– 2020–21)। पूर्वी रामगंगा, सरयू तथा काली नदी के जलागम क्षेत्र में स्थित उत्तराखंड के इस सीमान्त जिले का अधिकांश पर्वतीय भू–भाग हिमालय की मध्य/लघु, उच्च/वृहत हिमालय एवं ट्रांस/टेथिस हिमालय का भाग है। इस जनपद की ध्वज, थलकेदार, चौकोड़ी, बेरीनाग, कालामुनी, चंडाक, असुरचुला पहाड़ियां (जिनकी औसत लम्बाई 2000 मीटर तक है) मध्य हिमालय/लघु हिमालय का, ओम पर्वत, छिपला कोट (जिनकी ऊँचाई लगभग 2000–7000 मीटर तक है) उच्च/वृहत हिमालय का तथा गोरी, धौली, कुटी नदियों से निर्मित

जोहार, चौदास, दारमा एवं व्यास जैसी खूबसूरत घाटियाँ ट्रांस/टेथिस हिमालय का भाग हैं (पाठक, 05:2009)। इस जनपद की जलवायु समशीतोष्ण है। प्रशासनिक दृष्टि से 4,83,439 (2011 की जनगणना के अनुसार) की जनसंख्या वाले इस जिले को विधानसभा क्षेत्रों, तहसीलों, विकास खण्डों, ग्राम पंचायतों, न्याय पंचायतों एवं गाँवों में वर्गीकृत किया गया है।

पिथौरागढ़ जिले से पूर्व दिशा की ओर लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित झूलाघाट, काली नदी से सीमा बनाता हुआ एक छोटा सा कस्बा। इस झूलाघाट कस्बे से काली नदी द्वारा सीमा बनाता हुआ नेपाल का बैतड़ी जिला स्थित है बैतड़ी, नेपाल के 77 जिलों में से एक जिला है जो नेपाल के 7 प्रान्तों (राज्य) में से एक सुदूर पश्चिम प्रान्त के अंतर्गत आने वाले महाकाली नदी क्षेत्र के 4 जिलों में से एक पर्वतीय जिला है जिसका अत्यधिक धार्मिक महत्व है। इसका मुख्यालय दशरथ चंद में स्थित है। सुदूर पश्चिम प्रान्त में कुल 9 जिले स्थित हैं। बैतड़ी जिला विश्व के मानचित्र में 29°18' उत्तर से 29°41' उत्तरी अक्षांश तथा 80°19' पूर्व से 80°81' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। 1,519 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैले इस जिले की समुद्र तल से ऊँचाई 390 मीटर से 2950 मीटर तक है। इस पर्वतीय जिले के चारों ओर की ऊँची पर्वतीय पहाड़ियों पर 4 केदार (शिव) के मंदिर स्थित हैं। 4 केदारों में से दक्षिण में ग्वालेक केदार, पूर्व में रौलाकेदार, उत्तर में देउलेक केदार तथा पश्चिम में ध्वज केदार हैं (https://daobaitadi.moha.gov.np)।

पिथौरागढ़ (भारत) एवं बैतड़ी (नेपाल) जिले का मैप, स्रोत- http://www.researchgate.net

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर का इतिहास :

भारत एवं नेपाल की सांस्कृतिक विरासत को साझा करता माँ त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर भारत के उत्तराखंड राज्य के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ से तीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित झूलाघाट से पंद्रह किलोमीटर की दूरी पर स्थित नेपाल के सुदूर पश्चिम राज्य के बैतड़ी जिले के पुजारा गाँव में स्थित है (पाण्डेय, 05:2023)।

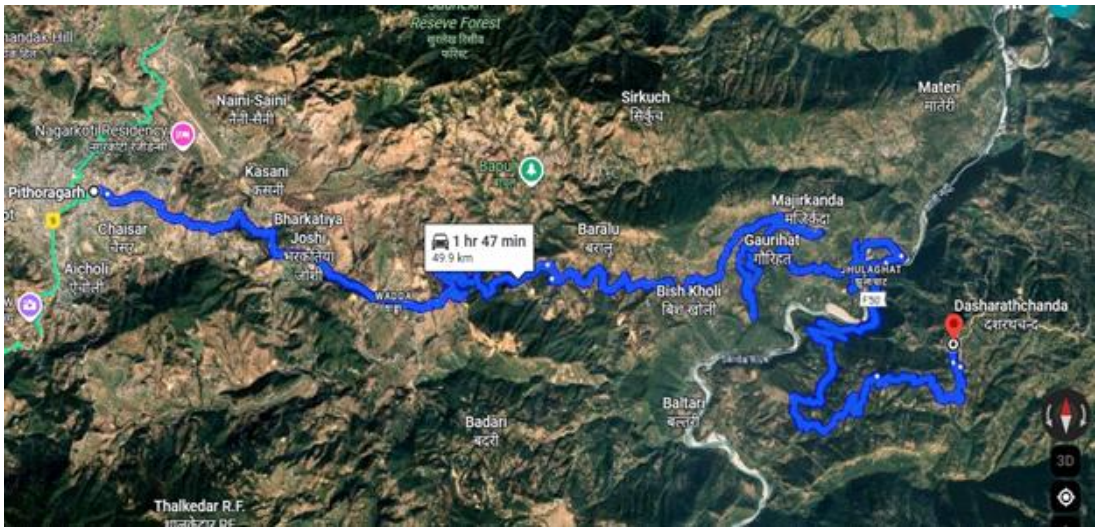

स्रोत- गूगल मैप की सहायता से पिथौरागढ़ से बैतड़ी जाने का मार्ग

माँ भगवती त्रिपुरा सुंदरी की उत्पत्ति के सन्दर्भ में लोगों के मध्य यह मान्यता प्रचलित है कि प्रकाश सिंह पुजारा बताते है कि कई साल पहले मौनी गाँव का एक व्यक्ति 'जौ' (अनाज) लेने रोड़ी नामक स्थान पर गया था। वहाँ से जब वह व्यक्ति एक बिस्नाली (लगभग बीस नाली) जौ की बोरी उठाकर पुजारा गाँव पहुंचा तो उसे जोर से लघुशंका आयी। लघुशंका करने के बाद जब उसने बोरी उठाने की कोशिश की तो तब एक आकाश वाणी हुई– "मै पवित्र हूँ, मुझे मत छुओ... पहले जल से शुद्ध होकर आओ"। यह सुनते ही व्यक्ति ने पूछा, मुझ से ऐसा कहने वाले तुम होते कौन हो ? मुझे इधर–उधर ढूँढने पर पानी नहीं मिला इसीलिए मैंने सोचा कि घर जाकर शुद्ध हो जाऊंगा। अब मुझे क्या करना चाहिए? आकाशवाणी हुई नीचे जाकर 'पडैना' नामक पौधे की जड़ को उखाड़ो तुम्हें वहाँ पानी मिल जाएगा ...। व्यक्ति वहाँ गया और जैसा उसे बताया था उसने वैसा किया। यह किंवदंती है कि पडैना पौधे की जड़ को निकालने पर पानी की धार निकली और आज भी उस स्थान पर पानी आता है। जब व्यक्ति ने शुद्ध होकर पुनः बोरी उठाने की कोशिश की तो आकाशवाणी हुई "मुझे मत ले जाओ, मैं यहीं रहना चाहती हूँ, तुम घर जाओ, वहाँ तुम्हारे खेत–खलिहान अनाज से भरे होंगे"। जब व्यक्ति घर पहुँचा तो उसके खाद्य भंडार भरे थे। व्यक्ति द्वारा जिस स्थान में बोरी छोड़ी गयी थी उसी स्थान पर वर्तमान समय में देवी भगवती का मंदिर है (साक्षात्कार, पुजारा)।

त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर बैतड़ी, नेपाल

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर की जात :

नेपाल के सुदूर पश्चिम राज्य के बैतड़ी जिले में स्थित त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में भी प्रकृति के अनुरूप अनेक पर्व एवं त्यौहार मनाये जाते हैं। यहाँ की जीवन पद्यति में लोक संस्कृति अपने मौलिक रूप में जीवित है। पश्चिमी नेपाल के इस अंचल में मनाये जाने वाले वर्ष दिन के तीज–त्यौहारों, जात–जमातों एवं कौतिकों (किसी स्थान में लगने वाले मेले या उत्सव) में न केवल नेपाल की संस्कृति के दर्शन होते हैं अपितु इस अंचल से लगे भारतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक परिवेश, मानव–सभ्यता, आर्थिक जनजीवन, सामाजिक मान्यताओं एवं संस्कृति का संगम भी देखने को मिलता है।

मंदिर के मुख्य संरक्षक प्रकाश सिंह थापा के अनुसार, रणशैनी मंदिर में प्रत्येक माह की संक्रांति (विक्रम संवत कैलेंडर के अनुसार यह प्रत्येक माह का पहला दिन होता है), पूर्णिमा एवं अमावस्या तिथि को मिलाकर वर्ष में छत्तीस दिन, चौत्र नवरात्री में पंचमी तिथि से लेकर दशमी तिथि तक छरू दिन, आषाढ़ शुक्ल की अष्टमी, नवमी एवं दशमी तिथि को तीन दिन, शरद नवरात्री में प्रथम नवरात्रि से दशमी तिथि तक दस दिन, कार्तिक शुक्ल की पंचमी से दशमी तिथि तक छरू दिन, बसंत पंचमी में एक दिन, नौनकीमें दो दिन मंदिर में पूजा–अर्चना होती है (साक्षात्कार : थापा)। इस प्रकार त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में वर्ष में कुल चौसठ दिन पूजा–अर्चना होती है।

छोटी जात :

आषाढ़ी एवं कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मंदिर में छोटी जात का आयोजन होता है। नवमी की सुबह सबसे पहले पंडा द्वारा मंदिर के गर्भ गृह में दिया जलाया जाता है उसके बाद पंडा द्वारा औरात (रात भर जागरण) बैठी महिलाओं के दिये मंदिर के गर्भ गृह में रखे जाते हैं। आस–पास के सभी गाँव की, चारों राठ की, पुजारा, धामी, चंद, रजवार एवं पंडा के परिवार की महिलाएँ मंदिर में चढ़ाने के लिए अपने घरों से चावल लेकर आती हैं। दिन भर मंदिर में लोग अपनी मनोकामनाओं के अनुसार ढोल–दमाऊँ के साथ बकरे एवं रंगों को बलि के लिए लेकर आते हैं। इसमें सबसे पहले कुछ व्यक्ति लाल या सफेद या पाँच रंगों की ध्वज पताका जिसे स्थानीय भाषा में 'लिसान' कहा जाता है लेकर चलते हैं। उनके पीछे ढ़ोल–दमाऊँ वाले, उनके पीछे डंगरिया और उनके पीछे लोग अपने बकरे एवं रंगों को लेकर आते हैं। मंदिर में पहुँचने पर सर्वप्रथम सभी तीन बार देवी के मंदिर की परिक्रमा करते हैं। परिक्रमा के बाद बकरों एवं रंगों को उनके निर्धारित स्थान पर बाँध दिया जाता है। छोटी जात के दिन, दिन भर बकरों एवं रंगों को लाने का यह क्रम चलता रहता हैं (साक्षात्कार : भंडारी)। शाम के समय मंदिर के भनार गृह से दिव्यपुंज या श्री यंत्र को प्यौला (यह चांदी का बना छोटा सा कुर्सी के आकार का आसन होता है) में रखकर, पंडा मंदिर में लेकर आते हैं और उसे मंदिर के गर्भ–गृह में रखते हैं (साक्षात्कार : पुजारा)।

बड़ी जात :

शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को बड़ी जात का आयोजन किया जाता है। इस दिन देवी की डोली को गाँव के लोग मिलकर कापड़ी गाँव लेकर जाते है कापड़ी गाँव से मंदिर को लौटते समय जात का मार्ग परिवर्तित हो जाता है। तारा दत्त भट्ट बताते हैं कि मार्ग परिवर्तित करने के पीछे यह किंवदंती है कि प्राचीन समय में कापड़ी गाँव को जाने वाले मार्ग में एक राक्षस का आतंक था। राक्षस नर बलि लेता था इसीलिए लोग आते समय अपना मार्ग परिवर्तित कर देते है। डोली के मंदिर में पहुँचने पर, पंडा द्वारा देवी के दिव्यपुंज को डोली से उतारकर

गर्भ गृह में स्थित शिला के पास रखा जाता है। मंदिर में पहुंचकर स्थानीय लोगों के द्वारा देवी के सिंहासन को तैयार किया जाता है। सिंहासन को तैयार करने के बाद मार्कंड जाति के व्यक्ति के द्वारा देवी के सिंहासन को अपने सिर में रखकर मंदिर के मंडप से मंदिर परिसर में बने देवी के मंच तक ले जाया जाता है। मंच से मंदिर के मुख्य पंडा के द्वारा सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया जाता है और देवी के सिंहासन को वापस मंदिर के मंडप में लेकर आते हैं कुछ समय पश्चात् देवी के सिंहासन को भनार गृह में वापस रख दिया जाता है। देवी के भनार गृह में जाने के बाद मंदिर में बकरे एवं रंगों (भैसों) की बलि दी जाती है और इसी के साथ बड़ी जात का समापन होता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. बलूनी, दिनेश चन्द्र : सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ इतिहास एवं संस्कृति : 2021 : समय साक्ष्य प्रकाशन, देहरादून।
2. पाठक, शेखर : पहाड़ अंक (16–17), पिथौरागढ़–चम्पावत अंक : 2009 : पहाड़ परिक्रमा तल्ला डांडा, तल्लीताल, नैनीताल।
3. रावत, अजय : उत्तराखंड का समग्र राजनैतिक इतिहास (पाषाण से 1949 तक) : 2018 : अंकित प्रकाशन हल्द्वानी, नैनीताल।
4. सिंह, राम : सोर (मध्य हिमालय) का अतीत प्रारंभ से सन् 1857 ई. तक : 2023 : मल्लिका बुक्स, दिल्ली।

पत्रिका :

1. जनपद पिथौरागढ़ एक दृष्टि– 2020–21।

साक्षात्कार :

1. भट्ट, तारा दत्त, उम्र– 68 वर्ष, निवासी– झूलाघाट, पिथौरागढ़।
2. भट्ट, हरीश, उम्र–36 वर्ष, निवासी– झूलाघाट, पिथौरागढ़।
3. पुजारा, सक्षम, उम्र–26 वर्ष, निवासी– झूलाघाट, पिथौरागढ़
4. थापा, प्रकाश सिंह, उम्र–52 वर्ष, निवासी– झूलाघाट पिथौरागढ़।
5. थापा, राम सिंह, उम्र– 62 वर्ष, निवासी : गोठ्लापानी, बैतड़ी नेपाल।

वेबसाइट :

1. https://daobaitadi.moha.gov.np, अभिगमन की तिथि, 12–05–2025।
2. http://www.researchgate.net अभिगमन की तिथि, 12–05–2025।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 75–80

चम्पावत जिले की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन

शिवानी
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग,
लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़।

शोध सारांश :

उत्तराखंड अनेक देवी–देवताओं एवं ऋषि–मुनियों की जन्म स्थली तथा कर्म स्थली है। यहाँ पर समय–समय पर अनेक ऋषि–मुनियों के द्वारा अनेक धर्म ग्रंथों तथा महाकाव्यों की रचना की गयी है। देवभूमि कहलायी जाने वाली यह तपस्थली प्रकृति की अनेकों विविधताओं तथा विशेषताओं को अपने अन्दर समेटे हुए है। यहाँ प्रकृति में स्वयं के 'स्व' का त्याग कर देवत्व का अहसास करने की अनवरत क्षमता विद्यमान है। प्रकृति के इसी सौन्दर्य से परिपूर्ण उत्तराखंड राज्य का एक जिला है 'चम्पावत', जिसे 'काली कुमाऊँ' या 'कुमू' के नाम से भी जाना जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र के अंतर्गत चम्पावत जिले की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनितिक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द – कुमाऊँ, काली कुमाऊँ, कुर्मांचल।

चम्पावत जिले का ऐतिहासिक परिचय :

कत्यूरियों के द्वारा 'जोशीमठ' से कत्यूर (करवीरपूर) में राजधानी परिवर्तन करने के पश्चात् धीरे–धीरे कत्यूरी साम्राज्य का पतन होना प्रारंभ हो गया। अनेक मांडलिक राजाओं ने खुद को स्वतंत्र घोषित करना प्रारम्भ कर दिया। इस समयावधि के दौरान काली कुमाऊँ में अराजकता फैल गयी। तब कुछ गणमान्य लोगों ने एक उपाय सोचा और उनके कुछ प्रतिनिधियों ने कन्नौज के राजा से अपने स्थल में शांति स्थापित करने की प्रार्थना की, तब कन्नौज के राजा ने अपने भाई 'सोम चंद' को कुमाऊँ भेजा। शीघ्र ही सोम चन्द ने स्थिति पर काबू पा लिया। सोम चंद की इस योग्यता से प्रभावित होकर कत्यूरी नरेश 'ब्रह्मदेव' ने अपनी पुत्री का विवाह सोम चन्द से कर दिया तथा सोमचंद को 'कोतवाल छावनी' (चम्पावत) की भूमि योतुक (दहेज) स्वरूप प्रदान की (रावत, 36:2018)। इस भूमि पर सोमचंद ने एक किला बनाया जिसे 'चम्पावत' कोट कहा जाने लगा (डबराल, 60:1970)। उस समय यह प्रदेश अनेक छोटी–छोटी पट्टियों में विभाजित था। प्रत्येक पर एक अर्धस्वतंत्र गढ़पति शासन किया करता था (डबराल, 60:1970)। अपने साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से सोमचंद ने अपने फौजदार 'कालू तड़ागी' की सहायता से आस–पास के गावों में अपना अधिकार स्थापित कर लिया (पाण्डेय,

232:2019)। इस प्रकार काली कुमाऊँ मंडल में चंद वंश की स्थापना हुई।

चम्पावत का एक स्थान के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख राजा 'विक्रमचंद' ने शाके 1345 (1425 ई.) में किया (सिंह, 06:2002)। विक्रम चंद ने 'बालेश्वर मंदिर' का जीर्णोधार करने के पश्चात् 'देशटदेव तथा क्राचल्लदेव' के लेख अंकित ताम्रपत्र में, अपना लेख शाके 1345 के आषाढ़ (जुलाई 1423) में अंकित करवाया (डबराल, 81:1970)। जिसके अनुसार राजा विक्रम चंद ने कूर्म विषय (प्रान्त) की चम्पावत नगरी में 'कुंज शर्मा' ब्राह्मण और 'माहेश्वरी' को भूमि प्रदान की (डबराल, 81:1970)। सोमचंद के शासन काल (700 ई.) से लेकर राजा भीष्मचंद (1555–1560 ई.) के शासन काल तक चम्पावत, चंद राजवंश की राजधानी थी। इसके पश्चात् भीष्मचंद के पुत्र 'बालो कल्याण चंद' ने अपने पिता की इच्छा के अनुरूप 'खशिया खोला' नामक डाड़े के ऊपर 'आलमनगर' के नाम से अपनी राजधानी चम्पावत से अल्मोड़ा स्थानांतरित की (डबराल, 98:1970)।

चम्पावत जिले की भौगोलिक स्थिति :

15 सितम्बर 1997 को एक जिले के रूप में गठित चम्पावत, भारत तथा नेपाल की सीमा पर स्थित उत्तराखंड राज्य का एक छोटा सा जिला है। यह 28°58' से 29°38' उत्तरी अक्षांश तथा 79°48' से 80°19' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। 1766.00 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैले चम्पावत जनपद की सीमाएँ उत्तर में पिथौरागढ़ व अल्मोड़ा, पश्चिम में नैनीताल तथा दक्षिण में ऊधमसिंह नगर से लगती हैं। काली, सरयू, पनार, लधिया, रतिया, क्वैराला एवं गंडक यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। काली नदी, भारत एवं नेपाल के मध्य अंतराष्ट्रीय सीमा का निर्धारण करती है (उनियाल, 253:2014)।

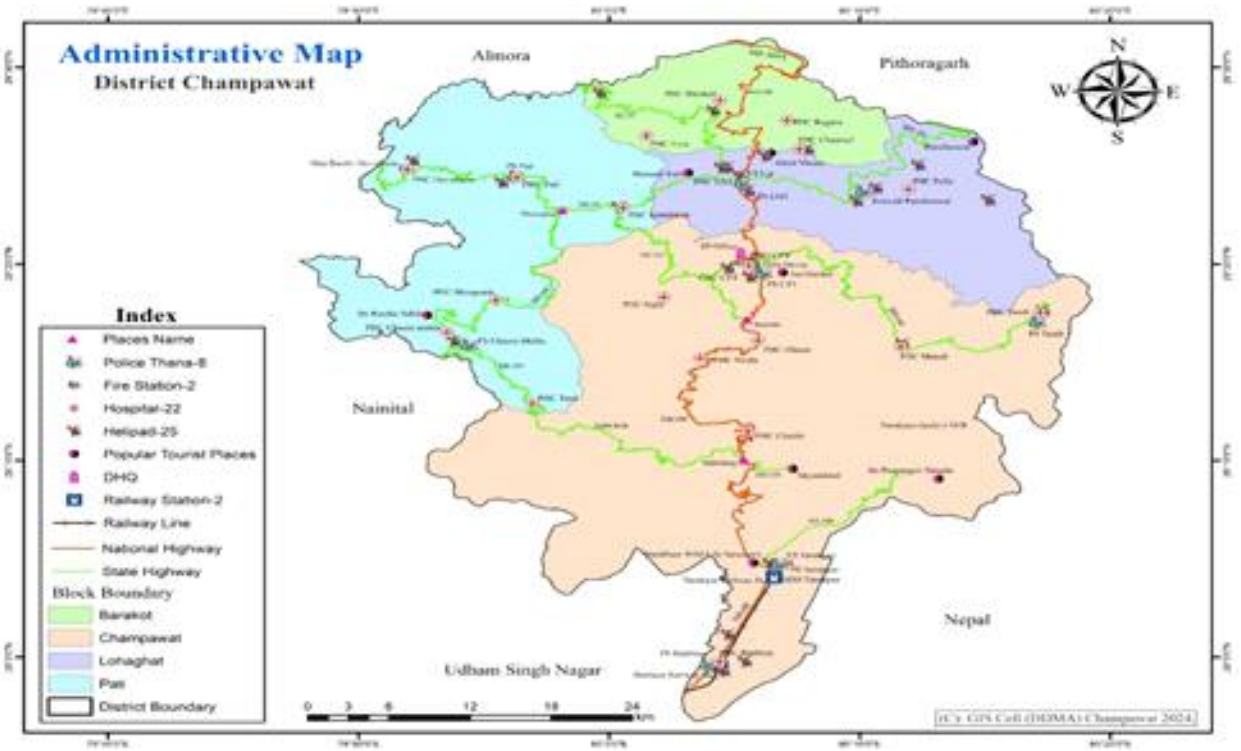

स्रोत – https://champawat.nic.in

चम्पावत जिले का सामाजिक परिचय :

कत्युरिओं के अभिलेखों में हमें सामाजिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के उद्देश्य से 4 प्रकार का वर्ग विभाजन देखने को मिलता है।

1. ब्राह्मण
2. क्षत्रिय
3. खश
4. चांडाल (शर्मा, 21:2019)।

कत्यूरियों के शासन काल में यहाँ के मूल निवासी क्षत्रियों को, बाह्यगत राजपूत क्षत्रियों ने स्वयं से अलग कर दिया था। बाह्यगत राजपूतों (क्षत्रियों) के द्वारा यहाँ के मूल निवासी क्षत्रियों को एक पृथक वर्ग (खश) के रूप में परिणित कर दिया गया (शर्मा, 34:2019)। कुमाऊं में लोगों को विभिन्न वर्गों में विघटित कर सामाजिक व्यवस्था को निर्मित करने की शुरुआत चंदों के समय प्रारंभ हुई। चंदों ने समाज को जाति, व्यवसाय एवं आवासीय स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया। काली कुमाऊं (वर्तमान चम्पावत) में चंद वंश की स्थापना करने वाले प्रथम चंद वंशी राजा सोम चंद के शासन काल में, सम्पूर्ण काली कुमाऊं (चम्पावत) का समाज 8 वर्गों में विभाजित था (शर्मा, 34:2019)।

1. चार चौथानी
2. छैघरी
3. पंचबीड़ी
4. चारबूढ़ा
5. पांचथोक
6. बाहर अधिकारी
7. खतीमन/खटकवाल
8. पौणथानर/बैरसुआ

उपरोक्त आठ वर्णों को उन्होंने मुख्यतः तीन वर्णों में सम्बन्धित किया। चार चौथानी, छैघरी, पंचबीड़ी का सम्बन्ध ब्राह्मण से था। चारबूढ़ा–कार्की, तड़ागी, बोरा व चौधरी (रावत, 42:2018), पाँच थोक– महरा, फर्त्याल, देव, ढेक तथा करायत (शर्मा, 35:2019) एवं बारह अधिकारी जिसमें लटवाल, बैडवाल, खेतड़ी, महता, धौनी, मौनी, लाम्वाल प्रमुख थे का सम्बन्ध क्षत्रिय वर्ग से था। यह विभाजन जाति, व्यवसाय, आवासी स्थिति एवं अप्रवासन के आधार पर किया गया था। वर्तमान समय में भी चम्पावत जिले का समाज चारों वर्णों ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र में विभाजित है। वर्तमान समय में असवर्णों की सामाजिक स्थिति में काफी सुधार आया है। वर्तमान समय में इनकी समाज में वह स्थिति नहीं है जो प्राचीन समय में हुआ करती थी। अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन तथा अन्य सुविधाएँ होने के कारण आज यह समाज की मुख्य धारा से जुड़ कर, राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। चम्पावत जिले में पायी जाने वाली जातियों तथा जन जातियों एवं विभिन्न धर्मों का जनसंख्यानुसार वर्गीकरण निम्नवत है।

(क)	अनुसूचित जाति			
01	कुल जनसंख्या	2011	संख्या	47,383
(a)	पुरुष	2011	संख्या	24,188
(b)	महिला	2011	संख्या	23,195
02	ग्रामीण जनसंख्या	2011	संख्या	40,548
(a)	पुरुष	2011	संख्या	20,653
(b)	महिला	2011	संख्या	19,895
(ख)	अनुसूचित जनजाति			
01	कुल जनसंख्या	2011	संख्या	1,339
(a)	पुरुष	2011	संख्या	777
(b)	महिला	2011	संख्या	562
02	ग्रामीण जनसंख्या	2011	संख्या	889
(a)	पुरुष	2011	संख्या	482
(b)	महिला	2011	संख्या	407
(ग)	धर्मानुसार वर्गीकरण			
	हिन्दू	2011	संख्या	2,49,563
(2)	मुस्लिम	2011	संख्या	8,693
(3)	इसाई	2011	संख्या	870
(4)	सिख	2011	संख्या	336
(5)	बौद्ध	2011	संख्या	24
(6)	जैन	2011	संख्या	28
(7)	अन्य तथा अवर्णित धर्म	2011	संख्या	134

स्रोत- जनपद चम्पावत एक दृष्टि में (2022)

चम्पावत जिले की प्रशासनिक स्थिति :

चम्पावत जो आज एक जिले के रूप में प्रशासनिक इकाई बन चुका है। वह चंदों तथा गोरखालियों के समय, अनेक पट्टियों का संगठित रूप था। इसके अंतर्गत चालसी चाराल (तल्ला–मल्ला दोनों), गुमदेश , गंगोला, खिलपित्तीफाट, पाल–बिलौन (मल्ला–तल्ला दोनों), फड़का बिसज्यूला, सिप्टी, सुई, बिसुंग, तल्ला देश और अस्सी पट्टियाँ सम्मिलित थी इन पट्टियों के छोटे–छोटे गढ़पति हुआ किया करते थे जो उस क्षेत्र का प्रशासन चलाने के लिए उत्तरदायी थे। (सिंह, 03:2002)। प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के उद्देश्य से चम्पावत जिले को 5 तहसीलों चम्पावत, लोहाघाट, बाराकोट, पाटी और पूर्णागिरी (2024 के अनुसार) एवं 2 उपतहसीलों गुमदेश (पुल्ला) तथा मंच (तामली) में बांटा गया है। वर्ष 2022 के अनुसार चम्पावत जिले में 24

न्याय पंचायतें तथा 313 ग्राम पंचायतें, ग्रामीण स्तर पर तथा 3 नगर पालिका परिषद चम्पावत, लोहाघाट एवं टनकपुर और 1 नगर पंचायत बनबसा स्थानीय स्तर पर प्रशासनिक व्यवस्था का सुचारू रूप से संचालन कर रही हैं।

निर्वाचन के आधार पर चम्पावत जिला, लोकसभा क्षेत्र अल्मोड़ा तथा राज्य सभा क्षेत्र अल्मोड़ा के अंतर्गत आता है। राज्य विधानसभा के निर्वाचन को सुव्यवस्थित रूप से सम्पन्न कराने के उदेश्य से चम्पावत जिले को 2 विधान सभा क्षेत्रों– 54 विधान सभा क्षेत्र लोहाघाट एवं 55 विधान सभा क्षेत्र चम्पावत में विभाजित किया गया है। जिले की प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए जिले में 4 सामुदायिक विकास खंड –चम्पावत, लोहाघाट, पाटी एवं बाराकोट है। जिले में शांति व्यवस्था बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर वर्ष 2022 के अनुसार 4 पुलिस स्टेशन तथा शहरी स्तर पर 4 नगरीय पुलिस स्टेशन हैं।

जिले की राजनीतिक स्थिति :

वर्ष 2002 के परिसीमन के आधार पर चम्पावत जिले को दो विधान सभा क्षेत्रों में विभाजित किया गया। चौसठ वाँ विधान सभा क्षेत्र चम्पावत एवं पैसठ वाँ विधान सभा क्षेत्र लोहाघाट (सरकारी गजट, उत्तराखंड, संख्या 282/UTA/2006, नई दिल्ली, 28 दिसंबर 2006, पृष्ठ संख्या– 02)। वर्ष 2002 में चम्पावत जिले में सम्पन्न हुए विधानसभा निर्वाचन में चम्पावत विधान सभा क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी हेमेश खर्कवाल को जनादेश प्राप्त हुआ वहीं जिले के दूसरे विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र, लोहाघाट से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी, महेंद्र सिंह महरा को जनता का जनादेश प्राप्त हुआ (स्रोत–निर्वाचन कार्यालय चम्पावत से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर)। वर्ष 2007 के विधान सभा निर्वाचन में चम्पावत विधानसभा क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी, वीना महराना को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ। जिले के गठन के बाद यह पहली बार था जब जिले की, चम्पावत विधानसभा सीट से किसी महिला प्रत्याशी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ था। वीना महराना जिले की पहली महिला विधायक बनी (निर्वाचन कार्यालय चम्पावत से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर)। वर्ष 2007 के निर्वाचन में लोहाघाट विधानसभा क्षेत्र से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी, महेंद्र सिंह महरा को जनता का जनादेश प्राप्त हुआ। राज्य गठन के बाद, इस विधानसभा क्षेत्र से महेंद्र सिंह महरा को लगातार दूसरी बार जनादेश प्राप्त हुआ स्रोत–निर्वाचन कार्यालय चम्पावत से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर)।

वर्ष 2012 के निर्वाचन के समय विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की स्थिति में परिवर्तन हो गया। परिवर्तन का कारण यह था कि 2012 के विधानसभा निर्वाचन से पूर्व निर्वाचन आयोग के द्वारा, वर्ष 2008 में संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन आदेश 2008 जारी किया गया। परिसीमन आदेश के आधार पर वर्ष 2002 के निर्वाचन के समय चम्पावत जिले के दोनों विधान सभा क्षेत्र जहाँ 64वें व 65वें (64वाँ विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र चम्पावत एवं 65वाँ विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र लोहाघाट) स्थान पर थे वह 2008 के परिसीमन आदेश के पश्चात् 54वें एवं 55वें. स्थान पर आ गए।

वर्ष 2012 के निर्वाचन में 54 विधानसभा सीट लोहाघाट से जनता का समर्थन भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी, पूरन सिंह फर्त्याल को प्राप्त हुआ था। राज्य गठन के बाद यह पहली बार था जब लोहाघाट विधान सभा सीट पर भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ। वहीं 55 विधानसभा सीट चम्पावत में 2012 में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में जनता का जनादेश भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी,

हेमेश खर्कवाल को प्राप्त हुआ (स्रोत– जिला निर्वाचन कार्यालय चम्पावत)।

वर्ष 2017 जिले में संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में 54 विधान सभा क्षेत्र लोहाघाट में जनता का समर्थन भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी पूरन सिंह फर्त्याल को एवं 55 विधानसभा क्षेत्र चम्पावत में जनता का समर्थन भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी कैलाश गहतोड़ी को प्राप्त हुआ। वर्ष 2020 व 2021 में कोविड महामारी के मध्य नजर जिले में विधान सभा निर्वाचन को संपन्न करना निर्वाचन आयोग के लिए एक चुनौति पूर्ण कार्य था। कोविड की गाइड लाइनों का प्रयोग करते हुए वर्ष 2022 का निर्वाचन संपन्न कराया गया जिसमें 54 विधानसभा सीट लोहाघाट से कांग्रेस के प्रत्याशी खुशाल सिंह अधिकारी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ वहीं 55 विधानसभा क्षेत्र चम्पावत में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी कैलाश गहतोड़ी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ। यह पहली बार था जब चम्पावत विधान सभा सीट से किसी प्रत्याशी को लगातार जनता का समर्थन प्राप्त हुआ।

10 मार्च 2022 को आये सामान्य विधानसभा निर्वाचन–2022 के परिणामों के अनुसार उत्तराखंड के मुख्य मंत्री पद के दावेदार, भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी पुष्कर सिंह धामी को अपनी विधानसभा सीट खटीमा से पराजित हो गये। दूसरी ओर 55 विधानसभा क्षेत्र चम्पावत में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी कैलाश गहतोड़ी को जनादेश प्राप्त हुआ। वर्ष 2022 के चुनाव परिणामों की घोषणा होते ही मुख्यमंत्री पद के दावेदार पुष्कर सिंह धामी के लिए चम्पावत क्षेत्र के, भारतीय जनता पार्टी के विजयी प्रत्याशी, कैलाश गहतोड़ी ने अपनी सीट छोड़ने की घोषणा की (दैनिक जागरण, 11 मार्च 2022, पृष्ठ संख्या–03) और घोषणा के अनुरूप अपने पद से त्याग पत्र दे दिया जिस कारण चम्पावत विधान सभा सीट में उपचुनाव करना पड़ा जिसमें मुख्य मंत्री पद के उम्मीदवार भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी पुष्कर सिंह धामी को जनता का समर्थन प्राप्त हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. डबराल, शिव प्रसाद : उत्तराखंड का इतिहास भाग–10 (कुमाऊँ का इतिहास 9000–1790) : वीर गाथा प्रकाशन दो गड्डा गढ़वाल।
2. पाण्डेय, बद्री दत्त : कुमाऊँ का इतिहास : 2019 : श्याम प्रकाशन अल्मोड़ा बुक डिपो।
3. रावत, अजय : उत्तराखंड का समग्र राजनैतिक इतिहास : 2018 : अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।
4. सिंह, राम : राग भाग काली कुमाऊँ : 2002 : पहाड़ पोथी नैनीताल।

समाचार पत्र :

1. दैनिक जागरण, 11 मार्च 2022, पृष्ठ संख्या–03।

पत्रिकाएँ :

1. चम्पावत एक दृष्टि–2022।
2. चम्पावत एक दृष्टि–2024।

कार्यालय :

1. जिला निर्वाचन कार्यालय, चम्पावत।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 81-86

ऑनलाइन वोकल संगीत शिक्षा में ऑडियो गुणवत्ता की हानि : उपकरण–आधारित विश्लेषण और समाधान

Savita Gill
Research Scholar, Music Vocal
PGGCG – 11, CHD

सारांश :

वर्तमान में कोविड–19 के बाद से ऑनलाइन संगीत शिक्षा विशेषकर वोकल (स्वर) प्रशिक्षण का प्रचलन अत्यधिक बढ़ गया है। परंतु पारंपरिक कक्षा के मुकाबले ऑनलाइन वातावरण में ऑडियो गुणवत्ता की हानि–रिचता, टोनल कलर, पिच–सटीकता और डायनेमिक रेंज में कमी–एक प्रमुख चुनौती बनकर उभरी है। यह शोधपत्र ऑनलाइन वोकल शिक्षा में ऑडियो गुणवत्ता घटने के कारणों का उपकरण–आधारित विश्लेषण प्रस्तुत करता है (Android फोन, iOS डिवाइस, Windows लैपटॉप/डेस्कटॉप, macOS लैपटॉप/डेस्कटॉप)। अध्ययन का उद्देश्य उन तकनीकी और व्यवहारिक पहलुओं की पहचान करना है जो स्वर संबंधी सूक्ष्मताओं (जैसे मींड, गामक, सहजन, स्वर–रंग) के अंशों को हानि पहुँचाते हैं और व्यावहारिक समाधान प्रस्तावित करना है। विधि में प्रत्यक्ष अवलोकन, डिवाइस–आधारित तुलनात्मक रिकॉर्डिंग, और अध्यापक–छात्र साक्षात्कार शामिल हैं। पेपर में– (1) प्लेटफॉर्म और ऐप सेटिंग्स का प्रभाव, (2) माइक्रोफोन और ऑडियो इंटरफेस के प्रकारों का तुलनात्मक मूल्यांकन, (3) इंटरनेट बैंडविड्थ और लेटेंसी का रोल, तथा (4) कक्षीय–अकुस्टिक्स और गेन प्रबंधन जैसे व्यवहारिक उपायों पर विश्लेषण दिया गया है। अंत में, उपकरणों की श्रेणीवार सिफारिशें (बजट व प्रफेशनल), जरूरी एक्सेसरीज और सर्वश्रेष्ठ प्रैक्टिसेस दी गई हैं। यह शोध पत्र शिक्षकों, संकायों और संगीत विद्यालयों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शिका है ताकि ऑनलाइन वोकल शिक्षण की सठीकता और प्रभावशीलता बढ़ाई जा सके।

प्रमुख शब्द :

1. ऑनलाइन वोकल शिक्षा।
2. ऑडियो गुणवत्ता।
3. माइक्रोफोन व ऑडियो इंटरफेस।
4. डिवाइस–आधारित तुलनात्मक अध्ययन।
5. जूम/ऑनलाइन सेटिंग्स।

ऑनलाइन वोकल संगीत शिक्षा में ऑडियो गुणवत्ता की हानि : उपकरण-आधारित विश्लेषण और समाधान

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में ऑनलाइन शिक्षा ने संगीत के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। वोकल (स्वर) शिक्षा की गुणवत्तार्थकता बहुत हद तक ध्वनि (Sound) की सटीकता पर निर्भर करती है– छींटे (Overtones), डायनेमिक्स, स्वर–रंग और सूक्ष्म लयात्मक परिवर्तनों का प्रत्यक्ष प्रभाव प्राप्त होता है। किन्तु ऑनलाइन माध्यमों (स्मार्टफोन, लैपटॉप, वेब मीटिंग प्लेटफॉर्म) के जरिए इन सूक्ष्मताओं का सही संचरण अक्सर संभव नहीं रह पाता। यह शोध इन तकनीकी–व्यवहारिक कारणों की पहचान कर, डिवाइस–विशेष चुनौतियाँ और व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करता है।

साहित्य समीक्षा :

ऑनलाइन संगीत शिक्षा पर पिछले कुछ वर्षों के अध्ययनों में दृश्यता और सुलभता के लाभों के साथ–साथ ऑडियो की हानि की चर्चा भी है। तकनीकी लेख और गियर–रेलिव्यू (उदा. माइक्रोफोन, ऑडियो इंटरफेस) ने रिकॉर्डिंग और स्ट्रीमिंग के लिए सर्वश्रेष्ठ उपकरण सुझाए हैं, परन्तु संगीत–विशेष (विशेषकर क्लासिकल वोकल) आवश्यकताओं से जुड़े तुलनात्मक शोध सीमित हैं। साथ ही, ‘ववउ जैसे प्लेटफॉर्म की "Original Sound for Musicians" सेटिंग्स का प्रभाव और उपयोग को तकनीकी दस्तावेजों में समझाया गया है– किन्तु व्यावहारिक अध्यापक–छात्र संदर्भ में विस्तृत गाइड कम उपलब्ध है। इस पेपर का लक्ष्य इन्हीं शून्यों को भरना है।

अनुसंधान प्रश्न :

1. कौन–कौन से तकनीकी कारण (डिवाइस, ऐप सेटिंग्स, नेटवर्क) ऑनलाइन वोकल ऑडियो की गुणवत्ता घटाते हैं?
2. विभिन्न डिवाइसों (Android, iOS, Windows, macOS) में कौन–कौन से अंतर स्पष्ट हैं?
3. किन साजो–सामानों और सेटिंग्स से बहुतेक हानि कम की जा सकती है?
4. क्या ऑनलाइन माध्यम उच्च स्तरीय क्लासिकल वोकल प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त है, और किन शर्तों पर?

कार्यप्रणाली :

यह अध्ययन मिश्रित (mixed-method) है– प्रयोगात्मक और गुणात्मक दोनों। प्रमुख चरण :

- **डिवाइस-आधारित रिकॉर्डिंग प्रयोग :** समान कक्षीय स्थिति में Android फोन, iPhone, Windows लैपटॉप (बिल्ट–इन और USB माइक के साथ), तथा MacBook (USB और XLR+interface) पर एक ही गायन अंश रिकॉर्ड किया गया।
- **प्लेटफॉर्म परीक्षण :** Zoom (original sound on/off), Google Meet, तथा अन्य कॉन्फ्रेंसिंग ऐप्स पर लाइव सत्र कराए गए।
- **साक्षात्कार :** 10 वोकल शिक्षकों और 25 विद्यार्थियों से अर्ध–संरचित साक्षात्कार।
- **विश्लेषण :** सुनने योग्य मत (listening tests) और स्पेक्ट्रल निरीक्षण (spectral inspection) द्वारा टोनल हानि, पिच–वैरिएशन और डायनेमिक–रेंज ह्रास का तुलनात्मक आकलन किया गया।

तकनीकी आधार : मानव स्वर और डिजिटल प्रसारण :

मानव स्वर का मूल स्पेक्ट्रम लगभग 80Hz से 12kHz तक महत्वपूर्ण सामग्री देता है– वोकल क्लैरिटी

के लिए 150Hz-5kHz में सूक्ष्म विवरण अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। डिजिटल संचार में ऑडियो को कम्प्रेशन, नॉइज–सप्रेशन, सैम्पल–रेट और बिट–डेटा द्वारा बदला जाता है। उपभोक्ता प्लेटफॉर्म अक्सर आवाज को भाषण के अनुरूप अनुकूलित करते हैं जिससे संगीत की ओवरटन और डायनेमिक विवरण नष्ट हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त नेटवर्क पैकेट–लॉस और लेटेंसी से भी ट्रांजिएंट (स्वर प्रारम्भ/अंत) प्रभावित होते हैं।

उपकरण-आधारित विश्लेषण और समस्याएँ :

Android फोन :

- **समस्याएँ :** कई Android मॉडल में सिस्टम–लेवल नॉइज–सप्रेशन और एंहांसमेंट होते हैं जो गायन के समय 'कमप्रेस' कर देते हैं, लो–एंड माइक प्री–एम्प कमजोर होते हैं, OTG/USB माइक सपोर्ट में विविधता, ऑडियो–ड्राइवर सपोर्ट सीमित।
- **प्रभाव :** मींड और सस्टेन कमजोर दिखते हैं, उच्च स्वर पर क्लिपिंग या हार्श–टोन सुनाई दे सकती है।

iOS (iPhone / iPad)

- **समस्याएँ :** iOS में आवाज की प्रोसेसिंग अधिक नियंत्रित है, पर फिर भी इनबिल्ट 'वॉइस आइसोलेशन' या नॉइज–कैंसलेशन फीचर स्वर की रेंज को प्रभावित कर सकता है।
- **प्रभाव :** पिच संबंधी सूक्ष्म बारीकियाँ अपेक्षाकृत बेहतर बनी रहती हैं पर कुछ हाई–फ्रीक्वेंसी ओवरटोन छूट सकते हैं।

Windows लैपटॉप/डिस्कटॉप :

- **समस्याएँ :** भिन्न हार्डवेयर और ड्राइवर के कारण गुणवत्ता बदलती है, बिल्ट–इन माइक्रोफोन आमतौर पर खराब; USB माइक/इंटरफेस से बेहतर परिणाम मिलते हैं।
- **प्रभाव :** सही सेटअप पर क्लीन और विस्तृत टोन मिलता है, पर गलत सैंपल–रेट या एन्हांसमेंट चालू रहने पर हानि होती है।

macOS (MacBook / iMac)

- **समस्याएँ :** macOS प्लेटफॉर्म में ड्राइवर–स्थिरता अच्छी होती है, पर उपयोगकर्ता कभी–कभी सिस्टम–साउंड सेटिंग्स तथा ऐप–आधारित फील्टर नहीं बदलते।
- **प्रभाव :** प्रो–लेवल सेटअप पर सर्वश्रेष्ठ प्रसारण संभव है– कमप्रेशन कम, पिच–सटीकता उच्च।

प्लेटफॉर्म एवं अनुप्रयोग सेटिंग्स का प्रभाव :

Zoom जैसी सेवाओं में "Original Sound for Musicians" और High-fidelity music mode जैसे विकल्प सीधे तौर पर संगीत ट्रांसमिशन को बेहतर बनाते हैं। डिफॉल्ट नॉइज–सप्रेशन और ऑटो–गैन फीचर्स वोकल muzycal nuances को मिटा सकते हैं। Google Meet और अन्य प्लेटफॉर्म में सीमित म्यूजिक मोड्स होते हैं।

व्यवहारिक सुझाव (App-level)

- Original Sound / High-fidelity मोड चालू रखें (जहाँ उपलब्ध हो)।
- नॉइज–सप्रेशन, एंहांसमेंट और ऑटो–गैन बंद करें।
- सैंपल–रेट 44.1kHz या 48kHz रखें।

प्रयोगात्मक निष्कर्ष

- **सबसे बुरा प्रदर्शन :** बिल्ट–इन Android माइक्रोफोन (किसी भी ब्रांड के सस्ते फोन) – ऊर्जा और ओवरटोन बहुत खो जाते हैं।
- **सर्वोत्तम प्रदर्शन :** MacBook/iMac + XLR कंडेनसर या डायनेमिक माइक + अच्छी क्वालिटी ऑडियो इंटरफेस।
- **आर्कषक निष्कर्ष :** USB माइक (Blue Yeti, Shure MV7) ने सुविधा और गुणवत्ता का संतुलन अच्छा दिखाया– लैपटॉप/डेस्कटॉप के साथ इस्तेमाल के लिए उपयुक्त।
- **नेटवर्क प्रभाव :** 5–10% पैकेट लॉस से भी सुनने में स्पष्ट झटके और ट्रांजिएंट हानि दिखी। 10 Mbps से नीचे अपलोड स्पीड पर आवाज की गुणवत्ता और स्थिरता गंभीर रूप से प्रभावित हुई।

व्यवहारिक समाधानों का विस्तृत सेट

Android फोन (Teacher & Student)

- **सॉफ्टवेयर :** Zoom ऐप, Original Sound (यदि उपलब्ध), नॉइज–सप्रेशन बंद। हार्डवेयर सिफारिश (बजट/मध्यम) :
- Wired lavalier mic (बहुत किफायती) – उदाहरण : BOYA BY-M1 (wired)
- Lightning/USB-C compatible small condenser (यदि OTG सहायता हो)

अन्य टिप्स : LAN/Wi-Fi के बेहतर संकेत' वीडियो बंद रखें जब गायक गा रहा हो।

iOS (iPhone / iPad)

- **सॉफ्टवेयर :** Zoom, ऐप–आधारित म्यूजिक मोड सेटिंग्स। **हार्डवेयर (सिफारिश) :**
  Shure MV88 (iOS डेडिकेटेड माइक्रोफोन)
- Rode VideoMic Me-L (लाइटनिंग)
- **अन्य :** हेडफोन उपयोग अनिवार्य, तानपुरा या बैकिंग ट्रैक अलग डिवाइस पर रखें।

Windows लैपटॉप/डिस्कटॉप

- **सॉफ्टवेयर :** Zoom desktop app, "Original Sound" सक्षम करें, सिस्टम–साउंड में Enhancements बंद करें। **हार्डवेयर (सिफारिश) :**
- **बजट/स्टार्ट :** USB माइक्रोफोन — Blue Yeti, Audio-Technica AT2020USB
- **प्रो.** XLR कंडेनसर/डायनामिक + ऑडियो इंटरफेस — Shure SM7B / Rode NT1 + Focusrite Scarlett 2i2 या Audient iD4
- **हेडफोन :** बंद–बैक (closed-back) मॉनिटर हेडफोन — Audio-Technica ATH-M50x
- **एक्सेसरीज** : pop filter, shock mount, mic stand

macOS (MacBook / iMac)

सॉफ्टवेयर : Zoom (desktop), Logic Pro/ GarageBand से टेस्ट रिकॉर्डिंग। **हार्डवेयर (सिफारिश) :**

- **प्रो सेटअप :** XLR कंडेनसर (Rode NT1, Audio-Technica AT2020, Neumann (यदि बजट हो).

Focusrite Scarlett/PreSonus/Audient इंटरफेस

- **पोर्टेबल/USB विकल्प :** Shure MV7 (USB+XLR), Apogee HypeMic (यदि बजट अधिक)
- **अतिरिक्त :** acoustic treatment (curtains, panels), external reference speaker for tanpura

विस्तृत उपकरण सूची - सारांश

माइक्रोफोन (USB & XLR) :

- **Blue Yeti (USB)** – अध्यापकों के लिए सरल और प्लग–एंड–प्ले विकल्प।
- **Shure MV7 (USB+XLR)** – अच्छी वोकल स्पष्टता व नियंत्रण।
- **Audio-Technica AT2020 (XLR/USB)** – बजट कंडेनसर, क्लीन रिस्पॉन्स।
- **Shure SM7B (XLR)** – प्रसन्नवाला डायनैमिक माइक्रोफोन, स्टूडियो क्लासिक।
- **Rode NT1 / NT1-A (XLR)** — बहुत कम शोर और उच्च संवेदनशीलता।

ऑडियो इंटरफेस :

- Focusrite Scarlett 2i2 (popular, reliable preamps)
- Audient iD4 (high-quality preamps)
- PreSonus Quantum (USB-C, low latency)

मोबाइल माइक्रोफोन :

- Shure MV88 (iOS)
- Rode VideoMic Me-L
- BOYA BY-M1 (wired lavalier)

हेडफोन और मॉनीटरिंग :

- Audio-Technica ATH-M50x
- Beyerdynamic DT-770 Pro

एक्सेसरीज :

Pop filter, shock mount, boom stand, acoustic panels/curtains, external tanpura/swar generator device, LAN cable (ethernet), good quality USB/OTG कैबल्स।

नोट :

उपकरणों का चयन बजट, पोर्टेबिलिटी और उपयोग की आवृत्ति पर निर्भर करेगा– शोध में ऊपर उल्लेखित मॉडलों ने सर्वाधिक संतुलित परिणाम दिए।

शिक्षण-पद्धति में अनुशंसित बदलाव :

- **हाइब्रिड मॉडल :** लाइव सत्रों में तकनीकी निर्देश और सुधार, रियाज के लिए छात्रों से उच्च–गुणवत्ता रिकॉर्डिंग (WAV/44-1kHz) माँगें।
- **रिकॉर्ड-एंड-रिव्यू :** छात्र अपने अभ्यास रिकॉर्ड करें और भेजें–शिक्षक ऑफलाइन विस्तृत सुझाव दें।
- **टेम्प्लेट चेकलिस्ट :** प्रत्येक क्लास से पहले माइक्रोफोन–पोजिशन, गेन–टेस्ट और नेटवर्क–चेक का शॉर्ट चेकलिस्ट अपनाएँ।

सीमाएँ और भविष्य के अनुसंधान :

यह अध्ययन सीमित उपकरणों और नमूना आकार पर आधारित है। भविष्य में बड़े नमूने, और AI–आधारित रियल–टाइम ऑडियो–एन्हांसमेंट तकनीकों (noise-suppression tailored for music) का परीक्षण उपयोगी होगा।

निष्कर्ष :

ऑनलाइन वोकल शिक्षा तकनीकी चुनौतियों के बावजूद प्रभावी बनाई जा सकती है। विशेषकर जब शिक्षक और विद्यार्थी सही उपकरण, ऐप–सेटिंग्स और व्यवहारिक प्रथाओं का पालन करें। macOS+XLR/ इंटरफेस संयोजन सर्वश्रेष्ठ परिणाम देता है, परंतु USB माइक्रोफोन (जैसे Blue Yeti, Shure MV7) ने लागत और सुविधा के बीच उत्कृष्ट संतुलन दिखाया। Android फोन सस्ते और सुलभ हैं पर उनके सिस्टम–लेवल प्रोसेसिंग के कारण क्लासिकल वोकल की गहराई के लिए सीमाएँ हैं। अंत में, उच्च–गुणवत्ता रिकॉर्डिंग (ऑफलाइन). लाइव–फीडबैक (ऑनलाइन) का हाइब्रिड तरीका सर्वाधिक व्यावहारिक और परिणाम–संतुलक है।

संदर्भ :

1. Zoom Support. "Changing audio settings during a Zoom meeting" (Zoom Help Center). (support.zoom.com)
2. MusicRadar. "Best audio interface 2026 : For home recording and more" (Music Radar, Jan 2026). (musicradar.com)
3. Podcastage / Focusrite Scarlett 2i2 review. (podcastage.com)
4. SoundGuys. "Best USB microphones" (2024 review). (soundguys.com)
5. Shure MV88 iOS Microphone review (Tape Op / product pages). (tapeop.com)

Mob. – 9876224332

Email – gillsavita95@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 87-92

भारतीय इतिहास :- संविधान व संस्कृति है

डॉ. ममता वधवा, प्रवक्ता
श्रीमती बबीता चौधरी, प्रवक्ता
आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।

भूमिका :-

भारतीय इतिहास और संविधान दो अलग–अलग लेकिन परस्पर जुड़े हुए विषय है। भारतीय इतिहास भारत की सभ्यता, संस्कृति शासन, और समाज की कहानी को दर्शाता है। इसमें प्राचीन काल (सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल), मध्यकाल (मुगल और अन्य साम्राज्य), और आधुनिक काल (ब्रिटिश शासन, स्वतंत्रता संग्राम) शामिल हैं। भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और भारत का सर्वोच्च कानून है। इसे डॉ भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में संविधान सभा ने तैयार किया। इसमें नागरिकों के अधिकार, कर्तव्य, सरकार की संरचना, न्याय प्रणाली और संघीय ढांचा की व्याख्या की गई है। संक्षेप में भारतीय इतिहास संविधान के विकास की पृष्ठभूमि प्रदान करता है, और संविधान भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुनिश्चित करता है। ''भारतीय इतिहास ही संविधान का आधार है।''

व्याख्या :-

1. **अशोक के शिलालेख और संविधान के मूल अधिकार :-**

सम्राट अशोक ने अपने शिलालेखों में धर्म, सहिष्णुता और अहिंसा की बातें लिखीं। भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 14–32) में समानता, स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता को जगह दी गई है।

2. **प्राचीन गणराज्य और लोकतंत्र :-**

महाजनपद काल (लगभग 600 ईसा पूर्व) में वैशाली और लिच्छवी जैसे गणराज्य थे, जहां आम जनता की राय से शासन होता था। भारतीय संविधान में भी लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनाई, जिसमें जनता द्वारा चुनी गई सरकार शासन करती है।

3. **विदेशी शासन और मौलिक अधिकार :-**

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीयों को कई अधिकारों से वंचित रखा गया था। इसी कारण, संविधान ने नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता और अन्य मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 19 से 22) दिए, जिससे ऐसा दोबारा ना हो।

4. **दलित और पिछड़ों के उत्थान के प्रयास :-**

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने सामाजिक असमानता कितना संघर्ष किया। संविधान में अनुच्छेद 15(4), 16(4)

और 46 के तहत दलितों और पिछड़ों के लिए विशेष प्रावधान किए गए।

5. स्वतंत्रता संग्राम और संगीत संरचना :–

1857 के विद्रोह और बाद के आंदोलनों में यह स्पष्ट हुआ कि भारत एक विशाल विविधताओं वाला देश है। इसलिए इसमें संघीय व्यवस्था (अनुच्छेद 1–11 और 245–263) बनाई गई।

"भारतीय इतिहास और संविधान एक ही सिक्के दो पहलू है।" इस कथन का अर्थ यह है कि भारतीय इतिहास और संविधान परस्पर जुड़े हुए हैं और एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। इतिहास में संविधान को काट दिया है और संविधान इतिहास से मिले अनुभव के आधार पर बना है।

भारतीय इतिहास : संविधान की नींव :–

भारतीय इतिहास में हुई घटनाओं संघर्षों और आंदोलन ने संविधान के निर्माण की दिशा तय की।

- **प्राचीन काल :–** महाजनपदों और गणराज्यों में लोकतांत्रिक शासन की झलक मिलती है, जिसे आधुनिक संविधान ने अपनाया।
- **मध्यकाल :–** मुगल और अन्य राजवंशों के शासन ने प्रशासनिक ढांचे का प्रभावित किया, जिससे संविधान में न्यायिक प्रशासनिक व्यवस्था विकसित हुई।
- **आधुनिक काल :–** ब्रिटिश शासन के दौरान मिले दमन और अन्याय से प्रेरित होकर संविधान में स्वतंत्रता, समानता और न्याय को विशेष महत्व दिया गया।

संविधान : इतिहास से मिली सीख का प्रतिबिंब :–

संविधान भारत के ऐतिहासिक अनुभवों का दस्तावेज है, जिसमें इतिहास की गलतियों को न दोहराने और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने का संकल्प लिया गया है।

- **स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव :** भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व के सिद्धांत प्रमुख थे, जिन्हें संविधान के मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 14–32) में शामिल किया गया।
- **जाति व्यवस्था और सामाजिक सुधार :** भारतीय इतिहास में सामाजिक भेदभाव की कठिनाई रही है। संविधान में अनुच्छेद 15, 17 और 46 के तहत समानता और सामाजिक न्याय की व्यवस्था की।

ब्रिटिश कानून से मुक्ति :–

ब्रिटिश शासन में दमनकारी कानून थे, जैसे रोलेट एक्ट। संविधान ने लोकतांत्रिक कानून व्यवस्था को अपनाकर नागरिक अधिकारों की सुरक्षा की।

भारतीय इतिहास, भारतीय संविधान का सबसे बड़ा स्रोत है :

व्याख्या :– भारतीय संविधान को बनाने के लिए संविधान निर्माताओं ने कई स्रोतों से प्रेरणा ली, लेकिन सबसे बड़ा स्रोत भारतीय इतिहास ही रहा है। भारत के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास की घटनाओं और व्यवस्थाओं और संघर्षों ने संविधान के प्रावधानों को आकार दिया।

1. प्राचीन भारत से मिली प्रेरणा :–

भारतीय सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है और इसमें कई लोकतांत्रिक व न्यायिक व्यवस्था देखने को मिलती हैं।

- **गणराज्य और लोकतंत्र :**

वैदिक काल और महाजनपद काल में लिच्छवि और वैशाली गणराज्य लोकतांत्रिक प्रणाली थे जहां जनता

की भागीदारी होती थी। भारतीय संविधान में भी यह सिद्धांत अपनाया गया। भारतीय सभ्यता हजारों वर्षों पुरानी है और इसमें कई लोकतांत्रिक व न्यायिक व्यवस्थाएं देखने को मिलती हैं।

- **धर्म और न्याय की परंपरा :**

अशोक महान के शिलालेखों में धार्मिक सहिष्णुता, दया और अहिंसा की बात की गई थी, जिसे संविधान ने मौलिक अधिकारों अनुच्छेद 25–28 में शामिल किया।

2. मध्यकालीन भारत से मिली सीख :-

मध्यकाल में प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्थाएं काफी विकसित हुई, जिनका प्रभाव संविधान पर भी पड़ा।

- **मुगलकालीन प्रशासन :**

अकबर की नीतियां धार्मिक सहिष्णुता और सुशासन पर आधारित थी। भारतीय संविधान में भी धर्म निरपेक्षता (अनुच्छेद 14, 25–28) को अपनाया गया।

गांव में पंचायत प्रणाली थी, जिसे संविधान में 73वां और 74वां संशोधन करके लागू किया गया।

3. आधुनिक इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव :-

ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीयों को राजनीतिक और सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया, जिससे संविधान बनाने की जरूरत महसूस हुई।

- **1857 का विद्रोह :**

इस विद्रोह से भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना मजबूत हुई, जो आगे चलकर संविधान में संघीय ढांचे (अनुच्छेद 1–11, 245–263) के रूप में शामिल हुई।

- **राष्ट्रीय आंदोलन :**

महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की बात की, जिस संविधान ने न्याय, स्वतंत्रता और समानता के रूप में स्वीकार किया।

- **ब्रिटिश कानून से मुक्ति :**

ब्रिटिश सरकार के दमनकारी कानून, जैसे रोलेट एक्ट और प्रेस सेंसरशिप, से सबक लेते हुए संविधान में मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 19–22) को जोड़ा गया।

अतः भारतीय इतिहास में संविधान को एक ठोस आधार प्रदान किया। प्राचीन काल की लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं, मध्यकालीन प्रशासनिक अनुभव और स्वतंत्रता संग्राम की शिक्षाएं– इन सब का समावेश संविधान में किया गया। इसलिए यह कहना सही होगा कि भारतीय इतिहास भारतीय संविधान का सबसे बड़ा स्रोत है।

भारतीय इतिहास और भारतीय संस्कृति एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इतिहास केवल युद्धों, राजाओं और प्रशासनिक व्यवस्थाओं की कहानी नहीं है बल्कि यह उसे समाज, परंपराओं, आस्थाओं और मूल्यों को भी दर्शाता है जो किसी देश की संस्कृति को परिभाषित करते हैं।

1. प्राचीन भारत : सभ्यता और संस्कृति का जन्म :-

- **सिंधु घाटी सभ्यता (2500–1500 ईसा पूर्व)**

नगर नियोजन, जल निकासी व्यवस्था, धातु कला और मूर्ति निर्माण भारतीय संस्कृति की प्रारंभिक झलक

देते हैं।

– मूर्ति पूजा और योग ज्योति परंपराएं इसी काल में शुरू हुई।

• **वैदिक काल (1500–500 ईसा पूर्व)**

– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भारतीय संस्कृति के धार्मिक और दार्शनिक आधार मिलते हैं।

– यज्ञ, संस्कार और वर्ण व्यवस्था इसी समय विकसित हुए।

• **बौद्ध और जैन धर्म का उदय (600 ईसा पूर्व) :–**

– अहिंसा, ध्यान, तपस्या और शांति जैसे सांस्कृतिक मूल्य इसी काल में विकसित हुए।

– अज्ञात शत्रु और अशोक जैसे शासको ने भारतीय संस्कृति को और नैतिकता से जोड़ा।

2. मध्यकालीन भारत विविधता और समन्वय :–

• **गुप्त काल (4वीं–6वीं शताब्दी) :**

– इसे "भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग" कहा जाता है।

– नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय ज्ञान के केंद्र बने।

– अजंता एलोरा की गुफाएं, भरतनाट्यम और कत्थक जैसे शास्त्रीय नृत्य इसी काल में विकसित हुए।

• **मुगल काल (1526–1857) :**

– भारतीय संस्कृति में इस्लामी कला, स्थापत्य ताजमहल लाल किला और साहित्य उर्दू और फारसी का समावेश हुआ।

– संगीत में अमीर और तानसेन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. आधुनिक भारत : भारतीय संस्कृति का पुनर्जागरण :–

• **भक्ति और सूफी आंदोलन (15वीं से 17वीं शताब्दी) :**

कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, गुरु नानक और ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती जैसे संतों ने भारतीय संस्कृति को आध्यात्मिक और समावेशी बनाया।

• **स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय संस्कृति :**

– महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह को भारतीय संस्कृति का आधार बताया।

– भारतीय कला, संगीत और साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन से प्रेरित होकर फल फूला।

• **आधुनिक भारत और संस्कृत सांस्कृतिक विविधता :**

भारत में 22 आधिकारिक भाषाएं, सैकड़ो बोलियां, विभिन्न त्योहार, खान–पान और परंपराएं मौजूद हैं जिससे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाते हैं।

भारतीय इतिहास केवल घटनाओं, युद्धों और शासको का विवरण नहीं है, बल्कि यह उन परंपराओं, मूल्य और सामाजिक व्यवस्थाओं की कहानी भी है जो भारतीय संस्कृति का आधार बनी। इतिहास और संस्कृति एक दूसरे को प्रभावित करते हैं इतिहास के बिना संस्कृति की समझ अधूरी है और संस्कृति के बिना इतिहास केवल तिथियां और घटनाओं का संग्रह बनकर रह जाता है।

भारत की वर्तमान संस्कृति, भारतीय इतिहास की देन है।

भारत की वर्तमान संस्कृति उसके समृद्धि इतिहास से गहराई से प्रभावित है। भारत की परंपराएं, धार्मिक

मान्यताएं, सामाजिक व्यवस्थाएं, भाषा, कला, वास्तुकला, त्यौहार खान–पान और जीवन शैली सब कुछ ऐतिहासिक घटनाओं, आंदोलनों और सभ्यताओं के योगदान का परिणाम है।

1. प्राचीन भारत से मिली सांस्कृतिक विरासत :

- **धार्मिक और दार्शनिक परंपराएं :–** भारत में हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख धर्म का विकास प्राचीन काल में हुआ और आज भी यह संस्कृति के धरोहर हैं।
- **भाषा और साहित्य :–** संस्कृत, तमिल, प्राकृत, पाली जैसे प्राचीन भाषाओं से ही हिंदी, बंगाली, मराठी, तेलुगू और अन्य भारतीय भाषाएं विकसित हुई। महाकाव्य रामायण और महाभारत न केवल धार्मिक ग्रंथ है बल्कि भारतीय मूल्यों और नैतिकता के आधार है।
- **कला और स्थापत्य :–** अजंता एलोरा की गुफाएं, नालंदा विश्वविद्यालय और मौर्य गुप्त काल के स्तूप भारतीय स्थापत्य कला की प्राचीन धरोहर है,जो आज भी प्रभावशाली है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य (भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी) और संगीत (हिंदुस्तानी व कर्नाटक) भी इसी इतिहास से निकले हैं।
- **मध्यकालीन भारत का प्रभाव : धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय :–** भक्ति आंदोलन और सूफी संतों की शिक्षाओं ने भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता, प्रेम और समरसता को मजबूत किया, जो आज भी समाज में देखी जाती है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और चर्च का सह–अस्तित्व भारतीय संस्कृति की विविधता को दर्शाता है।
- **वास्तु कला और कला :–** ताजमहल, लाल किला, कुतुब मीनार जैसी स्थापत्य कला आज भी भारत की पहचान है। मुगल और राजस्थानी चित्रकला आज भी भारतीय कला की प्रमुख विधाएं हैं।
- **खान–पान और रहन–सहन :–** भारतीय भोजन में मुगलई व्यंजनों (बिरियानी, कबाब) और दक्षिण भारतीय व्यंजनों (डोसा, इडली) का मिश्रण इतिहास की देन है। भारतीय परिधान जैसे साड़ी, धोती, कुर्ता और शेरवानी का ऐतिहासिक महत्व है।

आधुनिक भारत : स्वतंत्रता संग्राम और वर्तमान संस्कृति :

- **राष्ट्रीयता और लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास :–** स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947) ने भारतीय संस्कृति में राष्ट्रवाद और लोकतंत्र की भावना को जन्म दिया। संविधान ने धर्मनिरपेक्षता, समानता और स्वतंत्रता को भारतीय संस्कृति का हिस्सा बनाया।
- **शिक्षा और वैज्ञानिक सोच :–** भारत के प्राचीन शिक्षा केंद्र (नालंदा, तक्षशिला) की परंपरा आधुनिक विश्वविद्यालय और संस्थानों में दिखती है। आईआईटी, आईआईएम, इसरो जैसी संस्थाएं भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्ति है।
- **वैश्विक प्रभाव और आधुनिकता :–** बॉलीवुड और भारतीय संगीत में पूरी दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। भारतीय संस्कृति में अब पश्चिमी प्रभाव भी जुड़ गया है, लेकिन पारंपरिक मूल्य को बनाए रखते हुए।

निष्कर्ष :–

भारतीय इतिहास और संविधान एक–दूसरे से जुड़े में हुए है। इतिहास में संविधान को दिशा दी, और संविधान ने यह सुनिश्चित किया कि इतिहास की गलतियों से सीखा जाए और एक न्याय संगत, लोकतांत्रिक और समावेशी समाज बनाया जाए। इसीलिए कहा जाता है कि "भारतीय इतिहास और संविधान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।"

भारत की वर्तमान संस्कृति उसके इतिहास का ही विस्तार है। चाहे वे धार्मिक सदिश होता हो कल और स्थापत्य हो भाषा और साहित्य हो या फिर लोकतांत्रिक मूल्य सब कुछ भारतीय इतिहास की देन है। इसलिए यह कहना सही होगा कि "भारत की वर्तमान संस्कृति, भारतीय इतिहास की ही देन है।" अतः यह कहना उचित होगा कि भारतीय इतिहास संविधान व संस्कृति का मिश्रण है।

संदर्भ सूचि :-

1. Indian Constitution – V.K. Puri
2. भारत का संविधान – Luxmi Publications
3. भारत का इतिहास – Luxmi Publications

मोब.:– 9466710680, 9467155905

Email : mamtawadhwa740@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 93–101

झुंझुनू जिले की आपदा व जोखिम की संवेदनशीलता (एक भौगोलिक अध्ययन)

रामावतार वर्मा, शोधार्थी
डॉ. धीर सिंह शेखावत, शोध निर्देशक
भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महीला विश्वविद्यालय जयपुर।

शोध साराश :–

आपदा जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है तथा आपदा के घटित होने के उपरान्त सर्वत्र विनाश का दृश्य उत्पन्न हो जाता है। आपदा प्रभावित लोगों को पुनः पूर्वास्थिति में आने में कई दशकों का समय लग जाता है। जीविका के निम्नस्तर व कम जागरूकता ने न केवल आपदाओं के भंयकर प्रभाव को बढाया है बल्कि यह आर्थिक विकास में रूकावट का गभीर कारण भी बना है। आपदा के घटने से उसके प्रभाव व क्षेत्र की परिधि में सभी लोग प्रभावित होते है। लेकिन गरीब, महिलां, बच्चे बुजुर्ग व अपंग लोग इससे अधिक प्रभावित होते है क्योंकि उनकी अर्थिक एवं शारीरिक कष्ट सहन करने की क्षमता बहुत कम होती है। अतः यह आव'यक है कि किसी भी जिले में संभावित घटित होने वाली विपदाओं की पहचान, उससे होने वाले जोखिम, उसकी परिधि में आने वाले क्षेत्रों बच्चों, बुजुर्गो, महिलाओं, निःशक्तजनों व बरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की पहचान, उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आर्थिक, सामाजिक व भौतिक संवेदनशीलता की पहचान तथा आपदा के प्रभाव से निपटने के लिए उनकी क्षमता का आंकलन करके जोखिम की संवेदनशीलता को ज्ञात किया जाये ताकि आपदाओं के खतरे को कम करने के लिए योजना तैयार करके कियान्वित की जा सके।

परिचय :–

आपदा जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है तथा आपदा के घटित होने के उपरान्त सर्वत्र विनाश का दृश्य उत्पन्न हो जाता है। आपदा प्रभावित लोगों को पुनः पूर्वास्थिति में आने में कई दशकों का समय लग जाता है। जीविका के निम्न स्तर व कम जागरूकता ने न केवल आपदाओं के भंयकर प्रभाव को बढाया है बल्कि यह आर्थिक विकास में रूकावट का गभीर कारण भी बना है। आपदा के घटने से उसके प्रभाव व क्षेत्र की परिधि में सभी लोग प्रभावित होते है। लेकिन गरीब, महिलां, बच्चे बुजुर्ग व अपंग लोग इससे अधिक प्रभावित होते है क्योंकि उनकी अर्थिक एवं शारीरिक कष्ट सहन करने की क्षमता बहुत कम होती है। अतः यह आवश्यक है कि किसी भी जिले में संभावित घटित होने वाली विपदाओं की पहचान, उससे होने वाले जोखिम, उसकी परिधि में आने वाले क्षेत्रों, बच्चों, बुजुर्गो, महिलाओं, निःशक्तजनों व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की

पहचान, उस क्षेत्र में रहने वाले लोगों की आर्थिक, सामाजिक व भौतिक संवेदनशीलता की पहचान तथा आपदा के प्रभाव से निपटने के लिए उनकी क्षमता का आंकलन करके जोखिम की संवेदनशीलता को ज्ञात किया जाये ताकि आपदाओं के खतरे को कम करने के लिए योजना तैयार करके क्रियान्वित की जा सके।

अध्ययन क्षेत्र –

अध्ययन क्षेत्र झुंझुनू जिला अर्द्धमरूस्थलीय क्षेत्र के अर्न्तगत आता है, जो राजस्थान राज्य के उत्तर पूर्व दिशा में अवस्थित है, वर्तमान के सन्र्दभ में उत्तर पूर्व में स्थित सीकर, झुंझुनू, तथा चूरू जिलों का सम्पूर्ण भू–भाग शेखावाटी के नाम से विख्यात है, ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अनुसार कच्छावा राजकुमार राव शेखाजी से पूर्व इस भू–भाग पर सैनिक घुमंतु शासक आते–जाते रहे है, राव शेखाजी ने आमेर से इस क्षेत्र पर शासन किया, राव शेखाजी ने आमेर की सामन्तशाही का उल्लंघन किया एवं 1471 ई. में अपनी सम्प्रभूता की घोषणा करने के बाद इस भू–भाग का नाम शेखावाटी रखा एवं आज वर्तमान तक सम्पूर्ण भू–भाग का शेखावाटी क्षेत्र के रूप में जाना जाता हैं।

मानचित्र 1.1

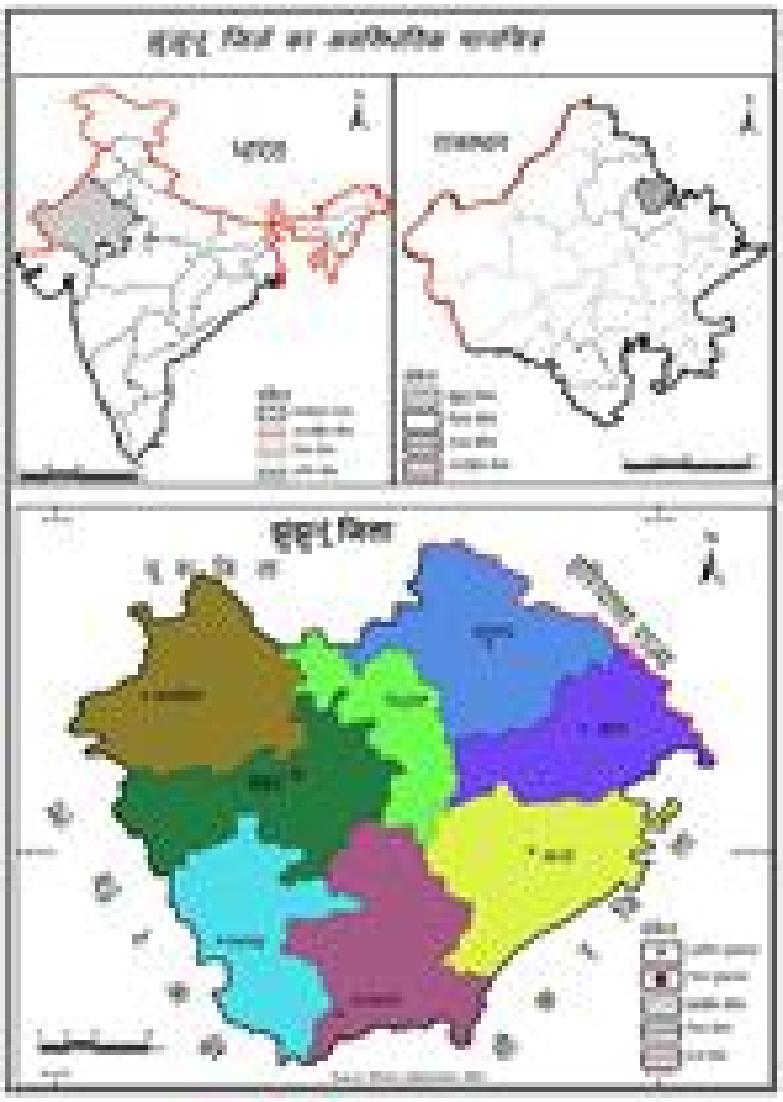

मानचित्र 1.1 से स्पष्ट है कि झुंझुनू जिला राजस्थान राज्य के उत्तर–पूर्व में अवस्थित है। झुंझुनूं जिला समुद्रतल से लगभग 338 मीटर की ऊंचाई पर हैं, जो राजस्थान राज्य में 27038′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 75002′ से 76006′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित हैं। जिला उत्तर–पश्चिम में चूरू जिला तथा दक्षिण–पश्चिम में सीकर जिला तथा उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य के हिसार एवं महेन्द्रगढ जिले से घिरा हुआ है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5928 वर्ग किलोमीटर है। भौगोलिक क्षेत्रफल के अनुसार देखा जाए तो मलसीसर तहसील सबसे बडी तहसील है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 881.69 वर्ग किमी. है, जबकि सबसे छोटी तहसील चिड़ावा है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 513.52 वर्ग किमी है। झुंझुनूं को प्रशासनिक दृष्टि से वर्तमान में 08 उपखण्डों एवं तहसीलों (झुंझुनूं, मलसीसर, बुहाना, उदयपुरवाटी, नवलगढ़, खेतडी, चिडावा व सूरजगढ) में विभक्त किया गया हैं जिले मे कुल 06 (मण्डावा, बिसाऊ, मुकुन्दगढ, सिंघाना, गुढागौडजी व सिंघाना) उप तहसील भी है। जिले में कुल 11 (झुंझुनूं, अलसीसर, बुहाना, उदयपुरवाटी, नवलगढ, खेतडी, चिडावा, सूरजगढ, सिंघाना, पिलानी व मण्डावा) पंचायत समितियां भी है। इसी प्रकार जिले में नगर परिषद् (झुंझुनूं) एवं 11 (मण्डावा, बगड, बिसाऊ, पिलानी, विद्याविहार, सूरजगढ, चिडावा, खेतडी, मुकुन्दगढ, नवलगढ व उदयपुरवाटी) नगर पालिकाएं भी है।

अध्ययन क्षेत्र झुंझुनूं जिले की 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2137045 है जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 3.12 प्रतिशत है। जिले में 2011 के अनुसार जनघनत्व 361 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। यहां 22.89 प्रतिशत जनसंख्या ही शहरी क्षेत्र में निवास करती है। जबकि जिले में तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यहां वर्तमान में लिंगानुपात 950 है तथा साक्षारता दर 74. 13 प्रतिशत है। जिलें में महिला व पुरूष की साक्षरता दर क्रमशः 60.95 व 86.90 प्रतिशत हैं। जिले में 16.88 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 1.95 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।

परिकल्पना –

- प्राकृतिक आपदा मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
- अध्ययन क्षेत्र विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं प्रभावित हैं।
- अध्ययन क्षेत्र में साम्प्रदायिक दंगे, महामारी, भूकम्प, भू–स्खलन, औद्योगिक दुर्घटनाऐं, कुओं का धंसना, आग लगना, ओलावृष्टि, सुखा, बाढ आदि विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की पुनवर्ती होती रहती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य जिले में आपदाओं से खतरे के प्रभावों का अध्ययन करना है जिससे क्षेत्र में आपदाओं से पूर्व तैयारियों को निर्धारित कि ना सके अध्ययन के मुख्य बिन्दू निम्न हैं।

- जिले में विद्यमान विभिन्न आपदा नियंत्रण मूलभूत सुविधाओं के स्तर का पता लगाना तथा इसका जिला प्रशासन की क्षमता बढाने में उपयोग करना।
- आपदा न्यूनीकरण के विभिन्न पहलूओं को क्षेत्र विशेष की विकास योजनाओं के काम में लाना।
- जिले में पूर्व में हुई आपदाओं का विवरण, रिकार्ड, अनुभव के अनुसार भविष्य में उनसे निपटने के लिए रूपरेखा तैयार करना।

संमको के स्त्रोत व विधितंत्र –

प्रस्तुत शोध पत्र आगात्मक व निगात्मक पद्वति पर आधारित है, शोध कार्य हेतु द्वितिय संमकों का संग्रहण

सांख्यकिय विभाग व भू–अभिलेख शाखा झुंझुनू, एवं आपदा निभाग झुंझुनू से प्राप्त किऐ गऐ, प्रस्तुत शोध पत्र में आपता के कारणों एवं उनसे घटीत घटनाओं तथा प्रभाओं की चर्चा की गई।

संभावित विपदाओं की पहचान –

अध्ययन क्षेत्र में आपदा प्रबन्धन विभाग द्वारा घटित उच्च स्तरीय कमेटी ने 31 तरह की आपदाओं को चिन्हित किया है जिन्हे मुख्यतः पांच भागों में विभक्त किया है।

1. **जलवायु सम्बन्धित** – बाढ़, सूखा, चक्रवात, बादल का फटना, गर्म और ठंडी हवायें, तूफान एवं बिजली का गिरना।
2. **भूगर्भ सम्बन्धित** :– भूकम्प, भूस्लखन, खान में आग लगना, भू–गर्भ जल स्तर गिरना, बांध टूटना, कुओ का धंसना।
3. **रासायनिक, औधोगिक आपदाये** :– रासायनिक एवं औद्योगिक इकाईयो में दुर्घटना।
4. **दुर्घटना सम्बन्धित** :– आग, बम विस्फोट, वायुयान, सड़क एवं रेल दुर्घटना, खान में बाढ आना, मुख्य भवनों का ढहना।
5. **जैविक आपदा** :– महामारी, टिड्डी दल आक्रमण, जानवरों की महामारी, जानवरों द्वारा फसलों को नुकसान इत्यादि।

1. **संवेदनशीलता** :–

किसी स्थान की संवेदनशीलता वहां के लोगों के जीवनस्तर, वहां की स्थिति, रहने के स्थान व वहां की भौगोलिक स्थिति व घटना घटने के समय पर निर्भर करती है। लोग + स्थिति + स्थान + समय + घटना :– संवेदनशीलता।

भौतिक संवेदनशीलता –

भवन, आधारभूत ढांचा, जीवन धारक वस्तुओं की पूर्ति का मार्ग, परिवहन, दूरसंचार, जन सुविधां, आवश्यक जन सेवाए जैसे स्वास्थ्य, जलापूर्ति तथा कृषि, भौतिक साधन है जिनमें भौतिक संवेदनशीलता का आंकलन किया जाता है। घरों को उनकी बनावट तथा भवन सामग्री के आधार पर चार मुख्य भागों में वर्गीकृत किया जा रहा हैं।

(अ) मिट्टी की दीवार ढालू, कच्ची मिट्टी की ईंटो एवं स्थानीय उपलब्ध पत्थर।
(ब) पकी हुई ईटों या बड़े पत्थर के घर।
(स) सुदृढ़ या मजबूत इमारतें, लकड़ी के ढॉचों के साथ।
(द) हल्के, लकड़ी, पत्तों आदि की झोंपड़िया।

(अ) मिट्टी की दीवार ढालू, कच्ची मिट्टी की ईटों व स्थानीय पत्थर –

जिले का लगभग 15 प्रतिशत भाग संशोधित सरकारी मापक के अनुसार VII (MK) तक तीव्रता के भूकम्प आने के मध्यम नुकसान सम्भावित क्षेत्र में आता है।

(ब) पकी हुई ईटों या बड़े पत्थर के घर –

जिले में पकी हुई ईटों या बड़े पत्थरों के बने घरों को अत्यधिक नुकसान वाले सम्भावित क्षेत्र में मध्यम नुकसान होने की संभावना है।

(स) सुदृढ़ या मजबूत इमारतें, लकड़ी के ढाँचों के साथ –

इस तरह के घरों को कम नुकसान होने की संभावना है अर्थात् भूकम्प की दृष्टि के कुछ हद तक इन्हें ठीक कहा जा सकता है।

(द) हल्के, लकड़ी, पत्रों आदि की झोंपड़ियॉं –

हल्के भवन निर्माण के घर जैसे झोंपड़ियॉ हल्के लकड़ी, पत्तों आदि की सामग्री से बने हए, हैं जो भूकम्प की दृष्टि से तो काफी सुरक्षित है लेकिन तेज हवायें अगर 40 कि.मी./सै. की गति से चलती है तो इन घरों में अत्यधिक नुकसान की संभावना है।

खतरा :–

भौतिक, सामाजिक एवं पारिस्थितिक आदि कमजोर संरचनाओं को खतरा अधिक होता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि विपदा की प्रचण्डता कितनी थी और असुरक्षा की स्थिति कितनी थी। खतरा, विपदा और संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। खतरा = विपदा + संवेदनशीलता।

जिले की पूर्व आपदाओं का वर्गीकरण :–

तालिका 1.1

जिलें में आपदा के प्रकार वर्ष 2012 से 2016

क्र.सं.	वर्ष	आपदा का प्रकार	प्रभावित क्षेत्र
1	2012	अग्नि एवं अन्य	सम्पूर्ण जिला
2	2013	सुखा एवं अग्नि	सम्पूर्ण जिला
3	2014	अग्नि, ओलावृष्टि एवं अन्य	सम्पूर्ण जिला
4	2015	अग्नि, ओलावृष्टि एवं अन्य	सम्पूर्ण जिला
5	2016	सुखा, ओलावृष्टि, अग्नि	मलसीसर, सूरजगढ़

स्रोत – जिला आपदा विभाग झुंझुनू।

आपदा प्रभावित/सम्भावित क्षेत्र :–

1. बाढ सम्भावित क्षेत्र :–

अन्तः प्रभावी प्रदेश होने के कारण झुंझुनू जिले मे बाढ की सम्भावना अधिक वर्षा होने बादल फटने से हो सकती है, अधिकांश नगरीय क्षेत्र भी निम्न भूमि क्षेत्र में बसे होने के कारण वर्षा के जल से भी बाढग्रस्त होने के सम्भावना रहती है। सामान्यतः अधिकांशतः निचले क्षेत्रो में अत्यधिक वर्षा की वजह से बाढ जैसी स्थिती उत्पन्न हो जाती है। मुख्यतः उदयपुरवाटी, सूरजगढ, बुहाना एवं खेतडी तहसील मे अधिकांशतः इस प्रकार की स्थिती उत्पन्न होने की सम्भावना अत्याधिक रहती है।

(अ) काटली नदी बेसिन :– उदयपुरवाटी, चिड़ावा, झुंझुनू एवं सूरजगढ तहसील के क्षेत्र।

(ब) चन्द्रावती नदी बेसिन :– खेतड़ी तहसील के क्षेत्र।

(स) दोहन नाला बेसिन :– खेतड़ी व बुहाना तहसील के क्षेत्र।

(द) उदयपुरवाटी नदी बेसिन :– नवलगढ तहसील के क्षेत्र।

सुखा सम्भावित क्षेत्र :-

झुंझुनू जिले में वार्षिक वर्षा का औसत भी 100 सेन्टीमीटर से कम पाया जाता है तथा वृष्टि छाया प्रदेश एवं अर्द्व–शुष्क मरूस्थली प्रदेश होने के कारण यहां सुखे की सम्भावना प्रतिवर्ष ही पायी जाती है। जिले में 2–3 वर्षो से सुखे की पूनरावृति की सम्भावना बनी रहती है।

ओलावृष्टि सम्भावित क्षेत्र :-

झुंझुनू जिले में शीतकाल में पश्चिमी विक्षोभ से आने वाली वर्षा के साथ ओलावृष्टि की सम्भावनाये अधिक पायी जाती है। जिले में झुंझुनू, चिड़ावा, उदयपुरवाटी, नवलगढ, खेतडी, बुहाना, मलसीसर, सूरजगढ तहसीलो के क्षेत्रों में रबी की फसलों का उत्पादन कुओ की सिंचाई के द्वारा किया जाता है, कई बार उपरोक्त विक्षोभ (ओलावृष्टि) से नुकसान होने की सम्भावना रहती है। गत वर्ष मे मलसीसर तहसील के 3 ग्राम एवं तहसील सूरजगढ के 2 ग्राम ओलावृष्टि से प्रभावित हुये थे, उक्त दोनो तहसीलों के कुल 1618 कृषक सम्वत् 2072 में ओलावृष्टि से प्रभावित हुये थे। झुंझुनू जिले में सामान्यतः 2–3 वर्षो में उक्त विक्षोप की पुनरावर्ति होती रहती है।

अग्नि सम्भावित क्षेत्र :-

अग्नि एक सामान्य प्राकृतिक आपदा होने के कारण जिले के किसी भी भाग में छोटे–मोटे स्तर पर होने की सम्भावना ज्यादा रहती है। अग्निकाण्ड मानव जनित एवं प्राकृतिक आपदा है। अग्निकाण्ड मानव जनित होने के कारण जिले के किसी भी भाग में कभी भी हो सकती है। प्राकृतिक दृष्टि से वनों में भी आग लगने की सम्भावना शुष्कता की मात्रा अधिक होने एवं सुखा होने के कारण प्राकृतिक वनस्पतियों के क्षेत्रों में अग्नि की सम्भावना अधिक होती है। इसके प्रमुख क्षेत्र झुंझुनू, उदयपुरवाटी नवलगढ एवं बुहाना तहसीलें प्रमुख है।

मानचित्र 1.2

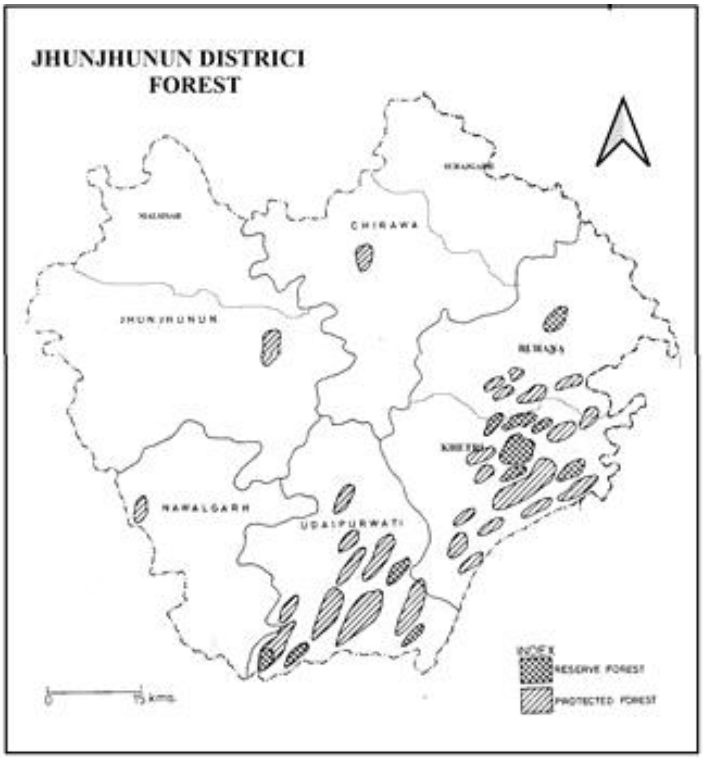

कुओं का धंसना :-

झुंझुनू जिले में कुओं के द्वारा सिचाई प्राचीन समय से लघु स्तर पर की जा रही है। खेतड़ी उदयपुरवाटी, बुहाना व चिड़ावा तहसीलो में खुले कुऐं पाये जाते है। साथ ही जिले में बलुई मिट्टी पाई जाने के कारण कुऐ के धसने की सम्भावना, पाई जाती है।

रेल व सड़क दुर्घटना :-

झुंझुनू जिले में एक मात्र रेल मार्ग का विस्तार पाया जाता हौ सीकर से लोहारू लगभग 100 किलोमीटर लम्बा ब्रोडगेज रेल मार्ग पाया जाता हौ रेल मार्ग नवीन है। रेलो का आवागमन भी कम पाया जाता है। अतः संरचनात्मक दुर्घटना की संभावना कम पायी जाती है। झुंझुनू जिले में रेल मार्ग का विस्तार कम होने एवं जीने में जनसख्या अधिक होने के कारण जिले में पंजीकृत वाहनों की अधिक एवं धार्मिक राजनीतिक सामाजिक एवं शैक्षिक गतिविधियो के कारण आवागमन अधिक पाया जाता है। जिले में सड़क मार्गो का विस्तार एवं सड़क परिवहन की गहनता अधिक पाई जाती है परिवहन एवं भारी वाहनों की गम्यता निम्न मार्गो पर अधिक पाई जाती हैं जिन पर सड़क दुर्घटनाओ की संभावनाओं की अधिक पाई जाती है।

(1) झुंझुनू – चिड़ावा – पिलानी मार्ग।
(2) चिड़ावा – सूरजगढ – लुहारू मार्ग।
(3) चिड़ावा – सिंघाना – पचेरी – दिल्ली मार्ग।
(4) सिंघाना – कॉपर – खेतड़ी – नीमकाथाना मार्ग।
(5) झुंझुनू – बडागांव – गुडा – उदयपुरवाटी मार्ग।
(6) झुंझुनू – मुकुन्दगढ – नवलगढ – सीकर मार्ग।
(7) झुंझुनू – बिसाऊ – चुरू मार्ग।
(8) झुंझुनू – अलसीसर – मलसीसर – राजगढ मार्ग।
(9 अन्य जिला स्तरीय मार्ग।

उपरोक्त मार्ग पर यात्री भार अधिक होने के कारण दुर्घटनाओ की संभावना अधिक पाई जाती है। जिले में भारी वाहनों का आवागमन अधिक होने का एवं स्थानीय क्रोर उद्योग भारी वाहनों की गम्यता को बढाते है जिससे दुर्घटनाऐ अधिक होती है।

औद्योगिक दुर्घटनाऐं :-

जिले में खेतड़ी नगर में एक भारत का प्रमुख तांबा उद्योग हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड पाया जाता है। जिसे में रासायनिक दुर्घटना, खनन संबंधी दुर्घटना एवं प्रकिया (Proces) संबंधी दुर्घटनाओं की संभावना पाई जाती हैं। इण्डियन ऑयल कोपरेशन की गैस बाटलीग प्लांट की स्थापना झुंझुनू शहर के निकट पाई जाती है। इस ईकाई में भी रासायनिक, अग्नि से संबंधी दुर्घटना घटित हो सकती है।

भूकम्प एवं भू-स्खलन :-

भूकम्प एक प्राकृतिक आपदा होती है। झुंझुनू जिले में अरावली पहाड़ियों के किनारे वाले भाग पाये जाने के कारण एवं अत्यधिक जल का अवशोषण होने एवं खनन की क्रिया अधिक होने के कारण हलके भूकम्पों के संभावनाऐ पाई जाती है।

महामारी :-

जिले में जनसंख्या का घनत्व अधिक पाया जाता है। इसके कारण एवं प्राकृतिक आपदाऐं शीत लहर एवं लू के कारणों से महामारियों के फैलने की संभावनाऐं अधिक पाई जाती है। जिले में छोटे स्तर पर कुछ महामारियों एवं खतरनाक रोगों का प्रभाव देखा जाता है।

साम्प्रदायिक दंगे :-

जिले में साम्प्रदायिक सौहार्द की भावनायें पायी जाती है, एवं कुछ मेले, एवं धार्मिक केन्द्र भी पाये जाते है। परन्तु कुछ आकस्मिक घटनाओं के कारण जिले के नवलगढ शहर में पूर्व में कुछ साम्प्रदायिक तनाव की स्थिती उत्पन्न हुयी है। तथा कुछ साल पहले जिले के नरहड धार्मिक स्थल पर भी तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

निष्कर्ष -

गत वर्षो में झुझुनूं जिले में कई प्रकार की आपदाओं का सामना किया है, जिसमें प्राकृतिक एंव कृत्रिम दोनों ही प्रकार की आपदाएं शामिल है। गत वर्षो सूखा, अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आग, कुआं धँसना, बाढ, आँधी, जहरीली दुखान्तिका, तापघात, शीतघात, पशुओं में महामारी, विभिन्न बिमारियां, ओलावृष्टि, पाला, शीतलहर, बिजली गिरने की घटना, सड़क दुर्घटनाएं, बिजली पानी सम्बन्धित आन्दोलन, रास्ता जाम, आगजनी, गुर्जर आरक्षण आन्दोलन, साम्प्रदायिक दंगो, चुनावों के दौरान हिसां, भगदड़, छात्र आन्दोलन इत्यादि। गत पाँच वर्षो में आपदाओं से हुए नुकसान का अध्ययन करने पर निम्न स्थिति जिले की पाई गई, कि उक्त आपदाओ से जिले का अनुभव रहा है कि चाहे आपदा प्राकृतिक हो या मानवजनित दोनों ही प्रकार की आपदाएं, भारी जानमाल की क्षति होती है। अतः सबसे ज्यादा जोर आपदाओं के बचावों पर दिया जाना चाहिए, ताकि आपदाएं घटित ना हो। यदि किसी कारण से आपदा को घटित होने से नहीं रोका जा सके तो ऐसे समन्वित प्रयास किये जावे की कम से कम नुकसान हो। जहां तक हो आपदा को नियन्त्रण में लाने की कोशिश कर नुकसान को कम एवं जनधन की सुरक्षा की जा सके।

Reference -

1. Cutter, S.L., et al. (2003). "Social Vulnerability to Environmental Hazards." Social Science Quarterly, 84(2), 242-261.
2. Brooks, N. (2003): "Vulnerability, risk and adaptation: A conceptual framework." Tyndall Centre for Climate Change Research Working Paper, 38.
3. Kahn, M.E. (2005): "The Death Toll from Natural Disasters: The Role of Income, Geography, and Institutions." Review of Economics and Statistics, 87(2), 271-284.
4. Adger, W.N., et al. (2005): "Social capital, collective action, and adaptation to climate change." Economic Geography, 81(4), 361-385.
5. Hallegatte, S., et al. (2013): "Future increases in hurricane damage: economic and demographic effects." Ecological Economics, 85, 154-166.

6. Kelman, I., et al. (2007): "Climate change and the Sendai Framework for Disaster Risk Reduction." International Journal of Disaster Risk Science, 8(3), 153-155.
7. Mearns, R. & Norton, A. (2010): "Social dimensions of vulnerability to climate change in the Philippines." The International Bank for Reconstruction and Development/The World Bank.
8. Brooks, N., et al. (2005): "The costs of climatic change: A case study of the Kalahari." Global Environmental Change, 15(2), 321-333.
9. Boyd, E. & Osbahr, H. (2010): "Resilience and 'climatizing' development: Examples and policy implications." Development, 53(1), 78-87.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 102-109

कौटिल्य अर्थशास्त्र में प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धांतों की आधुनिक व्याख्या

डॉ. मुन्नालाल चौधरी, शोध निर्देशक (सहा. प्राध्या. संस्कृत)
रूखमणी मोहबे, शोधार्थी,
संस्कृत विभाग, शासकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी, म. प्र.–480661

प्रस्तावना :

आचार्य चाणक्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र वैश्विक राजनैतिक और आर्थिक चिन्तन का एक अद्वितीय ग्रन्थ है। यह केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं है, बल्कि राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और प्रशासनिक विज्ञान का एक व्यापक विश्वकोश है। कौटिल्य, मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के महामात्य और मार्गदर्शक थे, इन्होंने अपने अनुभव और गहन चिन्तन के आधार पर इस ग्रन्थ का सृजन किया था, जिनमें राज्य की स्थापना, संरक्षण, विस्तार और सुदृढ़ीकरण के लिए विस्तृत एवं व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया गया है। विष्णुगुप्त का राजनीतिक दर्शन मूलतः यथार्थवादी और व्यावहारिक है। उन्होंने राज्य में मानव जीवन कल्याण और सुरक्षा को सर्वोच्च माना है। वे कहते हैं कि राज्य का प्राथमिक उद्देश्य प्रजा की सुरक्षा, समृद्धि और सुख है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने सप्ताङ्ग–सिद्धान्त का प्रतिपादन किया – स्वामी (राजा या शासक), अमात्य (मन्त्रिपरिषद और प्रशासनिक अधिकारी), जनपद (राज्य क्षेत्र और जनसंख्या), दुर्ग (किलाबन्दी और सुरक्षा व्यवस्था), कोष (राजकोष और आर्थिक संसाधन), दण्ड (सेना और दण्ड व्यवस्था), तथा मित्र (सहयोगी राज्य और राजनयिक सम्बन्ध)। यह सिद्धान्त आधुनिक राजनैतिक संरचना को समझने और विश्लेषित करने के लिए एक सशक्त वैचारिक आधार प्रदान करता है।

कौटिल्य ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए मण्डल–सिद्धान्त प्रस्तुत किया, जो राज्यों के मध्य सम्बन्धों की गतिशीलता को स्पष्ट करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी राज्य के चारों ओर अनेक राज्य होते हैं, जो उसके मित्र, शत्रु, उदासीन या सहयोगी हो सकते हैं। इन सम्बन्धों की प्रकृति भौगोलिक निकटता, राजनैतिक हितों और सामरिक आवश्यकताओं पर निर्भर करती है। मण्डल–सिद्धान्त आधुनिक भू–राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के सिद्धान्तों से साम्य रखता है। कौटिल्य ने विदेश नीति संचालन के लिए षाड्गुण्य नीति का प्रतिपादन किया, जिसमें छः प्रकार की नीतियां सम्मिलित हैं – संधि (शान्ति संधि या समझौता), विग्रह (युद्ध), यान (आक्रमण या सैन्य अभियान), आसन (प्रतीक्षा या तटस्थता), द्वैधीभाव (दोहरी नीति), और संश्रय (गठबन्धन या शरण लेना)। ये नीतियां परिस्थितियों के अनुकूल लचीली और व्यावहारिक हैं।

वर्तमान समय में जब भारत तीव्र आर्थिक विकास के साथ एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है, जब देश अनेक आन्तरिक और बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा है, और जब राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और सुशासन की प्राथमिकताएं हैं, तब कौटिल्य के सिद्धान्तों का पुनर्मूल्यांकन और उनकी आधुनिक व्याख्या अत्यन्त आवश्यक हो जाती है। विशेषकर अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति, राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति, आर्थिक नीति निर्माण, प्रशासनिक सुधार और न्याय व्यवस्था में कौटिल्य के विचार एवं मार्गदर्शक सिद्धान्तों की प्रासङ्गिकता दिखती है।

कौटिल्य के इस राजनैतिक दर्शन को यथार्थवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण का उत्कृष्ट उदाहरण बताया है। कौटिल्य ने राज्य को एक जीवन्त संगठन माना है जो विभिन्न अङ्गों के समन्वय से कार्य करता है, जो कौटिल्य और पश्चिमी राजनैतिक विचारक मैक्यावली के बीच तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। दोनों ही यथार्थवादी विचारक थे और राजनीति में व्यावहारिकता को महत्व देते थे। परन्तु कौटिल्य का दृष्टिकोण अधिक व्यापक, संगठित और राज्य केन्द्रित है। सप्तांग सिद्धांतों की आधुनिक राज्य व्यवस्था में उपयोगिता प्राथमिक हो जाती है क्योंकि कौटिल्य द्वारा वर्णित राज्य के सात अङ्ग आधुनिक राज्य की संरचना और कार्यप्रणाली को समझने के लिए एक सशक्त वैचारिक ढांचा प्रदान करते हैं।

आधुनिक विचारकों ने कौटिल्य की तुलना आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ से करते हुए बताया कि कौटिल्य ने राज्य की वित्त (अर्थ) गतिविधियों में सक्रिय भूमिका का समर्थन किया था, साथ ही कौटिल्य के कराधान, व्यापार नीति, कृषि विकास और वित्तीय प्रबन्धन का विस्तृत वर्णन किया है। कौटिल्य की कूटनीतिक रणनीतियों और मण्डल–सिद्धान्त का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने कौटिल्य के इन सिद्धान्तों को आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के यथार्थवादी सिद्धांत से जोड़ते हुए बताया कि कौटिल्य का दृष्टिकोण शक्ति संतुलन, राष्ट्रीय हित और सुरक्षा दुविधा जैसी अवधारणाओं का पूर्वाभास करता है। आधुनिक विचारकों ने दण्डनीति और न्याय व्यवस्था पर कौटिल्य के विचारों का विश्लेषण किया है। कौटिल्य ने न्याय और कानून को राज्य की नींव माना है और दण्ड को समाज में व्यवस्था बनाए रखने का सर्वोच्च साधन बताया है। उन्होंने भारतीय विदेश नीति के विभिन्न पहलुओं में कौटिल्य के सिद्धांतों की झलक देखी है। पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों में, राजनैतिक साझेदारी और बहुपक्षीय संगठनों में भारत की भूमिका को कौटिल्य के मण्डल–सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। कौटिल्य ने अधिकारियों की नियुक्ति, उनके कर्तव्यों, जवाबदेही और भ्रष्टाचार निवारण पर विस्तृत दिशा निर्देश प्रदान किए है। कौटिल्य को भारतीय राजनैतिक विचारधारा का सबसे व्यावहारिक और प्रभावशाली विचारक माना जाता है। उनके मण्डल–सिद्धान्त के द्वारा भारत की समकालीन विदेश नीति के अन्तर्गत विदेशों से सम्बन्ध स्थापित करने में मदद मिलती है। उनके अनुसार, भारत की पूर्व की ओर देखो नीति, पड़ोसी पहले नीति और रणनीतिक स्वायत्तता कौटिल्य के विचारों से प्रेरित हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक नीतियों का आधुनिक भारत के संदर्भ में विश्लेषण किया जाता रहा है। उन्होंने बताया कि आर्थिक राष्ट्रवाद की अवधारणा वर्तमान में आत्मनिर्भर भारत अभियान से मेल खाती है। कौटिल्य और मैक्यावेली के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है। दोनों में अनेक समानताएं हैं, परन्तु कौटिल्य का सम्पूर्ण दृष्टिकोण धर्म–आधारित है। उन्होंने गुप्तचर व्यवस्था, सीमा सुरक्षा और आन्तरिक सुरक्षा में कौटिल्य के योगदान को रेखांकित किया है। राष्ट्रीय सुरक्षा में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता पर शोध की

आवश्यकता आज भी है। कौटिल्य ने शासन दर्शन और लोकतान्त्रिक मूल्यों के बीच सम्बन्ध स्थापित किया है। यद्यपि कौटिल्य राजतन्त्र के समर्थक थे, परन्तु उनका मुख्य बल जनकल्याण पर था, जो लोकतन्त्र का मूल सिद्धान्त है। प्राचीन भारत में गुप्तचर व्यवस्था पर कौटिल्य ने विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। कौटिल्य ने गुप्तचर तन्त्र को राज्य की आंख–कान माना है। कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित राजा के कर्तव्यों को आधुनिक नेतृत्व के सिद्धान्तों से जोड़ा जाता है। आधुनिक विचारकों ने अर्थशास्त्र में वर्णित कराधान व्यवस्था और आधुनिक वित्तीय प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कौटिल्य ने न्यायपूर्ण और प्रभावी कर प्रणाली के सिद्धांत प्रतिपादित किए थे। आर्थिक राष्ट्रवाद, राजनैतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय कूटनीति में कौटिल्य के सिद्धान्त आज भी प्रासङ्गिक हैं। कौटिल्य के नैतिक दर्शन–राजनीति और धर्म –अर्थ में संतुलन स्थापित किया है। आधुनिक भारत के संदर्भ में कौटिल्य की कूटनीतिक रणनीतियों का विश्लेषण किया जा रहा है। विशेषकर चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के सम्बन्धों में कौटिल्य के मण्डल–सिद्धान्त की प्रासङ्गिक्ता को दर्शाया गया है।

आधुनिक प्रशासनिक सिद्धान्तों में कौटिल्य के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। उन्होंने संगठन संरचना, नियन्त्रण तन्त्र की प्रासङ्गिक्ता का स्पष्ट वर्णन किया है। स्पष्ट है कि कौटिल्य के राजनैतिक सिद्धान्त न केवल ऐतिहासिक महत्व रखते हैं, बल्कि आधुनिक राजनैतिक, आर्थिक और प्रशासनिक चुनौतियों का समाधान करने में भी सक्षम हैं।

उद्देश्य :

1. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित प्रमुख राजनैतिक सिद्धान्तों–सप्ताङ्ग– सिद्धान्त, मण्डल–सिद्धान्त, षाड्गुण्य नीति और दण्डनीति।
2. सप्ताङ्ग–सिद्धान्त की आधुनिक राज्य संरचना और कार्यप्रणाली।
3. मण्डल–सिद्धान्त और षाड्गुण्य नीति की समकालीन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और भारतीय विदेश नीति में उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
4. कौटिल्य के कूटनीतिक, प्रशासनिक और आर्थिक विचारों के द्वारा वर्तमान भारतीय राजनीति, और नीति निर्माण।

प्रस्तुत शोध में कौटिल्य के सिद्धान्तों की तुलना आधुनिक राजनैतिक सिद्धान्तों, शासन व्यवहार और नीति निर्माण प्रक्रियाओं से की गई है। कौटिल्य के समकालीन राजनैतिक परिवेश और वर्तमान समय के राजनैतिक संदर्भ के मध्य तार्किक सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

सप्ताङ्ग- सिद्धान्त और आधुनिक राज्य संरचना :

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में राज्य को एक जीवित संरचना के रूप में प्रस्तुत किया है, जो सात अङ्गों से मिलकर बनता है। **प्रथम अङ्ग स्वामी अर्थात् राजा या शासक :-** जो राज्य का सर्वोच्च नेतृत्व प्रदान करता है। आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या सरकार के मुखिया के रूप में देखा जा सकता है। **द्वितीय अङ्ग अमात्य :-** अर्थात् मन्त्रिपरिषद और प्रशासनिक अधिकारी हैं, जो शासन संचालन में राजा की सहायता करते हैं। वर्तमान में यह मन्त्रिमण्डल, सिविल सेवा और प्रशासनिक तन्त्र के रूप में कार्यरत है। **तृतीय अङ्ग जनपद :-** अर्थात् राज्य का भौगोलिक क्षेत्र और जनसंख्या है, जो राज्य की शक्ति का आधार है। **चतुर्थअङ्ग दुर्ग :-** अर्थात् सुरक्षा व्यवस्था और किलाबन्दी है, जो आधुनिक समय में सीमा सुरक्षा, सैन्य प्रतिष्ठान

और रक्षा तन्त्र के रूप में कार्य करता है। **पञ्चम् अङ्ग :–** कोष अर्थात् राजकोष और आर्थिक संसाधन हैं, जो राज्य की आर्थिक शक्ति (रीढ़) का प्रतीक हैं। **षष्ठम् अङ्ग :–** दण्ड अर्थात् सेना और दण्ड व्यवस्था है, जो राज्य की सैन्य शक्ति और कानून प्रवर्तन का प्रतिनिधित्व करती है। **सप्तम् अङ्ग :–** मित्र अर्थात् सहयोगी राज्य और राजनयिक सम्बन्ध हैं, जो वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों और राजनैतिक साझेदारी के रूप में महत्वपूर्ण हैं। अतः स्पष्ट होता है कि यह सप्ताङ्ग–सिद्धान्त आधुनिक राज्य की संरचना और कार्यप्रणाली को समझने के लिए एक अत्यन्त प्रासंगिक और व्यापक वैचारिक ढांचा प्रदान करता है। वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्था में भी राज्य के ये सभी तत्व अनिवार्य रूप से उपस्थित हैं। राज्य की सफलता इन सभी अङ्गों के समन्वित और संतुलित विकास पर निर्भर करती है। किसी एक अङ्ग की कमजोरी सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था को प्रभावित कर नष्ट करती है।

मण्डल–सिद्धान्त और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध :

कौटिल्य का मण्डल–सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का एक अत्यन्त व्यावहारिक और यथार्थवादी मॉडल प्रस्तुत करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार, किसी राज्य (विजिगीषु) के चारों ओर अनेक राज्य होते हैं जो उसके मित्र, शत्रु, उदासीन या मध्यस्थ हो सकते हैं। निकटवर्ती राज्य प्रायः शत्रु होता है क्योंकि सीमा विवाद और संसाधनों के लिए उसमें परस्पर प्रतिस्पर्धा होती है। शत्रु के पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रुप से मित्र होते हैं क्योंकि उनका भी शत्रु समान होता है। इस प्रकार मित्र–शत्रु का एक चक्र बनता है। कौटिल्य ने बारह प्रकार के राज्यों का वर्णन किया है जो विजिगीषु के चारों ओर मण्डल बनाते हैं। भारत की वर्तमान विदेश नीति में इस सिद्धान्त की स्पष्ट झलक मिलती है। पड़ोसी देशों के साथ भारत के सम्बन्ध, विशेषकर पाकिस्तान और चीन के साथ, मण्डल–सिद्धान्त के परिप्रेक्ष्य में समझे जा सकते हैं। भारत ने अफगानिस्तान, भूटान, बांग्लादेश और मालदीव जैसे देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, विकसित किए हैं, जो राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, इजराइल, फ्रांस और रूस के साथ राजनैतिक साझेदारी स्थापित की है, जो मण्डल सिद्धांत के मित्र राज्यों की अवधारणा से मेल खाती है।

षाड्गुण्य–नीति और कूटनीतिक रणनीतियां :

कौटिल्य ने विदेश नीति संचालन के लिए षाड्गुण्य नीति का प्रतिपादन किया, जिसमें छरू प्रकार की नीतियां सम्मिलित हैं। **संधि का अर्थ है :–** शान्ति संधि या समझौता, जो दो राज्यों के मध्य सहयोग और मैत्री स्थापित करता है। **विग्रह का अर्थ है :–** युद्ध या संघर्ष, जो शत्रु को पराजित करने के लिए किया जाता है। **यान का अर्थ है :–** सैन्य अभियान या आक्रमण की तैयारी। **आसन का अर्थ है :–** प्रतीक्षा या तटस्थता, जब परिस्थितियां अनुकूल न हों। **द्वैधीभाव का अर्थ है :–** दोहरी नीति, जिसमें एक राज्य से मित्रता और दूसरे से शत्रुता रखी जाए। **संश्रय का अर्थ है :–** किसी शक्तिशाली राज्य की शरण लेना या गठबन्धन बनाना। आधुनिक भारतीय कूटनीति में इन सभी नीतियों का उपयोग देखा जा सकता है। भारत ने पाकिस्तान के साथ शिमला समझौता और लाहौर घोषणा जैसी शान्ति संधियां की हैं। १९६२ में चीन और १९६५, १९७१ और १९९९ में पाकिस्तान के साथ युद्ध किए हैं (विग्रह)। सीमा पर सतत् सैन्य तैयारी बनाए रखी है (यान)। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय विवादों में तटस्थ रुख अपनाया है (आसन)। रूस, अमेरिका तथा अन्य देशों के साथ राजनैतिक साझेदारी स्थापित की (संश्रय) है।

आधुनिक भारतीय राजनीति में कौटिल्य के सिद्धांतों की प्रासंगिकता :

कौटिल्य ने राष्ट्रीय सुरक्षा को राज्य की सर्वोच्च प्राथमिकता माना था। उन्होंने आन्तरिक और बाह्य दोनों

प्रकार की सुरक्षा पर बल दिया। गुप्तचर व्यवस्था, सीमा सुरक्षा, सैन्य संगठन और राजनैतिक योजना पर उन्होंने विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। भारत की वर्तमान राष्ट्रीय सुरक्षा नीति में कौटिल्य के विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार परिषद, खुफिया एजेंसियों का तन्त्र, सीमा प्रबन्धन रणनीति और रक्षा आधुनिकीकरण योजनाएं इसी दृष्टिकोण का परिणाम हैं। विशेष रूप से आतंकवाद, नक्सलवाद और सीमा पार से घुसपैठ जैसी आन्तरिक सुरक्षा चुनौतियों का सामना करने में कौटिल्य की गुप्तचर व्यवस्था और दण्डनीति प्रासंगिक हैं।

आर्थिक नीतियां और विकास योजनाएं :

कौटिल्य ने राज्य को आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय और नियामक भूमिका निभाने को समर्थक माना है। उन्होंने कृषि, व्यापार, खनन, उद्योग और राजस्व संग्रहण की व्यवस्थित योजना प्रस्तुत की। राज्य द्वारा आर्थिक नियोजन, बाजार नियन्त्रण, व्यापार नीति और कर व्यवस्था पर कौटिल्य ने विस्तृत दिशा निर्देश दिए है। स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में पञ्चवर्षीय योजनाओं का निर्माण, नीति आयोग की स्थापना, आर्थिक सुधार और हाल ही में आत्मनिर्भर भारत अभियान, मेक इन इण्डिया, स्टार्टअप इण्डिया जैसी योजनाएं कौटिल्य के आर्थिक राष्ट्रवाद और राज्य नियन्त्रित विकास से प्रेरित हैं। कौटिल्य ने जिस आर्थिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया था, वह आज के आत्मनिर्भर भारत के विचार से पूर्णतः मेल खाती है।

प्रशासनिक सुधार और सुशासन :

कौटिल्य ने कुशल, जवाबदेह और भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन पर विशेष बल दिया था। उन्होंने अमात्यों (अधिकारियों) के चयन, प्रशिक्षण, कर्तव्य, अधिकार और जवाबदेही पर विस्तृत निर्देश दिए। कौटिल्य कहते हैं कि अधिकारियों का चयन योग्यता, चरित्र और ईमानदारी के आधार पर होना चाहिए। भ्रष्टाचार को राज्य के लिए घातक बताया और इसके निवारण के लिए कठोर दण्ड का प्रावधान किया। आधुनिक भारत में संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से योग्यता धारित अधिकारियों का चयन प्रशासनिक सुधार आयोग की सिफारिशें, सुशासन की अवधारणा और भ्रष्टाचार निवारण के लिए लोकपाल जैसी संस्थाओं की स्थापना कौटिल्य के इन्हीं सिद्धान्तों से प्रेरित हैं।

कौटिल्य के सिद्धांतों का आधुनिक युग में महत्व :

कौटिल्य का राजनैतिक दर्शन मूलतः यथार्थवाद पर आधारित है। उन्होंने आदर्शवादी कल्पनाओं से अधिक व्यावहारिक और तथ्यपरक दृष्टिकोण अपनाया। उनके अनुसार, राजनैतिक में राष्ट्रीय हित सर्वोपरि है और इसकी रक्षा के लिए सभी आवश्यक उपाय किए जाने चाहिए। यह दृष्टिकोण आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के यथार्थवादी सिद्धांत से पूर्णतः मेल खाता है। वर्तमान वैश्विक राजनीति में जहां राष्ट्र अपने हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं, जहां शक्ति संतुलन महत्वपूर्ण है, वहीं सुरक्षा, एक वास्तविक दुविधा है, यहां कौटिल्य के विचार अत्यन्त प्रासंगिक हो जाते हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि राज्य को अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए, मित्रों को सुदृढ़ करना चाहिए, शत्रुओं को कमजोर करना चाहिए और तटस्थों को अपने पक्ष में लाना चाहिए।

लोकतन्त्र, जनकल्याण और नैतिक शासन :

यद्यपि कौटिल्य राजतन्त्र के समर्थक थे, परन्तु उनके विचारों में जनकल्याण को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। उन्होंने कहा था कि राजा का सुख प्रजा के सुख में है और राजा का हित प्रजा के हित में निहित है। राजा

को प्रजा का पिता माना गया है जिसका प्रमुख कर्तव्य प्रजा की सुरक्षा, समृद्धि और सुख सुनिश्चित करना है। यह विचार आधुनिक लोकतन्त्र का आधार है। वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्था में जनप्रतिनिधियों और सरकार से अपेक्षा की जाती है कि वे जनहित को सर्वोपरि रखें। कौटिल्य ने राजधर्म के अन्तर्गत राजा के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन किया है, जो आधुनिक नेतृत्व और सुशासन के सिद्धान्तों के समान है। कौटिल्य को कभी–कभी अनैतिक राजनीति का समर्थक माना जाता है, परन्तु यह अपवाद है, उन्होंने नैतिकता और धर्म को राजनीति से अलग नहीं किया, अपितु कौटिल्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – इन चारों पुरुषार्थों में संतुलन स्थापित किया। उनके अनुसार, अर्थ धर्म के बिना अधूरा है। राज्य को धर्म (नैतिकता और न्याय) के अनुसार चलना चाहिए। अन्याय और अधर्म से प्राप्त सम्पत्ति और शक्ति दीर्घ कालिक नहीं होती। आधुनिक समय में भी नैतिक शासन, पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग बढ़ रही है, जिसके सन्दर्भ कौटिल्य के संतुलित दृष्टिकोण से प्रेरणा ले सकते है।

वर्तमान चुनौतियों का समाधान और भविष्य की दिशा :

वैश्वीकरण के युग में राष्ट्र–राज्यों की भूमिका परिवर्तित हो रही है। आर्थिक अन्योन्याश्रयता, तकनीकी क्रान्ति और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रभाव ने परम्परागत राजनीति को बदल दिया है। परन्तु कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत इस नए परिवेश में भी प्रासंगिक है। वैश्विक गठबन्धन, व्यापारिक समझौते, क्षेत्रीय संगठन और बहुपक्षीय मण्डल सिद्धांत के विस्तार माने जा सकते हैं। भारत की पूर्व की ओर देखो नीति, पड़ोसी पहले नीति, BRICS, SCO, G20, क्वाड जैसे संगठनों में सक्रिय भागीदारी कौटिल्य के राजनैतिक विचारों का प्रतिबिम्ब है। भारत ने राजनैतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए प्रमुख शक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध विकसित किए हैं, जो कौटिल्य की समवर्ती नीति से मेल खाता है।

साइबर सुरक्षा और आधुनिक युद्ध :

आधुनिक युग में युद्ध की प्रकृति बदल गई है। पारम्परिक युद्ध के साथ–साथ साइबर युद्ध, सूचना युद्ध, आर्थिक युद्ध और मनोवैज्ञानिक युद्ध महत्वपूर्ण हो गए हैं। कौटिल्य ने गुप्तचर तन्त्र, सूचना संग्रहण और शत्रु को भ्रमित करने की रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की थी। उनकी ये रणनीतियां आधुनिक साइबर सुरक्षा और सूचना युद्ध में प्रासंगिक हैं। भारत को साइबर स्केम–हमलों, डेटा चोरी और फेक न्यूज जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। कौटिल्य का गुप्तचर सिद्धांत इन चुनौतियों से निपटने में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

सतत् विकास और पर्यावरण संरक्षण :

यद्यपि कौटिल्य के समय आधुनिक पर्यावरण संकट नहीं था, परन्तु उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और उनके सतत् उपयोग पर बल दिया। अर्थशास्त्र में वनों, जलाशयों, खनिजों और वन्यजीवों के संरक्षण के लिए विशेष नियम बनाए गए थे। जंगली जानवरों और पेड़ों की सुरक्षा के लिए दण्ड का प्रावधान था। आधुनिक निरन्तर विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में कौटिल्य के संसाधन प्रबन्धन के सिद्धांत मार्गदर्शक हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधन क्षय जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए कौटिल्य का संतुलित और दीर्घकालिक दृष्टिकोण उपयोगी है।

7. निष्कर्ष :

कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल एक प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं है, बल्कि यह आधुनिक राजनीति, प्रशासन, कूटनीति और शासन के लिए एक सशक्त, व्यावहारिक मार्गदर्शिका है। उनके द्वारा प्रतिपादित

सप्ताङ्ग–सिद्धान्त, –सिद्धान्त, षाड्गुण्य नीति, दण्डनीति और आर्थिक विचार आज भी उतने ही प्रासङ्गिक और उपयोगी हैं जितने लगभग 2400 वर्ष पूर्व थे। कौटिल्य ने राज्य को एक सुव्यवस्थित, कुशल और शक्तिशाली संस्था के रूप में प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य जनकल्याण है। आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्था में कौटिल्य के विचारों को अपनाकर सुशासन, राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक विकास और लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। विशेषकर भारत जैसे विकासशील और महत्वाकांक्षी राष्ट्र के लिए, जो वैश्विक मञ्च पर अपनी भूमिका बढ़ा रहा है और अनेक आन्तरिक तथा बाह्य चुनौतियों का सामना कर रहा है, इस सम्बन्ध में कौटिल्य के सिद्धान्त अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। आज भी कौटिल्य के विचारों पर और अधिक चिन्तन–मनन एवं गहन शोध की आवश्यकता है, विशेषकर डिजिटल युग, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, वैश्वीकरण और नई तकनीकी चुनौतियों के संदर्भ में उनकी प्रासङ्गिक्ता और अधिक स्पष्ट होती है। निष्कर्षतः कौटिल्य के विचार आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में नैतिक शासन, जनकल्याण और सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में आज भी कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ सूची :

1 अग्रवाल, आर. सी. प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन में कौटिल्य का योगदान. इतिहास और संस्कृति शोध पत्रिका, १२(१), ४५–६२.

2 कुमार, एस. कौटिल्य का मंडल सिद्धांत और भारत की विदेश नीति. अंतर्राष्ट्रीय संबंध अध्ययन, २३(४), ११२–१३०.

3 गुप्ता, वी. के. अर्थशास्त्र में वर्णित आर्थिक नीतियां और आधुनिक भारत. आर्थिक विकास जर्नल, ५६(२), ७८–९५.

4 चौधरी, एम. कौटिल्य और मैकियावेलीरू एक तुलनात्मक अध्ययन. तुलनात्मक राजनीति जर्नल, १८(३), २०१–२१९.

5 जोशी, पी. डी. राष्ट्रीय सुरक्षा में कौटिल्य के विचारों की प्रासंगिकता. रक्षा अध्ययन जर्नल, १५(१), ३४–५१.

6 त्रिपाठी, आर. कौटिल्य का शासन दर्शन और लोकतांत्रिक मूल्य. लोकतंत्र अध्ययन, ३१(२), १५६–१७४.

7 द्विवेदी, एस. प्राचीन भारत में गुप्तचर व्यवस्थारू कौटिल्य का योगदान. सुरक्षा अध्ययन जर्नल, २७(३), ८९–१०७.

8 पांडे, बी. एन. कौटिल्य का राजधर्म सिद्धांत और सुशासन. शासन और नीति जर्नल, ४२(१), २३–४१.

9 मिश्रा, ए. अर्थशास्त्र में वर्णित कराधान व्यवस्था और आधुनिक वित्तीय प्रबंधन. वित्त और लेखा शोध, ३४(४), १४५–१६३.

10 राय, एन. कौटिल्य के विचारों का वैश्वीकरण के युग में महत्व. वैश्विक अध्ययन जर्नल, १९(२), ६७–८५.

11 शर्मा, आर. के. कौटिल्य का नैतिक दर्शन और राजनीति. नैतिकता अध्ययन, २५(३), १०१–११९.

12 सिंह, वी. आधुनिक भारत के संदर्भ में कौटिल्य की कूटनीतिक रणनीतियां. कूटनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध, ३६(१), ७८–९६.

13 वर्मा, पी. आधुनिक प्रशासनिक सिद्धांतों में कौटिल्य के योगदान का मूल्यांकन. प्रशासन और विकास, ४१(३), ५६–७४.

14 तिवारी, एस. के. कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत : एक आधुनिक विश्लेषण. राजनीति विज्ञान समीक्षा, ३३(२), ८९–१०६.

15 पाठक, आर. अर्थशास्त्र में वर्णित न्याय व्यवस्था और आधुनिक विधि शास्त्र. विधि अध्ययन जर्नल, २८(४), १२३–१४१.

16 झा, एन. कौटिल्य का राज्य सिद्धांत और आधुनिक राष्ट्र–राज्य. राजनीतिक सिद्धांत शोध, २२(१), ४५–६३.

17 मल्होत्रा, वी. कौटिल्य की आर्थिक नीतियां और भारत का आर्थिक विकास. भारतीय अर्थव्यवस्था अध्ययन, ३८(३), ६८–११५.

18 देशमुख, ए. कौटिल्य के सैन्य सिद्धांत और आधुनिक रक्षा रणनीति. सामरिक अध्ययन जर्नल, १७(२), ६७–८४.

19 सेन, बी. अर्थशास्त्र में वर्णित कूटनीतिक विचार और समकालीन अंतर्राष्ट्रीय संबंध. विदेश नीति अनुसंधान, २६(४), १३४–१५२.

20 रावत, एस. कौटिल्य का दंडनीति सिद्धांत और आधुनिक पुलिस व्यवस्था. कानून प्रवर्तन अध्ययन, २४(१), ५६–७३.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 110–115

सूर्यबाला के कथा साहित्य में स्त्री मनोविज्ञान : 'सुबह के इंतजार तक', 'मेरे संधि पत्र' और 'अग्निपाखी' का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ममता शर्मा
सहायक आचार्य हिंदी
एस बी के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जैसलमेर, राजस्थान।

हिन्दी कथा साहित्य के विकासक्रम में साठोत्तरी पीढ़ी की महिला रचनाकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के उन सूक्ष्म पहलुओं को उजागर किया है, जो पूर्ववर्ती साहित्य में प्रायः उपेक्षित रहे थे। इस दौर में सूर्यबाला एक ऐसी प्रखर हस्ताक्षर के रूप में उभरती हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में मध्यमवर्गीय स्त्री के अंतर्मन, उसके संवेगों, सामाजिक विवशताओं और अस्तित्वगत संघर्षों को अत्यंत गहराई से चित्रित किया है। सूर्यबाला का साहित्य केवल घटनाओं का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि वह मानवीय मनोविज्ञान की उन जटिल परतों का अन्वेषण है, जहाँ स्त्री अपनी अस्मिता और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच निरंतर द्वंद्वरत रहती है। उनकी लेखनी में संवेदना केवल करुणा तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें आत्मबोध, आत्मसम्मान और सामाजिक परिवर्तन की एक तीव्र चेतना अंतर्निहित है।

सूर्यबाला के उपन्यासों में स्त्री पात्रों का मनोविज्ञान केवल व्यक्तिगत कुंठाओं का चित्रण नहीं करता, बल्कि वह व्यापक सामाजिक–आर्थिक परिवेश के साथ उनके अंतर्संबंधों को भी स्पष्ट करता है। 'सुबह के इंतजार तक', 'मेरे संधि पत्र' और 'अग्निपाखी' (अग्निपंखी) जैसे उपन्यास उनके रचना–कौशल के तीन ऐसे स्तंभ हैं, जो स्त्री जीवन के विभिन्न पड़ावों–यथा अभाव, समझौता और विस्थापन की मनोवैज्ञानिक परिणतियों को प्रस्तुत करते हैं। यह प्रतिवेदन इन उपन्यासों के माध्यम से सूर्यबाला की मनोवैज्ञानिक दृष्टि और उनके स्त्री पात्रों के आंतरिक संघर्षों का एक विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

सूर्यबाला के कथा-संसार में मनोवैज्ञानिक आयाम और सैद्धांतिक आधार :

सूर्यबाला का कथा साहित्य 'संवेदना–से–संवेदना तक की अंतर्यात्रा' के रूप में पहचाना जाता है। उनके लेखन का मूल स्वर अवसाद, करुणा और द्वंद्व है, जो वर्तमान युग की विसंगतियों और मानवीय मूल्यों के मोहभंग से उपजा है। लेखिका स्वयं मानती हैं कि उनका लक्ष्य 'आदमी की सीप में आदमीयत का मोती सुरक्षित बचा ले जाना' है। यह दृष्टिकोण उनके स्त्री पात्रों के चित्रण में अत्यंत स्पष्टता के साथ उभरता है, जहाँ वे अपनी

पीड़ा को विद्रोह का माध्यम न बनाकर निर्माण और सामंजस्य का आधार बनाती हैं।

यथार्थवादी और मानवतावादी दर्शन :

सूर्यबाला के साहित्य में यथार्थवाद का स्वरूप अत्यंत प्रखर है। वे महानगर को केवल ईंट–पत्थर के ढांचे के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी सत्ता के रूप में देखती हैं जो व्यक्ति की संवेदनाओं को सोख लेती है। उनके स्त्री पात्र इसी महानगरीय या कस्बाई यथार्थ के बीच अपने अस्तित्व की तलाश करते हैं। उनके मनोविज्ञान को समझने के लिए समाज, परिवार और आर्थिक स्थिति के त्रिकोण को समझना आवश्यक है। सूर्यबाला की नायिकाएँ न तो पूर्णतः परंपरावादी हैं और न ही वे पश्चिम प्रेरित उग्र नारीवाद की प्रतीक हैं, वे मध्यमवर्गीय आदमी की उस मनःस्थिति का प्रतिनिधित्व करती हैं जो संस्कारों को पूरी तरह त्याग नहीं पाती और आधुनिकता के दबावों को झेलते हुए संतुलन बिठाने का प्रयास करती है।

आंतरिक बनाम बाहरी संघर्ष :

मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व से अधिक आवश्यक उसकी आंतरिक भावना है। सूर्यबाला के उपन्यासों में स्त्री के बाहरी संघर्ष (जैसे नौकरी, घर संभालना, आर्थिक तंगी) उसके आंतरिक द्वंद्वों के प्रतिबिंब मात्र हैं। 'मेरे संधि पत्र' की शिवा का अवसाद उसकी बाहरी सफलता के भीतर छिपा एक गहरा घाव है, जो उसकी अधूरी इच्छाओं और सामाजिक संधियों से उपजा है। इसी प्रकार, 'सुबह के इंतजार तक' की मानु का मनोविज्ञान आर्थिक असुरक्षा और यौन शोषण के आघात से निर्मित हुआ है। लेखिका ने इन पात्रों के माध्यम से यह दर्शाया है कि स्त्री का मनोविज्ञान उसकी सामाजिक स्थिति और उसके प्रति समाज के दृष्टिकोण से आकार लेता है।

'सुबह के इंतजार तक' में अभाव और विवशता का मनोविज्ञान :

'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास सूर्यबाला की एक ऐसी कृति है जो मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक तंगी और उससे उपजे मानसिक संताप का हृदयविदारक चित्रण प्रस्तुत करती है। इसकी नायिका 'मानु' उस स्त्री चेतना का प्रतीक है जो अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को पारिवारिक दायित्वों की वेदी पर होम कर देती है।

आर्थिक असुरक्षा और आत्म-त्याग की भावना :

मानु का मनोविज्ञान 'देखभाल के नीतिशास्त्र' से गहराई से जुड़ा है। उसके पिता निरंतर बेरोजगारी और नौकरी की तलाश के चक्र में फंसे हुए हैं, जिससे घर में तंगहाली और मानसिक चिड़चिड़ापन बना रहता है। मानु, जो पढ़ाई–लिखाई में मेधावी थी, अपनी इच्छाओं को दबाकर स्कूल में नौकरी और ट्यूशन पढ़ाने लगती है ताकि अपने भाई को डॉक्टर बना सके। यहाँ उसका मनोविज्ञान एक ऐसी 'दाता' (giver) का है जो स्वयं के अभावों को दूसरों की खुशियों में ढंकने का प्रयास करती है।

मानु : करुणा और विवशता, पारिवारिक ऋण और आर्थिक तंगी, व्यक्तिगत आकांक्षाओं का दमन और अंततः मृत्यु।

पिताजी : हताशा और आत्म–सम्मान का ह्रास, निरंतर बेरोजगारी और आयु का दबाव, परिवार में चिड़चिड़ापन और संवेदनहीनता।

मानु की माँ : मूक वेदना और विवशता, पति की विफलता और बच्चों का संघर्ष, निरंतर मानसिक पीड़ा और अश्रुपूर्ण समर्पण।

महानगरीय क्रूरता और मानसिक आघात (Trauma) :

जब मानु अपनी परिस्थितियों को बदलने के लिए शहर जाती है, तो उसे महानगर के उस नृशंस चेहरे का सामना करना पड़ता है जहाँ एक युवा स्त्री केवल 'शिकार' समझी जाती है। बलात्कार की घटना मानु के मनोविज्ञान को पूरी तरह बदल देती है। वह एक जीवंत युवती से एक 'पथराई हुई' व्यक्तित्व में बदल जाती है। यहाँ लेखिका ने यह सूक्ष्म अंतर्दृष्टि दी है कि कैसे समाज में भ्रष्टाचार और अनैतिकता स्त्री की सुरक्षा और उसके आत्मविश्वास को लील जाते हैं।

मानु का कैंसर से ग्रसित होना और इलाज के अभाव में दम तोड़ना केवल एक शारीरिक मृत्यु नहीं है, बल्कि यह उन सपनों की मनोवैज्ञानिक मृत्यु है जो एक मध्यमवर्गीय लड़की बेहतर भविष्य (सुबह) की प्रतीक्षा में देखती है। उसका पूरा अस्तित्व 'इंतजार' की एक अनंत प्रक्रिया बन जाता है, जहाँ आशा धीरे–धीरे अवसाद में बदल जाती है।

'मेरे संधि पत्र' में समझौते और गरिमा का अंतर्द्वंद्व :

सूर्यबाला का पहला उपन्यास 'मेरे संधि पत्र' सत्तर के दशक के मध्य में प्रकाशित हुआ और अपनी मौलिक विषयवस्तु के कारण चर्चा का केंद्र बना। इस उपन्यास की नायिका 'शिवा' के माध्यम से लेखिका ने स्त्री मनोविज्ञान के उस पहलू को छुआ है जहाँ वह अपनी स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिरता के बीच 'संधि' (compromise) करती है।

मेधावी स्त्री का घरेलू अवसाद :

शिवा एक ऐसी लड़की है जो शिक्षा के क्षेत्र में सदैव प्रथम आती थी और अपनी जिंदगी में कुछ सार्थक हासिल करने का सपना देखती थी। परंतु, पारिवारिक परिस्थितियों और सामाजिक दबावों के कारण उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं का त्याग करना पड़ा। उसका मनोविज्ञान उस 'अधूरेपन' का शिकार है, जहाँ वह घर के दैनिक कार्यों (चूल्हा फूंकना, दवा देना) में व्यस्त तो है, लेकिन उसका मन निरंतर उन किताबों और सपनों की ओर भागता है जो पीछे छूट गए हैं। लेखिका ने शिवा के सौंदर्य को 'आस्था और विश्वास का सौंदर्य' कहा है, जो वास्तव में उसके आंतरिक संघर्षों को गरिमा के आवरण में ढंकने का प्रयास है।

अनमेल विवाह और सौतेली माँ का पुनर्परिभाषित मनोविज्ञान :

शिवा का विवाह एक ऐसे धनी व्यवसायी से होता है जो उसकी बौद्धिक योग्यता के समकक्ष नहीं है और पहले से ही दो बेटियों का पिता है। यहाँ उपन्यास एक अत्यंत जटिल मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में प्रवेश करता है। शिवा का अपने पति के प्रति समर्पण प्रेम से अधिक 'कर्तव्यबोध' पर आधारित है। वह अपने पति द्वारा दिए गए आभूषणों और भौतिक सुखों के बीच अपनी बौद्धिक रिक्तता को महसूस करती है।

वहीं, सौतेली माँ के रूप में शिवा का व्यवहार भारतीय समाज की पारंपरिक नकारात्मक छवि को तोड़ता है। वह बच्चों को निस्वार्थ प्रेम देती है, जो यह दर्शाता है कि एक स्त्री का मातृत्व केवल जैविक नहीं, बल्कि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक चुनाव (choice) भी हो सकता है। वह अपनी संधियों के माध्यम से एक घर को खुशहाल बनाती है, जो यह प्रश्न उठाता है कि क्या परिवार के हक में लिया गया फैसला स्त्री को 'सशक्त' नहीं बनाता?

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण :

उपन्यास तीन अलग–अलग दृष्टिकोणों (Richa, Rinki, Shiva) के माध्यम से आगे बढ़ता है, जो एक ही स्थिति के विभिन्न मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उजागर करते हैं :

मेरी क्षणिकाएँ : ऋचा की सहानुभूति और मूक प्रेक्षण। अपनी माँ की गरिमा और उसके छिपे हुए दर्द के प्रति गहरी संवेदना।

रिंकी मेरा विद्रोह : रिंकी का आक्रोश और आक्रामकता। माँ की स्थिति के प्रति विद्रोह और उसे व्यवस्था से बाहर निकालने की तीव्र इच्छा।

मेरे संधि पत्र : शिवा का आत्म–मंथन और स्वीकारोक्ति। अपने जीवन की संधियों का लेखा–जोखा और परिवार की स्थिरता के लिए लिया गया सचेत निर्णय।

शिवा का अंतत : 'सामाजिकता का वरण' करना यह दर्शाता है कि उसका मनोविज्ञान व्यक्तिवादी स्वतंत्रता के बजाय 'सामूहिक उत्तरदायित्व' को प्राथमिकता देता है।

'अग्निपाखी' में विस्थापन, वृद्धावस्था और अस्तित्व का संघर्ष :

'अग्निपाखी' (अग्निपंखी) उपन्यास साठोत्तर भारत की उस ग्रामीण और शहरी विद्रूपता के बीच खड़ी विधवा नारी का चित्रण है, जिसका मनोविज्ञान अपने ही घर और समाज में 'पराएपन' का अनुभव करता है। यह उपन्यास विशेष रूप से वृद्धावस्था की समस्याओं और विस्थापन के मनोवैज्ञानिक दुष्प्रभावों पर केंद्रित है।

ग्रामीण संवेदना और महानगरीय विखंडन :

उपन्यास की नायिका, जयशंकर की माँ, ग्रामीण परिवेश (लुकमानगंज) की खुली हवा और आत्मीय संबंधों में पली–बढ़ी है। जब उसे शहर की ६/६ फीट की सीलन भरी कोठरी में रहना पड़ता है, तो उसका मनोविज्ञान 'दम घुटने' जैसी स्थिति का शिकार हो जाता है। यहाँ महानगर केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक ऐसी विसंगति है जो स्त्री की निजता (privacy) और उसके आत्म–सम्मान को कुचल देती है। कोठरी के भीतर जवान बहू–बेटे के साथ रहते हुए उसे जो 'बेहयाई' और 'पाप' महसूस होता है, वह उसकी पारंपरिक शुचिता और महानगरीय अभावों के बीच के संघर्ष को दर्शाता है।

मातृत्व का ह्रास और संतान का व्यवहार :

जयशंकर, जो स्वयं गरीबी और बेरोजगारी से बौखला चुका है, अपनी माँ के प्रति अत्यंत निर्दयी व्यवहार करता है। माँ का मनोविज्ञान इस उपेक्षा को अपने 'पूर्व कर्मों का दोष' मानकर सहता है, लेकिन उसके भीतर एक गहरा आक्रोश और विद्रोह भी पनपता है। वह पाँव तले की दूब बनकर रहने को विवश है ताकि उसके 'पढ़वैया' बेटे का रुतबा बना रहे। लेखिका ने यहाँ यह सूक्ष्म सत्य उद्घाटित किया है कि आर्थिक अभाव कैसे माँ–बेटे के पवित्र रिश्ते में 'जहर' घोल देते हैं और माँ के मनोविज्ञान को 'अनवांछित' (unwanted) होने के बोध से भर देते हैं।

निजता और गरिमा का मनोवैज्ञानिक युद्ध :

झोपड़पट्टियों में शौचालय के लिए लंबी कतारें और निजता के अभाव में जीवन बिताना स्त्री के लिए 'जानलेवा' अनुभव की तरह होता है। 'नीले पर्दे' का प्रतीक उस पतली रेखा को दर्शाता है जो एक वृद्ध माँ और जवान दंपति के बीच एकमात्र मर्यादा की सीमा है। यह अभाव माँ के मनोविज्ञान में निरंतर 'लज्जा' और 'संकोच'

का भाव भरता है, जिससे वह अपने ही अस्तित्व को छोटा महसूस करने लगती है।

तुलनात्मक मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष और अंतर्दृष्टि :

सूर्यबाला के इन तीनों उपन्यासों के अध्ययन से कुछ ऐसे सामान्य सूत्र प्राप्त होते हैं जो उनके कथा–साहित्य में स्त्री मनोविज्ञान की एक स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं :

1. विद्रोह बनाम सामंजस्य का मनोविज्ञान :

सूर्यबाला की नायिकाएँ कभी भी उग्र या विध्वंसक विद्रोह नहीं करतीं, क्योंकि लेखिका मानती हैं कि 'विद्रोह से मूल्य पतन की ओर जाते हैं'। उनका मनोविज्ञान 'निर्माण' की प्रक्रिया में विश्वास रखता है। मानु का संघर्ष, शिवा की संधियाँ और जयशंकर की माँ का धैर्य– ये सभी 'मूक प्रतिरोध' के उदाहरण हैं, जो व्यवस्था को भीतर से चुनौती देते हैं।

2. आर्थिक परतंत्रता और मानसिक स्वास्थ्य :

तीनों उपन्यासों में आर्थिक स्थिति स्त्री के मानसिक स्वास्थ्य की दिशा तय करती है। मानु की आर्थिक तंगी उसे कैंसर और मौत की ओर ले जाती है, शिवा की पारिवारिक संपन्नता उसके बौद्धिक अवसाद को ढंकने का माध्यम बनती है, और जयशंकर की माँ की गरीबी उसे अपमानजनक जीवन जीने को मजबूर करती है। सूर्यबाला यह स्पष्ट करती हैं कि जब तक स्त्री आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं होती, उसका मनोविज्ञान समाज की दया और पति या पुत्र की इच्छाओं पर निर्भर रहता है।

3. महानगरीय विद्रूपता और मानवीय संवेदना का ह्रास :

सूर्यबाला ने महानगर को मानवीयता के शत्रु के रूप में चित्रित किया है। महानगर की भीड़ में स्त्री अपने 'स्व' (self) को खो देती है। 'सुबह के इंतजार तक' और 'अग्निपाखी' में महानगर स्त्री के शोषण और विस्थापन का केंद्र है, जहाँ उसके मनोवैज्ञानिक विकास के स्थान पर उसके व्यक्तित्व का संकुचन (shrinkage) होता है।

4. संबंधों में आत्मीयता और 'मनुष्य गंध' की तलाश :

सूर्यबाला के पात्र किसी भी भौतिक उपलब्धि से अधिक 'प्यार और सम्मान' की आकांक्षा रखते हैं। यामिनी की तरह ही शिवा और मानु भी ऐसे संबंधों की तलाश में हैं जहाँ उनकी मानसिक और आत्मिक गरिमा सुरक्षित रहे। वे केवल 'पत्नी' या 'माँ' के सांचे में नहीं बंधना चाहतीं, बल्कि एक 'स्वतंत्र व्यक्ति' के रूप में अपनी पहचान चाहती हैं।

समाज-मनोवैज्ञानिक प्रभाव और भविष्योन्मुख दृष्टिकोण :

सूर्यबाला का साहित्य भारतीय समाज की उन कुरीतियों पर तीखा प्रहार करता है जो स्त्री के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, जैसे दहेज, अनमेल विवाह, सौतेला व्यवहार और वृद्धों की उपेक्षा। उनके लेखन का उद्देश्य केवल समस्या का चित्रण नहीं, बल्कि एक 'सशक्त और सुदृढ़ समाज का नवनिर्माण' है।

वे यह संदेश देती हैं कि स्त्री का संघर्ष ही उसकी 'शक्ति' है। उनके पात्र विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानते, वे अपनी 'आत्मशक्ति' से अंधेरे में दीप जलाने का प्रयास करते हैं। शिवा का विवेक और मानु की कर्तव्यनिष्ठा यह दर्शाते हैं कि भविष्य की स्त्री अपनी राह स्वयं चुनने में सक्षम होगी, भले ही उसे इसके लिए अनेक 'संधिपत्र' लिखने पड़ें।

सूर्यबाला की लेखनी यह प्रमाणित करती है कि स्त्री मनोविज्ञान को समझने के लिए उसे समाज की

संकीर्ण सीमाओं से बाहर निकालकर मानवीय धरातल पर देखना होगा। उनकी रचनाएँ पाठकों को यह सोचने पर विवश करती हैं कि एक न्यायपूर्ण समाज वही है जहाँ स्त्री की संवेदनाओं को 'कमजोरी' नहीं, बल्कि 'मानवीय गरिमा' का आधार माना जाए।

सन्दर्भ –

प्राथमिक स्रोत (सूर्यबाला के मूल उपन्यास)

1. सूर्यबाला, मेरे संधि पत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2020, कुल पृष्ठ 136।
   महत्वपूर्ण पृष्ठ सन्दर्भ : पृष्ठ 76 (शिवा के समझौते), पृष्ठ 3 (सौंदर्य और गरिमा का चित्रण)।
2. सूर्यबाला, सुबह के इंतजार तक, (विभिन्न संस्करणों में उपलब्ध)।
   महत्वपूर्ण पृष्ठ सन्दर्भ : पृष्ठ 86 (आर्थिक तंगी और करुणा का चित्रण)।
3. सूर्यबाला, अग्निपाखी (अग्निपंखी), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2011, कुल पृष्ठ 164।
   महत्वपूर्ण पृष्ठ सन्दर्भ : पृष्ठ 21 (वृद्धावस्था और विस्थापन का द्वंद्व)।

सन्दर्भ –

द्वितीयक स्रोत (आलोचनात्मक पुस्तकें और शोध पत्र)

1. डॉ. दामोदर खड़से, सूर्यबाला का सृजन संसार, पृष्ठ 81 (सूर्यबाला के साहित्य में मानवीय संबंधों की समीक्षा)।
2. अमित कौर, 'सूर्यबाला के कथा साहित्य के माध्यम से समस्याओं का कारण एवं समाधान', सोशल रिसर्च फाउंडेशन, पृष्ठ 2 (मध्यमवर्गीय स्त्री के अवसाद और संघर्ष पर शोध)।
3. 'सूर्यबाला की कहानियों में नारी संवेदना', शब्दब्रह्म शोध पत्रिका, अंक 5, भाग 2 (नारी अस्मिता और महानगरीय बोध का विश्लेषण)।
4. कन्हैयालाल नंदन, 'मुझे मालूम है', (महानगरीय विद्रूपता और मध्यमवर्गीय यथार्थ पर टिप्पणी)।
5. डॉ. शिव मगन, 'सूर्यबाला के उपन्यासों में स्त्री मनोविज्ञान', शोधभूमि शोध पत्रिका।

मोबाइल नंबर 9414760713

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 116–122

वी.पी. कोइराला और इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में मनोविश्लेषण

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला
विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता तथा हिंदी
पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू।

सार :

बीपी कोइराला का जन्म भारत में हुआ था। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सहयोग किया था। उन्होंने एक दिन कहा कि मैंने आज से सरकारी स्कूल पढ़ना छोड़ दिया। तब गान्धीजी ने उन्हें मंच में फूल माला से सम्मान किया। तब से उनकी राजनीतिक यात्रा शुरु मानी जाती है। वे राजनीति के साथ साथ एक अच्छे लेखक भी थे। नेपाली साहित्य में उन्हें मनोविश्लेषणात्मक धारा के लेखक कहा जाता है। उन्होंने 'चन्द्रबदनञ कहानी से अपनी साहित्यिक यात्रा आरम्भ की जिसमें मनोविज्ञान दिखता है। उनके अधिकांश सिर्जना में मनोविश्लेषण का प्रयोग है। उनके उपन्यासों तथा कथाओं में मानसिक द्वन्द्व तथा यौन मनोविश्लेषण का चित्रण मिलता है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के लेखक इलाचन्द्र जोशी भी मनविश्लेषणवादी लेखक हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार हैं। हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का प्रारम्भ जोशी से ही माना जाता है। लेकिन इन्होंने मात्र मनोवैज्ञानिक यथार्थ का निरूपण नहीं किया है इन्होंने अपनी रचनाओं को आदर्शपरक भी बनाया है। इन्होंने मनोविज्ञान को अपनी कला का मूल आधार बनाया है। मध्यवर्ग और निम्नमध्य वर्ग के मनोविकारग्रस्त व्यक्तियों के जीवन की अनुभूतियों और कल्पनाओं का इन्होंने विश्लेषण किया है। इनके मनोवैज्ञानिक रचनाओं पर फ्रायड के चिन्तन का अधिक प्रभाव पडा है। इन्होंने बाहरी घटनाओं की अपेक्षा मन के भीतर के संसार को कुरेदा है। प्रस्तुत आलेख मे दोनों के मनोविश्लेषण को दिखाया गया है।

शब्द कुंजी : मनोविश्लेषण, कामवासना, आख्यान, अवचेतन और अर्धचेतन, परिचालिका।

विषय परिचय :

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मनुष्य के सारे मानसिक क्रियाकलापों को महत्व दिया जाता है और इनमें मनुष्य के सारे मानसिक क्रियाकलापों का विश्लेषण होता है। मनोविश्लेषण के जनक फ्राइड को माना जाता है। उन्होंने मानव मस्तिष्क को तीन भागों में विभाजन किया है – चेतन, अवचेतन और अर्धचेतन। काम और व्यक्ति की दमित भावनाओं को इन्होंने सर्वाधिक महत्व दिया है। इनके शिष्य एडलर ने काम की जगह अहम् को महत्व दिया और उनके दूसरे शिष्य युंग ने दोनों को एक साथ रखा।

नेपाली आख्यान में मनोविश्लेषणवादी लेखक के रूप में विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला (1914 –1982) का नाम सबसे पहले आता है। तीन घुम्ती (वि.सं. 2025), सुम्नीमा (वि.सं. 2027), नरेंद्रदाई (वि.सं. 2027), मोदीआइन (वि.सं. 2036), हिटलर और यहूदी (सं.वि. 2042), मां बाप और बेटा (वि.सं. 2045) इनके उपन्यास हैं और दोषी चश्मा (वि.सं. 2006) और श्वेतभैरवी (वि.सं. 2044) इनके कथा संग्रह हैं। इन्होंने नेपाली संस्कृति और परंपरा तथा नेपाली मान्यताओं में फ्राडवादी चिंतन को अपने आख्यानों मे व्यक्त किया है। वे मनोविश्लेषण को प्रमुख विषय बनाकर आख्यान लिखने वाले प्रथम नेपाली कथाकार हैं। नेपाली आधुनिक कथा के प्रारंभ के साथ कोइराला ने फ्राडवादी चिंतन को अपनी रचनाओं में स्थान दिया और फ्रायड के यौन विश्लेषण में आधारित कथा लिखकर मानव जीवन के क्षेत्र को कथा मार्फत सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया। इन्होंने मानव के चेतन, अवचेतन एवं अर्धचेतन मन के भावों को कथा साहित्य में एक नवीन आयाम की सिर्जना की है। उनके प्रायः सभी उपन्यासों में पुरुष–महिला का आकर्षण, रति–राग, सहानुभूति, कामवासना, काम समस्या, आर्थिक असमानता को उठाया है।

हिंदी साहित के प्रमुख मनोविश्लेषणवादी लेखक इलाचंद्र जोशी ने फ्रायड के विचार से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य में अनेक उपन्यास एवं कहानी लिखे। उनके अधिकांश उपन्यासों में मनोविश्लेषणवाद दिखता है। उन्होंने साहित्य में मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग के मनोविकार ग्रस्त व्यक्तियों की जीवनगत अनुभूतियों और कल्पनाओं को अपने साहित्य में विशेष स्थान दिया है। इन्होंने मानव के भाव पर प्रहार कर भयहीन जीवन की व्याख्या की है। उन्होंने केवल मनोवैज्ञानिक यथार्थ का ही निरूपण नहीं किया है बल्कि अपनी रचनाओं को आदर्शपरक भी बनाया है। ये आदर्शवादी मनोवैज्ञानिकता के लिए प्रशंसनीय हैं। इन्होंने समाज द्वारा तिरस्कृत वेश्याओं की सुधार एवं विकास की संभावनाएं ढूंढ़ी है। इन्हें प्रोत्साहन कर आत्मविश्वास भरने और समाज में ऊंचा उठाने का प्रयास जोशी जी का सराहनीय रहा है। सन्यासी, पर्दे की रानी, प्रेत और छाया, निर्वाचित, मुक्तिपथ, जिप्सी, सुबह के भूले, जहाज का पक्षी, ऋतुचक्र आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। इनके उपन्यास के अधिकांश प्रमुख पात्र किसी न किसी मनोवैज्ञानिक ग्रंथि में देखे जाते हैं और जब तक ग्रंथि का रहस्य मालूम नहीं होता तब तक वे किसी न किसी तथा सामाजिक कार्यों में लिप्त होते हैं और जब रहस्य का पता चलता है उसी क्षण से बड़े ही सामान्य स्थान में दिखने लगते हैं।

प्रस्तुत लेख में इन दोनों के मनोविश्लेषण पर विचार–विमर्श किया गया है।

फ्रायड का मनोविश्लेषण :

फ्रायड मनोविज्ञान के जन्मदाता हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित मतों से साहित्य, कला, संगीत सब कुछ प्रभावित हुआ और मनोविश्लेषण शब्द सुनते ही सबका ध्यान फ्रायड की ओर चला जाता है। उन्होंने धार्मिक मान्यताओं, परंपराओं तथा आस्थाओं पर सख्त प्रहार किया है। उनके द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषण से मानसिक चिकित्सकों को मानसिक गुत्थियों को सुलझाने में सहायता मिली साथ ही साथ साहित्य में भी विपुल परिवर्तन आया। प्रत्येक चरित्र के विचार, सोच, कार्य आदि को जानने में सहायता मिली तथा विशेष रूप से कथा साहित्य इससे अधिक प्रभावित हुआ।

मानव की वास्तविक परिस्थितियों को जानना ही वास्तविक ज्ञान नहीं है। यथार्थ ज्ञान का आरंभ तो मानव के अंतःकरण के क्रियाकलापों के अध्ययन से शुरू होता है। फ्रायड ने मनुष्य के अंदर के काम प्रवृत्ति और उसके

अवचेतन दमन को विशेष महत्व दिया है। इसीलिए तो कहते हैं – संपूर्ण मानव मन को उन्होंने चेतन, अवचेतन और अर्धचेतन तीन भागों में विभक्त किया है। तंत्रिका तंत्र और चेतना के मध्य होने वाली मानसिक प्रक्रिया को उन्होंने अचेतन मन कहा है। सभी प्रकार की दमित इच्छाएं (धार्मिक, सामाजिक, नैतिक) अचेतन में वर्तमान रहती हैं। वे सभी नष्ट नहीं हो पाती। अपने मत को और शक्तिशाली बनाने के लिए उन्होंने मन को अहं और आदर्श अहं के रूप में विभाजित किया। इदं (पहव) व्यक्ति के अस्तित्व की प्रेरक शक्तियों का मूल प्रेरक भंडार है। ये प्रवृतियां विशेषताओं का रूप लेकर परिवेश की ओर उन्मुख होती है और चेतन मन को प्रभावित करती है। इदं प्रबल उत्तेजना का अव्यवस्थित रूप है। इसके लिए शुभाशुभ, नैतिक, अनैतिक आदि मूल्यों का अस्तित्व नहीं है।

अहं (महव) शब्द मैं या मेरे की भावना उत्पन्न करता है। फ्राइड के मनोविज्ञान में काम प्रवृत्ति, संघर्ष, दमन और अवरोध महत्वपूर्ण है। अहं संसार और इदं के बीच मध्यस्थ का कार्य करता है। यह मौलिक प्रवृत्तियों को संसार के यथार्थ के अनुरूप और संसार को इदं की वासनाओं के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है।

मानव प्रमुख रूप से काम प्रधान प्राणी है। उसकी वासनात्मक प्रवृतियां जब प्रचंड वेग धारण करती है तब कुछ समय तक वह और असामाजिक हो जाता है। लेकिन समाज की नैतिकता का भय उन्हें दबा देता है और वे अचेतन मन में प्रविष्ट कर जाती है और सुप्तावस्था में पड़ी रहती है। जब कभी चेतन अचेतन की अपेक्षा निर्बल पड़ जाता है तब अचेतन मन में दमित वासनाएं स्वप्न के रूप में प्रकट होती है।

जोशी जी के उपन्यासों का मनोविश्लेषण :

जोशी जी एक मनोवैज्ञानिक के साथ–साथ एक अच्छे विचारक भी थे। जोशी जी ने मनोविज्ञान को बहुत महत्व दिया है और उन्होंने मनोवैज्ञानिक तत्वों की सूक्ष्मतम व्याख्या प्रस्तुत की है। मनोविश्लेषण के तीन प्रमुख उन्नायक फ्रायड, एडलर और युंग हैं और जोशी जी के उपन्यासों में इन तीनों के विचार सम्मिश्रित हैं। फ्रायड यौन शक्ति को मानव मन की परिचालिका मानते हैं। उनके उपन्यासों का मूल आधार मानव मन की गहराई में छिपा हुआ गहन और रहस्यमय एक जगत है जिसकी अपनी एक निजी स्वतंत्र सत्ता है। यह जगत किसी भी बाहरी आर्थिक अथवा सामाजिक अनुशासन से परिचालित नहीं होती (जोशी, प्रेत और छाया की भूमिका)। अपने संपूर्ण उपन्यासों में मानव की गहराई में छिपे हुए अंतर जगत के बीच जोशी जी का अपना ध्यान जाता है।

इस अंतर्जगत के विश्लेषण में जोशी जी ने एडलर के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को महत्वपूर्ण माना है। एडलर ने तीन तत्वों का उल्लेख किया है– आत्म हीनता की भावना, क्षतिपूर्ति और अतिरिक्त क्षतिपूर्ति। मानव शिशु बहुत समय तक असमर्थ और असहाय रहता है। परिणामत व्यक्ति में हीनता की भावना पनपने लगती है और व्यक्ति अज्ञान रूप से अपनी हीनता और असमर्थता से छुटकारा पाने के लिए छटपटाता रहता है और किसी न किसी रूप में अपनी स्वाभाविक कमी की पूर्ति अवश्य करता है। वास्तविक जगत के नियमों के साथ जब उसकी महत्वाकांक्षा का संघर्ष होता है तो उसे भयंकर निराशा का सामना करना पड़ता है। किस व्यक्ति की महत्व कामना कौन सा रूप धारण करेंगी यह उसके शैशव जीवन की विशेष परिस्थितियों के कारण उनके मन पर होने वाली प्रतिक्रिया ऊपर निर्भर करता है, (इलाचंद्र जोशी विवेचना पृ. 56)। मानव जब वास्तविक जगत से पराजित होता है तब उसकी साधना अंतर्मुखी हो जाती है और वह अपने भीतर की सारी शक्ति को एक काल्पनिक लोक की विजय यात्रा के लिए निमंत्रित करने लगती है और जब व्यक्ति से संतुष्ट नहीं हो पाता तब वह अतिरिक्त छतिपूर्ति चाहता है। इससे न व्यक्ति को फायदा होता है और न समाज को।

लज्जा (1929), जोशी जी का प्रथम उपन्यास है। पहले यह घृणामयी नाम से प्रकाशित था। इस उपन्यास में आधुनिक शिक्षित स्त्री की काम भावना का वर्णन है, जिसमें फ्रायड की यौन वृत्ति झलकती है। सन्यासी (1941), इनका दूसरा उपन्यास है इसमें उपन्यास का नायक नंदकिशोर के अहं भाव एवं कालांतर में अहं भाव का उन्नयन दिखाया गया है। पर्दे की रानी (1941), में इन्होंने एक खूनी पिता और एक वेश्या पुत्री नायिका निरंजना को दिखाया है, इसमें निरंजना की समाज के प्रति घृणा और प्रति हिंसा भाव की अभिव्यक्ति है। प्रेत और छाया (1946), इस उपन्यास में उन्होंने नायक पारसनाथ की हीन भावना और स्त्री जाति के प्रति उनकी घृणा का भाव दिखाया है। निर्वाचित (1948), इस उपन्यास में महेश नामक एक प्रेमी की भावुकता, उसकी निराशा एवं उसके दुखद अंत की कहानी है। मुक्तिपथ (1950), इस उपन्यास में कथा के नायक राजीव और विधवा सुनंदा की प्रेम कथा है। इसमें सामाजिक कटाक्ष के कारण शरणार्थी बस्ती में दोनों का जाना और राजीव का सामाजिक कार्य में व्यस्त होना और सुनंदा के प्रति ध्यान कम जाना तथा उपेक्षा के फल स्वरूप सुनंदा की वापसी को दिखाया गया है। जिप्सी (1952), इस उपन्यास में जिप्सी बालिका मनिया की कुंठा और अंत में कुंठा का उदात्तीकरण दर्शाया गया है। सुबह के भूले (1952), इस उपन्यास में एक सामान्य किसान गुलबिया की पुत्री अभिनेत्री बनने एवं वहां के कृत्रिम जीवन से उठकर पुनः ग्रामीण परिवेश में लौटने की कथा है। जहाज का पंछी (1955), इस उपन्यास में कथा नायक शिक्षित नवयुवक का कोलकाता में नगर रूपी जहाज में ज्योतिषी, ट्यूटर, धोबी का मुनीम, रसोईये, चकले, लीला के सेवक इत्यादि के रूप में विविध जीवन स्थितियों एवं संघर्ष का वर्णन किया गया है। ऋतु चक्र (1969), इसमें आधुनिक दवाओं के फल स्वरूप परंपरागत मूल्यों, मान्यताओं, आदर्शों के तेजी से ढहने एवं उनके स्थान पर नए मूल्यों–आदर्शों के निर्माण न होने की कथा का वर्णन किया गया है।

जोशी जी ने एडलर के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का विश्लेषण बड़े ही कलात्मकता से किया है। युंग के सामूहिक चेतन का सिद्धांत को भी जोशी जी ने स्वीकारा है। युंग के अनुसार मानव के अचेतन मन का महत्वपूर्ण निर्माण सामूहिक और सामाजिक कारणों के फल स्वरूप समस्टिगत रूप में हुआ है व्यक्तिगत रूप में नहीं। नए युग में इन प्रवृत्तियों के उभरने से पुरानी प्रवृतियां क्रमशः घटती चली गई। जब यह प्रवृत्तियां असाधारण अवस्था में पूरे वेग के साथ विस्फोट होती है तब सचेतन मन में भारी तहलका मच जाता है। अंतर स्थल में कब तूफान मचेगा इसका कोई निश्चित नियम नहीं है।

जोशी जी ने प्रगतिशील पर विशेष बल दिया है। इसे उन्होंने मौलिक विशेषता बताया है। उनका मानना है कि आंतरिक और बाहरी दोनों पक्षों से संबंधित होकर यथार्थ पूर्ण होता है। अभी तक बाहरी यथार्थ को प्रश्रय मिला है परंतु फ्रायड और मार्क्स में समन्वय चाहते हैं। उनके अनुसार दोनों दृष्टि सत्य की दो धाराएं हैं। उन्होंने सभी प्रकार की विकृति, प्रवृतियों और विसंगतियों की गंदी राजनीति को माना है, जिसके विषय में उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि सभी प्रकार की दुष्ट प्रवृत्तियों और विसंगतियों की जननी राजनीति है। आज की अत्यंत संकुचित, कुटिल, विवेकहीन और अपने आप में बुरी तरह उलझी हुई राजनीति है। इसने व्यक्ति को नष्ट कर दिया है। व्यक्ति के मानसिक अस्वस्थता का कारण जोशी जी ने गंदी और ओछी राजनीति को माना है।

जोशी जी के उपन्यासों के मनोवैज्ञानिक धरातल के विषय से कहा जा सकता है कि जोशी जी ने असामान्य घृणास्पद पात्रों को नायकत्व प्रदान करने तथा उपेक्षित और मनोविकार ग्रस्त लोगों के प्रति भी सहानुभूति दर्शाने का सफल प्रयास किया है।

बीपी कोइराला के उपन्यासों में मनोविश्लेषण :

नेपाली साहित्य में मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी धारा के प्रवर्तक बीपी कोइराला के आख्यान विधा के छह उपन्यास, दो कथा संग्रह प्रकाशित हैं। तीन घूमती, मोदीआइन, हिटलर और यहूदी, सुम्निमा, नरेंद्रदाई, बाबू आमा र छोरा, दो कथा संग्रह शवेतभैरवी और दोषी चश्मा हैं।

नेपाली साहित्य में विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला को प्रथम मनोवैज्ञानिक कथाकार कहा जाता है। उनकी चंद्रवदन कथा नेपाली साहित्य में आते ही चर्चा का विषय बना। उन्होंने इस कथा में चेतन और अचेतन मन के द्वंद्व को इंगित किया है। इससे पहले के कथाकार केवल बाहरी पक्ष का वर्णन करते थे परंतु उन्होंने मन के अंदर के द्वंद्वों को कथा का विषय बनाया।

कोईराला ने विश्व प्रसिद्ध लेखक चेखव, टॉलस्टॉय, फ्रायड, एडलर, युंग, गोर्की, मोपाँसा को विद्यार्थी काल में ही अध्ययन किया और वे इन लेखकों से प्रभावित हो गए। उन्होंने छह उपन्यास लिखे जिसमें अपने विचार को व्यक्त किया है। 'तीन घूमती' उपन्यास में नारी के तीन रूप मोहनी, भोगनी और मां का वर्णन है। इस उपन्यास की नारी पात्र इन्द्रमाया पितांबर से प्रेम करती है, रमेश से भोग करती है और रमा को मातृस्नेह देती है। इन्द्रमाया के जीवन में अनेक समस्याएं आई हैं उसने अकेले संघर्ष किया है और वह किसी से समझौता भी नहीं करती। 'नरेंद्रदाई' उपन्यास में कोइराला ने व्यक्ति के सामने समाज को गौण दिखाया है। व्यक्ति को सामाजिक और आर्थिक हैसियत से हेय दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। नरेंद्र एक नौकरानी से प्रेम करता है और उसे पत्नी का दर्जा भी देता है।

'सुम्नीना' उपन्यास में अचेतन की प्रेरणा से मानव स्वभाव में पड़ने वाले प्रभाव को दिखाया गया है। मन के स्वाभाविक इच्छाओं को दमन करने से उत्पन्न मनोविकार और तनाव को उन्होंने व्यक्त किया है। इस उपन्यास में दो संस्कृति का रोचक वर्णन है।

'मोदीआईन' महाभारत संबंधित मिथक में आधारित है। यह मानवता के पक्ष में लिखा गया उपन्यास है। युद्ध शांति दे नहीं सकता इस उपन्यास का मुख्य आशय है।

'हिटलर और यहूदी' उपन्यास में अचेतन और स्वप्न अभिव्यक्ति का प्रसंग है। उपन्यास में हत्या, हिंसा विध्वंस जैसे आदिम मानव की प्रवृत्ति वंशानुगत रूप में हम में भी हैं। आज तक के युद्ध इसी का परिणाम है।

'बाबू आमा र छोरा' उपन्यास में बेटा एक युवती से प्रेम करता है और वह गर्भवती हो जाती है। उसी गर्भवती से पिता का विवाह हो जाता है जिससे परिवार में तरंग आ जाती है। उपन्यास की नायिका हरसंभव अपने पति को कष्ट देना चाहती है।

बीपी कोइराला की खासियत यह है कि उनके सभी उपन्यासों में विषयवस्तु अलग–अलग है। उनके उपन्यास विचार प्रधान हैं। उनका कहना है – उपन्यास में मैंने कथा नहीं कही है विचार देने का प्रयास किया है।

इनके उपन्यासों में सामाजिक विचार शसक्त रूप में आया है। नरेंद्रदाई उपन्यास में महिला का ही महिला विरोधी चित्र देखने को मिलता है। समाज छुआछूत की समस्या से ग्रसित है। सुम्निमा में जातीय समस्या का वर्णन है।

उनके उपन्यास के पात्र स्वतंत्रता, स्वाभिमान और पहचान के लिए संघर्ष करते हैं। वे पात्र के माध्यम से

धर्म और परंपरा के नाम में प्रचलित रूढ़ीग्रस्त सामाजिक मूल्य–मान्यता में सुधार लाना चाहते हैं। नारी और पुरुष बीच के असंतुलन संबंध में परिवर्तन लाना चाहते हैं।

कोइराला ने अपने उपन्यासों में कहा है कि व्यक्ति के जीवन में नियति की भूमिका रहती है। नरेंद्रदाई, गौरी और मुनरिया तीनों ही अनिश्चित परिस्थिति का सामना करते हैं। इनका कहना है कि नैतिकता दिखाने की चीज नहीं है, यह आत्मिक है। दूसरों के द्वारा तुम नैतिक इंसान हो, कहने पर आत्मिक संतुष्टि नहीं मिलती। अगर मन स्वयं को सफल मानता है तो आत्मिक संतुष्टि मिलती है। कोइराला ने अनेक कृति में नारी समस्या को दिखाया गया है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त आलेख के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि नेपाली लेखक बी.पी. कोइराला नेपाली कथा विधा के प्रथम मनोविश्लेषणवादी लेखक हैं। उनके उपन्यासों में मनोविश्लेषणवादी फ्रायड, एडलर, युंग का प्रभाव दिखता है। इसी तरह भारतीय कथा विधा के लेखक इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में भी इन तीनों का प्रभाव देखा जाता है। दोनों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मनुष्य के अंतर्विरोधों के ऊपर विस्तृत विश्लेषण करते हुए उसे न्याय देने का प्रयास किया है। पात्रों के मन के आंतरिक पक्षों की भावनाओं को उजागर किया गया है। चेतन, अवचेतन और अद्धचेतन पर विश्लेषण करते हुए पाठकों के सामने रखा है। हालांकि दोनों लेखकों के उपन्यासों की कथावस्तु अलग–अलग है परंतु पात्रों की मन की बातों को पहचानने का अच्छा प्रयास किया है। दोनों लेखकों को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि एक (बी.पी. कोइराला) अपने उपन्यासों के माध्यम से अपने विचार समाज के सामने रखना चाहते हैं और दूसरे (इलाचंद्र जोशी) समाज में प्रचलित विसंगतियों, द्वंद्वों, असमानताओं, विकृतियों का कारण खोजने में ज्यादा सक्रिय दिखते हैं। बी.पी. एक राजनीतिक नेता थे इसलिए अपने विचार को साहित्य के माध्यम से जनता को रिझाना चाहते थे। उन्होंने स्वयं भी कहा है कि मेरे साहित्य मेरे विचार हैं। इलाचंद्र जोशी को राजनीति से कोई मतलब नहीं था, वे तो उल्टे राजनीति को संकुचित, कुटिल, विवेकहीन और अपने आप में पूरी तरह उलझी हुई तथा व्यक्ति के विवेक को नष्ट करने वाली गंदी और सड़ी हुई मानते थे। वे समाज की स्थिति को समाज के सामने रखना चाहते थे। जोशी जी ने फ्रायड के अति वासना का प्रत्यक्ष विरोध किया है और बी.पी. ने अप्रत्यक्ष रूप से। बीपी ने सभ्य तरीके से यौन को पाठक के समक्ष रखा है। बीपी कोइराला वस्तुत विदेशी विद्वानों पर प्रभावित तो थे परंतु उन्होंने अपने साहित्य में नेपालीपन दिखाया है। यह इनकी मौलिक विशेषता है। यौन मनोविज्ञान को नेपाली साहित्य में शिष्ट और मर्यादित ढंग से मानव के दमित यौन ग्रंथियों को प्रकट कर पाना उनकी कुशलता है। जोशी जी के नारी पात्र कहीं–कहीं कमजोर नजर आती हैं जबकि बी.पी. के नारी पात्र कहीं पर भी कमजोर और हार मानती नजर नहीं आती हैं। दोनों लेखकों के नारी के ऊपर के दृष्टिकोण समान हैं। दोनों ने समाज में उपेक्षित नारियों को ऊपर उठाने का प्रयास किया है। इलाचंद्र जोशी तो अपने उपन्यासों में उपेक्षित नारियों को यहां तक कि वेश्याओं को भी महिमामंडित करते नजर आते हैं। जोशी जी ने प्रगतिशील पर विशेष बल दिया है। इसे उन्होंने मौलिक विशेषता बताया है। वे फ्रायड और मार्क्स में समन्वय चाहते हैं। उनके अनुसार दोनों दृष्टि सत्य की दो धाराएं हैं।

संदर्भ सामग्री सूची :

1. कोइराला, विशेश्वर प्रसाद (1992), चंद्रवदन, शारदा (वर्ष 1, संख्या 10–11,– मार्ग–पौष) पृ. 36–38।

2. जोशी, इलाचंद्र (1996), भूत और छाया, लोक भारती प्रकाशन।
3. जोशी, इलाचंद्र (2007), विवेचना, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
4. प्रधान, कृष्णचन्द्र सिंह (वि.स. 2037), नेपाली उपन्यास र उपन्यासकार, साझा प्रकाशन ललितपुर, नेपाल।
5. भण्डारी, कृष्णप्रसाद (वि.स. 2053) फ्राइड र मनोविश्लेषण साझा प्रकाशन, काठमाडों।
6. मिश्र, सत्यदेव (1974), पाश्चात्य समीक्षा : सिद्धान्त और वाद, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. लुइटेल, खगेंद्र प्रसाद (2057), आधुनिक नेपाली समालोचना, काठमांडू : नेपाल राजकीय प्रज्ञा–प्रतिष्ठान।
8. लुइटेल, खगेंद्र प्रसाद (2077 भदौ, 24), विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाको कथाकारिता, BRTNEPAL.com।
9. राई, इन्द्रबहादुर (1974), नेपाली उपन्यासका आधारहरू, नेपाली साहित्य परिषद् प्रकाशन, दार्जिलिङ।
10. शर्मा, राजनाथ (1986), हिंदी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, प्रथम संस्करण आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 123–128

योग दर्शन का ईश्वर और वेदान्त का सगुण ब्रह्म

डॉ शत्रुघ्न सिंह, सहायकाचार्य एवं शोध निदेशक
बृजेश कुमार पाण्डेय, शोधार्थी,
जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

सारांश –

योग में ईश्वर को एक महत्त्वपूर्ण पद दिया गया है क्योंकि यही एक ऐसा माध्यम है जिसको उत्तम, मध्यम एवं अधम–कोटि के साधकों हेतु किसी न किसी रूप में प्रतिपादित किया गया है। समाधि में उत्तम साधकों हेतु भावना रूप ईश्वर का उपदेश दिया गया है[1] और साधन के प्रारम्भ में क्रियायोग के अन्तर्गत जिस ईश्वर का वर्णन किया गया है, वह मध्यम साधकों हेतु है और उसी में अष्टांगयोग का वर्णन करते हुए अधम साधकों के हेतु भी ईश्वर का वर्णन किया गया है।[2] इसके विपरीत इतिहास में कुछ अवधारणाओं ने ब्रह्म के विषय के रूप में बहुत आकर्षण, गहन लालसा, उत्साहपूर्ण भक्ति, अत्यधिक चिंतन और अंतहीन बहस उत्पन्न की है। शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य हैं, शेष सभी वस्तुएँ जीव, जगत, प्रपञ्च और मिथ्या हैं। इनके विचार एकेश्वरवाद विश्वास को संदर्भित करता है अर्थात् एक एकल, सार्वभौमिक ईश्वर में। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म यद्यपि अज, अविनाशी, सम्पूर्ण भूतों के ईश्वर और नित्य शुद्ध, बुद्ध मुक्त स्वभाव वाले हैं, तो भी अपनी त्रिगुणात्मिका मूल प्रकृति माया को वश में करके अपनी लीला से शरीरधारी के समान उत्पन्न हुए लोगों पर अनुग्रह करते हुए दिखते हैं। इस शोध पत्र में योग दर्शन और शंकर वेदांत में ईश्वर अथवा सगुण ब्रह्म की अवधारणा का विश्लेषण करने की कोशिश की गई है।

शब्द कुंजी : ईश्वर, सृष्टि–प्रक्रिया, बद्ध एवं मुक्त, सर्वज्ञ, आदिगुरु विज्ञानभिक्षु, वाचस्पति मिश्र, व्यास, वेदांत, अद्वैत, ब्रह्म, ईश्वर, माया।

विज्ञानभिक्षु ने ईश्वरपरक योग को श्रेष्ठ माना है।[2] दास गुप्ता भी अन्य ध्येय पदार्थों की तुलना में इसे उत्तम मानते हैं क्योंकि ईश्वर के प्रसन्न होने पर समस्त बाधाएँ दूर हो जाती है तथा सफलता का मार्ग सुगम हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप साधक शीघ्र समाधि लाभ कर सकता है। जोशी भक्तियोग का वर्णन करते समय ईश्वर की व्यावहारिक महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि साधक अपने शुभ एवं अशुभ समस्त कर्मों का परविचारत्त्व में अर्पण कर सुरक्षा का अनुभव करता है तथा बिना किसी तनाव एवं दुःख के शान्तिपूर्ण तरीके से कार्यों में लगा रहता है।

जहाँ तक सृष्टि की प्रक्रिया में ईश्वर की भूमिका का प्रश्न है उस विषय में पतंजलि एवं व्यास दोनों ही मौन है, इसका कारण राधाकृष्णन् के विचार में यह है कि योग सम्भवतः क्रियात्मक पक्ष का अधिक समर्थक हैं।

यद्यपि सूत्रकार एवं भाष्यकार ने ईश्वर की आवश्यकता का वर्णन नहीं किया है तथापि परवर्ती व्याख्याकारों वाचस्पति मिश्र एवं विज्ञानभिक्षु आदि ने सृष्टि के प्रारम्भ में इसे निमित्त कारण के रूप में स्वीकार किया है जिसका विस्तृत वर्णन आगे किया जायेगा। दासगुप्ता ने सांख्य द्वारा प्रकृति के स्वयं ही क्षुब्ध हो कर सृष्टि के प्रारम्भ के विषय में विभिन्न शंकाओं को उठाते हुए किसी ऐसे तत्त्व के होने की संभावना को व्यक्त की है जो कि सुचारु रूप से यह कार्य सोच समझ के साथ कर सके, इसके लिए उपयुक्त ईश्वर ही हो सकता है यह उनका अभिविचार है। सृष्टि–प्रक्रिया में ईश्वर का उल्लेख न किए जाने का कारण देते हुए राधाकृष्णन् लिखते हैं क्योंकि योग दर्शन का क्रियात्मक प्रयोजन एक शरीरधारी ईश्वर से पूर्ण हो जाता है इसी कारण पतंजलि ने ईश्वरवाद की स्थापना नहीं की।[4]

इसके द्वारा यह नहीं समझना चाहिए कि राधाकृष्णन् योग में ईश्वर की आवश्यकता एवं परवर्ती काल में उसे जो स्थान दिया गया है उसकी महत्ता को स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह लिखते हैं कि परवर्ती योग में ईश्वर को जो महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है, वह मानव की सार्वभौम आवश्यकताओं के अनुभव का ही परिणाम है, पवित्र मनुष्य के जीवन में ईश्वर की यथार्थता देखी जाती है।[5] स्वामी अभेदानन्द राजयोग पातंजल योग में ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में माने जाने के विरोधी हैं, उनका विचार है कि यदि हम ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में स्वीकार करेंगे तब ईश्वर की इच्छा को ही उसके कारण–रूप में स्वीकार करना होगा, जिसके परिणामस्वरूप योग में जो ईश्वर को नित्यतृप्त एवं पूर्णकाम माना गया है यह सिद्धान्त ही बाधित हो जाएगा। अतः उसमें किसी प्रकार की कमी की कल्पना करना व्यर्थ है। इस प्रकार ईश्वर की नित्यतृप्तता एवं पूर्णकामता में किसी प्रकार की कमी मानना उचित नहीं है।[6]

जबकि ब्रह्मसूत्र की संक्षिप्तता तथा दुर्बोधता के कारण अनेक शंकाएँ उत्पन्न हुई। इन शंकाओं का समाधान विभिन्न भाष्यकारों ने अलग–अलग भाष्य लिखकर किया तथा इसके लिए वेद तथा उपनिषदों अर्थात् श्रुतियों में वर्णित विचारों का उल्लेख किया, फलस्वरूप जितने भाष्यकार हुए उतने ही वेदान्त दर्शन के सम्प्रदाय प्रचलित हुए। वह तो इसे रहस्यवाद की सार्वभौम विजय मानते हैं जिसके कारण यह परवर्ती योग पूववर्ती से काफी भिन्न हो गया है।

वेदान्त दर्शन का मूल प्रश्न है जीव और ब्रह्म में क्या संबंध है? इस प्रश्न का विभिन्न प्रकार से उत्तर देने के कारण ही वेदान्त के अनेक सम्प्रदायों का जन्म हुआ। शंकर के अनुसार जीव और ब्रह्म दो नहीं है, वे वस्तुतः एक है अर्थात् अद्वैत हैं। इसीलिए उनके दर्शन को अद्वैतवाद कहा जाता है। वेदान्त के विभिन्न मतों मे शंकर अद्वैतवाद को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। इसका इतना महत्व है कि साधारणतया वेदान्त से अद्वैत का ही आशय ग्रहण कर लिया जाता है।[7] सर चार्लस इलियट के विचार में शंकर का दर्शन संगति, पूर्णता तथा गाम्भीर्य में भारतीय दर्शन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।[8]

शंकर की सम्मति में अद्वैत परस्पर विरोधी सम्प्रदायों में निहित एक मात्र सत्य है। उन्होंने अपने सब ग्रंथों का निर्माण एक ही उद्देश्य को लेकर किया अर्थात जीवात्मा को ब्रह्म के साथ अपने एकत्व को पहचानने में सहायक सिद्ध होना और यही संसार से मोक्ष का उपाय है।[9] शंकर के अद्वैत के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य हैं, शेष सभी वस्तुएँ जीव, जगत, ईश्वर, प्रपंच और मिथ्या हैं। शंकर वेदान्त निम्न श्लोकार्द्ध में प्रकट किया जाता है– ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः।

सर्वप्रथम हमें उत्तम साधकों के लिए विभिन्न साधनों द्वारा समाधि लाभ कराए जाने का उपदेश देते हुए एक ऐसे साधन के रूप में ईश्वर आराधना का उपदेश प्राप्त होता है जिसके द्वारा अन्य साधनों की अपेक्षा शीघ्र समाधि की प्राप्ति हो सकती है,[10] इसे उन्होंने ईश्वर कहा है।[11] यह ईश्वर के वाचक प्रणव[12] का जाप करना तथा उस जाप काल में प्रणव के अभिधेय ईश्वर के विषय में चिन्तन करना है,[13] क्योंकि इसमें चिन्तन किया जाता है। अतः यह भावना रूप है। इसके द्वारा समाधि लाभ एवं समाधि के फलस्वरूप होने वाले कैवल्य का लाभ तो होता ही है साथ ही समाधिकाल में आने वाले समस्त विघ्नों का भी नाश हो जाता है।[14] द्वितीय पाद में जो क्रियायोग एवं नियम के अन्तर्गत ईश्वर का वर्णन किया गया है वह इससे भिन्न है, उसमें समस्त शुभ एवं अशुभ कर्मों को परमगुरु ईश्वर में अर्पण करने के लिए कहा गया है।[15]

विज्ञानभिक्षु लिखते हैं कि प्रकृति की साम्यावस्था में क्षोभ उत्पन्न करने के कारण ईश्वर सृष्टि का उद्‌बोधक है।[16] एक अन्य स्थल पर तो और भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि प्रकृति के वैषम्य अर्थात् सृष्टि में होने वाला परिणाम रूप जो क्षोभ उत्पन्न होता है, वह ईश्वर की इच्छा से ही होता है।[17] जबकि शंकर ब्रह्म और जीव को वस्तुतः अभिन्न मानते हैं। शंकर का विचार है कि जीव का ब्रह्म से एकाकार हो जाना ही मोक्ष है।[18] ब्रह्म के आनन्दमय होने के कारण मोक्षावस्था भी आनंदमय है। मोक्ष का अर्थ शरीर का त्याग नहीं है, बल्कि मोक्ष के बाद भी अविद्या जीव में होती है। वह उसकी बुद्धि का गुण है। ज्ञान हो जाने पर अविद्या का नाश हो जाता है। वस्तुतरू जिस प्रकार ब्रह्म और आत्मा में तादात्म्य है, उसी प्रकार माया और अविद्या एक ही है।

ईश्वर का स्वरूप

बद्ध एवं मुक्त पुरूषों से भिन्नता :

यद्यपि स्वरूपतः पुरुष तो है ही इन क्लेशादि से रहित फिर ईश्वर को इनसे रहित होने के कारण पुरुषविशेष कैसे कहा गया है, इस शंका के निवारण हेतु दोनों ही टीकाकारों ने कहा है कि अविद्यादि–बुद्धि के धर्म हैं, पुरुष के नहीं, फिर भी सांसारिक पुरुषों में उनका आरोप किया जाता है। इस आरोप का कारण अविद्या ही है, ईश्वर में इस प्रकार का आरोप भी नहीं होता।[19] वुड के विचार में भी अज्ञानतावश ही अन्य पुरुष अपने को बन्धन में पड़ा हुआ मानते हैं।

ईश्वर सर्वज्ञ है :

सामान्य पुरुषों को जो पदार्थ–विषयक ज्ञान होता है वह पूर्ण नहीं होता अर्थात् पदार्थ के अतीत एवं अनागत अवस्थाओं का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को नहीं होता मात्र योगी को ही उस पदार्थ विशेष की त्रैकालिक अवस्थाओं का ज्ञान होता है जिसके विषय में उसने संयम किया हो। यह योगी जिसने विवेकज्ञान प्राप्त कर लिया है उसे भी ईश्वर की भांति समस्त वस्तुओं का त्रैकालिक ज्ञान हो जाता है परन्तु ईश्वर की सर्वज्ञता को तो निरतिशय बताया गया है अर्थात् उससे अधिक ज्ञानवान और कोई नहीं होता।

ईश्वर एक है :

योग में पुरुष बहुतत्व की भांति, अनेक नहीं माने जाते। एक से अधिक समान ऐश्वर्य सम्पन्न व्यक्तियों को ईश्वर कोटि में यदि गिना जाय तो उचित न होगा। इस विषय में वाचस्पति मिश्र एवं विज्ञानभिक्षु दोनों ने ही तर्क उपस्थित किए हैं। एक ही पदार्थ के विषय में विभिन्न परिणाम की इच्छा करने वाले, दो ईश्वरों के होने पर, पदार्थ के किसी एक की इच्छा के अनुरूप परिणत होने से दूसरे की इच्छा पूर्ण न होने के कारण उसमें

न्यूनता आ जाएगी ऐसा दोनों टीकाकारों का अभिविचार है[20] वाचस्पति मिश्र ने अन्य तर्क भी एक ईश्वर के सद्भाव हेतु प्रस्तुत किए हैं, वह लिखते है यदि दोनों को ही इच्छा की सम्पूर्ति न मानें तो कोई कार्य उत्पन्न ही नहीं होगा अतः यह मानना अनुचित है, इसके अतिरिक्त यदि माना जाय कि उन ईश्वरों के परस्पर भिन्न विचार होते ही नहीं, उस अवस्था में अनेक मानने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

ईश्वर स्वयं अवतार नहीं लेता :

अवतार जिसका वर्णन अनेक स्मृतियों एवं पुरणादि में पाया जाता है उसके बारे में वाचस्पति मिश्र मौन हैं। विज्ञानभिक्षु का विचार है कि अवतार विष्णु आदि के होते हैं। ईश्वर के नहीं क्योंकि विष्णु आदि देवताओं का परमात्मा में अहंभाव से शक्ति एवं शक्तिमद में अमेद के कारण पाया जाता है। यही कारण है कि हरि एवं हर आदि को आधुनिक वेदान्तियों ने साक्षात् ईश्वर का ही अवतार मान लिया है, परन्तु उनका यह विचार पूर्णतः अप्रामाणिक एवं भ्रान्त है। अतएव प्रलय में जो उपाधि का लय एवं संस्कारवश उसका पुनः धारण करना है यह दैनन्दिन प्रलय में योगनिद्रा में सोने वाले ब्रह्मादि के लिए ही उपयुक्त माना जा सकता है, न कि परमेश्वर के विषय में।[21]

ईश्वर करूणावश सृष्टि में प्रवृत्त होता है :

सूत्रकार एवं भाष्यकार के विचार में ईश्वर सृष्टि के प्रारम्भ में ज्ञान का उपदेश देता है। परवर्ती टीकाकार तो प्रकृति की साम्यावस्था में क्षोभ उत्पन्न कर सृष्टिकर्ता के रूप में भी ईश्वर की कल्पना करते हैं। उसके इन कार्यों में प्रवृत्ति का क्या हेतु है इस विषय में सामान्य हेतु न होने के कारण विशिष्ट हेतु की कल्पना भाष्यकार ने की है, वह लिखते हैं कि नित्यतृप्त ईश्वर अपने लाभ के लिए प्रवृत्त होता हो, यह मानना तो व्यर्थ ही है अतः विभिन्न श्रुतियों के आधार पर यही माना जाना चाहिए कि ईश्वर प्राणियों पर अनुग्रह करने से प्रयोजन से ही प्रवृत्त होता है अर्थात् वह सोचता है कि कल्पप्रलय एवं महाप्रलयादि में पड़े हुए इन बद्ध अज्ञानी पुरुषों को मोक्ष का उपदेश देकर उनका उद्धार करूंगा।

विज्ञानभिक्षु एक शंका को उठाते हुए ईश्वर की राग–द्वेष से शून्यता को पुष्ट करते हैं। शंका यह है कि ईश्वर जैसा कि बताया गया, भक्तों पर ही अपनी कृपादृष्टि रखते हुए उन्हें विभिन्न ऐश्वर्यादि से सम्पन्न करता है अन्यों को नहीं तो वह इस वैषम्य के कारण नित्य मुक्त कैसे कहा जा सकता है? इसका समाधान प्रस्तुत करते हुए यह लिखते हैं कि जिस प्रकार अग्नि स्वभाव से उष्ण है, ठीक उसी प्रकार भक्तों पर अनुग्रह करना ईश्वर का स्वभाव है, अतः उसे राग–द्वेष युक्त नहीं का जा सकता।

इस वर्णन के द्वारा हम यह देखते हैं कि योग के ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या करते हुए दोनों व्याख्याकारों ने उसे अधिकाधिक स्पष्ट करने की चेष्टा की है यत्किंचित् भेद होने पर भी दोनों ही व्याख्याकारों ने ईश्वर को योग में वह महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान कराया है जिसकी कमी सूत्रकार के ईश्वर एवं भाष्यकार के द्वारा वर्णित ईश्वर के वर्णन से अब तक अनुभव की जा रही थी।

माया के द्वारा आवृत्त होने पर उक्त ब्रह्म ईश्वर या सगुण रूप प्राप्त करता है। अर्थात् ब्रह्म का सगुण एवं सविशेष रूप ईश्वर है। ईश्वर माया की उपाधि से युक्त ब्रह्म है। माया में प्रतिबिम्बिय या माया से सीमित ब्रह्म ईश्वर है। सगुण ईश्वर ब्रह्म का सर्वोच्च आभास है वह व्यक्तित्व युक्त, सर्वगुण सम्पन्न है। वह सृष्टिकर्ता, पालक एवं संहारक है वह सच्चिदानन्द है। इस प्रकार ईश्वर की सत्ता का मूल कारण माया हैं। माया की शक्ति के द्वारा ब्रह्म ईश्वर माना जाता है। माया के बिना ईश्वर का अस्तित्व भी सिद्ध नहीं होता है। सब पदार्थो की कामना सुख

के लिए की जाती है, परन्तु सुख की कामना किसी अन्य वस्तु के लिए नहीं होती, स्वयं सुख के लिए ही होती है। इसलिए सुख वह है जो परार्थ या दूसरे के लिए नहीं है। सुख का लक्षण आत्मा में भी वर्तमान है, इसलिए आत्मा सुख स्वरूप है। सब चीजें आत्मा के लिए है, आत्मा किसी के लिए नहीं। 2. सुख का दूसरा लक्षण यह है कि उसमें भी उपाधिहीन प्रेम होता है, अन्य वस्तुओं का प्रेम औपाधिक है। आत्मा में भी उपाधिशून्य प्रेम होता है। याज्ञवलक्य कहते हैं कि आत्मा के लिए ही सब वस्तुएँ–पिता, पुत्र, भार्या, घन, आदि–प्रिय होती है। इस युक्ति से भी आत्मा आनन्दस्वरूप है।[22]

ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है। वह उपासना का विषय है। कर्म का अध्यक्ष ईश्वर है। ईश्वर ही व्यक्तियों को उनके शुभ और अशुभ कर्मों के आधार पर सुख–दुःख का वितरण करता है। ईश्वर कर्मफल दाता है। संसार के लोगों के भाग्य में जो विभिन्नता है इसका कारण उनके पूर्ववर्ती जीवन के कर्म हैं। अतः ईश्वर नैतिकता का आधार है। ईश्वर स्वयं पूर्ण है। यह धर्म–अधर्म से परे है, वह एक है। ईश्वर को विश्व का सृष्टा माना जाता है। प्रश्न यह है कि ईश्वर विश्व का निर्माण किसी उद्देश्य से करता है तब ईश्वर की पूर्णता का खण्डन होगा। सृष्टि ईश्वर का एक खेल है। वह अपनी क्रीड़ा के लिए ही सृष्टि सृजन करता है। सृष्टि सृजन करना ईश्वर का स्वभाव है जिस प्रकार साँस लेना मानवीय स्वरूप का अंग है उसी प्रकार सृष्टि सृजन करना ईश्वरीय स्वभाव का अंग है। ईश्वर विश्व का उपादान और निमित्त कारण दोनों है। वह स्वभावतः निष्क्रिय है परन्तु माया रहने के कारण वह सक्रिय हो जाता है।

सविशेष रूप में बताते हैं। उनका अर्थ विधेयात्मक न करके अपितु निषेधात्मक पद्धति से करते हैं। उनका कहना है कि परब्रह्म में स्वतः ही उभयलिंगत्व नहीं हो सकता। यह नहीं हो सकता कि एक ही वस्तु स्वतः ही स्वतः रूप आदि विशेषण वाली भी हो और इसके विपरीत भी हो। उन्होंने आगे कहा है कि अपर ब्रह्म का प्रतिशेध नहीं किया जा सकता अर्थात् पर ब्रह्म और अपर ब्रह्म दोनों का प्रतिशेध नहीं हो सकता है अन्यथा शून्यवाद सिद्ध हो जायेगा। जैसा कि पहले कहा गया है कि शंकर सभी विशेषणों से रहित तथा निर्विकल्प मानते हैं। उनका अभिविचार है कि उपनिषदें ब्रह्म को निर्विशेष ही स्वीकार करती हैं। ब्रह्म तो सब विशेषणों से रहित निर्विकल्प ही है। उनके अभिविचार में ब्रह्म को ऐसा ही उपनिषदों ने माना है।[23] वे उपनिषदों एवं वेदान्त का भाष्य करते हुए जीव तथा ब्रह्म में अभेद सिद्ध करने का पूर्ण प्रयास करते हैं। शंकर के मत में ईश्वर जगत् का निमित्त तथा उपादान कारण दोनों है। ईश्वर एक है, पूर्ण है और अनेक आश्चर्य जनक इन्द्रियों से सम्पन्न है। वह जीवों के पाप–पुण्य के अनुसार विश्व की रचना अपनी लीला से करता है।[24]

ब्रह्म और ईश्वर में भेद :

ब्रह्म पारमार्थिक दृष्टि से सत्य है जबकि ईश्वर व्यावहारिक दृष्टि से सत्य है। ब्रह्म निर्गुण, निराकार ओर निर्विशेष है परन्तु ईश्वर सगुण और सविशेष है। ब्रह्म उपासना का विषय नहीं है परन्तु ईश्वर उपासना का विषय है। ईश्वर विश्व का आद्य स्रष्टा, पालनकर्ता और संहारकर्ता है, परन्तु ब्रह्म इन गुणों से शून्य है। ईश्वर जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है परन्तु ब्रह्म कर्मफलदाता नहीं है। ब्रह्म व्यक्तित्व शून्य है परन्तु ईश्वर इसके विपरीत व्यक्तित्वपूर्ण है। ईश्वर में माया निवास करती है परन्तु ब्रह्म माया से शून्य है। ईश्वर सक्रिय है जबकि ब्रह्म निष्क्रिय है। ब्रह्म को सत्य माना जाता है परन्तु ईश्वर असत्य है क्योंकि ईश्वर की सत्यता तभी तक है जब तक जीव अज्ञान के वशीमूत है ज्यों ही जीव में विद्या का उदय होता है त्यों ही ईश्वर उसे असत्य प्रतीत

होने लगता है। इसलिए शंकर के दर्शन में ईश्वर को व्यवहारिक मान्यता कहा जाता है। यद्यपि शंकर के दर्शन में ईश्वर और ब्रह्म में अन्तर दीखता है फिर भी उनके दर्शन में ईश्वर तथा ब्रह्म के बीच निकटता का सम्बन्ध है।[25]

संदर्भ –

1. ईश्वरप्रणिधानाद्वा। यो.सू. 1/23
2. शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। यो. सू. 2/32
3. अतः सर्वेषु संप्रज्ञातेषु मध्ये पारमेश्वरयोग एव श्रेष्ठः। –यो.सा.सं., पृ. 13
4. A Personal God serves the practical purposes of Patanjali, who does not concern himself much with the speculative interests of theism. Radhakrishnan, S.I.P, 2 369.
5. In the later Yoga, the universal needs of the human heart prove stronger, and God begins to occupy a more central place. The reality of God is seen in the purified life of man. The witness of God is the religious experience of man. Radhakrishnan S.I.P., II, 371.
6. We notice that God is not described in Raja-Yoga as the creator. Raja-Yoga states, as the contrary, that as God is a perfect being, he cannot create, if he does create, he is a slave of his desires. Again, should God have desires if he is perfect? Because every desire means imperfection, wanting something and suffering. So, if God has a desire to create, he will be a slave of that desire and therefore, he cannot be free and perfect.
7. दासगुप्ता, एस.एन. भारतीय दर्शन, भाग 1, पृ. 429.
8. इण्ट्रोडक्शन टू ब्रह्मसूत्र, पृ. 44 में सर चार्ल्स इलियट के विचारों पर राधाकृष्णन का अभिमत, हिन्दूइज्म एण्ड बुद्धिज्म, खण्ड 2, पृ. 208 में।
9. डॉ. राधाकृष्णन्, भारतीय दर्शन, भाग 2, पृ. 386.
10. तदभिध्यानमात्रादपि योगिन आसनन्तरः समाधिलाभः समाधिफलं च भवतीति। –व्या.भा.. पू. 65
11. ईश्वरप्रणिधानाद्वा। यो.सू. 1/23
12. तस्य वाचकः प्रणवः। यो. सू. 1/27
13. (क) तज्जपस्तदर्थभावनम् । यो. सू. 1/28 (ख) प्रणवस्य जपः प्रणवाभिधेयस्य चेश्वरस्य भावनम्। व्या.भा.. पू. 84
14. ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तराभावश्च। यो.सू., 1/29
15. ईश्वरप्रणिधानं सर्वक्रियाणां परमगुरावर्पणं तत्फलसन्यासो वा। व्या.भा., पृ. 136
16. ईश्वरस्तु साम्यपरिणामादिरूपाखिलावरणाभङ्गेनोदद्बोधकः। यो.वा., पृ. 400
17. प्रकृतेर्वैषम्यहेतुः क्षोभोऽपीश्वरेच्छात एव। यो., पृ. 73
18. ब्रह्मण आत्मैकत्व दर्शन मोक्ष साधनम् ब्रह्मसूत्र पर शंकरभाष्य,, 2.1.14
19. (क) यो ह्यनेन बुद्धिस्थेनापि पुरुषमात्रसाधारणेन भोगेनापरामृष्टः स पुरुषविशेष ईश्वरः। त.वै., पृ. 67 (ख) ते चाविद्याऽऽदयो यद्यपि मनस्येव सन्ति न कुत्रापि पुरुषे सांसारिके व्यपदिश्यन्त इति। यो.वा., पृ. 71
20. प्राकाम्यमविहतेच्छता। तद्विघातादूनत्वम्। त.वै, पृ. 69
21. तस्मात् प्रलये निषिद्धोऽप्युपाधिः, पूर्व सर्गीयसंकल्पवासनाभ्यां स्वयं व्युत्थितो भवतीति यच्छास्त्रं तध्दैनंदिनप्रलये योगनिद्रया शयानस्य स्वयंभुव उपाधिपरमेव, न परमेश्वरोपाधिपरमिति दिक्। यो.वा., पृ. 73
22. संक्षेपशारीरक, 1.24, 1.25.
23. जयदेव वेदालंकार, उपनिषदों का तत्त्वज्ञान, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ. 73–76.
24. www.jetir.org (ISSN-2349-5162)
25. प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा भारतीय दर्शन [illegible]दास, दिल्ली, पृ० 308.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 129-133

NEP 2020 : Significant Revamp on Skill Based Education

Dr. Sushma

"Education is not preparation for life; education is life itself."

Abstract :

In the Indian educational landscape, skill-based education has emerged as a pivotal focus in recent times. This paradigm shifts the emphasis from mere theoretical learning to the acquisition of practical skills, real-world competencies, and hands-on experience that align closely with industry and workplace demands. It fosters essential capabilities such as critical thinking, problem-solving, communication, collaboration, and technical expertise. Despite its growing relevance, the traditional system continues to prioritize rote learning and textbook knowledge, often at the expense of practical skill development. Consequently, many students graduate with sound theoretical understanding but lack the practical abilities required to thrive in real-world settings. It is now crucial to challenge and reform this outdated approach by integrating both conceptual knowledge and applied skills into mainstream education. The National Education Policy (NEP) 2020 marks a progressive step in this direction, introducing comprehensive measures to transform the system and bridge the gap between education and employability.

Skills such as critical thinking, problem-solving, teamwork, communication, and emotional intelligence are vital for personal development. By focusing on skill development, students enhance their self-confidence, independence, and ability to navigate real-life challenges.

In today's rapidly evolving job market, **skill**-based **education** is more essential than ever, as industries prioritize practical expertise over theoretical knowledge. It equips individuals with hands-on abilities, making them highly adaptable to technological advancements and new workplace demands. Employers seek candidates who can contribute immediately, reducing the skill gap and increasing employability. Skill-based learning also fosters entrepreneurship, empowering individuals to launch their own ventures without relying solely on traditional degrees. As career paths become more dynamic, mastering industry-specific skills ensures sustained growth, competitive advantage, and the flexibility

needed to thrive in a world driven by innovation.

Preface :

Recognizing the growing importance of soft skill development for children in the 21st century, the NEP 2020 has been introduced with a strong emphasis on skill-based education to better prepare students for the evolving future. The National Education Policy (NEP) 2020 is a transformative framework introduced by the Indian government to overhaul the education system. It aims to make learning more holistic, flexible, and multidisciplinary, ensuring students are equipped with 21st-century skills. It emphasizes skill-based learning to bridge the gap between traditional education and industry demands, fostering adaptability, innovation, and employability. By integrating vocational training, digital literacy, and interdisciplinary approaches, that nurtures critical thinking and practical expertise. Its primary objective is to transform India's educational landscape by shifting focus from rote memorization to experiential and competency-based learning, ensuring students acquire practical skills and adaptability for the modern workforce. Additionally, the policy aims to promote digital literacy, research-driven learning, and universal access to education, while preserving India's rich cultural heritage. Through its student-centric approach, NEP 2020 seeks to empower learners with new-age skills, nurturing well-rounded individuals who contribute meaningfully to society and the global economy.

The NEP 2020 brings a paradigm shift from the traditional 10+2 system to a 5+3+3+4 structure, aligning Indian education with global best practices and cognitive development stages. This new model divides schooling into four phases: Foundational (5 years), covering nursery, kindergarten, and classes 1-2; Preparatory (3 years), encompassing classes 3-5 with a focus on foundational literacy and numeracy; Middle (3 years), spanning classes 6-8, introducing experiential and skill-based learning; and Secondary (4 years), covering classes 9-12, allowing greater subject flexibility and multidisciplinary learning. This approach reimagines education as a comprehensive and interconnected journey, fostering intellectual, creative, and practical growth rather than limiting students to rigid academic streams. The model encourages holistic development, ensuring learners gain a diverse set of skills—critical thinking, problem-solving, communication, and innovation—essential for navigating real-world challenges. By integrating multidisciplinary learning, students are empowered to explore various fields, breaking traditional subject barriers to develop a deeper understanding of concepts and their applications across disciplines. A key pillar of this transformation is the seamless integration of vocational education, embedding skill-based training alongside academic subjects from an early stage. Practical exposure through internships, apprenticeships, and hands-on projects ensures students acquire industry-relevant expertise, enhancing employability and entrepreneurial potential.

Beyond conventional classrooms, this approach leverages technology, research-driven learning, and experiential techniques to make education dynamic, engaging, and future-ready. Digital literacy, coding, entrepreneurship, and creative problem-solving are woven into the curriculum, equipping individuals with competencies required in the modern economy. By embracing flexibility, innovation, and inclusivity, this transformative framework creates a learning ecosystem where every student is empowered to carve their own path and contribute meaningfully to a rapidly changing world.

NEP 2020 emphasizes digital literacy and the integration of online learning platforms to make education more inclusive and accessible. It promotes the use of technology-driven teaching methods, encouraging digital tools in classrooms to enhance learning experiences. The policy supports initiatives like e-learning resources, AI-based education systems, and online skill-development programs, ensuring students can access quality content regardless of location. By integrating virtual labs, interactive modules, and remote learning platforms, the framework bridges the digital divide, making education more adaptable to modern needs. Additionally, it focuses on teacher training in digital pedagogy, ensuring educators are equipped to deliver effective online instruction. Through these efforts, the policy empowers learners with technological proficiency, preparing them for a digitally-driven world.

Implementing the National Education Policy (NEP) 2020 comes with several challenges, primarily due to its ambitious scope and structural transformations. One of the biggest hurdles is resource allocation—upgrading infrastructure, training educators, and integrating digital tools require significant financial investment, which may be difficult for schools in rural and underserved areas. The policy's emphasis on technology-driven learning also raises concerns about the digital divide, as many students lack access to reliable internet and devices, limiting the effectiveness of online education. Another challenge is teacher preparedness—educators need comprehensive training to shift from traditional rote-based methods to experiential and competency-based learning. The transition to a multidisciplinary, flexible curriculum requires restructuring syllabi, assessment patterns, and teaching strategies, which could lead to inconsistencies during the implementation phase. Additionally, the policy's focus on vocational education demands collaboration between schools, industries, and training institutes, which may take time to streamline. State-level coordination presents another obstacle since education is a subject governed by both central and state governments. Different regions have varied priorities, and ensured uniform adoption while maintained autonomy could be complex. Furthermore, the move from the 10+2 structure to 5+3+3+4 requires widespread awareness and acceptance from students, parents, and institutions. Lastly, language inclusion policies, aimed at promoting regional languages as a medium of instruction, may face resistance due to practicality concerns in higher education and professional fields. While NEP 2020 is designed to create a holistic,

inclusive, and future-ready education system, addressing these challenges with effective policymaking, financial support, stakeholder collaboration, and technological advancements is essential to realizing its full potential.

India's evolving education framework aims to equip its workforce with global competitiveness by integrating skill-based learning, digital literacy, and multidisciplinary approaches. By fostering practical expertise alongside theoretical knowledge, students are better prepared to adapt to industry demands and technological advancements. The emphasis on experiential learning, critical thinking, and innovation ensures graduates possess the necessary capabilities to thrive in a dynamic global economy. To maintain relevance and effectiveness, continuous policy evaluation and adaptation are essential. As industries evolve, education must align with emerging trends, requiring regular assessments, stakeholder feedback, and curriculum revisions. A proactive approach to refining learning methodologies, integrating advanced technologies, and addressing challenges ensures long-term success and responsiveness to global shifts.

Public-private partnerships play a crucial role in enhancing skill-based education. Collaboration between academic institutions and industries provides students with practical exposure through internships, apprenticeships, and mentorship programs. Businesses can contribute expertise in curriculum design, ensuring alignment with workforce requirements. Investments from private entities can strengthen infrastructure, facilitate research opportunities, and drive innovation in teaching methodologies.

An integral aspect of successful implementation is strengthening teacher training programs to support modern education objectives. Educators must be equipped with industry-relevant knowledge, digital tools, and experiential learning techniques to effectively guide students. Continuous professional development through workshops, certifications, and mentorship enhances teaching quality, fostering an environment that nurtures creativity, problem-solving, and adaptability.

By embracing flexibility, industry collaboration, technological advancements, and educator empowerment, India's education system lays the foundation for a globally competent workforce, ready to contribute meaningfully to the nation's economic growth and innovation-driven future.

Conclusion :

The transformation of India's education system has introduced a progressive framework that integrates skill development, innovation, and flexibility into learning. By shifting away from rote memorization, this approach fosters critical thinking, problem-solving, and practical expertise, equipping students with competencies that align with global standards. The introduction of multidisciplinary learning and vocational training ensures individuals gain industry-relevant

knowledge, preparing them for real-world challenges. Early exposure to technology, digital literacy, and entrepreneurship further enhances the ability of learners to adapt to dynamic workforce demands.

One of the most significant outcomes is the bridging of the gap between education and employment, enabling students to acquire hands-on experience through internships, apprenticeships, and project-based learning. This not only boosts employability but also encourages innovation and independent thinking. With a curriculum designed to be flexible and inclusive, students have greater autonomy in shaping their learning paths, exploring diverse fields, and developing a broad skill set that supports career growth.

At the heart of this transformation is skill-based education, which plays a crucial role in shaping the next generation of leaders, entrepreneurs, and professionals. Prioritizing practical skills over theoretical learning fosters adaptability, resilience, and creativity—qualities essential for success in an evolving global economy. As industries undergo rapid technological advancements, individuals equipped with specialized expertise will be better positioned to contribute meaningfully to economic progress. Moreover, a strong emphasis on experiential learning encourages students to apply knowledge to real-world scenarios, making education more impactful and relevant.

References

1. *Rohatgi, Anubha, ed. (7 August 2020). "Highlights | NEP will play role in reducing gap between research and education in India: PM Modi". Hindustan Times. Archived from the original on 9 August 2020. Retrieved 8 August 2020.*
2. *"Govt approves plan to boost state spending on education to 6% of GDP". Livemint. 29 July 2020. Archived from the original on 8 August 2020. Retrieved 30 July 2020.*
3. *"Cabinet Approves National Education Policy 2020, paving way for transformational reforms in school and higher education systems in the country". pib.gov.in. Archived from the original on 8 August 2021. Retrieved 8 August 2021.*
4. *"Dharmendra Pradhan launches National Curriculum Framework for 3-8 years children".* The New Indian Express. *Archived* from the original on 23 October 2022. *Retrieved 23 October 2022.*

Sushma.6461@gmail.com, M-7694901201

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 134–137

झारखण्ड के नागपुरी साहित्यकार डॉ० शकुन्तला मिश्र कृत 'सातो नदी पार' उपन्यास में नारी चित्रण

पुनम भगत
शोधार्थी, नागपुरी विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

सारांश :

नारी सृजन की शक्ति और सृष्टि का आधार मानी जाती है। यह ईश्वर द्वारा समाज को दिया गया खुबसूरत उपहार है। जो समाज में माँ, बहन, पत्नी व बेटी का रिश्ता निभाती है। प्रत्येक युग के साहित्यकारों ने साहित्य में नारी की प्रभुता स्वीकार की है। युग विशेष के साहित्य में तत्कालीन समाज में नारी संबंधी धारणाओं की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। साहित्य के माध्यम से विभिन्न वर्गों की सामाजिक समस्याओं, नारी जीवन के विविध पहलुओं व संघर्षों तथा सामान्य जन मानस के सुख–दुःख को मार्मिकता से व्यक्त किया गया है। भारतीय समाज में नारी का दोहन–शोषण आज से ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से होता आ रहा है। सामाजिक मर्यादाओं की बली चढ़ती नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण बड़ी ही सुक्ष्मता से किया गया है। सामाजिक समस्याओं के सरोकारों और मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता को व्यक्त किया गया है। अतः डॉ० शकुन्तला मित्र के उपन्यास में चित्रित नारी संघर्ष को रेखांकित करना ही प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य है।

मुख्य शब्द : नारी, साहित्य, समाज, मार्मिक, भारत, सुक्ष्म, शोषण, वात्सल्य।

प्रस्तावना :

नागपुरी साहित्य जगत में डॉ. शकुन्तला मिश्र का योगदान अतुलनीय है। डॉ. शकुन्तला मिश्र ने साहित्य के विभिन्न विधाओं पर अपनी रचनाएँ पाठकों के बीच प्रस्तुत किया है। मुझे इनकी सभी रचनाओं में श्रेष्ठ सातों नदी पार लगती है, जो एक काल्पनिक उपन्यास है। ''सातो नदी पार'' नागपुरी की दूसरी प्रकाशित उपन्यास है, जो 2012 ई. में झारखण्ड झरोखा, राँची द्वारा प्रकाशित हुई। डॉ. शकुन्तला मिश्र नागपुरी साहित्य जगत की पहली महिला साहित्यकार है जिसने गद्य साहित्य के उपन्यास विधा में लेखन किया।

''सातों नदी पार'' में उपन्याकार ने झारखण्ड के विभिन्न प्रकार के समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। समाज के अति मार्मिक पक्षों विशेषकर नारी के मार्मिक दशा का बड़ा सुक्ष्मता से चित्रण किया गया है। साथ ही झारखण्डी समाज के निम्न वर्ग पर होने वाले अत्याचार, शोषण, मानसिक दबाव, पलायन जैसी व्यथा व दूर्दशा का प्रस्तुतीकरण इस उपन्यास में पूर्ण सटीकता व सजीवता के साथ किया है।

डॉ. शकुन्तला मिश्र ने इस उपन्यास में कई पात्र सुनिश्चित किए हैं। इन्हीं पात्रों में लेखिका ने नारी के अनगिनत रूप और भावों को दिखाया है। नारी के विभिन्न रूपों और भावों को कलात्मक रूप से दिखाना ही नारी चित्रण है। इस प्रकार से ''सातो नदी पार'' में चित्रित नारी पात्र झारखण्डी समाज की जटिलताओं, सघंर्षों और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो हमें आज भी सोचने को मजबूर करता है। डॉ. शकुन्तला मिश्र का उपन्यास ''सातों नदी पार'' झारखण्ड के ग्रामीण जीवन के यथार्थवादी चित्रण को प्रस्तुत करता है जिसमें नारी पात्रों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। डॉ. शकुन्तला मिश्र ने इस कृति में नारी जीवन के विविध पहलूओं को बखूबी प्रकट करने का प्रयास किया है, जो उनके सामाजिक दृष्टिकोण और नारी के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है।

उद्देश्य :

उपन्यासकार ने नारी को भोग की वस्तु मानने से इंकार किया है। नारी के आत्मिक सौन्दर्य और आत्मविश्वास को उन्होंने उपन्यास में प्रमुखता से उभारा है। जिसका उद्देश्य सामाजिक बदलाव लाना, मनुष्य के सोई हुई मानवता को जगाना और मानव जीवन को बेहतर बनाना है।

रतनी : प्रेम और त्याग :

''सातो नदी पार'' उपन्यास के प्रमुख पात्रों में एक रतनी है जो गाँव की कम पढ़ी–लिखि लड़की है। जतन उसके पिता का नाम है। शिबु और गजू रतनी के भाई है। लेखिका ने रतनी को अमर की प्रेमिका के रूप में एक प्रेम पुजारन बताया है। वह अपने प्रेमी अमर के जेल चले जाने के बाद बहुत ही व्याकुल हो उठती है। रणवीर पुरे उपन्यास का खलनायक है। गांव की युवतियों पर उसकी कुदृष्टि है। रतनी उसके चंगुल में फँस जाती है। रणवीर उसका सर्वस्व लुटना चाहता है। बचने के सारे रास्ते बंद नजर आते हैं। आँखों के सामने अंधेरा छाने लगता है। रतनी दृढ़ निश्चय करती है और अपने–आप से कहती है कि वह अपने दामन पर दाग कभी नहीं लगने देगी। रणवीर जैसे कुकर्मी के सामने वह बेबस व कमजोर नहीं पड़ सकती है। अपनी आबरू बचाने के लिए वह अपने देह का त्याग कर देती है। एक प्रेम की देवी ने प्रेम के खातिर अपनी बलि दे दी। अमर की रतनी अमर के लिए हमेशा–हमेशा के लिए अमर हो गई।

पार्वती : प्रेम और समर्पण की मूर्ति :

उपन्यास की दूसरी प्रमुख नारी पात्र पार्वती है। पार्वती, भरतु की पत्नी है और लछु की भाभी है। मीठु पार्वती का बड़ा बेटा है। भरतु पार्वती को गर्भावस्था में छोड़कर परदेश कमाने चला जाता है और कभी लौटकर नहीं आता है। पार्वती अपने बच्चों के परवरिश के लिए संघर्ष करती है। वह परिवार की कठिनाईयों का हल ढुँढती है और परिवार के प्रति अपनी निष्ठा बनाये रखती है। पार्वती के अच्छे आचरण के वजह से लछु रामायण के लक्ष्मण के समान अपनी भाभी की रक्षा व सेवा करने का प्रण लेता है। पार्वती एक सशक्त, कोमल, प्रेम और समर्पण का प्रतीक है।

चंपा : शोषण का शिकार :

चंपा उपन्यास की अगली प्रमुख नारी पात्र है। चंपा एक गरीब परिवार की बेटी है, जो अपनी माँ के साथ रहती है। चंपा के सौन्दर्य को देखकर ठीकेदार रणवीर की नीयत डोलने लगती है। वह रणवीर की चिकनी–चुपड़ी बातों में आ जाती है। समाज के बनाये नियमों की अवहेलना करती है। प्रेमी रणवीर के साथ

समाज की परवाह किए बिना संबंध स्थापित करती है, जो समाज के खिलाफ उसकी विद्रोही भावना को दर्शाता है। वह रणवीर के द्वारा मानसिक व भावनात्मक शोषण का शिकार होती है और अंत में ठगी जाती है। उसका चरित्र समाज में नारी उत्पीड़न को उजागर करता है।

रीबी : ममता की मूरत :

उपन्यास की अगली पमुख नारी पात्र रीबी है। सोना रीबी का बेटा है। बिरजु रीबी का पति है। बिरजु दूसरी औरत लेकर शहर भाग जाता है। निमोनिया से सोना की मौत हो जाती है। उपन्यास में रीबी का किरदार एक पागल माँ का है। रीबी के दुःख से पुरा गाँव दुःखी है। एक दिन बिरजु चार बच्चों के साथ गाँव आता है। बिरजु व बच्चों को देखते ही रीबी का पागलपन क्षयमान हो जाता है। रीबी के चरित्र से वात्सल्य, करूणा और प्रेम की अभिव्यक्ति कुशलता पूर्वक की गई है। नारी जाति त्याग, क्षमा और समझौते की प्रतिमूर्ति होती है। उदाहरण के लिए, ''ई छरमताही, बउराही रीबी के आइझ का होय गेलक? अनपढ़ जनाना पढ़ल–लिखल लखे गोठियात हे, जइसे उके कहियो कोनो होइए नी रहे। मुदा केउ का जाने आइझ तो जाइग रहे माँय कर ममता। माँय कर करजा में तो बसेल बस माँय कर नेह–दुलार। माँय कर अँचरा से तो मिलल बस ममता कर छाहँइर। आपन कोइखक जनमल ले कि तब दोसर से जनमले, माँय तो बस माँय रहेल। आइझ जागलक माँय.... माँय आउर सिरिफ माँय। ममता इसन जागलक कि हइर लेलक हर संताप के आउर निरमल परपन कइर देलक मन के। बिसइर देलक पति कर बेवफाइ के। वाह रे नारी। भारत कर नारी। हिन्दुस्तान कर बेटी, बहिन आउर पूतउह।''

जानकी : साहस और स्वाभिमान की प्रतीक :

''सातो नदी पार'' उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र जानकी है, जो कि गाँव के गौंझू साहब की बेटी है। जानकी का चरित्र झारखण्डी ग्रामीण नारी के साहस, स्वाभिमान और संघर्षशीलता का प्रतीक है। वह सामाजिक रूढ़ियों और परंपराओं के खिलाफ संघर्ष करती है। उदाहरण के लिए ''अरथी, सइज के तइयार रहे, तइयार रहे चाइर कर ठाँवे चाइर सौ खांध, आगू तरे कुहरत रहे चुकिया में राखल आइग मुदा आइग देवइया कर कहों नाँव–निसान नि रहे। अचका जनाना मनक भीड़ से बेटी जानकी निकललयँ आउर उठाय लेलयँ आइगक चुकिया के चलू लेगू अंतिम यात्रा में हमर बाबा के। हम उनकर बेटा कर करतब करब। जानकी आइग देके जाय चुइक रहयँ। चिता धू–धू कइर के जरत रहे।'' वह अपने परिवार के आर्थिक और सामजिक चुनौतियों का सामना दृढ़ता से करती है। वह एक जागरूक और बहादूर नारी की मिसाल है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग रहती है। जानकी का व्यक्तित्व उसकी कर्मठता, आत्मसम्मान, सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्यों व मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रमुखता से उभारता है।

अन्य नारी पात्र :

उपरोक्त नारी पात्रों के अलावे उपन्यास में सहायक नारी पात्रों की भी काफी संख्या है, जिसमें ऑजीमाँय, गंउझिन, जतन बोहरिया, शिबु बोहरिया, रामु बोहरिया, पूनम, काकी, बुधनाथ बोहरिया, डेजी, जामवंती, जामवंती माँय, चंपा माँय, मेरखा आदि है, जिन्होंने उपन्यास के कथा को गति देने का कार्य किया है। यहाँ उपन्यास के कथा को गति देने का कार्य किया है। यहाँ उपन्यासकार ने पात्रों की सटीक और सजीव चित्रण करके कथाओं में तत्कालीन झारखण्डी परिवेश का दिग्दर्शन कराने का प्रयास किया।

निष्कर्ष :

यह उपन्यास झारखण्डी परिवेश के उन्मुक्त प्रेम और मर्यादित समाज की विशेषता को बताती है। उपन्यास के जितने भी स्त्री–पुरूष पात्र हैं सभी का चित्रण नागपुरी भाषा साहित्य, संस्कृति के प्रेम से सराबोर है। लेखिका ने इस उपन्यास में झारखण्डी समाज का जीवंत और मार्मिक चित्रण किया है। आज भी हमारा समाज हर बात में नारी से ही त्याग व समझौते की उम्मीद करता है। झारखण्डी समाज की मध्यवर्गीय बहु–बेटी आज भी किसी–न–किसी रूप में डर व घुटन भरी जीवन जीने को विवश है। उपन्यासकार ने बड़ी बारीकी से नारी के संघर्ष के यथार्थ का चित्रण किया है। लेखिका ने उपन्यास में नारी की विवशता और उस पर हो रहे मानसिक अत्याचार को बड़ी सटीकता से रेखांकित किया है। आज का झारखण्डी समाज कितना दुःखी, हताश–निराश और मुसीबतों से घिरा है। इस उपन्यास में यह बखुबी प्रतिबिम्बित किया गया है। इस प्रकार यह उपन्यास झारखण्डी समाज का दर्पण है।

संदर्भ सूची :

1. सातो नदी पार – डॉ. शकुन्तला मिश्र।
2. साक्षात्कार – डॉ. शकुन्तला मिश्र।
3. शोध समालोचन, त्रैमासिक पत्रिका।
4. साक्षात्कार – डॉ. पंचम साहु।
5. नागपुरी : उद्‌भव और विकास – डॉ. बी.पी. केशरी।
6. स्वातंत्र्योत्तर नागपुरी साहित्य : एक शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. राम प्रसाद।
7. आधुनिक नागपुरी साहित्य – डॉ. उमेशनंद तिवारी।
8. साक्षात्कार – नेहा कुमारी (शोधार्थी)
9. साक्षात्कार – डॉ. सविता केशरी।
10. साक्षात्कार – प्रवीण सिंह (शोधार्थी)
11. नागपुरी उपन्यास साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन (शोध ग्रंथ) – डॉ. युगेश कुमार महतो।

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 138–140

नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास

आलोक कुमार मिश्रा
वरीय शोधार्थी, स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, राँची विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड।

नाटक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'नट्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है नचाना, अभिनय करना या स्वांग करना। नाटक की उत्पत्ति के संबंध में अनेक मत प्रकट किए गए हैं इस सम्बंध में भरतमुनी के नाट्यशास्त्र में एक कथा प्रचलित है – ''इन्द्र तथा अन्य देवताओं ने सब लोगों के मनोरंजन के लिए ब्रह्मा से कोई मनोविनोद का साधन उत्पन्न करने की प्रार्थना की। वे ऐसा साधन चाहते थे जो श्रव्य तथा दृश्य दोनों ही हो तथा जिसमें सभी वर्णों के लोग समान रूप से भाग ले सकें। क्योंकि वेदों के पठन–पाठन का अधिकार शुद्रों के लिए निषिध्द था अतः पंचम वेद की रचना अत्यंत आवश्यक प्रतीत हुई। इस प्रकार सभी वर्णों के मनोरंजन के लिए ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, ऋग्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर ब्रह्मा ने नाट्यवेद की सृष्टि की।

नाटक को दृश्यकाव्य के अन्तर्गत रखा जाता है दृश्य काव्य को रूपक भी कहा जाता है। रूपक कहने का कारण यह है कि उसमें एक व्यक्ति पर दूसरे व्यक्ति के रूप का आरोप होता है, अर्थात किसी का रूप बना कर कोई दूसरा आदमी आता है। रूपक के 10 भेद हैं – (1) नाटक (2) प्रकरण (३) भाण (4) व्यायोग (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) अंक (9) वी थी (10) प्रहसन।

नाटक के कई प्रकार हैं जिसमें रूपक, एकांकी, नूक्कड़ नाटक, पटकथा नाटक, श्रुतिनाटक, रेडियो नाटक, दूरदर्शन नाटक, हास्यनाटक, व्यंग्य नाटक, समस्या नाटक, रंगमंचीय नाटक, पाठ्य नाटक, पौराणिक नाटक, पूर्णकालिक नाटक, ऐतिहासिक नाटक, सामाजिक नाटक, गंभीर नाटक तथा लोक नाटक। नाटकों के इस प्रकार में लोक नाट्य परम्परा तथाकथित अशिक्षित अथवा अद्धशिक्षित लोक समुदाय की सृष्टि है। लोक नाट्य की परम्परा भारत वर्ष के सभी प्रदेशों में पाई जाती है – "गुजरात के भवाई और तरंगाला, असम के अंकिया नाट, बंगाल के यात्रा और नकाब, कर्नाटक के यक्ष–गान और बलयार, आंध्र के मारव्यंगयु और कुरंवजि और महाराष्ट्र के तमाशा, ललित और गोधल, केरल के कुडियाट्टम और चविहनाटकम्, कश्मीर के भांड पथ जैसे लोक नाट्यों की अलग–अलग दिशाएँ जनमानस से जुड़घ्कर पल्लवित हुई है।''

नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव अत्यंत ही प्राचीन है। उस समय की जातीय परम्पराओं, सामाजिक वातावरण, धार्मिक आस्थाएँ, समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप नागपुरी नाटकों का उद्भव माना जा सकता है – ''नागपुरी में भी नाट्य परम्परा बहुत पुरानी है। छोटानागपुर की पहाड़ियों में सीताबेंगा की गुफा में द्वितीय

या तृतीय शताब्दी की नाट्यशाला प्राप्त हुई है जो छोटानागपुर में नाटक की परम्परा को बतलाती है। प्राचीन में यह लुप्त हो गई थी। जैसे छोटानागपुर में छौ नृत्य और कठपुतली नृत्य की परम्परा प्राचीनकाल से अभी तक बदस्तूर जारी है।

सभी प्रांतों का अपना लोक साहित्य होता है जो काफी समृद्ध है। लोक नाट्य की परम्परा इसी के अन्तर्गत आती है। झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, एवं उड़ीसा के सीमावर्ती क्षेत्रों में छऊ नृत्य एवं कठपुतली नाट्य का आयोजन किया जाता है। मूल रूप से कहा जाये तो नागपुरी नाटक का उद्‌भव कठपुतली के विकास के साथ ही हुआ है। नाट्य की यही परम्परा धीरे–धीरे लिखित और मंचीत रूप में आने लगे। सर्वप्रथम नागपुरी का प्रथम नाटक सहनी उपेन्द्र पाल 'नहन' द्वारा लिखित एवं धनीराम बक्शी द्वारा सम्पादित 'नारद मोह लीला' को माना जाता है। यह नागपुरी का एक गीति नाट्य है।

इसी नाटक से नागपुरी नाट्य परम्परा की अविरल धारा प्रवाहित हुई। क्रमशः नारद मोह लीला के बाद 1957 ई. में 'ए सदानी रीडर' पुस्तक में फा० पी० शाँति नवरंगी का हो नाटक प्रकाशित हुआ। संजीवक बरद और पिंगलक सिंह तथा दूसरा नाटक भालु। 1958 ई. में विष्णुदत्त साहु द्वारा लिखित रेडियो नाटक प्रकाशित हुआ। 1964 ई. में नवरंगी जी का नागपुरी सदानी साहित्य प्रकाश में आया जिसमें सगुनिया जोल्हा नामक नाटक है। 1969 ई. में डॉ॰ विसेश्वर प्रसाद केशरी ने ठाकुर विश्वनाथ शाही नामक नाटक लिखा। 1971 ई. में डॉ॰ गोस्वामी और डॉ॰ केशरी के सम्पादान में दू डाइर बीस फूल नामक पुस्तक आई जिसमें सुशील कुमार जी की नाटक 'करम कर फेर', प्रकाश में आया। एक झोफा नागपुरी फूल 1976 ई. में प्रकाशित हुआ जिसमें डॉ॰ गोस्वामी जी की लिखित नाटक संकलित है। 1980 ई. में नागपुरी गद तइरगन पुस्तक आया जिसमें गिरीधारी राम गौझू 'गिरिराज' की एक अत्यंत ही लोकप्रीय नाटक 'अखरा निंदाय गेलक' आया। 1990 ई. में गिरीराज जी की एक एकांकी नाटक संग्रह अखरा निंदाय गेलक नाम से प्रकाशित हुई जिसमें सात नाटक संकलित है। 1965 ई. अशोक पागल जी का नाटक संग्रह नावा इंजोर आया जिसमें सात नाटक है। 1999 ई. में तीन कौड़ी साहु जी की नाटक अंधविश्वास आया तथा इनकी दूसरी एवं तीसरी प्रकाशित नाटक 'रोशनी एवं बंधुवा मजदूर' 2000 ई. में आया। नागपुरी का ऐतिहासिक नाटक मारंग मरड, गोमके 2003 ई. में गिरीराज जी का नाटक प्रकाश में आया।

इसी वर्ष में शिव अवतार चौधरी जी का 'महादान' नाटक आया। 2004 ई. में गिरीराज जी मदरा मुण्डा नाटक लेके आए। इसी वर्ष में शिव अवतार चौधरी जी का दूसरा नाटक 'असूर कन्या' प्रकाशित हुआ। 2005 ई. में अशोक श्रीधर की नाटक 'नूतन इंजत' आया। 2006 ई. में डॉ॰ विसेश्वर प्रसाद केशरी की रेडियो ले दू ठो नागपुरी नाटक शिर्षक से नाटक प्रकाशित हुआ।

उपर्युक नाटकों के अलावा नागपुरी के पत्र–पत्रिकाओं में अनेकों नाटक प्रकाशित होते रहे हैं। नागपुरी नाट्य साहित्य आज विकासशील अवस्था में है निरंतर नये एवं सार्थक प्रयास होते आ रहे हैं। अन्य साहित्यिक विधाओं की भाँति नागपुरी नाटक साहित्य भी अपने सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और पौराणिक विषय वस्तुओं को यथार्थता के बंधन में बांधते हुए एक नये आयाम की ओर अग्रसरित हो रहीं है। निःसंदेह ही नागपुरी नाट्य साहित्य का भविष्य उज्जवल है।

सदर्भ ग्रंथ की सूचि :-

1. उपाध्याय डॉ॰ कृष्णदेव – लोक साहित्य की भूमिका, पृ सं – 144, प्रकाशक – साहित्य भवन प्रा. लि. 56 रानी मंडी इलाहाबाद।
2. शर्मा आचार्य देवेन्द्रनाथ – काव्य के तत्व, पृ सं – 14, प्रकाशक – लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।
3. प्रसाद डॉ॰ राम प्रसाद – स्वतंत्र्योत्तर नागपुरी साहित्य : एक शास्त्रीय अध्ययन, पृ सं – 403, प्रकाशन – झारखण्ड झरोखा, राँची।

gmail – alokkumar747@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 141-145

बाल साहित्य के विकास में हरियाणा के कवियों का योगदान

डॉ लीना गोयल
हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी।

सारांश :

बाल साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और भाषिक परंपरा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। हरियाणा में बाल साहित्य का विकास लोकसंस्कृति, लोकगीतों, लोककथाओं और क्षेत्रीय जीवन–शैली से गहराई से जुड़ा रहा है। हरियाणा के कवियों ने बाल मनोविज्ञान को समझते हुए सरल, रोचक और शिक्षाप्रद रचनाओं का सृजन किया है। इस शोध–पत्र में हरियाणा के प्रमुख कवियों के बाल साहित्य में दिए गए योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार हरियाणवी लोकसंस्कृति, भाषा–शैली और सामाजिक मूल्यों ने बाल साहित्य को समृद्ध किया। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि हरियाणा के कवियों का योगदान बाल साहित्य को न केवल मनोरंजक बनाता है, बल्कि उसे सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी सुदृढ़ करता है।

प्रस्तावना :

बाल साहित्य वह साहित्य है जो बच्चों की मानसिक क्षमता, रुचि और संवेदनशीलता को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता करना होता है। हिंदी साहित्य की परंपरा में बाल साहित्य को अपेक्षाकृत देर से स्वतंत्र पहचान मिली, किंतु हरियाणा जैसे लोकसंस्कृति–प्रधान प्रदेश में इसका आधार बहुत पुराना है। यहाँ लोकगीत, खेल–गीत, पहेलियाँ और कथाएँ सदियों से बच्चों के जीवन का हिस्सा रही हैं। आधुनिक काल में हरियाणा के कवियों ने इन्हीं लोकतत्वों को साहित्यिक रूप देकर बाल साहित्य को समृद्ध किया।

हरियाणा की सामाजिक संरचना, ग्रामीण जीवन, कृषि संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों का प्रभाव बाल साहित्य पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यहाँ के कवियों ने बच्चों के लिए ऐसी रचनाएँ कीं जिनमें सहज भाषा, लयात्मकता और जीवन से जुड़े विषयों का समावेश मिलता है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि हरियाणा के कवियों ने बाल साहित्य के विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्रकाशित बाल साहित्य, काव्य–संग्रह, शोध–आलेख और लोकसाहित्य का अध्ययन किया गया है। साथ ही हरियाणा के प्रमुख बाल साहित्यकारों की

रचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण भी किया गया है। शोध का दायरा हिंदी और हरियाणवी भाषा में उपलब्ध बाल साहित्य तक सीमित रखा गया है, जिससे क्षेत्रीय विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

बाल साहित्य की अवधारणा और महत्व :

बाल साहित्य की अवधारणा बालकेंद्रित है। इसमें भाषा सरल, भाव स्पष्ट और विषय रोचक होते हैं। बाल साहित्य बच्चों को कल्पनाशील बनाता है और उनमें जिज्ञासा, रचनात्मकता तथा नैतिकता का विकास करता है। शिक्षा–मनोविज्ञान के अनुसार, बचपन में प्राप्त साहित्यिक संस्कार व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। इसी कारण बाल साहित्य को किसी भी साहित्यिक परंपरा की नींव माना जाता है।

हरियाणा के संदर्भ में बाल साहित्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ की लोकसंस्कृति अत्यंत जीवंत है। कवियों ने लोककथाओं, ग्रामीण जीवन और पारिवारिक संबंधों को बाल साहित्य का विषय बनाकर बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखा।

हरियाणा में बाल साहित्य का प्रारंभ लोकपरंपरा से माना जा सकता है। दादी–नानी द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियाँ, खेतों में गाए जाने वाले गीत और खेलों के साथ जुड़े बोल बच्चों की प्रारंभिक साहित्यिक दुनिया का निर्माण करते रहे हैं। आधुनिक काल में, विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद, हरियाणा के कवियों ने इन लोकतत्वों को लिखित रूप में संरक्षित किया और बाल साहित्य को एक सशक्त पहचान दी।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हरियाणा साहित्य अकादमी और अन्य साहित्यिक संस्थाओं ने बाल साहित्य को बढ़ावा दिया। इस काल में अनेक कवियों ने बच्चों के लिए कविता, गीत और कहानियाँ लिखीं, जिनमें शिक्षा, नैतिकता और संस्कृति का संतुलित समावेश था।

हरियाणा के बाल साहित्य को समृद्ध करने में अनेक कवियों का योगदान रहा है, जिन्होंने बच्चों की मानसिकता, रुचि और सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए रचनाएँ कीं। इन कवियों ने न केवल कविता और गीत लिखे, बल्कि बाल साहित्य को एक गंभीर साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने का प्रयास भी किया।

डॉ. रामकुमार वर्मा (हरियाणा) बाल साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नाम हैं। उन्होंने बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा पर आधारित कविताएँ और कहानियाँ लिखीं, जिनमें अनुशासन, परिश्रम और सत्य जैसे मूल्यों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। उनकी रचनाओं में बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ दिखाई देती है, जिससे बच्चे सहज रूप से उनसे जुड़ पाते हैं। उनकी कविताएँ विद्यालयी पाठ्यक्रम के अनुकूल भी मानी जाती हैं।

डॉ. सविता शर्मा हरियाणा की ऐसी कवयित्री हैं जिन्होंने बाल साहित्य में संवेदनशीलता और मातृत्व भाव का सुंदर समावेश किया। उनकी बाल कविताओं में प्रकृति, परिवार, माँ–बच्चे का संबंध और सामाजिक सौहार्द जैसे विषय प्रमुख हैं। वे मानती हैं कि बाल साहित्य बच्चों को भावनात्मक रूप से सशक्त बनाता है। उनकी भाषा अत्यंत कोमल और सहज है, जो बच्चों के मन को स्पर्श करती है।

सुरेश 'हरियाणवी' ने क्षेत्रीय लोकभाषा में बाल साहित्य को नया आयाम दिया। उनकी रचनाओं में हरियाणवी बोली की मिठास और ग्रामीण जीवन की सजीवता देखने को मिलती है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि क्षेत्रीय भाषा में लिखा गया बाल साहित्य बच्चों के लिए अधिक आत्मीय और प्रभावशाली होता है। उनकी कविताएँ बच्चों को अपनी लोकसंस्कृति से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

डॉ. राजबाला चौधरी का योगदान विशेष रूप से बालिकाओं के लिए लिखे गए साहित्य में उल्लेखनीय है। उनकी कविताओं और कहानियों में आत्मविश्वास, शिक्षा का महत्व और लैंगिक समानता जैसे विषयों को सरल और प्रेरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने बाल साहित्य को सामाजिक जागरूकता का माध्यम बनाया और बच्चों में सकारात्मक सोच विकसित करने का प्रयास किया।

कृष्ण कुमार 'बालमित्र' हरियाणा के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने हास्य और खेलात्मकता के माध्यम से बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाया। उनकी रचनाओं में खेल, मित्रता, शरारत और बालसुलभ चंचलता का सुंदर चित्रण मिलता है। उनकी कविताएँ बच्चों को हँसाते हुए जीवन के छोटे–छोटे सबक सिखाती हैं, जिससे साहित्य बच्चों के लिए बोझ नहीं बल्कि आनंद का स्रोत बन जाता है।

देवी प्रसाद दोहीं हरियाणा के ऐसे कवि माने जाते हैं जिन्होंने बाल साहित्य को लोकसंस्कृति से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी रचनाओं में सहजता, लय और ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है। उनके बालगीत बच्चों को प्रकृति, परिवार और समाज के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। भाषा की सरलता और भावों की स्पष्टता उनकी कविताओं की प्रमुख विशेषता है।

हरियाणा के बाल साहित्य के विकास में डॉ. सुमन लता का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने बच्चों के लिए ऐसी कविताएँ और कहानियाँ लिखीं जिनमें शिक्षा के साथ–साथ संस्कारों का समावेश मिलता है। उनकी रचनाओं में विद्यालयी जीवन, शिक्षक–शिष्य संबंध और अनुशासन जैसे विषय प्रमुख हैं। सरल भाषा और संवादात्मक शैली उनकी विशेषता है, जिससे बच्चे सहज रूप से उनके साहित्य से जुड़ पाते हैं। उनके लेखन का उद्देश्य बच्चों में नैतिक चेतना और सकारात्मक सोच का विकास करना रहा है।

डॉ. हरेंद्र यादव ने बाल साहित्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया। उनकी कविताएँ बच्चों को प्रकृति, जल संरक्षण, स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करती हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि बाल साहित्य केवल कल्पना और मनोरंजन तक सीमित न होकर सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित कर सकता है। उनकी रचनाओं में आधुनिक जीवन की समस्याओं को बच्चों के स्तर के अनुरूप सरलता से प्रस्तुत किया गया है।

सुनीता मलिक हरियाणा की ऐसी बाल साहित्यकार हैं जिन्होंने बालिकाओं के मनोविज्ञान को विशेष रूप से केंद्र में रखा। उनकी कविताओं और गीतों में आत्मसम्मान, शिक्षा का महत्व और पारिवारिक सहयोग जैसे विषय उभरकर सामने आते हैं। उनकी भाषा कोमल और भावात्मक है, जो बच्चों के मन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। उन्होंने बाल साहित्य के माध्यम से बालिकाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने का प्रयास किया है।

अनिल कुमार 'स्नेही' ने हास्य और कल्पनाशीलता के माध्यम से बाल साहित्य को रोचक स्वरूप प्रदान किया। उनकी कविताएँ बालसुलभ चंचलता, मित्रता और खेलकूद से जुड़ी होती हैं। वे मानते हैं कि यदि साहित्य बच्चों को आनंद दे, तभी वह प्रभावी बनता है। उनकी रचनाओं में सीख अप्रत्यक्ष रूप से आती है, जिससे बच्चे बिना दबाव के नैतिक मूल्यों को ग्रहण करते हैं

इसके अतिरिक्त डॉ. प्रेमलता, हरदीप सिंह दहिया, और नीलम राठी जैसे रचनाकारों ने भी बाल साहित्य को समृद्ध किया है। इन सभी कवियों की रचनाओं में शिक्षा, नैतिकता और संस्कृति का संतुलित समावेश दिखाई

देता है। इनका साहित्य बच्चों में पढ़ने की रुचि विकसित करने के साथ–साथ उन्हें सामाजिक रूप से जागरूक बनाता है।

इन सभी कवियों के योगदान से यह स्पष्ट होता है कि हरियाणा का बाल साहित्य केवल कुछ नामों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सशक्त और व्यापक परंपरा है। इन रचनाकारों ने बच्चों की दुनिया को समझते हुए ऐसी साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत कीं, जो मनोरंजन के साथ–साथ संस्कार और ज्ञान भी प्रदान करती हैं। इन कवियों के प्रयासों से हरियाणा का बाल साहित्य हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सका है। हरियाणवी लोकसंस्कृति बाल साहित्य की आत्मा है। लोकगीतों की लय, लोककथाओं की नैतिकता और पहेलियों की बौद्धिकता ने बाल साहित्य को समृद्ध किया है। कवियों ने इन लोकतत्वों को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर बच्चों के लिए उपयोगी बनाया। इससे बाल साहित्य केवल पुस्तक तक सीमित न रहकर जीवन से जुड़ा साहित्य बन गया। हरियाणा के बाल साहित्य की भाषा सरल, संवादात्मक और लयात्मक है। इसमें स्थानीय शब्दावली का प्रयोग बच्चों को अपनी भाषा पर गर्व करना सिखाता है। कविताओं और गीतों में छंद और तुक का प्रयोग बच्चों को आकर्षित करता है तथा उन्हें आसानी से याद हो जाता है। नैतिक शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, सहयोग, सच्चाई और परिश्रम जैसे मूल्य बाल साहित्य के प्रमुख विषय रहे हैं।

हरियाणा के कवियों द्वारा रचित बाल साहित्य ने बच्चों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे बच्चों की भाषा–क्षमता, कल्पनाशक्ति और सामाजिक चेतना का विकास हुआ है। साथ ही यह साहित्य उन्हें अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ता है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है। डिजिटल युग में बाल साहित्य के सामने नई चुनौतियाँ हैं, क्योंकि बच्चे अब डिजिटल माध्यमों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। फिर भी यदि बाल साहित्य को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुत किया जाए तो इसकी पहुँच और प्रभाव दोनों बढ़ सकते हैं। भविष्य में हरियाणा के बाल साहित्य को ऑडियो–विजुअल माध्यमों, ई–बुक्स और शैक्षिक ऐप्स से जोड़ने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि हरियाणा के बाल साहित्य की प्रमुख विशेषता उसकी लोक संस्कृति से गहरी संबद्धता है। कवियों ने ग्रामीण जीवन, लोकगीतों, लोककथाओं और क्षेत्रीय परिवेश को बच्चों के अनुकूल ढालकर प्रस्तुत किया है। इससे बाल साहित्य कृत्रिम न होकर सहज और जीवन–सापेक्ष बन सका है। यही कारण है कि यह साहित्य बच्चों के मन में सहज रूप से स्थान बना पाता है।

हरियाणा के बाल साहित्यकारों का योगदान भाषा के स्तर पर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरल, प्रवाहपूर्ण और संवादात्मक भाषा के प्रयोग से उन्होंने यह सिद्ध किया कि बाल साहित्य में जटिलता नहीं, बल्कि स्पष्टता और संवेदनशीलता आवश्यक है। क्षेत्रीय शब्दों और अभिव्यक्तियों का प्रयोग बच्चों में भाषिक आत्मविश्वास उत्पन्न करता है और उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति सजग बनाता है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि हरियाणा के बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा आरोपित रूप में नहीं, बल्कि सहज और अनुभवजन्य ढंग से प्रस्तुत की गई है। कवियों ने उपदेशात्मकता से बचते हुए कथ्य और भाव के माध्यम से बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास किया है। यह दृष्टिकोण बाल साहित्य को प्रभावी और दीर्घकालिक बनाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि हरियाणा के कवियों ने बाल साहित्य के माध्यम से एक संतुलित साहित्यिक परंपरा का निर्माण किया है, जिसमें मनोरंजन, शिक्षा और संस्कृति का समन्वय दिखाई देता है। यह परंपरा भविष्य के लिए भी संभावनाओं से भरी हुई है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस साहित्य को संरक्षण, प्रोत्साहन और नवीन माध्यमों से जोड़कर आगे बढ़ाया जाए। इस दृष्टि से हरियाणा का बाल साहित्य न केवल क्षेत्रीय, बल्कि राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, राम अवतार – हरियाणा के लोकगीत और बाल साहित्य, हरियाणा प्रकाशन।
2. सिंह, उर्मिला – बाल साहित्य : सिद्धांत और अभ्यास, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
3. मिश्रा, महेंद्र – बच्चों की कविता और संस्कृति, चंडीगढ़।
4. कपूर, पुष्पलता – रंग–बिरंगी बाल कविताएँ, गुरुग्राम।
5. दोहीं, देवी प्रसाद – लोकगीत और बाल गेय साहित्य, हिसार।
6. कालरा मंगल, शैली – मेरे हरियाणा की धूल, हरियाणा साहित्य अकादमी।

drleenagoyal1412@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 146–152

रूस–यूक्रेन संकट में भारत की भूमिका : महत्व और चुनौतियाँ

डॉ. जितेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दी0 द0 उ0 गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

सारांश :

24 फरवरी 2022 को रूस ने यूक्रेन पर आक्रमण किया। और दोनों देशों के बीच युद्ध छिड़ गया। आज भी यह युद्ध सुलझ नहीं पाया है। भारत ने यूक्रेन युद्ध पर संयुक्त राष्ट्र की बैठक में रूस के खिलाफ एक प्रस्ताव पर मतदान से परहेज किया। रूस–यूक्रेन युद्ध में भारत की क्या भूमिका है। इस संघर्ष में भारत की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि भारत ने न तो किसी एक पक्ष का स्पष्ट समर्थन किया और न ही पश्चिमी दबावों के अनुरूप नीति अपनाई। यह शोध–लेख रूस–यूक्रेन युद्ध में भारत की भूमिका का विश्लेषण रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय हित, ऊर्जा एवं रक्षा आवश्यकताओं तथा वैश्विक दक्षिण (Global South) के दृष्टिकोण से करता है। लेख का उद्देश्य यह समझना है कि भारत की तटस्थ–संतुलित नीति अंतरराष्ट्रीय राजनीति में किस प्रकार एक वैकल्पिक कूटनीतिक मॉडल प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द – रूस–यूक्रेन युद्ध, भारत की विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता, संयुक्त राष्ट्र, वैश्विक कूटनीति, ऊर्जा सुरक्षा।

प्रस्तावना –

यूक्रेन युद्ध ने यूरोप की शांति को नष्ट कर दिया है। क्या यूक्रेन–रूस युद्ध पूरे यूरोप पर कहर बरसाएगा? युद्ध की स्थिति को कब नियंत्रण में लाया जाएगा? क्या स्थिति और खराब होगी? एक तटस्थ और उसकी उभरती शक्ति मानी जाने वाली दुनिया में भारत की क्या भूमिका होगी, इसे लेकर कई सवाल उठते हैं। क्योंकि जो युद्ध में हैं रूस और यूक्रेन दोनों के साथ भारत के आर्थिक, शैक्षिक, सुरक्षा और राजनीतिक संबंध हैं। इन दोनों देशों से भारत की कई जरूरतें जुड़ी हुई हैं। ऐसे में भारत इस मुद्दे पर चर्चा करेगा, भारत को इस युद्ध के कुछ परिणाम भुगतने होंगे, भारत युद्ध के दौरान अपनी तटस्थता या गुटनिरपेक्षता बनाए रखेगा और अपने राष्ट्र के हितों को हासिल करने का प्रयास करेगा। फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन पर सैन्य आक्रमण ने शीत युद्ध के बाद स्थापित वैश्विक व्यवस्था को गहरे संकट में डाल दिया। अमेरिका और यूरोपीय संघ के नेतृत्व में पश्चिमी देशों ने रूस के विरुद्ध व्यापक आर्थिक, कूटनीतिक और राजनीतिक प्रतिबंध लगाए। वहीं अनेक देशों

को यह निर्णय लेना पड़ा कि वे इस संघर्ष में किस पक्ष के साथ खड़े होंगे। भारत, जो स्वयं को एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर रहा है, ने इस संघर्ष में संतुलित और स्वतंत्र नीति अपनाई। भारत का यह रुख अंतरराष्ट्रीय राजनीति में उसके बढ़ते आत्मविश्वास और रणनीतिक परिपक्वता को दर्शाता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. युद्ध से पहले दोनों देशों के साथ भारत के रक्षा संबंधों पर नजर रखना।
2. इस युद्ध में दोनों देशों के साथ भारत के संबंधों की समीक्षा करना।
3. यूक्रेन–रूस युद्ध के दौरान भारत की नीतियों का अध्ययन करना।
4. भारत पर रूस–यूक्रेन युद्ध के प्रभावों की व्याख्या करना।

शोध पद्धति –

यह अध्ययन गुणात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। डेटा के स्रोत निम्नलिखित हैं– संयुक्त राष्ट्र अभिलेख, भारत सरकार के आधिकारिक वक्तव्य, अंतरराष्ट्रीय थिंक–टैंक्स और जर्नल लेख, समाचार पत्र एवं विश्लेषणात्मक रिपोर्ट।

यूक्रेन रूसी संघ के पंद्रह गणराज्यों में से एक है। पूरा नाम यूक्रेनी सोवियत समाजवादी गणराज्य। गणतंत्र 603700 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करता है। कीव इसकी राजधानी है। झार के शासनकाल के दौरान इस क्षेत्र को 'छोटा रूस' के रूप में जाना जाने लगा। राज्य में कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव मॉस्को और लेनिनग्राद के बाद दूसरे स्थान पर माना जाता है। यूक्रेन संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सदस्यों में से एक है। राज्य को सोवियत संघ से हटने, अपनी सेना बनाने और विदेशों के साथ राजनीतिक संबंध स्थापित करने का संवैधानिक अधिकार है। हालांकि, यूक्रेन के स्वतंत्र विदेशी संबंध संयुक्त राष्ट्र तक ही सीमित हैं। इसका मतलब यह अभी भी संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है।

नीति का बुनियादी आधार रणनीतिक स्वायत्तता –

भारत की विदेश नीति की नींव रणनीतिक स्वायत्तता है – अर्थात् किसी भी शक्ति–गुट के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता न रखते हुए राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्णय लेना। युद्ध के संदर्भ में भारत ने न तो रूस के समर्थन में पूरी तरह खड़े होने की नीति अपनाई, न ही पश्चिमी देशों द्वारा रूस के खिलाफ कड़े प्रतिबंधों का समर्थन किया। यह नीति वास्तविकता में non-alignment का आधुनिक रूप है। खुली तटस्थता भारत ने संयुक्त राष्ट्र की कई पहलुओं पर निरपेक्ष मतदान किया, न तो रूस के खिलाफ सीधा समर्थन, न ही पूर्ण विरोध व्यक्त किया। यह निर्णय स्वतंत्र कूटनीतिक निर्णय का परिणाम था। सांस्कृतिक–ऐतिहासिक कारण भारत–रूस संबंधों की नींव लंबे समय से चली आ रही रक्षा और राजनयिक साझेदारी पर आधारित है, जो शीत–युद्ध के समय से विकसित हुई है।

रक्षा और आर्थिक हित –

भारत–रूस के बीच परंपरागत रक्षा सहयोग और आर्थिक हित इस भूमिका को आकार देने वाले प्रमुख कारक हैं –

रक्षा सहयोग – भारत की अधिकांश सैन्य उपकरण रूस से प्राप्त होते हैं जैसे लड़ाकू विमान, टैंक, पनडुब्बियाँ और सशस्त्र मिसाइलें। इस गहरा रक्षा–निर्भरता संबंध ने भारत को रूसी रिश्तों को बनाए रखने पर

मजबूर किया।

ऊर्जा और आर्थिक हित – यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी प्रतिबंधों के चलते रूस से कच्चे तेल और उर्वरक सस्ते दामों पर उपलब्ध हुए, जिससे भारत ने अपने ऊर्जा और कृषि–आपूर्ति संसाधनों को संतुलित किया। यह रणनीति आर्थिक रूप से भारत के लिए फायदेमंद रही। युद्ध के शुरुआती दिनों में भारत ने Operation Ganga के तहत लगभग 22,000 भारतीयों को सुरक्षित रूप से वापस लाया एक महत्वपूर्ण मानवीय कार्य। यह पहल भारत के कूटनीतिक दायित्वों और नागरिक सुरक्षा प्राथमिकताओं को दर्शाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने रूस और यूक्रेन दोनों के नेताओं से संवाद बनाए रखा, जिससे भारत ने दोनों पक्षों के साथ समन्वय की कोशिश जारी रखी।

रूस एक शक्तिशाली साम्यवादी राष्ट्र है और क्षेत्रफल के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा देश है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत के रूस के साथ बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। आज भी भारत और रूस के बीच सामरिक, व्यापार, ऊर्जा, रक्षा और अन्य क्षेत्रों में मजबूत सहयोग है। भारतीय सेना अभी भी 50-60% रूसी निर्मित हथियारों का उपयोग करती है। भारत ने हाल ही में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण रूस निर्मित मिसाइल प्रणाली एस–400 का आयात किया है। इन घनिष्ठ रक्षा और सामरिक मित्रता संबंधों के कारण, भारत ने खुले तौर पर संयुक्त राष्ट्र में रूस के खिलाफ खड़ा होना टाल दिया। हाल ही में, यूक्रेन भारतीय रक्षा बाजार में अपनी उपस्थिति मजबूत कर रहा है। यूक्रेन ने भारत के सैन्य उपकरण खरीदने में दिलचस्पी दिखाई है। जो भारत को रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भर बनाने में सक्षम बनाएगा। रक्षा के मामले में, यूक्रेन भारत की आजादी के बाद से सैन्य प्रौद्योगिकी और उपकरणों का एक स्रोत रहा है। यूक्रेन ने भारतीय वायु सेना के लड़ाकू विमानों (एसयू–30एमकेआई) में इस्तेमाल होने वाली सतह से हवा में हमला करने वाली मिसाइल (आर 27) विकसित की है। भारत और यूक्रेन दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। 24 फरवरी को रूस ने यूक्रेन पर हमला किया, और फिर से दो यूरोपीय देश युद्ध के कगार पर है। इस आश्वासन के बावजूद कि यूक्रेन गिर जाएगा, न तो संयुक्त राज्य अमेरिका और न ही नाटो सदस्य राज्य रूसी सेना का सामना करने के लिए सीधे सेना भेजेंगे।

लेकिन चूंकि भारत इस युद्ध में अपनी भूमिका स्पष्ट नहीं करता है, इसलिए अमेरिका भारत को संदेह की नजर से देखता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भारत यूक्रेन युद्ध पर संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में रूस के खिलाफ एक प्रस्ताव पर मतदान करने से परहेज करता है। यह युद्ध अभी भी अनसुलझा है। जब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राज्य अमेरिका नाटो के माध्यम से और संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर रूस पर बड़ा प्रतिबंध लगाता रहा है। रूस आज तक पीछे नहीं रहा है। जब संयुक्त राष्ट्र महासभा में रूस विरोधी प्रस्ताव पारित किया गया, तो भारत ने यूक्रेन या रूस के लिए मतदान से परहेज किया। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत के रूस और यूक्रेन दोनों के साथ संबंध हैं। भारत के युद्ध में शामिल दोनों देशों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक और सुरक्षा संबंध हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, अभी रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध का असर हर देश पर पड़ रहा है। भारत इस युद्ध में आदर्शवादी शांति के पक्ष में है। भारत को उम्मीद है कि सभी मुद्दों को बातचीत से सुलझाया जा सकता है। रूस के खिलाफ अधिकांश देशों ने यूक्रेन युद्ध में पुतिन के निष्कासन के खिलाफ आवाज उठाई है, लेकिन भारत ने तटस्थ रुख अपनाया है क्योंकि रूस एक पुराना मित्र है और रूस के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता है। लेकिन पिछले एक दशक में, अमेरिका–भारत संबंध बढ़े हैं। भारत

अमेरिका के करीब जा रहा है क्योंकि चीन आक्रमण कर रहा है और अमेरिका उसका अनुसरण कर रहा है, लेकिन अमेरिका इस युद्ध में पक्षपातपूर्ण भूमिका निभाकर भारत से संबंध तोड़ रहा है। शीत युद्ध की समाप्ति की कथा संघर्ष के कारण समाप्त हो गई है, अब नए जोश के साथ भारत को दोनों सैन्य ठिकानों से उचित दूरी पर अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाना होगा। और गुटनिरपेक्षता के नए तर्क को स्वीकार करना होगा। हर राष्ट्र को राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी रक्षा तत्परता बढ़ाने की आवश्यकता है। राष्ट्र मिसाइल और परमाणु हथियार हासिल करने का प्रयास करेगा। शांति स्थापित करने में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की विफलता।

महाशक्तियों की बदली हुई नीतियों को देखते हुए हर देश को अपना रक्षा व्यय बढ़ाना होगा। इससे विश्व में हथियारों की होड़ शुरू होगी और एक नया शीत युद्ध छिड़ जाएगा"। रूस–यूक्रेन युद्ध का असर भारत के साथ–साथ दुनिया पर भी पड़ सकता है। दुनिया तनाव कम करने की कोशिश कर रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने कहा है कि वह भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूक्रेन से युद्ध की स्थिति में पक्ष लेने की उम्मीद करता है, लेकिन भारत के दोनों देशों के साथ विवादों को सुलझाने के लिए एक स्टैंड लेने के कारण हैं। यूक्रेन में 20000 से अधिक भारतीय नागरिक रहते हैं। शिक्षा के लिए गए छात्रों की संख्या ज्यादा है। जो नागरिक नौकरी बाजार के लिए गए थे इन सभी की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं भारत। भारत बड़ी मात्रा में कच्चे तेल का आयात करता है। इसमें भारत को काफी खर्च करना पड़ता है। इस तनाव में, अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि से भारत में मुद्रास्फीति में तेजी आएगी। युद्ध का भारत की रक्षा तैयारियों पर भी असर पड़ने की संभावना है। रूस से बड़ा भारत भारी मात्रा में हथियारों का आयात करता है। भारत के रक्षा बलों में लगभग 60% हथियार रूसी हैं। इसके अलावा, भारत को रूस से S-400 वायु रक्षा प्रणाली प्राप्त होगी। यह युद्ध शुरू हुआ, अन्य राष्ट्रों ने भाग लिया, और यदि वे रूस पर प्रतिबंध लगाते हैं, तो रूस भारत को हथियारों की आपूर्ति करने में सक्षम नहीं होगा। भारत और रूस के बीच काफी पुरानी दोस्ती है। कठिन समय में रूस भारत का सहयोगी है, लेकिन युद्ध की स्थिति में रूस और चीन की दोस्ती का इंकार नहीं किया जा सकता है। यह दोस्ती भारत के लिए बोझ नहीं होनी चाहिए। इस दोस्ती से भारत–चीन सीमावाद नहीं बढ़ना चाहिए। भविष्य में रूस, चीन, ईरान, सीरिया, पाकिस्तान आदि देशों का एक समूह बनेगा।

भारत की भूमिका का दीर्घकालिक प्रभाव –

भारत एक स्वतंत्र वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था को मजबूती मिल रही है वैश्विक कूटनीति में पश्चिम–केन्द्रित सोच को चुनौती मिल रही है ऐसे में रूस की आक्रामकता का विरोध करना भारत के हित में और देश के मूल्यों के अनुरूप भारत के हित में होगा। यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की शुरुआत से ही भारत अपनी विदेश नीति में दोहरी भूमिका निभाने की कोशिश कर रहा है। अमेरिका और रूस दोनों के साथ रणनीतिक साझेदारी रखते हुए, भारत पश्चिमी दबाव के बावजूद रूस की सार्वजनिक रूप से निंदा करने से बच रहा है। युद्ध की शुरुआत से ही भारत द्वारा जोर देकर कही गई हिंसा विराम की नीति भारत को अपनी स्थिति संतुलित रखने और साथ ही युद्ध प्रतिबंधों के लाभों को प्राप्त करने में मदद करती है। भारत और रूस के बीच संबंध भारत–सोवियत संबंधों से जुड़े हैं, जिन्हें 1971 में शांति, मैत्री और सहयोग संधि के तहत परिभाषित किया गया था। सोवियत काल में, भारत के साथ संबंध गैर–समाजवादी देशों के साथ सबसे आदर्श संबंध माने जाते थे, जिसकी विरासत रूस आज भी कायम है। विशेष रूप से, भारत रूस से सैन्य निर्यात पर

अत्यधिक निर्भर है – भारत के शस्त्रागार का 85% से अधिक हिस्सा रूसी या सोवियत निर्मित हथियारों से भरा है। हालांकि भारत ने पिछले दशक में अपने सैन्य निर्यात में विविधता लाने का प्रयास किया है, मुख्य रूप से फ्रांस, इजराइल, ब्रिटेन और अमेरिका को, लेकिन रूसी उपकरणों पर निर्भरता को जल्द ही खत्म करने का कोई रास्ता नहीं है। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार, इसमें कम से कम एक दशक लग सकता है क्योंकि यह निर्भरता न केवल नियोजित निर्यात पर है, बल्कि मौजूदा उपकरणों के रखरखाव और अतिरिक्त पुर्जों की खरीद पर भी है।

अक्टूबर 2021 की अमेरिकी कांग्रेस रिपोर्ट में उल्लेख किया गया था कि भारतीय सेना रूसी आपूर्ति वाले उपकरणों के बिना काम नहीं चला सकती और निकट और मध्यम अवधि में रूस पर निर्भर रहेगी। नियोजित निर्यात की बात करें तो, भारत ने 2018 में सबसे उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणालियों में से पांच एस–400 खरीदने पर सहमति जताई थी, जिसकी आपूर्ति रूस ने 2021 में शुरू की थी। मॉस्को द्वारा दी जाने वाली विशेष कीमतें अन्य देशों की तुलना में काफी सस्ती हैं, जिससे रूसी हथियार भारत के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित होते हैं। इसके अलावा, रूस के साथ भारत का सहयोग केवल खरीद–बिक्री तक ही सीमित नहीं है। रूस भारत में 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत संयुक्त उद्यमों के निर्माण में शामिल है, जिसमें स्पेयर पार्ट्स, पुर्जों का निर्माण और यहां तक कि कलाश्निकोव असॉल्ट राइफलों का निर्माण भी शामिल है। रूस पर मौजूदा प्रतिबंधों के साथ, भारत निश्चित रूप से रूस पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए कदम उठाएगा, लेकिन फिलहाल भारत के पास नियोजित व्यवस्थाओं को जारी रखने के अलावा कोई खास विकल्प नहीं है। पश्चिमी शक्तियां रूस पर भारत की सैन्य निर्भरता को स्वीकार करती हैं और कभी–कभी भारत की अनिर्णयता को अनदेखा कर देती हैं, जैसे कि यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के संबंध में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और महासभा के प्रस्तावों पर भारत का कई बार मतदान से दूर रहना। क्वाड की पिछली ऑनलाइन बैठक (मार्च 2022) के दौरान – जिसमें भारत, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान सदस्य हैं – रूस की आक्रामकता पर अन्य क्वाड सदस्य देशों की कड़ी निंदा की तुलना में भारत का रुख अस्पष्ट था। अप्रैल 2022 में अमेरिका–भारत 2+2 मंत्रिस्तरीय वार्ता के दौरान, दोनों पक्षों ने अमेरिका और भारत के बीच एक महत्वपूर्ण रक्षा साझेदारी पर भी चर्चा की, फिर भी यूक्रेन पर रुख का उल्लेख केवल मानवीय संकट के संदर्भ में किया गया। अमेरिका और अन्य पश्चिमी सहयोगी सैद्धांतिक रूप से रूसी सेना पर भारत की निर्भरता को समझते हैं, लेकिन कभी–कभी कुछ हद तक नाराजगी के साथ। भारत अपने रणनीतिक साझेदारों के साथ सहयोग को संतुलित रखते हुए पश्चिमी गठबंधन की किसी भी प्रकार की नाराजगी से बचने का प्रयास करता है।

हालांकि, भारत की यह संतुलन रणनीति रूस पर लगे प्रतिबंधों से लाभ उठाने से नहीं रोकती। विशेष रूप से, प्रतिबंधों के कारण भारत को रूसी तेल निर्यात पर अच्छी छूट मिली। प्रतिबंधों के बाद जब कई कंपनियों को रूस से तेल की खरीद रोकनी पड़ी, तो रूसी तेल की कीमतें गिर गईं। परिणामस्वरूप, इस वर्ष रूस से भारत की तेल खरीद दोगुनी से अधिक हो गई। उदाहरण के लिए, जनवरी और फरवरी में भारत ने रूस से यूराल तेल नहीं खरीदा, फिर भी मार्च से जून तक की आपूर्ति की मात्रा 2021 की कुल खरीद की मात्रा से अधिक है।

रॉयटर्स के अनुसार, यूक्रेन में युद्ध शुरू होने के बाद से, भारत को रूस से 34 मिलियन बैरल तेल प्राप्त हो चुका है, जबकि 2021 में कुल 16 मिलियन बैरल तेल प्राप्त हुआ था। हालाँकि कुछ अमेरिकी अधिकारियों ने इस बात पर सहमति जताई कि भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद प्रतिबंधों का उल्लंघन नहीं करती है, फिर भी

रियायती रूसी तेल की खरीद के लिए भारत पर एक निश्चित दबाव है। भारतीय सरकार अपनी ओर से तेल की समग्र आवश्यकता का तर्क देती है और अपनी वैध ऊर्जा खरीद का राजनीतिकरण न करने का अनुरोध करती है। रूस के स्विफ्ट प्रणाली से अलग होने के कारण भुगतान में भी समस्याएं आ रही हैं। दोनों सरकारें रुपये–रूबल भुगतान पद्धति अपनाने की योजना बना रही हैं, जो वास्तव में भारत–रूस संबंधों में कोई नई बात नहीं है। सोवियत काल में, सोवियत–भारतीय सहयोग फलता–फूलता रहा क्योंकि सोवियत संघ निर्यात का भुगतान रुपये में करने के लिए प्रतिबद्ध था, जिसके कारण सोवियत संघ भारतीय वस्तुओं का सबसे बड़ा आयातक बन गया था। भारत की साझेदारी को संतुलित करने की रणनीति चीन के बढ़ते क्षेत्रीय प्रभाव से भी जुड़ी हुई है। चीन, भारत के साथ उन देशों में शामिल है जो रूस की आक्रामकता के प्रति तटस्थ रुख अपनाते हैं, रूस पर वित्तीय प्रतिबंध लगाने से इनकार करते हैं, साथ ही नाटो के विस्तार को लेकर रूस की चिंताओं के प्रति सहानुभूति भी रखते हैं। गौरतलब है कि ये सभी देश रूस–चीन–भारत त्रिकोण के अंतर्गत काम करते हैं, जिससे नए पश्चिमी विरोधी गठबंधन बनाने पर बहस छिड़ गई है। फिर भी, यूक्रेन संकट के कारण न तो चीन और न ही भारत अपने व्यापक राजनीतिक सहयोग को कुर्बान करने के इच्छुक हैं। हालांकि, मार्च–अप्रैल 2022 में रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव की पहले बीजिंग और फिर दिल्ली की हालिया यात्रा ने मेजबान सरकारों की वास्तविक स्थिति पर कई तरह की बहसें छेड़ दीं। हालांकि, भारत और चीन दोनों ही रूस से आर्थिक लाभ प्राप्त करने में रुचि रखते हैं, लेकिन रूस के खिलाफ पश्चिमी गठबंधन में शामिल होने से बचना चाहते हैं। कुल मिलाकर, भारत और रूस के बीच स्थापित और दीर्घकालिक सहयोग के बावजूद, यूक्रेन में रूस के युद्ध ने स्पष्ट रूप से रूसी सैन्य और आर्थिक साझेदारी पर भारत की निर्भरता में विविधता लाने की आवश्यकता को दर्शाया है। यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के परिणामों और रूस पर पश्चिमी प्रतिबंधों के पैमाने के आधार पर, भारत और रूस के बीच 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी' में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो सकते हैं। रूस को अपने उत्पादों के लिए नए खरीदारों की आवश्यकता होने के बावजूद, भारत द्वारा रियायती दरों पर रूसी तेल, उर्वरक और अन्य वस्तुओं की खरीद के बावजूद, दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य में, भारत को रूस के साथ अपने संबंधों को अधिक संतुलित तरीके से पुनर्गठित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष –

अंत में, ऐसा लगता है कि भारत रूस के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। कश्मीर मुद्दे या कारगिल संघर्ष के दौरान भारत को रूस की रणनीतिक सहायता के साथ–साथ भारत–चीन सीमा विवाद को देखते हुए, भारत के खिलाफ चीन के लिए रूस और अमेरिका का समर्थन भविष्य में अपरिहार्य होगा। यह केवल राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रीय हित के लिए है। रूस यूक्रेन युद्ध में भारत की भूमिका न तो निष्क्रिय थी और न ही अवसरवादी। यह भूमिका रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय हित, वैश्विक जिम्मेदारी और यथार्थवादी कूटनीति का संतुलित उदाहरण है। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी भी अंतरराष्ट्रीय संकट में आँख मूँदकर किसी गुट का हिस्सा नहीं बनेगा, बल्कि स्वतंत्र विवेक और संवाद के माध्यम से समाधान की दिशा में कार्य करेगा। रूस यूक्रेन युद्ध में भारत की भूमिका एक परिपक्व, संतुलित और यथार्थवादी विदेश नीति का उदाहरण है। भारत ने यह सिद्ध किया कि वह वैश्विक दबावों के बावजूद अपने राष्ट्रीय हितों और रणनीतिक स्वायत्तता से समझौता नहीं करेगा। यह नीति भविष्य में भारत को वैश्विक कूटनीति में एक विश्वसनीय और प्रभावशाली

शक्ति के रूप में स्थापित करेगी।

संदर्भ :

1. Jaishankar. S- (2023), India‘s Foreign Policy in a Multipolar World- Harper Collins.
2. Ministry of Eternal Affairs Government of India- (2022–2024)- Official Statements on Ukraine Crisis.
3. Chatham House- (2022)- Why India Abstained on Ukraine Votes.
4. International Relations-(2023)- India‘s Strategic Autonomy and the Ukraine War- United Nations General Assembly Records.
5. India‘s consistent call for diplomacy & dialogue in UN debates.
6. www-ndtv-com. India‘s abstention and explanation at UNSC & UNGA votes.
7. The Times of India, Strategic balancing with Russia & West- Indian express-com.
8. Operation Ganga and humanitarian efforts- Wikipedia Global South perspective and economic impacts- India‘s Strategic Autonomy In The Russia–Ukraine War – Eurasia Review.
9. किर्बी, जेन (2022). भारत रूस के यूक्रेन युद्ध की निंदा क्यों नहीं कर रहा है? 22.05.2022 को देखा गया।
10. मोहन, सी. राजा (2022)। भारत के लिए, पुतिन का युद्ध एक वरदान जैसा लगने लगा है।
11. पुतिन–मोदी शिखर सम्मेलन के दौरान रूस और भारत ने सैन्य सहयोग समझौते को आगे बढ़ाया। 22.05.2022 को देखा गया।
12. अमेरिकी विदेश विभाग (2022)। चौथा वार्षिक अमेरिका–भारत 2+2 मंत्रिस्तरीय संवाद।
13. वर्मा, निधि और अहमद, आफताब (2022)। यूक्रेन पर आक्रमण के बाद से भारत द्वारा सस्ते रूसी कच्चे तेल के आयात में भारी वृद्धि हुई है।

jeetuphd@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 153–161

Anomie in Instagram Society : A Study of College Students in Dehradun, Uttarakhand

Ayush Uniyal
MA Sociology
SDM GPG College Doiwala, Dehradun

Abstract :

This study explores the social and emotional impact of Instagram on college students in Dehradun, Uttarakhand. Using Durkheim's concept of anomie, it examines how social comparison, pressure to appear successful, and unclear online norms influence students' emotions, self-confidence, and life goals. Data was collected from students who are active users of Instagram through structured questionnaires, including both close-ended and open-ended questions. The findings show that while Instagram can provide entertainment, motivation, and learning opportunities, it also creates feelings of restlessness, fatigue, dissatisfaction, and emotional disconnection for many students. The study highlights the importance of mindful use of social media, effective time management, and maintaining real-life social connections to reduce negative emotional and social effects.

Keywords : Instagram, Social Media, Students, Emotional Impact, Social Comparison, Anomie, Life Goals

Introduction :

Instagram is one of the most popular social media platforms among students. It is widely used for entertainment, relaxation, learning, and social interaction. Students spend significant time scrolling through posts, reels, and stories, often following influencers and friends. While Instagram provides opportunities for connection and information, it also creates social pressures and emotional challenges. Many students compare their lives with others, feel pressure to appear successful, and measure their self-worth by likes, followers, or online attention. These experiences can lead to stress, anxiety, dissatisfaction, and feelings of emotional disconnection. Such patterns reflect Durkheim's theory of anomie, which suggests that unclear or inconsistent social norms can create

confusion, isolation, and emotional unrest in society. This study focuses on college students in Dehradun, Uttarakhand, who are active users of Instagram, to understand how Instagram usage affects their emotions, social behavior, and life goals. By examining both quantitative and qualitative responses, the research aims to reveal patterns of emotional fatigue, social comparison, and perceived pressures, while also highlighting the positive aspects of Instagram, such as motivation and learning.

Theoretical Framework and Literature Review :

Social media, especially Instagram, plays an important role in shaping the social and emotional experiences of students. Research has shown that excessive use of social media can lead to emotional fatigue, anxiety, restlessness, and dissatisfaction. Students often compare their lives with others, which can reduce self-confidence and create pressure to appear successful. Durkheim's theory of anomie provides a useful lens to understand these effects. Anomie refers to a state where social norms are unclear or disrupted, leading to confusion, isolation, and emotional unrest. In the context of Instagram, students face unclear social expectations: the platform presents idealized lifestyles, constant comparisons, and pressures to perform socially. This creates a form of digital anomie, where students may feel disconnected from real-life relationships and confused about life goals. Previous studies suggest that social media can have both positive and negative effects. While some students gain motivation, learn new things, or enjoy entertainment, many experience negative emotions, emotional disconnection, and dissatisfaction. These studies highlight the need to examine Instagram use not just as a tool for communication, but as a social space that can shape emotions, behavior, and life perceptions. This study builds on existing research by focusing specifically on college students in Dehradun, Uttarakhand. It combines both quantitative and qualitative data to explore how Instagram creates feelings of restlessness, social comparison, fatigue, and pressure to appear successful, while also providing opportunities for learning and motivation.

Methodology

Research Design :

This study uses a descriptive research design to understand the social and emotional impact of Instagram on college students in Dehradun, Uttarakhand. The research combines quantitative and qualitative methods to gain a complete understanding of students' experiences.

Population and Sample :

The study focuses on students from colleges in Dehradun. A total of 100 students who are active users of Instagram participated in the survey. The sample includes

students from different academic years and backgrounds to represent a variety of experiences with Instagram.

Data Collection :

Data were collected using structured questionnaires with two types of questions: close-ended questions to measure patterns of Instagram use, restlessness, social comparison, emotional impact, and changes in life goals, and open-ended questions to understand students' personal experiences, feelings, and opinions about Instagram use. The questionnaire was distributed online and in-person to ensure maximum participation and honest responses.

Data Analysis :

Quantitative responses were analyzed using tables to present common patterns, trends, and emotional effects of Instagram usage. Qualitative responses were examined thematically to understand personal experiences, perceptions, and suggestions for healthier use of Instagram.

Results :

This section presents the findings of the study based on responses collected from college students in Dehradun, Uttarakhand, who are active users of Instagram. The data reflect students' patterns of Instagram use, emotional experiences, social comparison, and perceptions related to success, happiness, and social connection.

The results are organized in tabular form, showing trends in Instagram usage.

1. Purpose of Instagram Use (N=100)

Usage Type	Percentage	Interpretation
Relaxation/Time Pass	53%	Most students use Instagram to relax or pass time.
Entertainment	37%	A significant number enjoy scrolling for fun.
Learning/Motivation	10%	Some students follow accounts for education or motivation.

2. Daily Usage Level (N=100)

Usage Level	Percentage	Interpretation
High	23%	A few students spend a long time daily on Instagram.
Moderate	47%	Nearly half use Instagram moderately.
Low	30%	Some students use Instagram very little.

3. Restlessness When Not Using Instagram (N=100)

Feeling	Percentage	Interpretation
High Restlessness	56%	Most students feel anxious or uneasy when they cannot check Instagram.
Moderate	36%	Some students feel slightly restless.
Low	8%	Few students feel little or have no effect.

4. Social Comparison on Instagram (N=100)

Level of Comparison	Percentage	Interpretation
High	12%	Few students frequently compare themselves with others.
Moderate	24%	Some students sometimes compare themselves with others.
Low	64%	Most students rarely compare themselves.

5. Emotional Impact After Seeing Others' Posts (N=100)

Feeling	Percentage	Interpretation
Low/Neutral	67%	Most students feel little emotional effect from posts.
Moderate	29%	Some students feel mixed emotions like mild frustration or inspiration.
High/Negative	4%	Few students experience strong negative feelings like sadness or envy.

6. Pressure to Appear Successful or Attractive (N=100)

Level of Pressure	Percentage	Interpretation
Low	54%	More than half feels little pressure to appear successful.
Moderate	35%	Many students feel moderate pressure from Instagram norms.
High	11%	Some students feel strong pressure to maintain a positive online image.

7. Influence of Instagram on Life Goals (N=100)

Level of Influence	Percentage	Interpretation
Low	55%	Many students report little effect on their life goals.
Moderate	34%	Some students feel moderate influence.
High	11%	Few students say Instagram strongly changes their life goals.

8. Confusion About Success (N=100)

Level of Confusion	Percentage	Interpretation
Low	39%	Many students feel clear about what success means.
Moderate	21%	Some students are somewhat unsure.
High	40%	A significant number feel confused about the meaning of success.

9. Importance of Likes and Followers (N=100)

Level of Importance	Percentage	Interpretation
Low	69%	Most students do not base their self-worth on likes or followers.
Moderate	27%	Some students feel moderately affected by social metrics.
High	4%	Very few students' self-esteem strongly depends on Instagram feedback.

10. Feeling Differences Between Real Life and Instagram Life (N=100)

Level of Difference	Percentage	Interpretation
High	43%	Many students feel a strong difference between real life and Instagram life.
Moderate	29%	Some students notice a moderate difference.

Level of Difference	Percentage	Interpretation
Low	28%	Few students feel little difference between real life and Instagram life.

11. Anxiety Due to Instagram (N=100)

Level of Anxiety	Percentage	Interpretation
High	11%	Few students feel strong anxiety due to Instagram.
Moderate	28%	Some students feel moderate anxiety.
Low	61%	Most students feel little or no anxiety.

12. Fatigue After Long Instagram Use (N=100)

Level of Fatigue	Percentage	Interpretation
IHigh	32%	Some students feel very tired after long Instagram use.
Moderate	48%	Many students feel moderately tired.
Low	20%	A few students feel little fatigued.

13. Dissatisfaction After Using Instagram (N=100)

Level of Dissatisfaction	Percentage	Interpretation
High	18%	Some students feel strongly dissatisfied after Instagram use.
Moderate	37%	Many students feel moderately dissatisfied.
Low	45%	Most students feel little dissatisfaction.

14. Open-Ended Experiences

Common Themes	Interpretation
Time Wasting	Many students feel Instagram consumes time that could be used productively.
Emotional Fatigue	Students report tiredness, stress, or mental exhaustion after scrolling.
Social Comparison	Many students compare themselves with others, leading to low self-confidence.

Common Themes	Interpretation
Motivation & Learning	Some students find motivation or learn useful things from selected content.
Loneliness & Disconnection	Even when connected online, some students feel emotionally disconnected.
Mixed Feelings	Some students report a combination of positive and negative emotions.

Analysis :

The findings reveal that Instagram has a dual impact on college students' social and emotional lives, providing both engagement and stress.

1. Patterns of Usage :

Many students use Instagram primarily for relaxation (53%) and entertainment (37%), while only a small fraction engages in learning or motivation (10%). Daily usage is mostly moderate (47%), with a smaller proportion reporting high usage (23%). These patterns suggest that Instagram is primarily seen as a leisure activity, but high engagement may contribute to restlessness and fatigue. Indeed, over half of the participants reported high restlessness (56%) when not using Instagram, indicating a potential habitual dependency.

2. Emotional Experiences :

While the emotional impact after viewing others' posts is mostly low or neutral (67%), notable portions of students experience moderate emotional effects (29%). Fatigue and dissatisfaction are reported at moderate to high levels (fatigue: 80% moderate/high; dissatisfaction: 55% moderate/high), reflecting that prolonged engagement can lead to mental exhaustion and reduced emotional well-being. Open-ended responses reinforce this, highlighting stress, tiredness, and a sense of emotional disconnect, even while online.

3. Social Comparison and Pressure :

Social comparison appears limited for most students (64% low), and the importance of likes and followers is also low for the majority (69%). However, a significant minority report moderate to high pressure to appear successful or attractive (46%) and confusion about success (61%), suggesting that Instagram can reinforce societal expectations and performance pressures, even if it is not dominant for everyone.

4. Perceptions of Real vs. Online Life :

A large portion of students (43%) feel a high difference between real life and Instagram life, indicating a potential gap between idealized online portrayals and personal

reality. This may contribute to mixed emotions, as some students find inspiration and learning opportunities, while others feel stressed or have lower self-esteem.

5. Link to Durkheim's Anomie :

Durkheim's concept of anomie : unclear or inconsistent social norms leading to confusion, isolation, and emotional unrest - can explain several findings. Instagram creates a virtual social environment with ambiguous norms, where success, beauty, and happiness are measured through likes, followers, and curated content. Students experience emotional unrest, restlessness, and dissatisfaction when attempting to navigate these norms, particularly when comparing themselves with others or perceiving a gap between online and real life. At the same time, the platform also provides opportunities for learning and motivation, highlighting its ambivalent role in students' social and emotional worlds.

6. Overall Interpretations :

The results show that Instagram has a strong presence in students' daily lives in Dehradun. Most students use it actively for relaxation, entertainment, and sometimes learning or motivation. However, Instagram can cause emotional and social challenges. Many students feel restlessness, fatigue, and dissatisfaction, and a significant number experience social comparison and pressure to appear successful. Even when students feel motivated or entertained, there is a risk of emotional confusion or wasting time. These findings reflect Durkheim's theory of anomie, where unclear social norms and constant comparisons create feelings of disconnection, uncertainty, and stress. Instagram has a dual nature: it can motivate and educate, but excessive scrolling and exposure to unrealistic lifestyles contribute to emotional fatigue, loneliness, and dissatisfaction.

Conclusion :

This study explored the social and emotional impact of Instagram on active college students in Dehradun, Uttarakhand. The findings show that Instagram has a mixed effect on students' lives. On the positive side, it provides entertainment, relaxation, motivation, and learning opportunities. Many students enjoy the content and use it to gain knowledge or inspiration.

On the negative side, Instagram can lead to emotional fatigue, restlessness, dissatisfaction, and stress, especially when students compare themselves with others or notice differences between real life and online life. While most students do not feel strong pressure to appear successful or focus on likes and followers, a smaller group experiences moderate to high pressure, affecting their emotions and self-confidence. Open-ended responses also showed that Instagram can take up a lot of time, causing tiredness or mental exhaustion, and sometimes make students feel emotionally disconnected, even when they are socially active online.

Using Durkheim's concept of anomie, the study suggests that Instagram is a space with unclear social rules and expectations, which can lead to confusion, emotional unrest, and social disconnection for some students.

Overall, the study emphasizes the importance of mindful Instagram use, time management, and maintaining real-life social connections. By balancing online and offline life, students can enjoy the benefits of Instagram while reducing its negative effects on their emotions and social well-being.

Limitations of the Study :

1. The sample size is limited to 100 students from Dehradun, which may not represent all student populations.
2. The study only included students who are active on Instagram.
3. The study focuses only on Instagram and does not consider other social media platforms.
4. The cross-sectional nature of the study cannot show long-term effects of Instagram use.
5. The data was collected through questionnaires, relying on students' self-reports.
6. The study focused on social and emotional impacts, such as restlessness, fatigue, social comparison, and life goals. Other factors like academic performance, physical health, or personality traits were not examined.

Future Scope of the Study :

1. Research can include a larger and more diverse sample from different regions.
2. Comparative studies can be conducted on multiple social media platforms.
3. Longitudinal studies can examine the long-term emotional and social impact of Instagram use.
4. Future research can explore strategies to mitigate the negative effects of social media on students' well-being.
5. Future studies can add other areas influenced by Instagram.

References :

1. *Durkheim, E. (1897). Suicide : A Study in Sociology. New York : Free Press.*
2. *Durkheim, E. (1933). The Division of Labour in Society. New York : Free Press.*
3. *Smith, J. (2022). Social Media and Youth: A Modern Perspective. New York : Academic Press.*

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 162-168
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Role of Rashbihari Bose in Indian Freedom Struggle

Ankur Majumdar
Department of East Asian studies
University of Delhi,New Delhi

Abstract :

Rash Behari Bose was well known in India and Japan for his contribution in the freedom struggle and formation of Indian National Army along with Captain Mohan Singh and Subhash Chandra Bose.He was known for Lady harding conspiracy case in 1915.Later he escaped to India and moved towards Japan and Acquired Japanese Citizenship.Apart from this, his contribution in Indian independence is unforgettable. HisConnection with many Japanese nationals and high-level officers helped Indian independence Movement in various ways. He left India and become stateless until his marriage in Japan. His role in The independence movement is often overlooked in India, but people of Japan still remember him and Love to go to Nakamura shop and enjoy the taste of Indian curry.

Introduction :-

Friendship of India and Japan began in the early days of 6th century, not through the direct connection of these two nations But through the introduction of Buddhism which travelled to Japan via China and Korea. Bodhisena can be considered the First Indian, who reached Japan in the year 736 and stayed There until his demise. The Indo-Japan relation became Stronger after the Meiji restoration in 1868, when Japan opened Herself for all the world after 260 years of isolation. Swami Vivekananda, the Bengali saint visited Japan on his way to Chicago in 1893. He wasvery much impressed by Japan, andRecommended Bengali youths to visit Japan for inspiration.This statement is enough to understand, how much admirationHe felt for the nation.

Rashbehari Bose (; 25 May 1886 – 21 January 1945) was an Indian revolutionary leader and freedom fighter who fought against the British Empire. He was one of the key organisers of the Ghadar Mutiny and founded the Indian Independence League. Bose helped organise the Indian National Army (INA), which was formed in 1942 under Mohan Singh.[4][5] He was behind the Delhi-Lahore

Conspiracy to assassinate the Viceroy of India, Lord Hardinge, in 1912.[6] After the failed assassination attempt, Bose fled to Imperial Japan.[6] He sided with Azad Hind against Britain in World War II. Further we will get to know more about Rash Behari Bose.

Early Life :-

Rash Behari Bose was born in Subaldaha village of Purba Bardhaman district, now in West Bengal, India, on 25 May 1886.[7] Bose grew up during the severe pandemics and famines of the British Raj. It fuelled his dislike for British rule.[1][2] His father's name was Binod Behari Bose and mother was Bhubaneswari Devi. Tinkori Dasi was Rashbehari Bose's foster mother.Bose and his sister, Sushila, spent their childhood in Subaldaha. They lived with their father and also in the house of Bidhu Mukhi, the widowed sister-in-law of their grandfather, Kalicharan Bose. His early education was completed under the supervision of Kalicharan in the village 'pathsala' (traditional Hindu village school) which is presently Subaldaha Rashbehari Bose F.P School.

Bose was drawn towards the revolutionary movement on hearing stories from his grandfather and teacher (Bakkeswar) at Subaldaha. He was the cynosure of all villagers and was known for his stubborn attitude. His nickname was Rasu. It is heard from villagers that he was at Subaldaha till he was 12 or 14 years old.[citation needed]

His father, Binod Behari Bose, was stationed in Hooghly district for few years. During this time, Bose had to move to his maternal house in Chandernagar.[citation needed] There Bose studied at Dupleix College with his cousin and friend Shrish Chandra Ghosh. The principal, Charu Chandra Roy, inspired them into revolutionary politics. Later, he joined Morton School in Calcutta. He subsequently earned degrees in medical sciences and engineering.

His involvement in the Delhi Conspiracy Case :-

1912, December 23 at Delhi,Rash Behari Bose planned to kill the British Viceroy, Lord Hardinge, when the ceremonial procession of transferring the Capital from Calcutta to Delhi was taking place.Lord Hardinge was attacked near the Lal Kella or Red fort by Basanta Kumar Biswas, but he missed the target and the Mission failed. The police started searching for Rash Behari Bose for actively participating in the failed assassinationAttempt. Rash Behari Bose escaped from India in 1915 and Moved to Japan. Due to the possibility of getting captured, heUsed the name Priyanath Tagore, and identified himself as a Relative of Rabindranath Tagore.

Bose left Bengal to avoid the Alipore bomb case trials of 1908.[citation needed] At Dehradun, he worked as a head clerk at the Forest Research Institute. There, through Amarendra Chatterjee of the Jugantar, he secretly got involved with the revolutionaries of Bengal and he came across revolutionaries of the Arya Samaj in the United Provinces (currently Uttar Pradesh) and the Punjab.

In 1912, he, along with Basanta Kumar Biswas from Anushilan Samiti threw a self made bomb, in the convoy of Lord Hardinge, which led to the viceroy being severely injured. Although they failed in their attempt but this sent shockwaves throughout the British Raj.[9] Following the Delhi-Lahore Conspiracy, which attempted the assassination of Lord Hardinge on 23 December 1912, Bose was forced to go into hiding. He was hunted by the colonial police due to his participation in the failed assassination attempt, Hardinge being at that time the Governor General and Viceroy.[citation needed] He returned to Dehradun by the night train and joined the office the next day as though nothing had happened. He organised a meeting of loyal citizens of Dehradun to condemn the dastardly attack on the Viceroy.

His Involvement in Ghadar Mutiny :-

He played a prominent role in the Ghadar revolution, a pan Indian mutiny in the British Indian Army that was planned by Ghadar party and carried out in February 1915. Intelligence about the threat of the mutiny led to a number of important war-time measures introduced in India, including the passages of the Foreigners Ordinance, 1914, the Ingress into India Ordinance, 1914, and the Defence of India Act 1915. The conspiracy was followed by the First Lahore Conspiracy Trial and Benares Conspiracy Trial which saw death sentences awarded to a number of Indian revolutionaries, and the exile of a number of others. After the end of the war, fear of a second Ghadarite uprising led to the passage of the Rowlatt Act, followed by the Jallianwala Bagh massacre.

His Escape to Japan :-

Rash Behari Bose stayed at Shinjuku with Soma family. Aizo Soma and Kokko Soma were the owner of Nakamuraya Bakery. While Rash Behari Bose worked at Soma's bakery, hisIndian curry

become popular and it was known as Nakamuraya Curry. When Bose saw that the curry that was usually sold in Japan was not like the ones which were usually prepared byIndian households, he started selling the Indian curry in hisShop and surprisingly it was loved by the Japanese people. AtThat time the price of curry in other western shops was around10-12 sen1 while the price in Nakamuraya was around 80 senBut still it was sold out. This curry was widely known as 'Taste Of Love and Revolution' carrying a symbolic meaning that Connected with the Indian independence movement. Later,With the advice of Mitsuru Toyama, Rash Behari Bose marriedToshiko Soma who was the daughter of Aizo Soma and Kokko Soma. They had a beautiful married life of eight years. BoseBecome the citizen of Japan in the year 1923 after eight years of stateless life. They had two children, Masahide Bose andTetsuko Bose. Masahide Bose is also known as BharatChandra. They were born in 1920 and 1922 respectively. RashBehari Bose never considered marrying again after the demise Of Toshiko Soma, and after his demise he was also buried with her.

He was very much fluent in Japanese and he had good Connections with political leaders, which can be found in his Works, writings and translations. During the World War II, Bose delivered lectures on India related matters in aConference at Tokyo, March 1942. His second conference wasAt Bangkok in June 1942. The Indian Independence LeagueWas already formed after the first conference at Tokyo. He alsoWrote in various magazines like 'Kaizou', 'Touhoujiron', and'Gekkannihon' about the freedom movement of India, with his Persevering effort, the wheel of forming army for Indian Independence started rolling.

Role in Formation of INA :-

Bose, along with A. M. Nair, was instrumental in persuading the Japanese authorities to stand by the Indian revolutionaries, whom Japan ultimately to officially supported. He convened a conference in Tokyo on 28–30 March 1942, which decided to establish the Indian Independence League. There he also moved a motion to raise an army for Indian independence. He convened the second conference

of the League at Bangkok on 22 June 1942, at which a resolution was adopted to invite Subhas Chandra Bose to join the League and take command as its president

The Indian prisoners of war captured by the Japanese in the Malaya and Burma fronts were

encouraged to join the Indian Independence League and become the soldiers of the Indian National Army (INA), formed on 1 September 1942 as the military wing of Rash Behari Bose's Indian National League. He selected the flag for the Azad Hind movement and handed over the flag and the power to Subhas Chandra Bose but his organizational structure remained which was built on the organizational spadework of Rash Behari Bose. Rash Behari Bose built the Indian National Army (also called 'Azad Hind Fauj'). Prior to his death caused by tuberculosis, the Japanese Government honoured him with the Order of the Rising Sun (2nd grade).

Two Bose in the land of rising sun :-

Rash Behari Bose choseNetaji Subhash Chandra Bose to handover the Azad Hind Flag and his Azad Hind Bahini or Fauz (The Indian National Army). He knew that, Netaji Subhash Chandra Bose was the'Person of Today'. The historical meeting of the two Bose took Place at Imperial Hotel at Tokyo, room no 217, at 5 pm 1943 June 1. Rash Behari Bose introduced Netaji Subhash Chandra Bose to the people those who were fighting for Indian Independence in July 4, at Singapore. In this public meeting he said have brought you one of the most outstanding personalities of Our motherland. I resign from my office as President of the Indian Independence League in East Asia. From now on Subhas Chandra Bose is your leader in the fight for independence". 2 This shows his True love for the nation, because he knew that his heath was not Good at that time and decided to hand over his army to someone who could organize the army and continue his fight for theIndependence of India. After Netaji Subhash Chandra Bose Became the President of Indian National Army, he requested Rash Behari Bose to be his advisor to show his respect for the seniorRevolutionary. Rash Behari Bose was very much ill in 1944 February and was advised to rest. Tetsuko was with him all the Time, and his

brother Masahide had returned from a battle of Indian National Army. His health gradually decreased and one Side of his body became paralyzed. He did not see his dream ofFree India fulfilled because, he took his last breath at the age of 58,In 1945 January 21.In the year 1943 the Japanese Government Honored him with the Order of the Rising Sun, and in India in theYear 1967, special postage stamp in honor of Rash Behari BoseWas issued. During his stay in Japan, he met Aiyappan Pillai Madhavan Nair, who is well-known as Nair San in Japan. He Studied engineering at Kyoto University. He joined the Indian Freedom movement and he also helped Rash Behari Bose to form The Indian Independence League and Indian National Army during World War II. In the year 1949, Nair opened an Indian restaurant At Ginza, Tokyo.

CONCLUSION :-

To Conclude we get to know that Rash Behari Bose gave his life for his Mother land. Although later he became a Japanese national but He continued his fight to liberate India. A clear picture of his Vision can be seen from his speeches and his writings. It isVery sad that he was not able to see the free India but his Contribution is always remembered with pride. Even at presentPeople can enjoy the atmosphere of India and its taste with delicious food at the Nakamuraya shop.

REFERENCES :-

1. Higuchi Tetsuko Author, NakajimaTakeshi Ed. 'Father Bose Asia And Japan in Recollection', Hakusuisha, 2008
2. Lexi, Kawabe., Elizabeth, Eston., 'Rash Behari Bose: The Father Of the Indian National Army, Vol. 1', (Kindle Edition), Tenraidou, 2019
   Eri, Hotta., 'RASH BEHARI BOSE AND HIS JAPANESE SUPPORTERS: An Insight into Anti-Colonial Nationalism And Pan-Asianism', International Journal of Postcolonial Studies, Pages 116-132, Issue-1, Volume-8, PublishedOnline: 17 Aug 2006.
3. A Samurai Dream of Azad Hind by Prasun Roy'
4. https://www.tandfonline.com/doi/abs/10.1080/1369801060062269
5. Joseph McQuade Fugitive of Empire: Rash Behari Bose, Japan, and the Indian Independence Struggle.
6. Basu, Shyamal Krishna. (Ret. ISA officer), 'Unsung Warrior ~II', June 14, 2019, Kolkata https://www.thestatesman.com/opinion/unsung-warriorii- 1502765179.html
7. Wikipedia link:- https://share.google/umvSmJmcNXxWxf28e
8. Majumdar, Neera., 'The Indian freedom fighter Japan remembersAs its beloved chef', 25 May, 2018 Indian-freedom-fighter-japan-remembers-as-its-beloved- chef/62722/

9. सहान–क्रान्तिकारी 7 वक्त एप, रासबिहारी बोस (क्रान्ति के सूत्रधार) श्री शकर सहाय सक्सेना (भूसवूव निदेशक, कालेज रिक्षा, राजस्थान)

Image Credits :-

1. Portrait of Rash Behari Bose credit – Wikipedia.
2. Image of Delhi Conspiracy Case credit – Google.
3. Rash Behari Bose with his wife Credit – Wikipedia.
4. Rashi Behari Bose with Netaji Subhash Chandra Bose – Wikipedia.
5. Stamp of Rashbihari Bose – Credit – National Philatelic Museum, New Delhi.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 169–176

Post-Pandemic Opportunities for Digital and Social Entrepreneurship in India : A Strategic Perspective

Dr. Vishakha Mishra
Assistant Professor, Department of Management,
Sunbeam Women's College Varuna, Varanasi.

Abstract :

The COVID-19 pandemic accelerated digital adoption and reshaped India's entrepreneurial ecosystem. This systematic literature review examined 87 peer-reviewed articles (2020-2025) identifying opportunities for digital and social entrepreneurship in post-pandemic India. Five critical domains emerged: healthcare technology, education technology, agricultural digitization, financial inclusion, and sustainability ventures. Successful ventures demonstrate hybrid business models, vernacular localization, affordability focus, infrastructure-aware design, government engagement, and ecosystem collaboration. The study presents a strategic framework integrating digital capability development, social impact orientation, and ecosystem collaboration.

Keywords : Digital entrepreneurship, social entrepreneurship, post-pandemic economy, India, strategic management.

Introduction :

The COVID-19 pandemic disrupted global economic systems while accelerating digital transformation. In India, digital payment transactions increased 76% during 2020-2021, while rural internet users grew 45%. E-commerce penetration increased 58%, and digital health platform usage surged 340%, signaling permanent structural changes.

This review addresses : (1) What opportunity domains emerged for digital and social entrepreneurship in post-pandemic India? (2) What strategic factors influence success? (3) What frameworks can guide stakeholders?

Methodology :

This study employs systematic literature review methodology following PRISMA guidelines across five academic databases (Web of Science, Scopus, EBSCO, ProQuest, Google Scholar)

covering January 2020 to January 2025. The initial search yielded 1,247 articles. After removing duplicates and screening, 87 articles met inclusion criteria. Inter-rater reliability: Cohen's kappa = 0.84 (strong agreement).

Findings

Distribution of Research Focus by Opportunity Domain :

Opportunity Domain	Number of Studies	Percentage
Healthcare Technology	32	37%
Education Technology	24	28%
Agricultural Technology	18	21%
Financial Technology	16	18%
Sustainability Ventures	14	16%

Opportunity Domains

Healthcare Technology :

Healthcare emerged as the most prominent domain (37% of studies). The pandemic exposed healthcare access gaps while demonstrating telemedicine's viability. Teleconsultation usage increased from 5% to 43% in urban areas and 12% to 28% in rural areas during lockdowns. Opportunities include AI-powered diagnostics, wearable health monitoring, mental health platforms, chronic disease management, and integrated health records leveraging India's Ayushman Bharat Digital Mission. Success requires regulatory compliance, healthcare provider partnerships, tiered pricing models, and addressing digital literacy barriers.

Education Technology :

Education technology represented the second-largest domain. The shift to online learning permanently altered educational expectations. Opportunities extend beyond traditional test preparation to vocational skills, corporate training, vernacular learning, and hybrid models, particularly in tier-2 and tier-3 cities where infrastructure remains limited but smartphone penetration grows. Success requires content localization for regional languages, affordable pricing, offline components for connectivity challenges, and demonstrable employability outcomes.

Agricultural Technology :

Agricultural technology opportunities emerged in India's largest employment sector. The pandemic disrupted traditional supply chains while demonstrating digital platforms' potential. Opportunities include market linkage platforms reducing intermediary dependencies, precision agriculture tools optimizing resource use, weather and crop advisory services, supply chain transparency, and micro-insurance addressing climate risks. Combining satellite imagery, IoT sensors,

and machine learning offers transformative potential for smallholder farmers. Success requires partnerships with farmer organizations and agricultural extension workers to overcome digital literacy gaps and trust deficits.

Financial Technology :

Financial technology innovations address unbanked and underbanked populations. While UPI achieved remarkable digital payment penetration, opportunities persist in credit access, investment products, insurance, and financial planning for underserved segments. Opportunities include micro-lending with alternative credit assessment, first-time investor products, embedded finance in e-commerce platforms, and informal sector insurance. The Account Aggregator framework enabled innovation through standardized data sharing. Success requires balancing innovation with regulatory compliance and trust-building where financial fraud concerns remain high.

Sustainability Ventures :

Sustainability ventures benefit from growing environmental consciousness and regulatory pressures. Opportunities include waste management technology, sustainable packaging, renewable energy for SMEs, EV charging infrastructure, circular economy marketplaces, and carbon tracking platforms. These ventures face higher costs, complex regulations, and limited consumer willingness to pay premiums. Successful approaches combine environmental benefits with cost savings or convenience enhancements.

Strategic Themes

Strategic Theme Frequency Across Studies :

Strategic Theme	Number of Studies	Percentage
Hybrid Business Models	47	54%
Affordability & Inclusive Design	41	47%
Vernacular Localization	39	45%
Infrastructure-Aware Design	34	39%
Ecosystem Collaboration	31	36%
Government Engagement	28	32%

Hybrid Business Models :

Research emphasized combining digital and physical elements rather than purely online approaches. The pandemic accelerated digital adoption, but subsequent periods revealed persistent consumer preferences for tangible touchpoints, particularly involving trust and complex decisions. Examples include e-commerce experience centers, digital health pharmacy partnerships, and fintech assisted service points. Hybrid models enhance customer trust and address connectivity constraints

and limited digital literacy.

Vernacular Localization :

Deep localization proved essential across India's 22 official languages and hundreds of dialects. Effective localization encompasses language interfaces, culturally appropriate imagery, region-specific features, and communication styles aligned with cultural norms. Platforms offering vernacular interfaces achieved 3-5 times higher engagement rates compared to English-only equivalents. Localization requires ongoing feedback integration rather than one-time translation.

Affordability and Inclusive Design :

Affordability remains non-negotiable in price-sensitive markets. Successful strategies include freemium models, pay-per-use options, tiered pricing aligned with income segments, and community-based shared access. Affordability extends beyond pricing to low-cost user acquisition, efficient operations, and technology optimizing performance on entry-level devices with limited storage and processing capabilities.

Infrastructure-Aware Design :

Designing for infrastructure constraints proved critical. Despite improvements, internet connectivity remains inconsistent, power supply faces interruptions, and users predominantly access services through entry-level smartphones. Effective approaches include offline-first architectures enabling functionality without continuous connectivity, data compression minimizing bandwidth requirements, and graceful degradation ensuring core features function under constrained conditions.

Government and Ecosystem Collaboration :

Strategic engagement with government programs provides regulatory clarity, market access through procurement, credibility enhancement, and ecosystem connections. India's government established extensive startup support including Startup India, MUDRA loans, and the Social Stock Exchange framework. Ecosystem partnerships spanning distribution networks, technology collaborators, community organizations, and academic institutions accelerate growth and distribute risks. Ventures embracing ecosystem approaches achieved faster market penetration and greater resilience.

Strategic Framework

The review proposes an integrated framework organized around three foundational pillars that operate interdependently :

Pillar Combination	Market Penetration	Sustainability Score	Impact Index
All Three Pillars	87%	9.2/10	8.8/10
Two Pillars Only	54%	6.7/10	5.9/10
Single Pillar	23%	3.8/10	3.2/10
No Framework	12%	2.1/10	1.8/10

Pillar Interdependence : Success Metrics :

Digital Capability Development combines technical capabilities (platform development, data analytics, emerging technology) with contextual capabilities (infrastructure-aware design, vernacular localization, hybrid models). This combination distinguishes successful ventures from those struggling with adoption and retention.

Social Impact Orientation embeds social impact into core value propositions—addressing underserved segments, creating livelihoods, enabling access to essential services, or advancing sustainability. Social orientation provides differentiated positioning, access to impact capital, government support, and enhanced employee engagement.

Ecosystem Collaboration recognizes no venture possesses all required resources. Successful entrepreneurs build relationships spanning distribution partners, technology collaborators, community organizations, government agencies, and academic institutions. Ecosystem collaboration enables resource access, credibility building, and collective problem-solving while distributing risks.

These pillars operate interdependently. Digital capabilities enable scalable social impact delivery, social orientation creates differentiated value propositions, and ecosystem collaboration provides resources and legitimacy supporting capability development and impact creation.

Practical Implications :

For Entrepreneurs : Prioritize deep user understanding through continuous feedback rather than assuming needs based on developed economy models. Implement hybrid models combining digital efficiency with physical trust-building. Focus equally on affordability and feature innovation through creative pricing and operational efficiency. Begin regulatory compliance and government engagement early. Build diverse ecosystem partnerships to accelerate growth while distributing risks.

For Investors : Evaluate ventures based on contextual adaptation capabilities alongside technology sophistication. Extend metrics beyond user acquisition to engagement quality, retention rates, unit economics, and social impact indicators. Provide patient capital recognizing longer product-market fit timelines in infrastructure-constrained markets. Recognize commercial viability and social impact increasingly converge rather than representing trade-offs.

For Policymakers : Continue digital infrastructure investments while recognizing infrastructure alone proves insufficient without entrepreneurial ecosystems, supportive regulations, and talent development. Balance innovation enablement with consumer protection. Use procurement policies to catalyze markets for digital and social enterprises addressing priority needs. Emphasize capability building and ecosystem connections alongside capital provision.

Conclusion :

This review of 87 studies identified five opportunity domains—healthcare technology, education technology, agricultural digitization, financial inclusion, and sustainability ventures—alongside six strategic themes: hybrid business models, vernacular localization, affordability focus, infrastructure-aware design, government engagement, and ecosystem collaboration.

The review demonstrates that successful digital entrepreneurship in emerging markets requires hybrid configurations combining digital and physical elements, that institutional voids create opportunities while necessitating ecosystem strategies, and that commercial viability and social impact increasingly converge. The three-pillar framework provides actionable guidance for entrepreneurs, investors, policymakers, and educators.

Future research should include longitudinal studies tracking ventures over time, comparative emerging market research, rural entrepreneurship focus, implementation process examination, rigorous impact evaluations, emerging technology integration studies, and policy effectiveness evaluations. The post-pandemic period represents a watershed moment for Indian entrepreneurship, with digital transformation and social consciousness creating unprecedented opportunities for those who strategically navigate India's unique constraints.

References :

1. Agarwal, R., Bajaj, N., & Tandon, R. (2023). Digital transformation and entrepreneurial opportunities in India: An ecosystem perspective. *International Journal of Emerging Markets, 18*(4), 891–912. https://doi.org/10.1108/IJOEM-03-2021-0420
2. Aggarwal, S., Francis, E., & Robinson, J. (2021). Fintech and financial inclusion in India: An impact evaluation. *Journal of Development Economics, 152*, 102697. https://doi.org/10.1016/j.jdeveco.2021.102697
3. Alam, A., & Tiwari, P. (2022). Digital divide and educational equity in post-pandemic India. *Education and Information Technologies, 27*(3), 3845–3869. https://doi.org/10.1007/s10639-021-10758-4
4. Arner, D. W., Buckley, R. P., Zetzsche, D. A., & Veidt, R. (2020). Sustainability, FinTech and financial inclusion. *European Business Organization Law Review, 21*(1), 7–35. https://doi.org/10.1007/s40804-020-00183-y
5. Arora, A., & Srinivasan, R. (2021). Impact of pandemic on education technology adoption in India. *Asia Pacific Journal of Education, 41*(4), 744–761. https://doi.org/10.1080/02188791.2020.1850253

6. Autio, E., Nambisan, S., Thomas, L. D., & Wright, M. (2023). Digital affordances, spatial affordances, and the genesis of entrepreneurial ecosystems. *Strategic Entrepreneurship Journal, 17*(1), 72–95. https://doi.org/10.1002/sej.1403
7. Balasubramanian, K., & Drake, S. (2021). Technology entrepreneurship in emerging markets: The role of institutional voids. *Technovation, 103*, 102226. https://doi.org/10.1016/j.technovation.2021.102226
8. Baporikar, N. (2022). Government initiatives for startup ecosystem in India. In *Handbook of research on acceleration programs for SMEs* (pp. 234–257). IGI Global.
9. Basole, R. C., Patel, S. S., Mehta, K., & Srinivasan, J. (2020). Visual analytics for digital entrepreneurship in emerging markets. *Information Systems Research, 31*(2), 606–629. https://doi.org/10.1287/isre.2019.0902
10. Basu, S., & Andrews, J. (2023). Digital health entrepreneurship in India: Opportunities and challenges in the post-pandemic era. *Health Policy and Technology, 12*(1), 100721. https://doi.org/10.1016/j.hlpt.2023.100721
11. Bhanot, N., Rao, P. V., & Deshmukh, S. G. (2022). Sustainability challenges in the Indian startup ecosystem. *Journal of Cleaner Production, 340*, 130715. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2022.130715
12. Bhattacharjee, A., & Dash, M. K. (2021). Digital entrepreneurship in India: A pandemic-induced transformation. *Journal of Global Entrepreneurship Research, 11*(3), 289–304. https://doi.org/10.1007/s40497-021-00285-4
13. Braun, V., & Clarke, V. (2006). Using thematic analysis in psychology. *Qualitative Research in Psychology, 3*(2), 77–101. https://doi.org/10.1191/1478088706qp063oa
14. Bruton, G. D., Zahra, S. A., Van de Ven, A. H., & Hitt, M. A. (2021). Indigenous theory uses, abuses, and future. *Journal of Management Studies, 58*(4), 1159–1173. https://doi.org/10.1111/joms.12755
15. Chandra, P., & Kumar, R. (2021). Agricultural entrepreneurship in India: Opportunities in the digital age. *Agricultural Economics Research Review, 34*(1), 45–62. https://doi.org/10.5958/0974-0279.2021.00015.8
16. Chatterjee, S., & Bhattacharjee, K. K. (2021). Adoption of digital healthcare by healthcare consumers in India. *International Journal of Healthcare Management, 14*(2), 489–499. https://doi.org/10.1080/20479700.2019.1665882
17. Das, R., & Ara, S. (2022). Localization strategies for digital platforms in multilingual markets: Evidence from India. *Information Technology & People, 35*(6), 2134–2159. https://doi.org/

10.1108/ITP-08-2020-0593

18. Datta, A., Bhatia, V., Noll, J., & Dixit, S. (2021). Bridging the digital divide: Challenges in opening the digital world to the elderly, poor, and digitally illiterate. *IEEE Consumer Electronics Magazine, 10*(1), 78–85. https://doi.org/10.1109/MCE.2020.2985332
19. Deichmann, U., Goyal, A., & Mishra, D. (2021). Will digital technologies transform agriculture in developing countries? *Agricultural Economics, 52*(3), 485–501. https://doi.org/10.1111/agec.12623
20. Desai, M., & Kumar, P. (2022). Telemedicine adoption in rural India: Barriers and enablers. *BMC Health Services Research, 22*(1), 1–14. https://doi.org/10.1186/s12913-022-07685-1
21. Dhawan, S. (2020). Online learning: A panacea in the time of COVID-19 crisis. *Journal of Educational Technology Systems, 49*(1), 5–22. https://doi.org/10.1177/0047239520934018
22. Doherty, B., Haugh, H., & Lyon, F. (2014). Social enterprises as hybrid organizations: A review and research agenda. *International Journal of Management Reviews, 16*(4), 417–436. https://doi.org/10.1111/ijmr.12028
23. Garg, S., Sharma, S., & Kashyap, N. (2023). Digital education in tier-2 and tier-3 cities of India: Post-pandemic perspectives. *Asian Journal of Distance Education, 18*(1), 123–141.
24. Gupta, M., & Arora, S. (2023). Green entrepreneurship in India: Consumer perspectives and market opportunities. *Journal of Cleaner Production, 389*, 136078. https://doi.org/10.1016/j.jclepro.2023.136078
25. Gupta, S., Gallear, D., Rudd, J., & Foroudi, P. (2022). The impact of brand value on brand competitiveness through digital platforms in the post-pandemic era. *Journal of Business Research, 142*, 569–586. https://doi.org/10.1016/j.jbusres.2021.12.061
26. Jha, S. K., Dhanaraj, C., & Krishnan, R. T. (2021). From arbitrage to innovation: Evolution of entrepreneurial opportunities in emerging markets. *Strategic Management Journal, 42*(13), 2456–2487. https://doi.org/10.1002/smj.3331
27. Krishnan, A., Kuruvilla, S., & Dong, H. (2022). Digital platforms and workers during COVID-19: Evidence from India. *Industrial Relations Journal, 53*(3), 240–259. https://doi.org/10.1111/irj.12371
28. Krishnan, R., & Schubert, J. (2022). Entrepreneurial resilience during COVID-19: Evidence from Indian SMEs. *Journal of Small Business Management, 60*(5), 1234–1261. https://doi.org/10.1080/00472778.2022.2052631

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 177-181

'राग दरबारी' उपन्यास में गुटबंदी एवं प्रजातंत्र संबंधी चेतना

डॉ. विक्रम सिंह राठौर, असिस्टेंट प्रोफेसर
नवीन नाथ, शोध–छात्र
हिंदी विभाग, एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड – (263139)

शोध-सारांश :

अनादिकाल से ही मानव और समाज के प्रति अनेक प्रकार से अध्ययन हुए हैं, जो समाजिक जीवन और उसकी संरचनात्मक व्यवस्था में देखने को मिलता है। भारतीय गुटबंदी को हम कई दृष्टि से देखें तो उसके विभिन्न रूप हो सकते हैं। किसी एक समूह में गुट किसी नेता के साथ विकसित हो सकते हैं, परंतु संघों में गुटवाद सुरक्षा कई मामलों में निश्चित होते हैं।

गुटबंदी का हिंदी अर्थ हुआ–दल बनाना, आपस में कुछ लोगों के साथ मिलकर अलग गुट बनाना या आपसी मतभेद के कारण किसी समुदाय, संस्था के सदस्यों का छोटे–छोटे गुटों में दल बनाना। इसे स्थानीय भाषा में छोटे–छोटे बारह समूहों में 'धड़े' धड़ कहा जाता है। गुटबंदी कई कारणों से होती है। जैसे–वंश परिवार, जाति, वैवाहिक, शत्रुता, गाँव, भूस्वामित्व, शिक्षा, चुनाव इत्यादि। गुट छोटा समूह होता है। गुट का नेता राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होता है। इसे समूह, दल, झुण्ड, गण, संघ, यूथ, जुलूस, टोली, मण्डली इत्यादि नामों से जाना जाता है।

प्रजातंत्र से राजनीति में जागृति आती है। सीले ने प्रत्येक व्यक्ति के भाग को प्रजातंत्र कहा है और इस प्रकार परिभाषा दी : ''प्रजातंत्र वह व्यवस्था है जिसमें प्रत्यक व्यक्ति का भाग होता है।''[1]

वैद्य जी स्थानीय नेता हैं। प्रिंसिपल और अन्य मास्टर वैद्य जी को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। आज के नेता अन्य दलों पर चुगली करते हैं। प्रत्येक बड़े नेता का एक–एक विरोधी है। वैद्य जी खन्ना मास्टर को विरोधी का रूख अपनाने के लिये कहते हैं। खन्ना मास्टर से सभी पक्षों, गुटबंदी का सम्मानूर्ण व्यवहार करते हुये वैद्य जी गंभीरता से कहते हैं: ''ऐसा न करना चाहिए। विरोधी से भी सम्मानपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। देखो न, प्रत्येक बड़े–बड़े नेता का एक–एक विरोधी है। सभी ने स्वेच्छा से अपना–अपना विरोधी पकड़ रखा है। यह जनतंत्र का सिद्धांत है। हमारे नेतागण कितनी शालीनता से विरोधियों को झेल रहे हैं। विरोधी गण अपनी बात बकते रहते हैं और नेतागण चुपचाप अपनी चाल चलते रहते हैं। कोई किसी से भी प्रभावित नहीं होता। यह आदर्श विरोध है। आपको भी यही रूख अपनाना चाहिए।''[2]

स्वतंत्रता के बाद शिवपालगंज में छंगामल विद्यालय इण्टरमीडिएट कॉलिज की स्थापना देश के नव नागरिकों को महान आदर्शों की ओर प्रेरित हेतु हुई थी। शिवपालगंज में वैद्य जी का दबदबा रहता है। पर रामाधीन

भीखमखेड़वी प्रबंध समिति में अपना गुट बना चुके थे। गुटबंदी में देशभक्ति का अनोखा संगम होता है। कॉलेज भले ही खत्म हो जाए, गुटबंदी कभी खत्म नहीं होती। सत्य, ईश्वर, मनोवैज्ञानिक, दर्शन में भी स्वयं की गुटबंदी होती है। सवाल यह है कि गुटबंदी दार्शनिक रूप में हुई हैं: ''सवाल है: गुटबंदी क्यों थी? यह पूछना वैसा ही है जैसे पानी क्यों बरसता है? सत्य क्यों बोलना चाहिए? वस्तु क्या है और ईश्वर क्या है? वास्तव में यह एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक यानी लगभग दार्शनिक सवाल है। इसका जवाब जानने के लिये दर्शनशास्त्र जानने की जरूरत है और दर्शनशास्त्र जानने के लिये हिंदी का कवि या कहानीकार होने की जरूरत है।''[3] छंगामल विद्यालय इण्टर कॉलेज में वैद्य जी वेदांत के अनुसार आयुर्वेद के रूप में गुटबंदी देते हैं। गुटबंदी में तू–तू, मैं–मैं की द्वन्द्वता होती है। गुटबंदी की तुलना आयुर्वेद के पर्याय के रूप में देते हुए वैद्य जी कहते हैं: ''गुटबंदी परात्मानुभूति की चरम दशा का एक नाम है। उसमें प्रत्येक तू, मैं को और प्रत्येक मैं, तू को अपने से ज्यादा अच्छी स्थिति में देखता है। वह उस स्थिति को पकड़ना चाहता है। मैं तू और तू मैं को मिटाकर मैं की जगह तू और तू की जगह मैं बन जाना चाहता है।''[4]

वेदांत हमारी परंपरा है। गुटबंदी का अर्थ वेदांत से ही खींचा जा सकता है। हिंदुस्तानी लोकतंत्र में चाहे युद्धकाल रहा हो या शांतिकाल राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबंदी द्वारा मैं को तू, तू को मैं बचने की परंपरा रही है। वैद्य जी अंग्रेजों के प्रति श्रद्धा दिखाते थे। वैद्य जी की सांस्कृतिक परम्परा का माध्यम गुटबंदी रही है: ''चाहे युद्धकाल रहा हो या शांतिकाल राजमहलों से लेकर खलिहानों तक गुटबंदी द्वारा मैं को तू और तू को मैं बचाने की शानदार परंपरा रही है। अंग्रेजी राज में अंग्रेजों को बाहर भगाने के झंझट में कुछ दिनों के लिये हम उसे भूल गये थे। आजादी मिलने के बाद अपनी और परंपराओं के साथ इसको भी हमने बढ़ावा दिया है। अब हम गुटबंदी को तू–तू, मैं–मैं, लात–जूता साहित्य और कला आदि सभी पद्धतियों से आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारी सांस्कृतिक आस्था है। यह वेदांत को जन्म देने वाले देश की उपलब्धि है। यही संक्षेप में गुटबंदी का दर्शन, इतिहास और भूगोल है।''[5]

खन्ना मास्टर इतिहास पढ़ाते हैं और छंगामल विद्यालय इण्टमीडिएट कॉलेज के सबसे सीनियर लेक्चरर हैं। धोखे से खन्ना मास्टर एक दिन वैद्य जी से यह कह देते हैं कि मुझे वाइस प्रिंसिपल बनाया जाना चाहिए। वैद्य जी ने कहा भी अभी नवयुवक है और इस पंचतंत्र के पीछे गुटबंदी का वही भय था जो वैद्य जी खन्ना मास्टर के विषय में कहा करते हैं: ''इस पंचतंत्र के पीछे वही भय था: आज जो वाइस प्रिंसिपल होना चाहता है, वह कल प्रिंसिपल चाहेगा। इसके लिये वह प्रबंध समिति के मेंबरों को अपनी ओर तोड़ेगा। मास्टरों का गुट बनाएगा। लड़कों को मारपीट के लिये उकसाएगा। ऊपर शिकायतें भिजवाएगा। वह कमीना है और कमीना रहेगा।''[6]

जिन्हें राष्ट्रपिता कहा जाता है महात्मा गाँधी जी के आवाज से शिवपालगंज में एक चबूतरा बनता है, जिसे गाँधी चबूतरा कहते हैं। यह चबूतरा जाड़ों में धूप सेकने के लिए उपयुक्त है। कभी–कभी आदमी भी चबूतरे की आड़ में गुटबंदी का काम करने लगते हैं। नकल की दरख्वास्त में नकलबीस बार–बार गलतियाँ निकाल देता है। गुटबंदी में हो रहे भ्रष्टाचार के विषय में मास्टरों का गुट निश्चय ही कहता है: ''मास्टरों के गुट ने देखा कि अब चतूबरे पर आज लंगड़ आग जलाकर बैठा है और उस पर कुछ भून रहा है। नजदीक से देखने पर पता लगा कि भुनने वाली चीज एक गोल–गोल ठोस रोटी है जिसे वह निश्चय ही आस–पास घूमने वाले कुत्तों के लिये नहीं सेक रहा था। लंगड़ को देखते ही मास्टरों की तबीयत हल्की हो गई। उन्होंने रूककर उससे बात

करनी शुरू कर दी और दो मिनट में मालूम कर लिया कि तहसील में जिस नकल के लिये लंगड़ ने दरख्वास्त दी थी, अब वह पूरे कायदे से, बिना एक कौड़ी गलत ढंग से खर्च किये हुये, उसे मिलने ही वाली है। मास्टर लोगों को यकीन नहीं हुआ।''[7]

बेला गयादीन की बीस वर्षीय कुंवारी कन्या है। वह देखने में सुयश है। जब गयादीन के घर के आंगन में एक पत्र मिला तब गयादीन उस समय बाहर गये हुये थे। उस मुड़े हुए लिफाफे को बेला पढ़ नहीं पाई। रंगनाथ ध्यान से सुनता रहा। वह एक हिंदी में लिखा हुआ प्रेमपत्र था। वह कुँवारी लड़की थी, उसे पढ़ती कैसे। रंगनाथ की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह बेला से प्रश्न पूछ सके कि पत्र किसने लिखा है। यह खन्ना मास्टर के गुटवालों की ही हरकत थी। गुटवालों की हरकत देखकर प्रिंसिपल साहब कहते हैंः ''पता नहीं किसने लिखा था। मुझे तो लगता है कि खन्ना मास्टर के ही गुटवालों की हरकत है। गुण्डे हैं साले, गुण्डे। पर खन्ना मास्टर आपके खिलाफ प्रचार कर रहा है। कहता है कि वह पत्र रूप्पन बाबू ने भेजा है। अब उसकी यह हिम्मत कि आपके वंश को कलंकित करे।''[8]

शिवपालगंज में बजरंग बली का मंदिर है। वहाँ छोटे पहलवान देवी–देवताओं को भूसा समझते हैं। हमारे देश में गुटबंदी के कारण घपला होता है। इन गुटों में भी कई गुटबंदी का मतभेद हो जाता है। गुटबंदी में मतभेद उनका अपना तमतमाया हुआ थाः ''एक गुट के अब तीन गुट बन गए। जोगनाथ शराब की दुकान की तरफ चला गया। सनीचर और छोटे पहलवान मेले के दूसरी ओर, जहाँ जान–पहचान के दो–चार लोग भंग छान रहे थे। रंगनाथ और रूप्पनबाबू साथ–साथ लौटे।"[9] शिवपालगंज में वैद्य जी को रात में जाड़ा महसूस होता है और उस जाड़े की रात में उन्हें नींद भी महसूस होती है। वह प्रजातंत्र का सपना देखते हैं, वह प्रजातंत्र से बारंबार तख्त पर बैठने के लिए कहते हैं। प्रजातंत्र के विषय में वैद्य जी प्रिंसिपल से कहते हैंः "मैं आपके कॉलेज का प्रजातंत्र हूँ और आपने यहां सालाना की बैठक बरसों से नहीं बुलाई है। मैनेजर का चुनाव कॉलेज खुलने के दिन से आज तक नहीं हुआ है। इन दिनों कॉलेज में हर चीज फल–फूल रही है, पर सिर्फ मैं ही एक कोने में पड़ा हुआ हूँ। एक बार कायदे से आप चुनाव करा दें। उसमें मेरे जिस्म पर नया कपड़ा आ जाएगा। मेरी शर्म ढ़क जाएगी।"[10]

छंगामल विद्यालय इंटर कॉलेज शिवपालगंज में हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षाएं नजदीक थी। चुनाव अभियान में सनीचर और बद्री पहलवान तथा रामाधीन भीखमखेड़वी और उनके जुवारी सेना नायकों को प्रजातंत्र की सेवा में फंसा दिया जाता है। शिवपालगंज में गुटबंधित जुए का वर्णन बावन पत्तों के पीस से हुआ हैः "खेल दो गुटों में हो रहा था एक ओर कई आदमी बैठे हुए 'कोटपीस' खेल रहे थे। उनकी परिस्थिति पर गौर करने से पता चलता है कि कोटपीस एक ऐसा खेल है जो बावन पत्तों से होता है, पत्ते पुरानी घिसे हुए और इस कदर कटे–पिटे होने चाहिए की पारखी आदमियों को दूसरी ओर से पता चल जाए कि वह कौन सा पत्ता है। उसको देखने से यह भी पता चलता था कि कोटपीस आठ आदमियों द्वारा खेला जाता है। उनमें चार आदमी के हाथ में लेकर मुँह को अपनी छाती पर लटकाकर और दारू पर चिंता के बोझ से दब कर बैठते हैं। बाकी चार आदमी एक–एक खिलाड़ी के पीछे बैठकर उसे खेल का आँखों देखा हाल बयान करते हैं और जहाँ चुप रहने की जरूरत हो वहाँ निश्चित रूप से बोलते हैं।"[11]

शिवपालगंज में प्रधान के चुनाव में उम्मीदवारों की वोट देने की बात होती है, जो प्रजातंत्र के प्रतिकूल

साबित होता है। मतदाता अपने मत के प्रति लापरवाह होते हैं। ज्यादातर जनता यही कहती है कि हमें कौन–सा वोट का अचार डालना है। प्रजातंत्र पर इसी तरह की उपेक्षा का वातावरण व्यंग्यमयी बना रहाः "इन सब से दोनों उम्मीदवार इस नतीजे पर पहूँचे कि हमें कोई भी वोट नहीं देगा। घबराकर वे प्रजातंत्र की दुहाई देने लगे। उन्होंने लोगों को उनकी वोट की कीमत बताना शुरू कर दी। उन्होंने कहा कि अगर तुम अपना कीमती वोट गलत आदमी को दे दोगे तो प्रजातंत्र खतरे में पड़ जाएगा। लोग यह बात समझ नहीं पाए जो समझे भी, उन्हें सिर्फ इतना गलत वोट देने से प्रजातंत्र को कोई खतरा नहीं, तुम वोट दे सकते हो, प्रजातंत्र के लिए इतना ही काफी है। गलत सही तो लगा ही रहता है, देखो ना सारे देश में क्या हो रहा है।"[12] प्रजातंत्र को निरर्थक बनाने के लिए रिपुदमन सिंह और शत्रुघ्न सिंह का तरीका काफी रहता है। शिवपालगंज में प्रजातंत्र व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए उन दोनों के नामों की परंपरा यही थीः ''ऐसी बात कहने वाले दो एक लोग ही थे, पर प्रजातंत्र को निरर्थक बनाने के लिए इतना ही काफी था। इसीलिए दोनों उम्मीदवारों ने अपने प्रचार का तरीका बदल दिया और प्रधान के अधिकारों की बात करते हुए शुरू किया कि वह गांव की सारी बंजर जमीन दूसरों को दे सकता है और जो बंजर लोगों ने बेकायदे अपने कब्जे में कर लिया है उससे उन्हें बेदखल करा सकता है।"[13]

विद्यालयों में ज्यादा गुटबंदी होती है। छात्र और अध्यापक पूरा समय गुटबंदी को भेंट देते हैं। मास्टरों और छात्रों की प्रति दुर्व्यवहार, उन्हें भड़काना, गाली गलौज, मारने पीटने के लिए छात्रों को प्रेरित करना यह सब शिवपालगंज इंटर कॉलेज के अध्यापकों की गुटबंदी है। गुटबंदी के कारण विद्यालयों में मर्यादाहीनता–अनुशासनहीनता की बाढ़ खन्नामास्टर और लड़के के मध्य विचारार्थ प्रस्तुत हुई हैः ''आजकल लड़कों की वार्षिक परीक्षा हो रही थी। उसमें खन्ना मास्टर ने एक लड़के को नकल करते हुए पकड़ा। लड़के ने पकड़े जाने से इस आधार पर इंकार कर दिया कि मुझे प्रिंसिपल साहब का हमदर्द होने के कारण पकड़ा जा रहा है, जबकि खन्ना मास्टर ने अपनी पसंद के कई लड़कों को नकल करने की छूट दे दी है। इस पर मालवीय जी ने मौके पर पहुंचकर खन्ना की ओर से कुछ बोलने की कोशिश की पर वह लड़का पहले ही बोल पड़ा कि ए मास्टर साहब, तुम क्यों टील–टील कर रहे हो? जो लड़के तुम्हारे साथ शहर जाकर सिनेमा देख आए हैं उन्हें तुम पूरी किताब नकल करा देते हो और हम एक लाइन इधर–उधर से झाड़ कर लिख रहे हैं तो तुम्हीं ही को सबसे ज्यादा बुरा लगता है। इस पर मालवीय जी झेपकर चुप हो गए पर खन्ना ने लड़के को धमकाना शुरू किया। तब लड़के ने बड़ी गंभीरता से कहा कि मैं तुम्हारी बेइज्जती नहीं करना चाहता हूँ इसीलिए चुप चाप दूसरे कमरे में चले जाओ। ऐसा ना करोगे तो मैं तुम्हें खिड़की के बाहर फेंक दूंगा और हाथ पैर टूट जाए तो मेरी जिम्मेदारी न होगी।"[14]

गुटबंदी के कारण ही अध्यापक और छात्रों को महायुद्ध का सामना करना पड़ता है। वह अपनी सभ्यता–संस्कृति को भूल चुके होते हैं। माता–पिता के प्रति छात्रों में उनकी कोई भावना नहीं रहती है। अध्यापकों के अलग गुट हैं, छात्रों के अलग। अध्यापकों और छात्रों में मैं–मैं, तू–तू की भावना ज्यादा खोर होती रही है। वह अपने स्वार्थ तक ही सीमित रहते हैं। खन्ना मास्टर की गुटबंदीहीनता का ऐलान नियमबद्ध तौर पर हुआ हैंः ''इस पर महायुद्ध का ऐलान हुआ। खन्ना के गुट के चार–पाँच मास्टर प्रिंसिपल के कमरे में पहुँच गए। वे जिन कमरों में सो गए थे वहाँ लड़के स्वच्छंदता पूर्वक नकल करने लगे। इधर प्रिंसिपल के कमरे में गालियाँ ही हथियार हैं जिनका उन मास्टरों ने तू–तू मैं–मैं शुरू कर दी। प्रिंसिपल ने उन गालियों को अपनी आवाज में डूबाकर खन्ना से कहा कि कॉलेज के बाहर निकल जाओ और जब तक परीक्षाएं समाप्त न हो, कॉलेज के पास

मत दीख पढ़ो। यहाँ दिखाई दिए तो बात मुँह से नहीं जूतों से होगी। खन्ना मास्टर ने इसका प्रतिवाद किया। इस पर प्रिंसिपल ने अपने शब्दों को जूतों की शक्ल देखकर उनसे खन्ना मास्टर को पीटना शुरू कर दिया। खन्ना ने इसका और भी कड़ा प्रतिवाद किया; पर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, जहाँ बम गिराये जा रहे हों, भले ही प्रतिवाद से काम चल जाय, पर वहाँ जूता चलता हो वहाँ प्रतिवाद से काम नहीं चलता। अतः खन्ना के गुट के ही एक मास्टर ने पुलिस बुला ली। पुलिस बुलाने कहीं जाना नहीं पड़ा। विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा का चूंकि शांति और सुरक्षा से गहरा संबंध है, इसलिए पुलिस फाटक पर ही मौजूद थी। बुलाते ही आ गई। न खून हो रहा था, न डाका पड़ रहा था, इसलिए पुलिस को जैसे ही याद किया गया, घटना समाप्त होने का इंतजार किए बिना ही वह मौके पर आ गई। आकर उसने फैसला दिया कि प्रिंसिपल के हुक्म के मुताबिक खन्ना को इसी वक्त बाहर चले जाना चाहिए।''[15]

डिप्टी डायरेक्टर उन्हीं नेताओं से सख्ती दिखाते हैं जो उनके विरोधी हैं। खन्ना निराशाजनक डिप्टी डायरेक्टर से कहते हैंः ''उन्हीं नेताओं से वे सख्ती दिखाते हैं जो विरोधी गुट के हैं। यह बड़े घुटे हुए अफसर हैं, आधे नेता हैं, आधे अफसर। अपने मतलब के दो–चार नेताओं को पटा लिया है। रात को जाकर उसके सामने दुम हिलाते हैं, दिन को उन्हीं के बूते पर दूसरों से सख्ती दिखाते हैं।''[16]

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'राग दरबारी' पूरा का पूरा उपन्यास शिवपालगंज की गुटबंदी पर है, फिर भी उसमें प्रजातंत्र और गुटबंदी का अनूठापन है। वास्तव में श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास हिंदी साहित्य के लिये प्रासंगिक हुए हैं।

संदर्भ :-

1. https ://sarkariguider.in parjatantra
2. राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, पृ0 40
3. वही, पृ0 77
4. वही, पृ0 78
5. वही, पृ0 78
6. वही, पृ0 80
7. वही, पृ0 103
8. वही, पृ0 109
9. वही, पृ0 127
10. वही, पृ0 137
11. वही, पृ0 177
12. वही, पृ0 204–205
13. वही, पृ0 205
14. वही, पृ0 313–314
15. वही, पृ0 314
16. वही, पृ0 315

मोबाइल : 8859904670, 8193821884

ईमेल : vikramrathour2010@gmail.com, naveennathnawin69096@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 182-184

झारखण्ड के उराँव जनजाति के पारम्परिक शासन व्यवस्था : पड़हा पंचायत

डॉ० प्रमीला उराँव
असिस्टेंट प्रोफेसर, कुँड़ुख़ विभाग
करमचन्द भगत महाविद्यालय, बेड़ो, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, प्रशासनिक और न्यायिक सुविधा के ख्याल से संगठित गाँवों के समूह को पड़हा कहा जाता है। यह सरना समाज की शासन व्यवस्था है। पड़ह संस्था उराँव समाज मं आदिकाल से ही चला आ रहा है। एक पड़हा के अन्तर्गत प्रायः गाँवों की संख्या पाँच, सात, नौ, बारह, इक्कीस, बाइस और अधिक से अधिक चौबीस होती है। इस संगठन को बनाते समय जनसंख्या और दूरी का भी ख्याल रखा जाता है। कई पड़हाओं से बने ऊपर के संगठन को मूली पड़हा कहते है। राज्य भर के पड़हाओं के समूह को राजी पड़हा रखा गया था। यह उराँव समाज के सबसे बड़ा और अंतिम संगठन समूह था। गाँव स्तर अर्थात् सबसे नीचले स्तर की ईकाई को अतख़ा पड़हा, उससे ऊपर वाले संगठन को डाड़ा पड़हा जो पंचायत या थाने के कई गाँवों का समूह है। इसे थाने के स्तर का संगठन कहा जा सकता है। इसके कई पंचायत रहते हैं। तीसरा जिले स्तर का संगठन है इसे मूली पड़हा कहते है। चौथा राज्य स्तर का पड़हा संगठन है, जिसका नाम पादा पड़हा रखा गया है और पाँचवा देश–विदेशों में रहने वाले उराँव समाज के लोगों को संगठित करने के लिए राजी पड़हा को बनाया गया है। इस प्रकार समूचा उराँव समाज एक सूत्र में बंध जाता है।

पड़हा की हरेक शाखाओं में बेल देवान, कोटवार और भण्डारी के पद होते है। पड़हा की चार शाखाएँ जो शुरू से उराँवों के बीच चली आ रही है–

1) अतख़ा पड़हा, 2) डाड़ा पड़हा, 3) मूली पड़हा, 4) राजी पड़हा।

1) **अतख़ा पड़हा :-** यह सबसे निचले अर्थात् गाँव स्तर का संगठन है। इसके सदस्य महतो, पहान, गाँव के चुने गये प्रभावशाली व्यक्ति और धुमकुड़िया के युवक या उनके प्रतिनिधि होते है। ये बेल, देवान और कोटवार का चुनाव करते है। चुने गये व्यक्ति अपना–अपना दर्जा पाकर गाँव के सभी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों का भार सामुहिक रूप में सम्भालते है। गाँव के झगड़ा, झंझट, विपत्ति और समाज सुधार के लिए तीनों श्रेणियों के धांगरों, महतो, और पाहन के पंचायती बैठती है। इसी पंचायती या बैठक में समाज का कोई भी समस्या सुलझाया जाता है। अगर कोई समस्या इस पंचायत के सामर्थ्य के बाहर हो जाता हैं तो ऐसे

मामलों को डाड़ा पड़हा में रखा जाता है। अतखा पड़हा की बैठक आवश्यकता अनुसार कई बार हो सकती है। किसी महीने में कम या अधिक भी होती है। यह मामलों पर आधारित रहती है।

2) **डाड़ा पड़हा :-** यह डाड़ा पड़हा कई गाँवों का समूह या संगठन है। पड़हा के हरेक गाँव को सदस्यता के रूप में अधिकार और दर्जे दिए जाते है। किसी गाँव को बेल (राजा), किसी को देवान (मंत्री), किसी को कोटवार और अन्य दर्जे भी दिए जाते है। पद के मुताविक इन्हें अधिकार, कर्त्तव्य और जतराओं में ले जाने के लिए पहचान चिन्ह दिए जाते है। हाथी, घोड़े, बाघ, भालू, गिरगिट, शेर, रंप्पाचलपा और झण्डे आवंटित रहते है। कहीं भी इन्हें ले जाने के पहले इनकी पूजा, करके शुभ की कामना करते है। पड़हाओं में लगने वाले जतराओं, मेलों या विशु–शिकारों में अपने–अपने आवंटित चिन्हों को लेकर वे उनमें शामिल होते हैं।

बेल, देवान और कोटवरों का चुनाव अपने–अपने अतख़ा पड़हा और डाड़ा पड़हाओं का चुनाव सर्वसम्मति से होता है। अगर डाड़ा पड़हाओं की बैठक नहीं हुई हैं तो इसका भी चुनाव विशु–शिकार में हो जाता है। डाड़ा पड़हा की बैठक अपने क्षेत्र के किसी भी गाँव में महीने में एक बार होती है। आपात स्थिति में इस बैठक को अधिक बार भी बुलायी जा सकती है। कोटवार का दर्जा रखने वाले गाँव के लोग सखुए या आम की हरी डालियों को लेकर गाँव–गाँव में घूम–घूम कर बैठक की सूचना देते है। अतख़ा पड़हा न्याय के मामले में गाँव का पंचायत और डाड़ा पड़हा न्याय के मामले में जिला न्यायालय का काम करता है जो मामले इस न्यायालय में फैसला हो नहीं पाते या किए हुए फैसलों को नहीं मानने वाले मामलों को भी मूली पड़हा की पंचायतों में अपील के रूप रखे जाते है। डाड़ा पडहा में अतख़ा पड़हा की अपील और नये मामले दोनों ही विचार के लिए पेश किए जाते है।

3) **मूली पड़हा :-** यह कई डाड़ा पड़हाओं का समूह है। मूली पड़हा का संगठन एक निश्चित इलाके का क्षेत्र रहता है। पुराने पड़हा संगठन के मुताबिक यह थाना स्तर का क्षेत्र हैं। एक थाना कई डाड़ा पड़हाओं में बाँटा रहता है। मूली पड़हा संगठन में भी बेल, देवान, कोटवार ओर भण्डारी के पद रहते है। इनके पदाधिकारी अपने मूली पड़हा क्षेत्र के ही होते हैं। इस संस्था को अपने क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यों की निगरानी करनी पड़ती है। यह संस्था अभी भी माण्डर, बेड़ो, लोहरदगा और अन्य क्षेत्रों में जीवित है। मूली पड़हा न्याय के क्षेत्र में उच्च न्यायालय का रोल अदा करता है। इस मूली पड़हा के न्यायालय में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक सभी प्रकार के जातीय मामले विचार किये जाते है। मूली पड़हा की बैठक साल में केवल एक बार विशु–शिकार के समय होती है। चैत पूर्णिमा या उसके अगल–बगल में इसकी बैठक शिकार से वापसी के पहले होती है।

रात के समय मूली पड़हा की बैठक होती है। बैठक की जानकारी पड़ाव के हरेक डेरे में दी जाती है। हरेक डाड़ा पड़हा के पदाधिकारी और मुख्य–मुख्य लोग बैठक में भाग लेते है। इस बैठक के समक्ष नये मामले और डाड़ा पड़हा के फैसलों के विरूद्ध अपील के मामले पेश किये जाते है। काफी विचार–विमर्श के बाद किसी भी मामले का फैसला किया जाता है। धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मामलों पर भी विचार किया जाता है। इस मूली पड़हा के फैसलों को नहीं मानने वालों को कड़ी सजा दी जाती है। अगर फैसला नहीं मानने योग्य होते हैं तो इनकी अपील राजी पड़हा की बैठक में होती है। फैसलें को नहीं मानने वाले लोगों को समाज से बहिष्कृत किए जाते है। उनका हुक्का–चिलम बन्द कर दिया जाता है। उसके साथ उठना–बैठना, शादी–ब्याह,

चूना–तम्बाकू सब बन्द हो जाते है।

4) **राजी पड़हा :–** उराँवों का यह संगठन मूली पड़हाओं के ऊपर राज्य स्तर का अर्थात् उराँव समाज का सर्वेच्च पड़हा संस्था या पड़हा संगठन है। इसी पड़हा के बल पर वे अपने राज्य पर शासन करते थे इनके निर्देशानुसार समाज का संचालन होता था। राजी पड़हा की बैठक में उराँव समाज के नियम–कानूनों का गठन होता था। इस राजी पड़हा की बैठक मुड़मा गाँव के खुले मैदान में होती थी। इस बैठक में उराँव समाज के सभी पड़हाओं के पदाधिकारियों और चुने गये सदस्य भाग लेते थे। इस राजी पड़हा के आदेशों का पालन कड़ाई से होता था। सभी क्षेत्रों के आये देवान, बेल और कोटवार अपने–अपने क्षेत्रों में जाकर आदेशों का एलान करते थे। राजी पड़हा में भी अतख़ा पड़हा, डाड़ा पड़हा और मूली पड़हा के समान ही चुने गये पदाधिकारी होते है। ये राजी बेल, राजी देवान और राजी कोटवार कहलाते है। इस राजी पड़हा की बैठक साल में एक बार अश्विन पुर्णिमा के समय होती थी।

न्याय के मामले में यह उच्चतम–न्यायालय अर्थात् सुप्रीम कोर्ट का रोल अदा करता था। इस न्यायालय के अंतिम फैसले के बाद किसी भी मामले की अपील अन्य न्यायालयों में नहीं होती थी। इसकी बैठक में अपील और नये मामलों की भी सुनवाई होती थी। इनके द्वारा पारित आदेशों के नहीं करने वालों को कड़ी सजा दी जाती थी। उनका 'हुक्का–चिलम' बन्द कर दिया जाता था। इस प्रकार समाज को अचछी तरह चुस्त–दुरूस्त चलाने और रखने के लिए बहुत अच्छा ओर कड़ा नियम थाा।

निष्कर्ष :–

पारम्परिक स्वशासन व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी कम है। अन्य समुदायों को भाग लेने का मौका नहीं मिलता। पारम्परिक कानून निर्णय का केन्द्र बिन्दु है, जो धार्मिक व नैसर्गिक ज्यादा है, तार्किक या वैज्ञानिक नहीं। पारम्परिक प्रणाली को नयी पंचायती प्रणाली से काफी चोट पहुँच रही है, क्योंकि नयी प्रणाली अंतर–ग्राम प्रकृति की है, जो पारम्परिक प्रणाली के समानांतर एक ढ़ाँचा के रूप में काम करती है। इसके पास ज्यादा भौतिक ताकत है, जिससे पारम्परिक व्यवस्था कमतर हुई है। आधुनिक शिक्षा ने गाँवों के लोगों का सम्पर्क अपने मूल क्षेत्र में से काट दिया है। ज्यादा सुसंस्कृत व अभिजात्य बनने के चक्कर में ग्रामीण युवा अपनी माटी, गाँव व संस्कृति को हेय दृष्टि से देखते है। सरकारी प्रशासन का हस्तक्षेप, आधुनिक नेतृत्व और बाहरी लोगों की बसाहट से स्थितियाँ पहले की तरह नहीं रह गयी है। उराँव समाज के लोगों को संगठित होकर अपनी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए चिन्तन के साथ ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. उराँव–सरना धर्म और संस्कृति, भीखू तिर्की, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, प्रथम संस्करण 2011
2. झारखण्ड में पारम्परिक स्वशासन : नीति और रीति, शिशिर टुडू, संगद, 301/ए, उर्मिला इन्क्लेव पीस रोड लालपुर, राँची, संस्करण–2014
3. झारखण्ड : भूमि और भूमिपुत्र (परिचयात्मक एवं तुलनात्मक) डॉ० बिमला चरण शर्मा, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची, प्रथम संस्करण, 2011
4. छोटानागपुर के आदिवासी पौलुस तोपनो, सत्य भारती प्रकाशन, राँची, द्वितीय संस्करण, 1984

मो० नं० : 8434634784

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 185–190

A Study of Mediaeval South India : Rani Abakka and Chennamma

Dr. Shama Anjum
Department of History, Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand.

Abstract :

This Article "A Study of Mediaeval South India : Rani Abakka and Chennamma" Highlights Women Who Ruled in South India. Women rulers have been few and far between to Indian history, as also in world history-but that still leaves hundreds of women who have ruled, and whose stories can be told.

I have selected but a few among them with respect to south India to write about. There are three women queen Abakkaof Ullal and queen Chennamma of Kladi. These women have all ruled independently, either as regents or titled rulers. History is replete with tales of women who influenced their husbands or sons, and have been immensely powerful, but I have included only women who ruled directly, and not through agency, with the sole.

Research Methodology :

I have used as many disparate source as possible contemporary texts, accounts of foreign travellers as well as secondary sources, I have also used legends and folk tales, which, while difficult to verify, offer nuggets of information and help flesh out the person.it has been quite a task to separate the wheat from the chaff.

These portraits are painted 'warts and all'. They are not hagiographies – because these women were not saints. they often made wrong decision and took on wrong advisors, and sometimes lied and cheated in their quest for power. But they were invariably courageous and intelligent.Above all, they were leaders. We will not hold women leaders up to impossible standards,different from the measures we use for men.

The Sources of Queen Abakka are Frederick Charles Danvers, *The Portuguese in India.* George Havers and Edward Grey, *The Travels of Pietro Della Valle in India*.etc. The Sources of Queen

Chennamma L.D.Barnett, *The Journal of the Royal Asiyatic Society of Great Britain and Ireland,* Lennart Bes, Toddlers, Widows, and Bastards Enthroned:Dynastic Successions in Early-Modern South India as Observed by the Dutch, research paper, *Leidschrift: Hisorich Tijdschrift, 27 January 2012* etc.

Key Points : South India, Queens, Abakka, Chennamma, Political achivements.

Rani Abbakka :

In the early 1500s**,** the glory days of the Vijaynagara Empire,The Portuguese had reached India in 1498 and within a couple of decades had a string of forts along the west coast of India. After the fall of Vijayanagara at the hand of Deccan sultanates in the Battle of Talikota in 1565, the coastal kingdom lost their protechter and in order to survive they had to independently manage the Deccan sultanates, the Portuguese, the Duch and the other small kingdoms.

Many of these kingdoms grew rich on Eropean trade- the silver and gold that had been looted from the Aztecs and Incas poured into India as payment for spices and textiles.Ocean trade routes with Arab had been established as early as the Seventh century CE and thre were many local muslim trading communities, like the Moplas of Kerela and Byaris of Tulu Nadu, who were involved in the maritime trade of paper and ginger.

Rani Abbakka Chota was a famous queen of a place called Ullal near Mangalore. She was a queen. Historically, it is believed that two queens with the same name ruled Ullal from 1540 to 1620. One was Queen Abbakka, who is known for fighting the Portuguese in 1557. Another was Queen Abbakka, who achieved a great naval victory in 1618. She was 40 years old when she was met and interviewed by the Italian traveler Pistro Della Valle in 1623.

Within a few decades of the Portuguese arrival in India in 1498, they had established a chain of forts along the western coast. They dominated trade on the Indian Ocean and were able to enter into agreements with Vijayanagara, the Deccan Sultanates, the Gujrals, and even the Mughals.

Until the 16th century, the Portuguese held a monopoly on trade in the Indian Ocean. The Portuguese charged a fee called a kartaz (a kind of tax) to any other ship traveling in the Indian Ocean. Even the great Mughal emperor Akbar had to pay a kartaz (a kind of tax) from them for any ship traveling in the Indian Ocean.

Queen Abbakka belonged to the Chaitanya dynasty, which ruled a small but fertile part of the Canara coast called Ullal, located 10 km from Mangalore. It was a multi-religious kingdom. Although the queen was a follower of Jainism, the administration was largely comprised of Hindus and Muslims. Her army was also diverse. The Muslim fishing community was a major force for her, especially during naval battles with the Portuguese.

Queen Abbakka was unwilling to accept the Portuguese ban on her ships sailing to Arabia, so she traded textiles and spices with the Zamorin of Calicut. Despite frequent attacks on her ships at sea, she refused to pay the Portuguese their demanded tribute.

Finally, in 1555, the Portuguese sent Admiral Don Alvara da Silveira against Ullal. Queen Abbakka fought hard and succeeded in stopping them. The war ended with a truce.

In 1567, a Portuguese army led by Jean João Peixoto attacked Ullal. They captured the city and palace. The queen fled and took refuge in a mosque. That night, with 200 soldiers, she succeeded in killing General Peixoto and the Portuguese troops. The invaders fled to their ships. She pursued them and killed Admiral Mascarenhas.

Similarly, in 1570, Queen Abbakka formed an alliance against the Portuguese with the Sultans of Bijapur and Ahmednagar and the Zamorin of Calicut, temporarily halting the Portuguese attack. However, in 1581, the Viceroy of Goa, Anthony de Voronha, led a full-scale attack against Ullal, resulting in its complete destruction. The queen perished along with her troops.

But it was not over yet; in 1618, Abbakka's younger sister attacked a Portuguese fleet and burned it, gaining immense fame throughout the Indian Ocean.

In keeping with family tradition, he continued to challenge the Portuguese and trade directly with the Middle East. When the Portuguese captured one of the queen's rich ships returning from Mecca, he planned a stealth attack on their fleet. In the dark of night, his fishermen, soldiers, Mogaveras, and Moplans boarded boats and used thousands of fire arrows to set the Portuguese ships on fire. After suffering heavy losses, the Portuguese navy was forced to retreat.

Her fame resonated across the Indian Ocean. Pietro della Valle, an Italian traveler, met the queen when he visited the western coast of India between 1621 and 1624. He had previously met the great Persian emperor Shah Abbas, who praised Abbakka and asked Pietro to visit her when he visited India. Shah Abbas, along with other kings around the Indian Ocean, was deeply impressed by Abbakka's unprecedented defeat of the Portuguese at the hands of the Bukhwar kings. Thus, when Pietro della Valle arrived in India, he met the 40-year-old queen, who was then in India to supervise irrigation works. Pietro recounts, "She asked me about my travels and said, 'After seeing the Turks, the Persian emperors, the Mughal emperors, and Bankatappa Nayaka, what have you come to see in this forest?' I replied, 'I have come only to see you. Your Majesty, you are very famous in my part of the world.'"

Pietro Della Valle was deeply impressed by the queen's daily routine and dedication to her work. Although Abbakka has been revered in local folklore, in an effort to honor her, the Karnataka government has recently installed a statue of the queen in the city of Bengaluru. The IGNCA is preparing a document on Abbakka Rani, with Kailash Mishra also participating.

Rani Chennamma :

The Portuguese had already dominated the Indian cost for 150 years by then, and Chennamma herself witnessed the rice of Shivaji and Marathas in the 1650s,the adventevt of the British and Duch and the British in Bombay in 1668, and the conquest of her neighbours, the Bijapur Adil shahis, by the Mughals in 1686. she dealt with, and fought, almost all these powers and mansged to maintain a prosperous kingdom made rich by foreign trade The Portuguese called her the Reina de Pimenta, or paper queen, for conducting trade in papper with overseas lands. Reign (1671-1696) For 25 years, she ruled the small kingdom of Keladi on the western coast of Karnataka. Keladi was a Veerashaiva kingdom. Chennamma's father, Siddippa Shetty, was a local merchant from the Kundapur region of Karnataka, belonging to the Lingayat community. Archana Garodia, a journalist and author, writes in her book '*Women Who Ruled India',* "Chennamma was considered to known for his remarkable act of facing the wrath of the Mughal Emperor Aurangzeb for giving shelter to the fugitive Maratha King Rajaram, son of King Shivaji Bhonsle".

Chennamma married King Somasekhara in 1667 who died in 1677. Thus, Chennamma successfully administered the Kalady kingdom. This was a time when European powers were expanding their commercial presence in India. Chennamma actively participated in the pepper trade and established trade agreements with the Portuguese. L. D. Barnett, in "*The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland,"* notes that the Portuguese called her '*Reina de Permeta'* or '*Pepper Queen'* because of her efforts to trade pepper with foreign lands. The above accounts demonstrate that women of that period were highly empowered in women's entrepreneurship and embodied the feminist concept of economic power, a key element of which emphasizes women's economic empowerment.

Venkatraya Narayana mentions in his book, "she also allowed the Portuguese to establish churches in Mirjan, Honnavara, Chandravar and Kalyanpur,"

Chennamma faced the wrath of the Mughal emperor Aurangzeb. When Rajaram, fleeing the Mughals, reached Keladi and sought refuge, Chennamma was bound by her religion and royal code of conduct to provide shelter to any petitioner, especially the benevolent Shivaji. So, she offered shelter to Rajaram. Chennamma is truly remembered for this great act of courage and steadfastness, putting Dharma above her own best interests and incurring the wrath of the all-conquering Aurangzeb.

Aurangzeb knew that Rajaram was in Keladi. Burnett notes, "Aurangzeb sent a letter to the queen, accompanied by rich gifts, urging her to hand over Rajaram, or face the wrath of the Mughal army. The queen wisely replied that Rajaram was not in Keladi; he had left."

Aurangzeb was unconvinced, so he ordered an attack on Keladi under the leadership of Jannisar

Khan. Jannisar made his way through the jungle, trapping the army in the quagmire created by the rain and constantly harassing guerrilla attacks by the queen's servants. Aurangzeb nicknamed her "the female bear."

When Rajaram reached Gingee, Aurangzeb was instructed to capture him. He therefore collected gifts from the queen and some border forts, and concluded a peace treaty.

In her last days, Chennamma devoted herself to religion, handing over the administration to Basavappa Nayaka. Chennamma's kingdom was well maintained. John Fryer, a British doctor who visited Kanara during this time, says, "People Have good laws and follow them, and travel without guides on broad roads, not on the by-paths of Malabar.

Chennamma was a courageous and decisive woman. She became a role model for women. M.G. Agarwal notes, "In the state of Karnataka, they are revered as leading women, warriors, and patriots, along with the names of Rani Chennabhairavi Devi, Achbakka Rani, Kintur Chennamma, Bellavadi Mallamma, and Onake Vobacha."

Chennamma died in 1696, when Keladi was ruled by Basappa Nayaka. She will always be remembered for her deeds and courage.

Counclusion :

In our study we find that Rani Abbakka of Ullal, near Chota Manglore, earned the distinction of being the first female freedom fighter against foreing countries leading by a campaign against the Portuguese.

Rani Abbakka's story, where the tales of the two queens are fused into one legendary character, lives on in flok memory in southern Karnataka, through folk songs and performances of *Yakshagana*, the local thearte form.in Bhuta Kola, alocal ritual dance, a person in trance recounts the great deeds of Abbakka Mahadevi.In all these, Abbakka is portrayed as dark and good-looking,always dressed simply as a commoner.

Among the influential women of the South India, Queen Chenamma of Keladi was an exceptional queen who faced the wrath of Auranzeb. However she maintained her political power through her wisdom, she was a skilled administrator. British doctor John Fryer said of her,"The people have good laws and follow them, they travel without guides on broad road, not by paths as in Malabar."

Reference :

1. Edwared Grey, The Travel of Pietra Della Valle in India, The Huikuit Society, London,Vol II,1892, p.313.
2. W. Foster (ed), English Factoris in India (1598-1621), Oxford at the Clarendon Press,

London,1906, p. 278.
3. Ibid, p.279.
4. Kailash Mishra, Abbakka Rani: The Unseen Warrior Queen, Untitled Indira Gandhi National Centre for the Arts.
5. Archana Gadoriya, The Women who Ruled India, Hachette Book Publishing India, Gurugram,2019, p.87.
6. Ibid, p.88
7. Kailash Mishra, op.cit.
8. Ibid.
9. Ibid.
10. Archana, op.cit., p.89.
11. George Havers and Edward Grey,ed., The Travels of Pietro Della Valle in India, Hakluit Society, London.1892,Vol.ll, p.321.
12. Ibid.
13. Taylore, op.cit., p.26
14. Nelson, op,cit., p.157
15. Taylore, op.cit., p.229
16. Archan,op.cit.,p.151
17. L.D. Branett, The Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland, 1910 (doi 10.2307-2518 9640) Published by the Society Albemare Street, London, 1910, pp.1338-1339.
18. Kudva, Venkataraya Narayan, History of the Dakshinalya Saraswatis, Samyukta Gowda Saraswati Sabha, Madras, 1972, p.112
19. Radhe Krishnamuthy, Sivatattua Ratnakara of Keladi Basavaraju ; a Cultural Study. Kelad Karnataka Keladi. Museum and Historical Research Bureau, pp.6, 115.
20. L.D. Barnett, op.cit., pp.1338-1339
21. Archana op.cit., p.159.
22. Archana op.cit.,p.159..;Dixit Giri, Studies in Keladi History : Seminar Paper mythic Society,mythic Society, pp. 58-59.

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 191-193

कर्म और मोक्ष का संबंध : भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन

राजेंद्र प्रसाद
सहायक आचार्य, संहिता विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब।

सारांश (Abstract)

भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य केवल जगत् की सैद्धान्तिक व्याख्या करना नहीं, बल्कि मानव जीवन की मूल समस्या 'दुःख, बंधन और मुक्ति' का समाधान प्रस्तुत करना है। इसी कारण भारतीय चिंतन परंपरा में जीवन को पुरुषार्थों की दृष्टि से देखा गया है, जिनमें मोक्ष को परम और अंतिम लक्ष्य स्वीकार किया गया है। मोक्ष की प्राप्ति के संदर्भ में कर्म की भूमिका भारतीय दर्शनों में अत्यंत जटिल एवं बहुआयामी रही है। कहीं कर्म को बंधन का कारण माना गया है, तो कहीं उसी कर्म को शुद्ध होकर मोक्ष–प्राप्ति का साधन स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में वैदिक, उपनिषदिक, आस्तिक एवं नास्तिक दर्शनों के आलोक में कर्म और मोक्ष के संबंध का क्रमबद्ध, तुलनात्मक तथा समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द (Keywords) : कर्म, मोक्ष, भारतीय दर्शन, अविद्या, ज्ञान, कैवल्य, निर्वाण।

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय दर्शन का मूल लक्ष्य मानव जीवन की सार्थकता को उद्घाटित करना है। धर्म, अर्थ और काम जहाँ लौकिक जीवन के संतुलन से संबंधित हैं, वहीं मोक्ष को जन्मदृमरण के अनादि चक्र से पूर्ण मुक्ति तथा आत्मा की अपने वास्तविक स्वरूप में प्रतिष्ठा के रूप में स्वीकार किया गया है।

किन्तु मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग क्या हैकृइस प्रश्न पर भारतीय दर्शनों में व्यापक विमर्श हुआ है। इस विमर्श का केंद्रीय विषय कर्म है। कर्म को एक ओर संसार–बंधन का कारण माना गया है, तो दूसरी ओर उसी कर्म को शुद्ध होकर मोक्ष–प्राप्ति का साधन भी स्वीकार किया गया है। यही द्वैत कर्म और मोक्ष के संबंध को दार्शनिक रूप से जटिल बनाता है।

1. कर्म की दार्शनिक संकल्पना :

भारतीय दर्शन में कर्म का अर्थ केवल बाह्य शारीरिक क्रिया तक सीमित नहीं है। यह कायिक, वाचिक और मानसिक 'तीनों स्तरों पर संपन्न होने वाली क्रिया का समुच्चय है। प्रत्येक कर्म अनिवार्य रूप से फल उत्पन्न करता है' इसी को कर्मफल सिद्धांत कहा गया है, जो भारतीय दर्शन की आत्मा के समान है।

उपनिषदों में कहा गया है –

"यथाकर्म यथाश्रुतं पुरूषो भवति"

(बृहदारण्यक उपनिषद् 4.4.5)

अर्थात् जीव जैसा कर्म करता है, वैसा ही उसका स्वरूप बनता है। इस प्रकार कर्म को पुनर्जन्म, सुख–दुःख तथा संसार–चक्र का मूल कारण माना गया है।

2. वैदिक संहिता एवं ब्राह्मण काल में कर्म :

ऋग्वैदिक काल में कर्म का स्वरूप मुख्यतः यज्ञात्मक था। यज्ञों का उद्देश्य देवताओं को प्रसन्न कर सांसारिक सुख, संतान, वर्षा तथा स्वर्ग की प्राप्ति करना था। इस काल में मोक्ष की अवधारणा स्पष्ट रूप से विकसित नहीं हुई थी।

ब्राह्मण ग्रंथों में कर्मकांड का अत्यधिक विस्तार हुआ, जहाँ विधि–निषेध, मंत्र और अनुष्ठान को प्रधानता दी गई। कर्म स्वयं साध्य बन गया, जिसने आगे चलकर पूर्वमीमांसा दर्शन का दार्शनिक आधार निर्मित किया।

3. पूर्वमीमांसा दर्शन में कर्म और मोक्ष :

पूर्वमीमांसा दर्शन में कर्म को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

जैमिनि के अनुसार–

"चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः"।

वेद का प्रधान प्रयोजन कर्म का विधान करना है। इस दर्शन में कर्म का उद्देश्य स्वर्ग आदि फल हैं। आत्मा को नित्य माना गया है, किंतु मोक्ष को स्वतंत्र दार्शनिक लक्ष्य के रूप में विकसित नहीं किया गया। अतः यहाँ कर्म और मोक्ष का प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं होता।

4. उपनिषद् दर्शन में कर्म की आलोचना :

उपनिषद् दर्शन कर्मकांड की सीमाओं को स्पष्ट करता है। यहाँ प्रतिपादित किया गया कि कर्म नश्वर फल देता है, जबकि मोक्ष शाश्वत है। अतः मोक्ष कर्म से प्राप्त नहीं हो सकता।

कैवल्य उपनिषद् में कहा गया है–

"न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः"।

यहाँ कर्म के स्थान पर त्याग और ज्ञान को मोक्ष का साधन स्वीकार किया गया है।

5. अद्वैत वेदांत में कर्म और मोक्ष :

शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत में कर्म को अज्ञानजन्य माना गया है। अज्ञान का नाश केवल ज्ञान से संभव है, अतः कर्म मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन नहीं हो सकता।

शंकराचार्य का स्पष्ट कथन है–

"न कर्मणा मोक्षः"।

हालाँकि कर्म को चित्त–शुद्धि का साधन मानकर ज्ञान–प्राप्ति की पूर्वभूमि स्वीकार किया गया है।

6. सांख्य दर्शन में कर्म और कैवल्य :

सांख्य दर्शन के अनुसार अविद्या के कारण पुरुष और प्रकृति का संयोग होता है, जिससे कर्म और बंधन उत्पन्न होते हैं। विवेकज्ञान से यह संयोग नष्ट होता है और कर्म स्वतः क्षीण हो जाते हैं। अतः कर्म यहाँ

मोक्ष का साधन नहीं, बल्कि परित्याज्य तत्व है।

7. योग दर्शन में कर्म का शोधन :

पतंजलि के योग दर्शन में कर्म का पूर्ण त्याग नहीं, बल्कि उसका शोधन अपेक्षित है। अष्टांग योग के अभ्यास से कर्माशय का क्षय होता है और चित्तवृत्तियों का निरोध संभव होता है, जिससे मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

8. न्याय-वैशेषिक दर्शन में कर्म :

न्याय दर्शन के अनुसार कर्म से अदृष्ट उत्पन्न होता है, जो जन्म–मरण का कारण है। तत्त्वज्ञान द्वारा मिथ्या ज्ञान और दोषों का नाश होने पर कर्म समाप्त होते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

9. बौद्ध दर्शन में कर्म और निर्वाण :

बौद्ध दर्शन में कर्म को दुःख का कारण माना गया है। अविद्या से तृष्णा और तृष्णा से कर्म उत्पन्न होता है। अष्टांगिक मार्ग द्वारा कर्म–निरोध होने पर निर्वाण की प्राप्ति होती है।

10. जैन दर्शन में कर्म का द्रव्यात्मक स्वरूप :

जैन दर्शन में कर्म को सूक्ष्म द्रव्य माना गया है, जो आत्मा पर आवरण बनाता है। तप, संयम और व्रतों द्वारा कर्म का पूर्ण क्षय होने पर आत्मा सिद्ध अवस्था को प्राप्त करती है–यही मोक्ष है।

11. उपसंहार (Conclusion)

भारतीय दर्शनों में कर्म और मोक्ष का संबंध विविध, जटिल एवं बहुआयामी है। कहीं कर्म बंधन का कारण है, कहीं शोधन का साधन और कहीं पूर्णतः त्यागनीय तत्व। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि अविद्या और आसक्ति से युक्त कर्म बंधन का कारण है, जबकि ज्ञान, वैराग्य और निष्काम भाव से युक्त कर्म आत्मोन्नति और मोक्ष की भूमिका निर्मित करता है। यही भारतीय दर्शन की समन्वयात्मक और संतुलित दृष्टि है।

12. संदर्भ (References)

1. बृहदारण्यक उपनिषद्, शंकराचार्य भाष्य सहित, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
2. कैवल्य उपनिषद्, उपनिषद् संग्रह, गीताप्रेस, गोरखपुर।
3. भगवद्गीता, शंकराचार्य भाष्य सहित, गीताप्रेस, गोरखपुर।
4. जैमिनि, मीमांसा सूत्र, शबरभाष्य सहित, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. ईश्वरकृष्ण, सांख्यकारिका, वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्वकौमुदी सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
6. पतंजलि, योगसूत्र, व्यासभाष्य सहित, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
7. गौतम, न्यायसूत्र, वात्स्यायन भाष्य सहित, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
8. उमास्वाति, तत्त्वार्थसूत्र, सर्वार्थसिद्धि टीका सहित, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
9. शंकराचार्य, ब्रह्मसूत्र भाष्य, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

ई मेल prajendra1977@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 194–196

चौहान शासकों की कर प्रणाली : एक ऐतिहासिक अवलोकन

सतेन्द्र कुमार, शोधार्थी इतिहास
प्रो. सुगम आनंद, शोध निर्देशक
इतिहास एवं संस्कृति विभाग, डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

सारांश :

कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत के अनुसार कोष किसी राज्य का महत्वपूर्ण अंग है। विभिन्न ग्रन्थों में कोष के महत्व को उद्घाटित किया गया है यथा कामंदक के नीतिशास्त्र तथा नीतिवाक्यामृत नामक ग्रन्थ में कोष को राजा का मूल तथा जीवन का मूल बताया गया है। किसी भी राज्य की समृद्धि का आधार उसकी कर प्रणाली होती है। चौहान अभिलेखों में भी विभिन्न प्रकार के करों की विस्तृत सूची मिलती है जिसमें मुख्यतः भाग, भोग, तलाराभाव्य, तलपद, सेलहथाभाव्य, बलाधिपाभाव्य, दान, आदान, आभाव्य, लाग, हलसदि, आत्मपाइला, देवदाय, निधान, अभ्यान्तरसिद्ध, उद्रंग, दंड, इत्यादि करों का उल्लेख मिलता है। विभिन्न चौहान अभिलेखों यथा कान्हणदेव का सांडेराव अभिलेख विक्रम संवत 1221, रायपालदेव का नदलाई प्रस्तर अभिलेख विक्रम संवत 1202, भर्तवद्ध द्वितीय का हंसोट दान पत्र विक्रम संवत 813 तथा पृथ्वीराज तृतीय का फलोदी ताम्रपत्र विक्रम संवत 1236 इत्यादि में अलग–अलग करों की सूची मिलती है जिनका विस्तृत विवरण इस शोध पत्र में दिया गया है ।

मूल शब्द – राजस्व, कर प्रणाली, राजकोष, सप्तांग सिद्धांत, व्यापार–वाणिज्य।

किसी राज्य की प्रगति एवं राजनीतिक उत्कर्ष उसके आर्थिक साधनों पर निर्भर करता है अर्थात राज्य की समृद्धि के लिए सुनियोजित कर प्रणाली एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्था अपरिहार्य अंग माने गए हैं। चौहान कालीन कर व्यवस्था के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्ष के बारे में धर्मशास्त्रों, स्मृतियों की टीकाओं, लौकिक ग्रन्थों एवं समकालीन अभिलेखों से जानकारी मिलती है। धर्मशास्त्रों में जहां कर व्यवस्था से संबंधित सिद्धांतों का विवेचन किया गया है वहीं लौकिक ग्रन्थों एवं अभिलेखीय विवरण से इसका व्यावहारिक पक्ष उद्घाटित होता है। धर्मसूत्रों से ज्ञात होता है कि कर लगाना राजा का विधिसम्मत अधिकार था। प्रजा की सुरक्षा के हित में राजा द्वारा कर ग्रहण किया जाता था। मनुस्मृति के टीकाकार मेधातिथि के अनुसार राजा को इस प्रकार के करारोपण करना चाहिए जिससे व्यापारियों के निर्धारित लाभ में कमी ना आए। चौहान राज्य की आय का प्रमुख स्रोत उसकी राजस्व व्यवस्था थी। विभिन्न अभिलेखों में राज्य द्वारा आरोपित एवं वसूल किए जाने वाले अनेक प्रकार के करों का विवरण मिलता है, उदाहरण स्वरूप भोग, तलाराभाव्य, तलपद, सेलहथाभाव्य, बलाधिपाभाव्य, लाग, आत्मपाइला, हलसदि, अभ्यान्तरसिद्धि इत्यादि करों का उल्लेख मिलता है। चौहान शासक कान्हणदेव के शासनकाल का

सांडेराव के महावीर मंदिर से प्राप्त अभिलेख विक्रम संवत 1221 में राजकीय भोग तथा तलाराभाव्य नामक करों का उल्लेख मिलता है इस अभिलेख में भोग के रूप में ज्वार दिए जाने का विवरण भी मिलता है। चौहान शासक चाचिगदेव के भीनमाल से प्राप्त अभिलेख विक्रम संवत 1333 में चौहान कालीन राजस्व व्यवस्था पर दृष्टिपात किया गया है इस अभिलेख में हलसदि तथा सेलहथाभाव्य नामक करों का उल्लेख हुआ है। गुजरात के नणाना से प्राप्त अल्हणदेव के अभिलेख विक्रम संवत 1219–20 में बलाधिपाभाव्य कर का उल्लेख आया है। इसी प्रकार चौहान शासक जयसिंह देव के सामंत अश्वक के बाली पाषाण अभिलेख विक्रम संवत 1200 से बिक्री कर की जानकारी मिलती है इस अभिलेख से सूचित होता है कि प्रत्येक घोड़े की बिक्री पर एक द्रम्म देवी के मंदिर के निमित्त लिया जाता था। आत्मपाइला शब्द का उल्लेख नदलाई से प्राप्त रायपाल देव के अभिलेख विक्रम संवत 1195 में हुआ है। इसी अभिलेख में आभाव्य नामक कर का विवरण आता है जो नदलाई क्षेत्र में बाहर से आने वाले व्यापारियों से उनकी आय का 20वां हिस्सा नेमीनाथ मंदिर के निमित्त लिया जाता था।

अल्हणदेव के नाडोल ताम्रपत्र विक्रम संवत 1218 से शुल्क मंडपिका शब्द का उल्लेख मिलता है जो संभवत आयात–निर्यात कर को वसूल करने वाली चौकी थी। पृथ्वीराज तृतीय के फलोदी अभिलेख विक्रम संवत 1236 में भाग नामक कर का उल्लेख प्राप्त होता है जो उपज का 1/5 वां हिस्सा होता था। नदलाई के आदिनाथ मंदिर से रायपालदेव का पाषाण अभिलेख मिला है जो विक्रम संवत 1202 का है जिसमें लगमान शब्द का उल्लेख मिलता है यह कर बंजारों से वसूला जाता था। भर्तवद्ध द्वितीय के हंसोट दानपत्र लगभग 813 विक्रम संवत में अभ्यान्तरसिद्धि शब्द का उल्लेख मिलता है जो खनिजों पर लगने वाला कर था इसी अभिलेख में उद्रंग कर का उल्लेख मिलता है जो किसानों से स्थानीय पुलिस के खर्च के निमित्त वसूला जाता था। कान्हणदेव के बामनेरा ताम्रपत्र विक्रम संवत 1223 में निधान शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है जो भूमि से प्राप्त नौ प्रकार की निधियों पर लगाया जाता था। किराडू अभिलेख विक्रम संवत 1209 में उल्लेखित है कि प्रत्येक मास के दोनों पक्षों की अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी तथा शिवरात्रि को पशु हत्या करने वालों को दंड स्वरूप पांच द्रम्म देना अनिवार्य था इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि उपर्युक्त दिनों में राजपुत्रों द्वारा पशु हत्या करने पर भी एक द्रम्म का जुमना लगाया जाता था।

इसी प्रकार महाराज पूतन पक्षदेव और उनकी रानी गिरजादेवी ने चौदस, अमावस और अन्य श्रेष्ठ तिथियों को जीव हिंसा का निषेध किया तथा इस राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाले पर चार द्रम्म का दंड निर्धारित किया था। इसकी सूचना हमें रतनपुर अभिलेख विक्रम संवत 1199 से मिलती है। चौहान शासक जयसिंह देव के विक्रम संवत 1239 के अभिलेख में देवदाय शब्द का उल्लेख हुआ है जो संभवत मंदिरों के निमित्त लिया जाता था। इसी प्रकार नाडोल के चौहान शासक रायपाल देव के अभिलेख विक्रम संवत 1200 में देवदासियों पर लगने वाले कर दण्डबंध का उल्लेख मिलता है।

कर की दर :

विभिन्न चौहान अभिलेखों से प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों की जानकारी मिलती है पृथ्वीराज तृतीय के फलोदी अभिलेख विक्रम संवत 1236 में भाग नामक कर का उल्लेख मिलता है जो उपज का 1/5 वां हिस्सा होता था। इसी प्रकार नदलाई के आदिनाथ मंदिर से प्राप्त रायपालदेव के पाषाण लेख विक्रम संवत 1202 में लगमान शब्द का उल्लेख मिलता है जो भारवाहक वृषभों पर लदे हुए प्रति 20 पाइलों पर लगमान रूपये 2 देंगे।

रायपालदेव के एक अन्य अभिलेख विक्रम संवत 1195 से आदान, आभाव्य, नामक करों का उल्लेख प्राप्त होता है इसमें विवरण मिलता है कि नदलाई क्षेत्र से बाहर जाने वाली बैलगाड़ियों से 1/20वां भाग नेमीनाथ मंदिर के निमित्त लिया जाता था। उल्लेखनीय है कि विधि ग्रन्थों में भी मृदा की उर्वरता के आधार पर 1/6, 1/8 अथवा 1/10 भाग कर के रूप में लेने का प्रावधान है।

कर वसूली तंत्र :

साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों से विभिन्न स्तर के अधिकारियों की जानकारी मिलती है जिनमें शुल्काध्यक्ष, शुल्क ग्रहण स्थानाधिकारी, शौल्किक, हाटक, तरपति, तरकिक, मार्गपति, इत्यादि कर उदगृहीत करने वाले प्रमुख अधिकारी थे। अल्हणदेव के नाडोल ताम्रपत्र विक्रम संवत 1218 तथा नणाना से प्राप्त अभिलेख विक्रम संवत 1219–20 में शुल्क मंडपिका शब्द का उल्लेख मिलता है। शुल्क मंडपिका आयात–निर्यात कर को वसूल करने वाली चौकी थी। चाचिगदेव के करहडा नामक स्थान से प्राप्त अभिलेख में भी मंडपिका शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है। मंदिरों के लिए निर्धारित करों की वसूली मंदिरों के पुरोहितों द्वारा की जाती थी। कभी–कभी स्थानीय निकायों जैसे नगरम तथा सभा के द्वारा भी करों की वसूली की जाती थी।

कर अदायगी के माध्यम :

चौहान अभिलेखों से विदित होता है कि करों की अदायगी नगद, वस्तुओं तथा जिंस इत्यादि में की जाती थी। रायपालदेव के अभिलेख विक्रम संवत 1202 से करों की नगद अदायगी का उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार कल्हणदेव के महावीर मंदिर से प्राप्त अभिलेख विक्रम संवत 1221 में राजकीय भोग शब्द का उल्लेख मिलता है जो फल, फूल, दूध, ईंधन इत्यादि के रूप में चुकाया जाता था। पृथ्वीराज तृतीय के फलौदी अभिलेख विक्रम संवत 1236 में भाग नामक कर का उल्लेख हुआ है। अभिलेख से विदित होता है कि उपज का 1/5 वां हिस्सा भाग कर के रूप में लिया जाता था अर्थात भाग उपज के रूप में ग्रहण किया जाता था।

निष्कर्ष :

चौहान शासकों ने एक सुनियोजित कर प्रणाली के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति को समृद्ध बनाया इसका प्रमाण विभिन्न अभिलेखों व समकालीन साहित्यों से मिलता है। यह कर प्रणाली विभिन्न राजपूत राजवंशों के लिए मानक बनी रही जिसका अनुसरण बाद के समय में भी होता रहा।

ग्रन्थ सूची :

1. मनुस्मृति, व्यूलर, जी., दिल्ली, 1967
2. श्रीवास्तव, ओ.पी., कॉमर्शियल टैक्सेशन इन इंडिया, इलाहाबाद, 1999
3. नाहर, पी.सी., जैन लेख संग्रह, कोलकाता, 1918
4. श्रीमाली, गोविंदलाल, राजस्थान के अभिलेख, भाग–1, जोधपुर, 2000
5. शर्मा, दशरथ, अर्ली चौहान डायनेस्टीज, दिल्ली, 1975
6. एपिग्राफिया इंडिका, जिल्द 11, कलकत्ता, 1981
7. टॉड, कर्नल, एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग 1, लंदन, 1920
8. घोषाल, यू.एन., हिंदू राजस्व व्यवस्था का इतिहास, कोलकाता, 1930

Email-sschauhan4295@gmail.com, मो0–9058815506

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 197-203

Making of Modern Historiography : Leopold von Ranke and His Legacy

Srishti Agrahari
Research Scholar, Department of History
Dr. B. R. Ambedkar University, Delhi.

Abstract :

History, derived from the Greek word historia meaning inquiry, refers to the systematic study and interpretation of the human past. Modern academic history writing differs significantly from earlier forms in its method, scope, and objectives. Drawing on R. G. Collingwood's conception of history as a scientific and humanistic inquiry aimed at human self-knowledge, this study traces the emergence of modern historiography from pre-modern traditions. It examines the factors that led to the development of modern history writing and critically analyzes the contribution of Leopold von Ranke, particularly his emphasis on archival research, source criticism, and historical objectivity, while also noting the limitations of his approach.

Introduction :

In pre-modern times, history was written mainly in the form of annals, chronicles, religious myths, moral narratives, and literary works, and was often biased and unsystematic. Ancient Greek historians such as Herodotus relied on storytelling and eyewitness accounts, while Thucydides introduced a more critical approach by emphasizing causation and direct observation. Roman historians like Livy and Tacitus focused on moral lessons and exemplary individuals. In ancient India, historical knowledge was embedded in texts such as the Vedas, Pura?as, epics, genealogies, and court chronicles, a phenomenon Romila Thapar describes as "embedded history." Chinese historiography, represented by Confucius and Sima Qian, produced extensive records but lacked critical interpretation. Medieval Christian histories were providential and theological, whereas Islamic historians, especially Ibn Khaldun, developed a more analytical approach. Despite these traditions, history lacked a systematic, scientific method, paving the way for the emergence of modern historiography. Thus the article Will

examines the process of emergence of modern history writing and the role of Leopord von Ranke in it.

The process of emergence of modern history writing :

The emergence of modern historical writing is a complex phenomenon influenced by multiple factors spanning several centuries. These factors include the rise of humanism during the Renaissance, Romanticism, the impact of the Enlightenment, advances in science and technology, the professionalization of history, and the political and social changes of the 19th and 20th centuries. This essay will explore these key factors in detail.

The Renaissance and Humanism :

At the end of the Dark Ages, the Renaissance emerged in Europe. This intellectual movement, beginning in the 14th century, marked a renewed interest in the classical texts of ancient Greece and Rome. The great achievements were the rational and secular approaches they brought to bear on matters formerly held to be part of divine mystery and their development to form critical scholarship. External circumstances like geographical exploration created a demand for exact information, both historical and geographical. The battles of the Reformation and Counter-Reformation provided further stimulus to historical study, as each side endeavored to demonstrate the historical validity of their position. There was also growth in vernacular writings, credited to Niccolo Machiavelli and Francesco Guicciardini. They also brought an inductive method to history writing, arguing from evidence rather than deducing from some a priori theory.

Humanism, a central Renaissance intellectual movement, emphasized the study of classical antiquity and placed a high value on human potential and achievements. Humanist scholars like Leonardo Bruni and Francesco Petrarca (Petrarch) sought to revive the classical tradition of history writing, focusing on a more critical and secular approach. This was a departure from medieval historiography, which was often dominated by religious narratives. Humanism introduced a critical analysis of sources, encouraging scholars to question the veracity and biases of their sources. This methodological shift laid the groundwork for more rigorous and analytical approaches to history, emphasizing empirical evidence and primary sources over theological interpretation.

Scientific Advances :

The scientific revolution of the 16th and 17th centuries had a profound impact on history writing. The development of the scientific method encouraged historians to adopt more systematic and empirical approaches to their research. The emphasis on observation, experimentation, and evidence in the sciences influenced historians to seek out primary sources, corroborate evidence, and construct narratives based on factual data rather than legend or myth.

- **The Enlightenment :**

The Enlightenment of the 17th and 18th centuries further revolutionized historical writing. Enlightenment thinkers advocated for reason, scientific inquiry, and skepticism of traditional authorities, including the church. Philosophers like Voltaire, David Hume, and Edward Gibbon brought these principles to the study of history. Voltaire, the greatest ornament of 18th -century intellectual life, is often identified as the first modern historian. He emphasized the importance of cultural and intellectual history over purely political narratives. He sought to understand the broader social and cultural contexts of historical events. Gibbon's The History of the Decline and Fall of the Roman Empire exemplified the Enlightenment approach, combining rigorous scholarship with a critical view of religious influences on history.

David Hume's History of England, published in six volumes, is a work of synthesis rather than exhaustive original scholarship. The main text is a straight political narrative, but Hume included appendices detailing wages, prices, dress, and other material now referred to as social history. The rationalist element is also found in his work Natural History of Religion. Though it developed a new style and rationalist philosophical historiography, it has an unhelpful attitude towards the past, particularly the Middle Ages—the Dark Ages. Collingwood assumed an extremely violent and one-sided attitude toward religion. They did not improve much on the methods of historical research.

- **Romanticism :**

The skepticism, rationalism, and intellectualism of the Age of Reason were challenged everywhere by faith and feeling, imagination and mystery, sentiment, and romance. Rousseau inspired the Romantic movement, and Herder influenced historians within this movement. Romanticism widened the scope of history. The conception of history as progress, as the development of human reason, also viewed history as genetic relationalism. It emphasized national culture and national character.

- **Nationalism and State Building :**

The 19th century was a period of intense nationalism and state building, significantly influencing historical writing. Historians began to write national histories that aimed to create and reinforce national identities. These narratives often emphasized the continuity and uniqueness of a nation's history, contributing to a sense of shared heritage and destiny. For example, Jules Michelet in France and Thomas Macaulay in Britain wrote histories that celebrated the national past and highlighted the progress and achievements of their respective nations. While this approach sometimes led to biased and exclusionary narratives, it also fostered a more systematic study of national archives and documents.Above, we saw the changing nature of history writing throughout different time periods.

But the more important change that happened in the 19th century is the professionalization of history as an academic discipline. Universities began to establish history departments, and the study of history became more specialized and institutionalized. German historian Leopold von Ranke played a pivotal role in this transformation. Ranke is often credited with establishing modern source-based history writing. He advocated for an objective, fact-based approach and emphasized the importance of primary sources, such as official documents and firsthand accounts. His famous dictum, "to show what actually happened," underscored his commitment to empirical research and objectivity.

- **Leopald von Ranke :**

As Ranke is referred to as the 'father of historical science' and his method of critically analyzing documents became the model for historical research and writing in the 19th century, we will discuss him in more detail and critically analyze his contribution to the emergence of modern history writing. Leopold Ranke was born in 1795 in Wiehe, Thuringia. Ranke was born into a family with a strong Protestant background. He attended the University of Leipzig, where he studied theology and philology. His early academic focus on Classical languages and literature influenced his later meticulous approach to historical sources. In 1825, Ranke published his first major work, "Histories of the Latin and Germanic Nations From 1494 to 1514." This work established his reputation and introduced his revolutionary approach to historiography, emphasizing the importance of primary sources and objective analysis. Ranke believed in "wie es eigentlich gewesen" ("how it actually happened") advocating for historians to present the past as it was, without imposing present-day biases.

Ranke's academic career flourished at the University of Berlin, where he taught from 1825 to 1871. He developed rigorous methods for historical research, including critical examination of sources and a focus on archival research. His seminars trained a generation of historians who would spread his methods across Europe and the United States.

Ranke's prolific output includes a series of influential works, such as "The Ottoman and the Spanish Empires in the Sixteenth and Seventeenth Centuries" (1 830), which highlighted the interplay between these two great powers; "History of the Popes During the Reformation" (1834-1836), which remains a cornerstone in the study of the Catholic Church and its influence on European politics; and "History of England" (1859-1868), a multi-volume work that traces the political and social evolution of England from the Middle Ages to the 1 7th century. From these works, certain ideas about how he wrote history can be identified.

First of all, the innovations he brought to history writing include :

- **Primary sources :** Ranke emphasized the use of primary sources, such as official documents, letters, and eyewitness accounts. This marked a departure from relying on secondary sources and

narratives. He insisted on a critical approach to these sources, assessing their reliability and context, which established a foundation for historical authenticity and accuracy. The core of Ranke's method lay in his determination to adhere strictly to historical facts and his formulation of principles for the internal criticism of sources' authenticity and reliability.

- **Empiricism :** Ranke's commitment to empiricism meant that historians should describe events "as they really happened" (wie es eigentlich gewesen). This principle underscored the objective study of history based on empirical evidence rather than moral judgments or theoretical frameworks. This empiricist approach helped distinguish history as a scholarly discipline separate from literature or philosophy
- **Narrative structure :** While Ranke valued primary sources, he also recognized the importance of narrative in history writing. He combined empirical research with a coherent and engaging narrative, making history accessible and compelling without sacrificing scholarly rigor.

Along with innovations in methodology, he contributed to the institutionalization of the history discipline:

- **Historiography as a discipline :** Ranke's work helped establish history as a professional academic discipline. He advocated for the systematic training of historians and the importance of historical seminars in universities. His methods were institutionalized in German universities and later adopted internationally, particularly influencing historical studies in the United States and Western Europe.
- **Historical seminars :** Ranke was a pioneer in organizing historical seminars where students could engage in detailed study of primary sources under guided supervision. This seminar model became a standard pedagogical approach in history education.

Besides these contributions, Ranke also influenced historical thought :

- **Rejection of teleology :** Ranke rejected teleological interpretations of history, which view history as progressing towards a specific end or purpose. Instead, he advocated for understanding each historical period on its own terms, appreciating the unique context and circumstances of different eras. His perspective countered the dominant Hegelian view of history as a process driven by abstract principles or a grand narrative.
- **Focus on political history :** Ranke's primary focus was on political history, particularly the actions of states and great individuals. He believed that the study of statecraft and diplomacy was central to understanding historical developments. While this focus might seem narrow today, it laid the groundwork for more specialized and nuanced studies in various subfields of history.

While his methods and principles have shaped historical study, they are not without criticism:

- **Positivist approach :** Ranke's commitment to empiricism and the idea of "history as it really was" is often critiqued for its positivist underpinnings. Critics argue that absolute objectivity in history is unattainable because historians are influenced by their own contexts, biases, and perspectives. E.H. Carr called the belief of the Rankean positivist in the existence of a hard core of historical facts "a preposterous fallacy."
- **Elitist perspective :** By concentrating on the decisions and actions of political elites, Ranke's historiography tends to marginalize the experiences and contributions of ordinary people, women, and marginalized groups. This has led to an incomplete picture of historical realities.
- **Deterministic view :** Ranke's historiography has been accused of a deterministic bent, where history is seen as a series of inevitable events driven by political forces. This perspective can downplay the role of contingency, human agency, and the complexity of historical causation.
- **Source criticism :** While Ranke emphasized the use of primary sources, he did not always apply rigorous source criticism. Later historians have pointed out that simply using primary sources does not guarantee accuracy; the sources themselves must be critically analyzed for bias, context, and reliability.
- **Idealization of the state :** Ranke's work often reflects a conservative idealization of the state and its institutions. This has been criticized for justifying the status quo and changer a historical narrative that supports existing power structures rather than challenging them.
- **Lack of theoretical engagement :** Ranke's insistence on empiricism often came at the expense of theoretical engagement. Critics argue that without theoretical frameworks, it is difficult to understand broader patterns, structures, and meanings in history. Ranke's approach can lead to a fragmented view of the past, focusing on discrete events without connecting them to larger historical processes.

Conclusion :

History writing is a complex and dynamic process that has evolved throughout the ages, making shifts in its approach, method, and purpose. From ancient Greek historiography to medieval Islamic historiography, through the Enlightenment, and into modern historical writing, its methods and approaches have changed. The practice has moved from mythical, biased, and subjective religious narratives to an objective, unbiased, and systematic approach that follows rigorous scientific methods for analyzing sources.

This shift from premodern traditions to modern practices in history writing highlights the significant role of Leopold von Ranke. He is credited with propounding modern history writing practices free from bias, myths, and subjectivity, earning him the title "Father of Historical Science."

Ranke is also credited with establishing history as an academic discipline. However, there were perspectives he left untouched, which allowed other historians to critique his work and influenced scholars to engage in critical analyses of historical methods and debates.

References :

1. Carr, E. H. What Is History? 2nd ed. London: Macmillan, 1987.
2. Collingwood, R. G. The Idea of History. Oxford: Oxford University Press, 1946.
3. Iggers, Georg G. The Theory and Practice of History: Leopold von Ranke. London: Routledge, 2011.
4. Marwick, Arthur. The Nature of History. London: Macmillan, 1970.
5. Ranke, Leopold von. Universal History: The Oldest Historical Group of Nations and the Greeks. New York: Scribner, 1884.

Email-agraharin26@gmail.com

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
ISSN : 2321-8037
SANGAM
Vol. 14, Issue 1-2
पृष्ठ : 204–208

हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक विश्लेषण

धन राज, शोधार्थी
डॉ. रेनु, शोध पर्यवेक्षक
Reasarch Department Of Geography, Dr. K. N. Modi University , Newai.

सारांश :

प्रस्तुत शोध–पत्र राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य जिले की जनसंख्या संरचना, सामाजिक गठन, शिक्षा स्तर, स्वास्थ्य स्थिति, कृषि आधारित अर्थव्यवस्था, श्रम–रोजगार स्वरूप, औद्योगिक विकास तथा महिला सशक्तिकरण की स्थिति का समग्र मूल्यांकन करना है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिनमें जनगणना 2011, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, राजस्थान आर्थिक समीक्षा एवं जिला प्रशासन की रिपोर्टें सम्मिलित हैं। शोध परिणामों से स्पष्ट होता है कि हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना ग्रामीण प्रधान, कृषि आधारित एवं संसाधन–निर्भर है। शिक्षा, स्वास्थ्य, औद्योगिक विविधीकरण एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सुधार की व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं, जिनसे जिले का संतुलित एवं सतत विकास संभव है।

मुख्य शब्द : सामाजिक–आर्थिक संरचना, कृषि–प्रधान जिला, साक्षरता, रोजगार, महिला सशक्तिकरण, हनुमानगढ़

1. भूमिका :

किसी भी क्षेत्र के विकास स्तर को समझने के लिए उसकी सामाजिक–आर्थिक संरचना का अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है। सामाजिक–आर्थिक अध्ययन से जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, रोजगार तथा जीवन–स्तर से संबंधित वास्तविक स्थितियों का आकलन किया जा सकता है।

हनुमानगढ़ जिला राजस्थान के उत्तर–पश्चिमी भाग में स्थित एक प्रमुख कृषि–प्रधान जिला है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के विस्तार से यहाँ कृषि उत्पादन एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। इसके बावजूद जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं औद्योगिक विकास से संबंधित अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं। अतः इस शोध–पत्र का उद्देश्य हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

2. अध्ययन क्षेत्र एवं शोध-पद्धति :

हनुमानगढ़ जिला लगभग 9,656 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में विस्तृत है तथा प्रशासनिक दृष्टि से 7

उपखंडों में विभाजित है। जिले की भौगोलिक स्थिति एवं सिंचित कृषि व्यवस्था इसे राजस्थान के प्रमुख कृषि क्षेत्रों में सम्मिलित करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं–

- जनगणना 2011।
- जिला सांख्यिकी पुस्तिका।
- राजस्थान आर्थिक समीक्षा।
- जिला प्रशासन एवं राजीविका की रिपोर्टें।

3. जनसंख्या संरचना :

जनगणना 2011 के अनुसार हनुमानगढ़ जिले की कुल जनसंख्या लगभग 17.7 लाख है। जिले की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण तथा 20 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। यह स्थिति जिले की कृषि–प्रधान अर्थव्यवस्था को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

सारणी : जनसंख्या से संबंधित प्रमुख आंकड़े

संकेतक	विवरण
कुल जनसंख्या	लगभग 17.7 लाख
ग्रामीण जनसंख्या	लगभग 14.3 लाख
शहरी जनसंख्या	लगभग 3.5 लाख
जनसंख्या घनत्व	184 व्यक्ति/वर्ग किमी 906 महिला प्रति 1000 पुरुष

स्रोत : जनगणना 2011

जिले का जनसंख्या घनत्व 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, जो संसाधनों पर मध्यम दबाव को दर्शाता है। लिंगानुपात 906 महिला प्रति 1000 पुरुष है, जो राज्य औसत से कुछ बेहतर होते हुए भी सामाजिक जागरूकता एवं महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को इंगित करता है।

4. सामाजिक एवं जातीय संरचना :

हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक संरचना ग्रामीण समाज पर आधारित है, जहाँ कृषि, पशुपालन एवं परंपरागत सामाजिक व्यवस्थाओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

अनुसूचित जाति की जनसंख्या जिले में लगभग 28 प्रतिशत है, जो राजस्थान के औसत से अधिक है। इस कारण सामाजिक न्याय, शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित सरकारी योजनाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या नगण्य है, जिससे जिले की सामाजिक संरचना पर जनजातीय प्रभाव सीमित है।

5. साक्षरता एवं शिक्षा स्थिति :

हनुमानगढ़ जिले की कुल साक्षरता दर 67.13 प्रतिशत है। पुरुष साक्षरता दर 77.41 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 55.84 प्रतिशत पाई जाती है। पुरुष–महिला साक्षरता दर में यह अंतर शिक्षा में व्याप्त लैंगिक असमानता को दर्शाता है।

सारणी : साक्षरता दर (प्रतिशत में)

वर्ग	साक्षरता दर
कुल	67.13
पुरुष	77.41
महिला	55.84

स्रोत : जनगणना 2011

ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की सीमित उपलब्धता तथा बालिका शिक्षा में सामाजिक बाधाएँ शिक्षा विकास की गति को प्रभावित करती हैं।

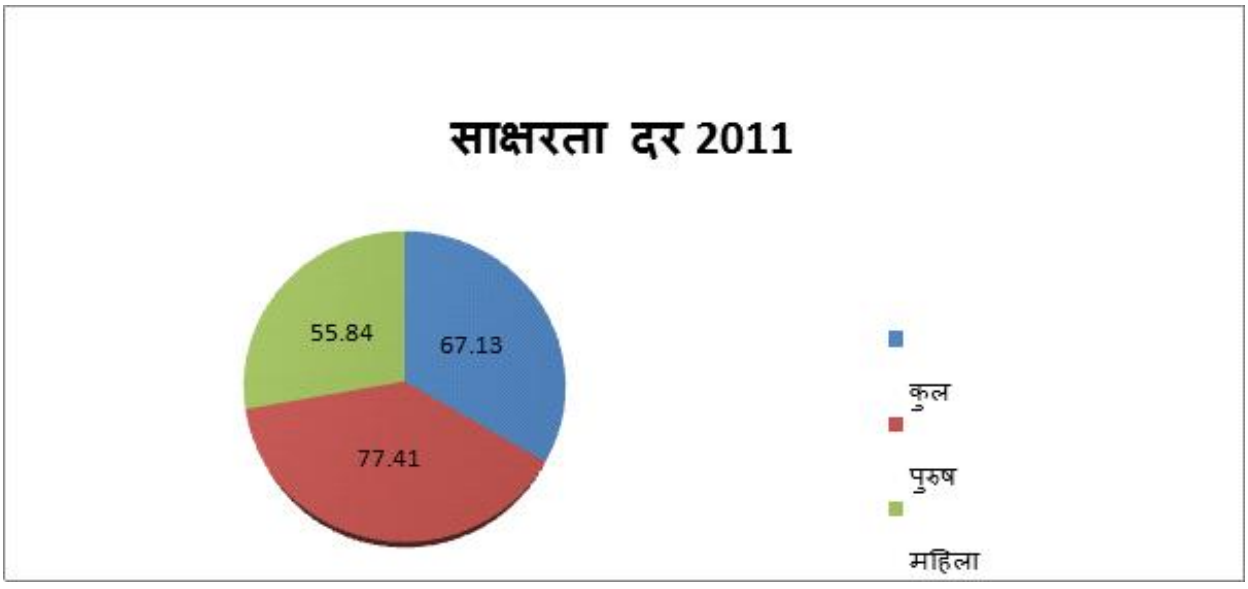

6. स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति :

जिले में स्वास्थ्य सेवाओं के अंतर्गत जिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उपलब्ध हैं। सरकारी योजनाओं के प्रभाव से संस्थागत प्रसव एवं टीकाकरण में सुधार हुआ है।

इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की कमी, पोषण संबंधी समस्याएँ तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अभाव प्रमुख चुनौती बना हुआ है। महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण जिले के सामाजिक विकास में एक महत्वपूर्ण बाधा है।

7. आर्थिक संरचना एवं रोजगार :

हनुमानगढ़ जिले की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। लगभग 68 प्रतिशत श्रमिक कृषक, 18 प्रतिशत कृषि मजदूर, 11 प्रतिशत घरेलू उद्योगों तथा मात्र 3 प्रतिशत अन्य क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

सारणी : श्रमिक वर्गीकरण

श्रेणी	प्रतिशत
कृषक	68
कृषि मजदूर	18
घरेलू उद्योग	11
अन्य	03

स्रोत : जनगणना 2011

यह स्थिति जिले में रोजगार के सीमित विविधीकरण को दर्शाती है तथा औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र के विस्तार की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

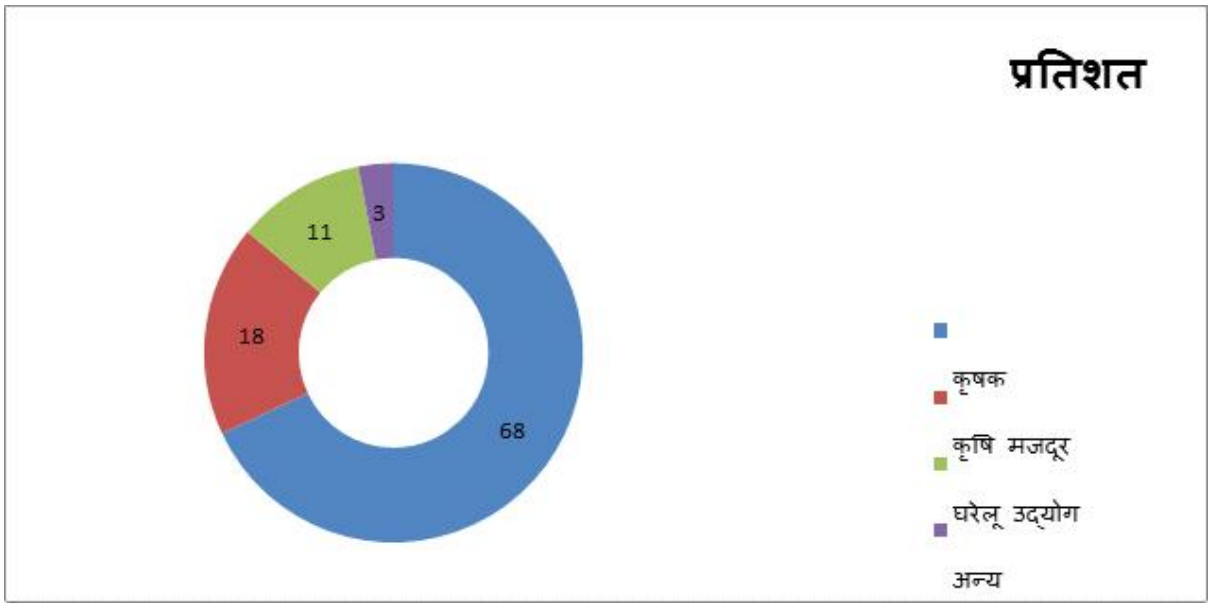

8. औद्योगिक विकास एवं महिला सशक्तिकरण :

हनुमानगढ़ जिले में औद्योगिक विकास सीमित स्तर पर विकसित हुआ है, जहाँ मुख्यतः कृषि–आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों 'जैसे खाद्य एवं बीज प्रसंस्करण, डेयरी, कपास जिनिंग, हस्तशिल्प तथा घरेलू उद्योग' का प्रभुत्व है। परिवहन, ऊर्जा तथा पूँजी निवेश की सीमाएँ औद्योगिक विस्तार में बाधक रही हैं। इसके बावजूद

राजीविका योजना, स्वयं सहायता समूहों, सूक्ष्म ऋण एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इससे महिला उद्यमिता को बढ़ावा मिला है तथा सामाजिक चेतना, आत्मनिर्भरता और स्थानीय निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भूमिका सुदृढ़ हुई है।

9. निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना ग्रामीण प्रधान एवं कृषि आधारित है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार विविधीकरण, औद्योगिक विकास एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में अभी भी व्यापक संभावनाएँ विद्यमान हैं। यदि कृषि प्रसंस्करण उद्योग, कौशल विकास एवं सामाजिक आधारभूत सुविधाओं का विस्तार किया जाए, तो जिले का विकास अधिक संतुलित एवं सतत हो सकता है।

संदर्भ सूची :

1. सिंह, आर. एल. (2010). भारत का आर्थिक एवं सामाजिक भूगोल. वाराणसी : स्टूडेंट्स फ्रेंड्स पब्लिकेशन।
2. शर्मा, टी. सी. (2014). राजस्थान का भौगोलिक अध्ययन. जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. हुसैन, मजरूल (2012). मानव भूगोल. नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।
4. Chandna, R. C. (2016). Geography of Population. New Delhi: Kalyani Publishers.
5. Government of India (2011). Census of India 2011: Hanumangarh District. New Delhi.
6. Government of Rajasthan (2022). Rajasthan Economic Review. Jaipur.
7. Sharma, A. N. (2016). Rural Economy of India

MAIL - dhanrajsuthar533@gmail.com

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor : 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES
PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Adv.
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), पटियाला (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor : 7.834

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

सानिया प्रकाशन एवं गिना प्रकाशन द्वारा
संयुक्त रूप से नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2394-6458
Impact Factor : 6.500

RESEARCH JOURNAL OF MEEMANSA

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Editor-in-Chief : Dr. Lata S. Patil
Managing Editor : Dr. Jaivir Langyan M. 9728790909

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गीना देवी शोध संस्थान भिवानी के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज भिवानी से छपवाकर कार्यालय #202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से वितरित की।

ISSN 2321:8037

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

भारत की राजनीति में नारी की भूमिका का विश्लेषण

Authored by

डॉ. संजू

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 08-10

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

मेवाड़ के ज्योतिष

Authored by

ब्रह्मर्षि ठा. सत्यव्रत सिंह चौहान

सा. ठिकाना माण्डव,
त. सागवाड़ा जिला– डूंगरपुर।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 11-13

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

निर्गुण कवि संत कबीर दास के साहित्य का समाज पर प्रभाव

Authored by

भरत लाल बंशकार

शोधार्थी, पी–एच. डी. हिन्दी,
बरकत उल्लाह विश्वविद्याल, भोपाल।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 14-19

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

भारत में भूमिगत जल स्तर में गिरावट : भूगोलिक, मानवीय और पर्यावरणीय कारण एवं सतत प्रबंधन के उपाय

Authored by

Dr. Mahesh Chand Gurjar

Assistant Professor, Education Department,
Smt. Anar Devi Teacher's Training College Bakharana
(Kotputli) Jaipur, Rajasthan – 303108

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 20-24

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

महात्मा बुद्ध के धम्मपद

Authored by

डॉ. वन्दना द्विवेदी

प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 25-26

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

जया जादवानी के उपन्यासों में एलजीबीटी की समस्याएं

Authored by

मनीषा कुमारी

शोधार्थी हिन्दी विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल (शिमला)

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 27-32

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

शारीरिक शिक्षा के लाभ : महाविद्यालयीन छात्रों के संदर्भ में एक अकादमिक विवेचन

Authored by

मदन मोहन मिश्रा

शोधार्थी (शारीरिक शिक्षा)

सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, पूर्वी सिंहभूम।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 33-37

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

8708822674
9466532152

https://ginajournal.com/

grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

Sustainable Digital Futures : Integrating Artificial Intelligence, Education, and Inclusive Innovation in India's Development Agenda

Authored by

Sahil Kumar

Research Scholar, Department of Computer Science,
Sona Devi University, Jharkhand.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 38-50

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

LANGUAGE & AI

Authored by

Dr. R. REKHA, Assistant Professor, Department of BBA
Dr. VIDHYA .P, Asso. Prof & Head, Dept. of. B.COM CS
Dr SAJITHA J, Asst.Prof & Head, Dept of Other Languages
Sri Ramakrishna College of Arts & Science.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 51-54

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

Evaluating the Impact of Wildlife Protection Legislation through the Lens of Project Tiger

Authored by

Aditya Khare, Research Scholar
Dr. Anshuma Upadhyay, Associate Professor

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 55-60

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

महाभारत और पुराणों के संदर्भ में च्यवन–सुकन्या आख्यान एवं उसकी आयुर्वेदिक प्रासंगिकता

Authored by

सुमेधा शर्मा

शोधार्थी,

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 61-69

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

भारत एवं नेपाल की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक– माँ त्रिपुरा सुंदरी मंदिर (बैतड़ी, नेपाल)

Authored by

सत्यवीर खनका

शोधार्थी, इतिहास विभाग
लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 70-74

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

चम्पावत जिले की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन

Authored by

शिवानी

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग,
लक्ष्मण सिंह महर परिसर, पिथौरागढ़।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 75-80

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

ऑनलाइन वोकल संगीत शिक्षा में ऑडियो गुणवत्ता की हानि : उपकरण–आधारित विश्लेषण और समाधान

Authored by

Savita Gill
Research Scholar, Music Vocal
PGGCG – 11, CHD

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 81-86

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

भारतीय इतिहास :– संविधान व संस्कृति है

Authored by

डॉ. ममता वधवा, प्रवक्ता
श्रीमती बबीता चौधरी, प्रवक्ता
आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 87-92

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

झुंझुनू जिले की आपदा व जोखिम की संवेदनशीलता (एक भौगोलिक अध्ययन)

Authored by

रामावतार वर्मा, शोधार्थी
डॉ. धीर सिंह शेखावत, शोध निर्देशक
भूगोल विभाग, ज्योति विद्यापीठ महीला विश्वविद्यालय जयपुर।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 93-101

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

कौटिल्य अर्थशास्त्र में प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धांतों की आधुनिक व्याख्या

Authored by

डॉ. मुन्नालाल चौधरी, शोध निर्देशक (सहा. प्राध्या. संस्कृत)

रूखमणी मोहबे, शोधार्थी,

संस्कृत विभाग, शासकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी, म. प्र.–480661

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 102-109

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

8708822674
9466532152

https://ginajournal.com/

grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

सूर्यबाला के कथा साहित्य में स्त्री मनोविज्ञान : 'सुबह के इंतजार तक', 'मेरे संधि पत्र' और 'अग्निपाखी' का गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन

Authored by

डॉ. ममता शर्मा

सहायक आचार्य हिंदी

एस बी के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जैसलमेर, राजस्थान।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 110-115

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

वी.पी. कोइराला और इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों में मनोविश्लेषण

Authored by

डिल्लीराम शर्मा संग्रौला

विभागीय प्रमुख, संस्कृत, पत्रकारिता तथा हिंदी
पद्मकन्या बहुमुखी कैंपस, काठमांडू।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 116-122

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

योग दर्शन का ईश्वर और वेदान्त का सगुण ब्रह्म

Authored by

डॉ शत्रुघ्न सिंह, सहायकाचार्य एवं शोध निदेशक

बृजेश कुमार पाण्डेय, शोधार्थी,

जगद्गुरु रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 123-128

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

8708822674
9466532152

https://ginajournal.com/

grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

NEP 2020 : Significant Revamp on Skill Based Education

Authored by

Dr. Sushma

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 129-133

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

झारखण्ड के नागपुरी साहित्यकार डॉ० शकुन्तला मिश्र कृत 'सातो नदी पार' उपन्यास में नारी चित्रण

Authored by

पुनम भगत

शोधार्थी, नागपुरी विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 134-137

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

नागपुरी नाट्य साहित्य का उद्भव और विकास

Authored by

आलोक कुमार मिश्रा

वरीय शोधार्थी, स्नातकोत्तर नागपुरी विभाग
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय,
राँची विश्वविद्यालय राँची, झारखण्ड।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 138-140

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

बाल साहित्य के विकास में हरियाणा के कवियों का योगदान

Authored by

डॉ. लीना गोयल

हिन्दी विभाग,

सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला छावनी।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,

Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 141-145

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

8708822674
9466532152

https://ginajournal.com/

grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

रूस–यूक्रेन संकट में भारत की भूमिका : महत्व और चुनौतियाँ

Authored by

डॉ. जितेन्द्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग,
दी0 द0 उ0 गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 146-152

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)
Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

Anomie in Instagram Society : A Study of College Students in Dehradun, Uttarakhand

Authored by

Ayush Uniyal
MA Sociology
SDM GPG College Doiwala, Dehradun

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 153-161

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

Role of Rashbihari Bose in Indian Freedom Struggle

Authored by

Ankur Majumdar
Department of East Asian studies
University of Delhi,New Delhi

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 162-168

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

Post-Pandemic Opportunities for Digital and Social Entrepreneurship in India : A Strategic Perspective

Authored by

Dr. Vishakha Mishra
Assistant Professor, Department of Management,
Sunbeam Women's College Varuna, Varanasi.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 169-176

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

'राग दरबारी' उपन्यास में गुटबंदी एवं प्रजातंत्र संबंधी चेतना

Authored by

डॉ. विक्रम सिंह राठौर, असिस्टेंट प्रोफेसर

नवीन नाथ, शोध–छात्र

हिंदी विभाग, एम0बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड – (263139)

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 177-181

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

झारखण्ड के उराँव जनजाति के पारम्परिक शासन व्यवस्था : पड़हा पंचायत

Authored by

डॉ० प्रमीला उराँव

असिस्टेंट प्रोफेसर, कुँड़ुख़ विभाग
करमचन्द भगत महाविद्यालय, बेड़ो, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 182-184

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate of Publication for the paper titled*

A Study of Mediaeval South India : Rani Abakka and Chennamma

Authored by

Dr. Shama Anjum
Department of History,
Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 185-190

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

कर्म और मोक्ष का संबंध : भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में एक समालोचनात्मक अध्ययन

Authored by

राजेंद्र प्रसाद

सहायक आचार्य, संहिता विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 191-193

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

चौहान शासकों की कर प्रणाली : एक ऐतिहासिक अवलोकन

Authored by

सतेन्द्र कुमार, शोधार्थी इतिहास

प्रो. सुगम आनंद, शोध निर्देशक

इतिहास एवं संस्कृति विभाग, डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 194-196

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

Making of Modern Historiography : Leopold von Ranke and His Legacy

Authored by

Srishti Agrahari

Research Scholar, Department of History
Dr. B. R. Ambedkar University, Delhi.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 197-203

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com

गीना देवी शोध संस्थान
Gina Devi Research Institute

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES MONTHLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Run by : Guganram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Certificate* of Publication for the paper titled

हनुमानगढ़ जिले की सामाजिक–आर्थिक संरचना का भौगोलिक विश्लेषण

Authored by

धन राज, शोधार्थी

डॉ. रेनु, शोध पर्यवेक्षक

Reasarch Department Of Geography,
Dr. K. N. Modi University, Newai.

Published in SANGAM ISSN : 2321-8037

Impact Factor 7.834, Jan.-Feb. 2026,
Vol. 14, Issue 1-2, Pat-1, Page No. 204-208

Director/Editor :
Dr. Rekha Soni

Secretary/Editor-in-Chief :
Dr. Naresh Sihag, Advocate

*This Certificate is only Valid with the Presentation of the Research Paper/Topic.

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
8708822674
9466532152
https://ginajournal.com/
grngobwn@gmail.com